सूचना। यह भूमिका पत्र ११ वें समुल्लास के पूर्व में छापके ग्यारहवें समुल्लास को छापना

अनुभूमिका

यह सिद्ध बात है कि पांच हजार वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ इनकी अप्रवृत्ति से अविद्याऽन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया उन सब मतों में ४ चार मत अर्थात् जो वेदविरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी, और कुरानी, सब मतों के मूल हैं वे क्रम से एक के पीछे दूसरा तीसरा चौथा चला है अब इन चारों की शाखा एक हजार से कम नहीं हैं इन सबको परस्पर सत्याऽसत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इसलिये यह ग्रंथ बनाया है जो २ इसमें सत्य मत का मण्डन और असत्य का खंडन लिखा है वह सबको जनाना ही प्रयोजन समझा गया है इसमें जैसी मेरी बुद्धि जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रंथ देखने से बोध हुआ है उसको सबके आगे निवेदित करना मैंने उत्तम समझा है क्योंकि विज्ञान गुप्त हुए का पुनः मिलना सहज नहीं है पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्याऽसत्य मत सबको विदित हो जायगा पश्चात् सबको अपनी २ समझ के अनुसार सत्यमत का ग्रहण करना और असत्यमत को छोड़ना सहज होगा इनमें से जो पुराणादि ग्रंथों से शाखा शाखांतर रूप मत आर्य्यावर्त्त देश में चले हैं उनका संक्षेप से गुण दोष इस ११ वें समुल्लास में दिखाया जाता है इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं किन्तु सत्याऽसत्य का निर्णय करने कराने का है इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से वर्त्तना अति उचित है मनुष्य जन्म का होना सत्याऽसत्य के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद विवाद विरोध करने कराने के लिये इसी मत मतांतर के विवाद से जगत् में जो २ अनिष्ट फल हुए और होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत मतांतर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनंद न होगा यदि हम सब मनुष्य लोग और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फसा रक्खा है यदि ये लोग अपने मतलब में न फसकर सबके मतलब को सिद्ध करना चाहें तो अभी ऐक्यमत हो जायें इसके होने की युक्ति इस ग्रंथ की पूर्ति में लिखेंगे सर्वशक्तिमान् परमात्मा एक मत में प्रवृत्त होने का उत्साह सब मनुष्यों के आत्माओं में प्रकाशित करे ॥ अलमतिविस्तरेण विपश्चिद्वर शिरोमणिषु ॥

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 501
दयानन्द महिला मह

पूर्वार्द्ध इसी दशमें समुल्लास के साथ पूरा होगया । इन समुल्लासों में विशेष खंडन मंडन इस वास्ते नहीं लिखा कि जब तक मनुष्य सत्याऽसत्य के विचार में कुछ भी सामर्थ्य न बढ़ाते तब तक स्थूल और सूक्ष्म खंडनों के अभिप्राय को नहीं समझ सकते इस लिये प्रथम सब को सत्यशिक्षा का उपदेश करके अब उत्तरार्द्ध अर्थात् जिसमें चार समुल्लास हैं उसमें विशेष खंडन मंडन लिखेंगे, प्रथम समुल्लास में आर्य्यावर्त्तीय मत मतान्तर दूसरे में जैनियों के तीसरे में ईसाईयों और चौथे में मुसलमानों के मत मतान्तरों के खंडन मंडन के विषय में लिखेंगे और पश्चात् चौदहवें समुल्लास के अन्त में स्वमत भी दिखलाया जायगा जो कोई विशेष खंडन मंडन देखना चाहें वे इन चारों समुल्लासों में देखें परन्तु सामान्य करके कहीं २ दश समुल्लासों में भी कुछ थोड़ा सा खंडन मंडन किया है इस चौदह समुल्लासों को पक्षपात छोड़ न्याय दृष्टि से देखेगा उसके आत्मा में सत्य अर्थ का प्रकाश होकर आनंद होगा और जो हठ दुराग्रह और ईर्ष्या से देखे सुनेगा उसको इस ग्रंथ का अभिप्राय यथार्थ विदित होना बहुत कठिन है इस वास्ते जो कोई इसको यथावत् न विचारेगा वह इसका अभिप्राय न पाकर गोता खाया करेगा विद्वानों का यही काम है कि सत्याऽसत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण असत्य का त्याग करके परम आनंदित होते हैं वे ही गुणग्राहक पुरुष विद्वान् होकर धर्म अर्थ काम और मोक्षरूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं ॥ ❀ ❀ ❀ ॥

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे दशमः समुल्लासे सुभाषाविरचिते पूर्वार्द्धः समाप्तः दशमसमुल्लासश्च ॥ १० ॥

॥ अथैकादश समुल्लासारंभः ॥

॥ अथाऽऽर्य्यावर्त्तीय मत खंडन मंडने विधास्यामः ॥

अब आर्य्य लोगों कि जो आर्यावर्त्त देश में बसने वाले हैं उनके मत का खंडन मण्डन तथा मंडन का विधान करेंगे । यह आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है इसी वास्ते इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है इसी सृष्टि की आदि में आर्य्य लोग इसी देश में आकर बसे इसलिये हम सृष्टि विषय में कह आये हैं कि आर्य्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठ है परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं । एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

मनु० — सृष्टि से ले के पांच हजार वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्त्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था अन्य देश में मांडलिक अर्थात् छोटे २ राजा रहते थे क्योंकि कौरव पांडव पर्यन्त यहां के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चलते थे क्योंकि यह मनुस्मृति जो सृष्टि की आदि में हुई है उसका प्रमाण है । इसी आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के सब मनुष्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र दस्यु म्लेच्छ आदि

सब अपने २ योग्य विद्या चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें और महाराजे युधिष्ठिर जी के राज
सूयै यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहां के राज्याधीन सब राज्य थे सुनो चीन का (भगद
त्त) अमेरिका का (बब्रुवाहन) यूरोप देशों का (विडालाक्ष) अर्थात् मार्जार के सदृश आंख वा
ले यूनान को कह आये और (ईरान) का (शल्य) आदि सब राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत यु
द्ध में सब आज्ञानुसार आये थे जब रघुगण राजा थे तब (रावण) भी यहां के आधीन था जब
रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया तो उसको (रामचन्द्र) ने दंड देकर राज्य से नष्ट कर उस
के भाई (विभीषण) को राज्य दिया था। (स्वायंभव) राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्त्ती
राज्य रहा तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अ
भिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभा
विक प्रवृत्ति है कि जब बहुत साधन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है तब आलस्य पुरु
षार्थ रहितता ईर्षा द्वेष विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है इससे विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दु
र्गुण और दुष्ट व्यसन देश में बढ़ जाते हैं जैसा कि मद्य मांस सेवन बाल्यावस्था में विवाह औ
र स्वेच्छाचारादि दोष बढ़ जाते हैं और जब युद्ध विभाग में युद्ध विद्या कौशल और सेना इतनी
बढ़े कि जिसका सामना करने वाला भूगोल में दूसरा न हो तब उन लोगों में पक्षपात
अभिमान बढ़कर अन्याय बढ़ जाता है जब ये दोष हो जाते हैं तब आपस में विरोध होकर
अथवा उनसे अधिक कोई दूसरे छोटे कुलों में से कोई ऐसा समर्थ पुरुष खड़ा होता है कि उनका
पराजय करने में समर्थ होवे जैसे मुसल्मानों की बादशाही के सामने शिवाजी, गोविंद
सिंह जी, खड़े होकर मुसल्मानों के राज्य को छिन्न भिन्न कर दिया। अथ किमेतैर्वा परे
ऽन्ये महाधनुर्धरा राजानश्चक्रवर्त्तिनः केचित्सुद्युम्न भूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्न कुवलयाश्वयौ
वनाश्व वध्र्यश्वाश्वपति शशबिन्दु हरिश्चन्द्राऽम्बरीषानक्तु सर्यातिययात्यनरण्योक्षसेनादयः। अथ मरुत्तभरतप्रभृतयो राजानः। मैत्र्युपनि० —
इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्त्ती सार्वभौम
राजा आर्य्य कुल में ही हुए थे अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राज्यभ्रष्ट होकर विदेशियों के
पादाक्रान्त हो रहे हैं जैसे यहां सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, अश्वपति, शश
बिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, सर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत सा
र्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्त्ती राजाओं के नाम लिखे हैं वैसे स्वायंभुवादि चक्रव
र्त्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं इसको मिथ्या करना
अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है। (प्रश्न) जो आग्नेयास्त्र आदि विद्या लिखी हैं सो
सत्य हैं वा नहीं? और तोप तथा बन्दूक तो उस समय में थी वा नहीं? (उत्तर) ये बात सच्ची है
ये भी थी क्योंकि पदार्थ विद्या से इन सब बातों का संभव है। (प्रश्न) क्या ये देवताओं के मन्त्रों से सिद्ध हो
ते थे? (उत्तर) नहीं ये सब बातें जिनसे अस्त्र शस्त्रों को सिद्ध करते थे वे (मन्त्र) शब्दमय होता है उस
से कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता और जो कोई कहे कि मन्त्र से अग्नि उत्पन्न होता है तो वह मन्त्र के
जप करने वाले के हृदय और जिह्वा को भस्म कर देवे मारने जाय शत्रु को और मर रहे आप इसलिये मन्त्र नाम है विचार का जैसे राजमन्त्री अर्थात् राजकर्मों का विचार करने वाला कहाता है वैसे मन्त्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं

आप इसलिये मंत्र नाम है विचार का जैसा (राजमंत्री) अर्थात् राजकर्मों का विचार करने
कहाता है वैसा वाला मंत्र अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से-
अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं जैसे कोई लोहे का बाण वा गोला बनाकर उसमें ऐसे एक
पदार्थ रक्खे कि जो अग्नि के लगाने से वायु में धुआं फैलने और सूर्य की किरण वा वायु के स्प
र्श होने से अग्नि जल उठे इसी का नाम आग्नेयास्त्र है। जब दूसरा इसका निवारण करना चा
हे तो उसी पर वारुणास्त्र छोड़ दे अर्थात् जैसे शत्रु ने शत्रु की सेना पर आग्नेयास्त्र छोड़ कर नष्ट
करना चाहा वैसे ही अपनी सेना की रक्षार्थ सेनापति वारुणास्त्र से आग्नेयास्त्र का नि
वारण करे वह ऐसे द्रव्यों के योग से होता है जिसका धुआं वायु के स्पर्श होते ही बद्दल होके झट
वर्षने लग जाने अग्नि को बुझा देवे ऐसे ही नागपाश अर्थात् जो शत्रु पर छोड़ने से उसके अंगों को
बांध लेता है वैसे ही एक मोहनास्त्र अर्थात् जिसमें नशे की चीज डालने से जिसके धुआं के लग
ने से सब शत्रु की सेना निद्रास्थ अर्थात् मूर्छित हो जाय इसी प्रकार सब शस्त्रास्त्र होते थे
और एक तार से वा शीसे से अथवा किसी और पदार्थ से विद्युत उत्पन्न करके शत्रुओं का नाश
करते थे उसको भी आग्नेयास्त्र तथा पाशुपतास्त्र कहते हैं। तोप और बन्दूक ये नाम अन्य
देशभाषा के हैं संस्कृत और आर्यावर्तीय भाषा नहीं किन्तु जिसको विदेशीजन तोप
संस्कृत और भाषा में कहते हैं उसका नाम शतघ्नी और जिसको बन्दूक कहते हैं उसका नाम संस्कृत और आर्य
भाषा में (भुशुंडी) कहते हैं जो संस्कृत विद्या को नहीं पढ़े वे भ्रम में पड़कर कुछ का कुछ लिखते
और कुछ का कुछ बकते हैं उसका बुद्धिमान लोग प्रमाण नहीं कर सकते और जितनी
विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्र वालों उनसे यूनानी उनसे रूम और उन
से यूरोप देश में उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है अब तक जितना प्रचार संस्कृत वि
द्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नहीं जो लोग कहते हैं कि जर्मन देश
में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितना संस्कृत मोक्षमूलर साहेब पढ़े हैं उतना-
कोई नहीं पढ़ा यह बात कहने मात्र है क्योंकि (यस्मिन्देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रु
मायते) अर्थात् जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता उस देश में एरंड ही को बड़ा वृक्ष मान
लेते हैं वैसे ही यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन और मोक्षमूलर सा
हेब ने थोड़ा सा पढ़ा वही उस देश के वास्ते अधिक है परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें
तो उनकी बहुत न्यून गणना है क्योंकि मैंने जर्मन देश निवासी के एक (प्रिन्सिपल) के पत्र से
जाना कि जर्मन देश में संस्कृत चिट्ठी का अर्थ करने वाले भी बहुत कम हैं और मोक्षमूलर सा
हेब के संस्कृत साहित्य और थोड़ी सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि
आर्यावर्तीय लोगों की की हुई मोक्षमूलर साहेब ने इधर उधर टीका देखकर कुछ २ यथा तथा लिखा है जैसा कि-
(युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि) इस मंत्र का अर्थ
घोड़ा किया है इससे तो जो सायणाचार्य ने सूर्य अर्थ किया है सो अच्छा है परन्तु इस
मेरी बनाई ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में का ठीक अर्थ-परमात्मा है) इतने ही से जान लीजिये कि जर्मन देश और मोक्ष
मूलर साहेब में संस्कृत विद्या का कितना पांडित्य है। यह निश्चय है कि जितनी विद्या और-
देख लीजिये उसमें इस मंत्र का यथार्थ किया है

मत भूगोल में फैले हैं वे सब आर्यावर्त देश ही से प्रचरित हुए हैं देखो एक (गोल्डस्टूकर) साहेब पारिस देश निवासी अपनी (बायबिल इंडिया) में लिखते हैं कि सब विद्या और भलाइयों का भंडार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं और परमात्मा की प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्व काल में थी वैसी ही हमारे देश की कीजिये लिखते हैं उस ग्रन्थ में देखलो तथा (दाराशिकोह) बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत में है वैसी किसी भाषा में नहीं वे लिखते हैं कि मैंने अर्बी आदि बहुत सी भाषा पढ़ीं परन्तु मेरे मन का सन्देह छूटकर आनंद न हुआ जब संस्कृत देखा और सुना तब निःसन्देह होकर मुझको बड़ा आनन्द हुआ है देखो काशी में मानमंदिर में (शिशुमारचक्र) को कि जिसकी पूरी रक्षा भी नहीं रही है तो भी कितना उत्तम है कि जिसमें अब तक भी खगोल का बहुत सा हाल विदित होता है जो (सवाई जयपुराधीश) उसकी संभाल और फूटे टूटे को बनवाया करेंगे तो बहुत अच्छा होगा परन्तु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह (विनाशकाले विपरीतबुद्धिः) यह किसी कवि का वचन है कि जब नाश होने का समय निकट आता है तब उलटी बुद्धि होकर उलटे काम करते हैं जब बड़े २ विद्वान् राजे महाराजे ऋषि महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला ईर्ष्या द्वेष अभिमान आपस में करने लगे जो बलवान् हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा वैसे ही सर्वत्र आर्यावर्त देश में खंड बंड राज्य हो गया पुनः द्वीपद्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था को न करे जब ब्राह्मण लोग विद्याहीन हुए तब क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के अविद्वान् होने में तो कथा ही क्या कहनी जो परम्परा से वेदादि शास्त्रों का अर्थ सहित पढ़ने का प्रचार था वह भी छूट गया केवल जीविकार्थ पाठमात्र ब्राह्मण लोग पढ़ते रहे सो पाठमात्र भी क्षत्रियादि को न पढ़ाया क्योंकि जब अविद्वान् हुए गुरु बन गये तब छल कपट भी उनमें बढ़ता चला ब्राह्मणों ने विचारा कि अपनी जीविका का प्रबंध बांधना चाहिये सम्मति करके यही निश्चय कर क्षत्रियादि को उपदेश करने लगे कि हम ही तुम्हारे पूज्य देव हैं बिना हमारी सेवा किये तुम को स्वर्ग वा मुक्ति न मिलेगी किन्तु जो तुम हमारी सेवा न करोगे तो घोर नरक में पड़ोगे जो २ पूर्ण विद्या वाले धार्मिकों का नाम ब्राह्मण और पूजनीय वेद और ऋषि मुनियों के शास्त्र में लिखा था उनको अपने मूर्ख विषयी कपटी लम्पट अधर्मियों पर धर बैठे भला वे आप्त विद्वानों के लक्षण इन मूर्खों में कब घट सकते हैं परन्तु जब क्षत्रियादि यजमान संस्कृत विद्या से रहित हुए तब उनके सामने जो २ गप्प मारी सो २ बिचारों ने सब मान लिये तब इन नाममात्र ब्राह्मणों की बन पड़ी सब को अपने वचनजाल में बांध कर वशीभूत कर लिये और कहने लगे कि (ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः) अर्थात् जो कुछ ब्राह्मणों के मुख में से वचन निकलता है वह जानो साक्षात् भगवान् के मुख से निकला जब क्षत्रियादि वर्ण आंख के अंधे और गांठ के पूरे अर्थात् भीतर विद्या की आंख फूटी हुई और जिन

के पास धन पुष्कल है ऐसे चेले मिले फिर इन व्यर्थ ब्राह्मण नाम वालों को विषयानन्द का बगीचा मिल गया यह भी उन लोगों ने प्रसिद्ध किया कि जो कुछ पृथिवी में उत्तम पदार्थ हैं वे सब ब्राह्मणों के लिये हैं अर्थात् जो गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मणादि वर्णव्यवस्था थी उसको नष्ट कर जन्म पर रक्खी और मृतक पर्यन्त का भी दान यजमानों से लेने लगे जैसी अपनी इच्छा हुई वैसा करते चले यहां तक किया कि हम (भूदेव) हैं हमारी सेवा के विना देवलोक किसी को नहीं मिल सकता। इनसे पूछना चाहिये कि तुम किस लोक में पधारोगे तुम्हारे काम तो घोर नरक भोगने के हैं कृमि कीट पतंगादि बनोगे तब तो बड़े क्रोधित होकर कहते हैं हम (शाप) देंगे तो तुम्हारा नाश हो जायगा क्योंकि लिखा है (ब्रह्मद्रोही विनश्यति) कि जो ब्राह्मणों से द्रोह करता है उसका नाश हो जाता है। हां यह बात तो सच्ची है कि जो पूर्ण वेद और परमात्मा को जानने वाले धर्मात्मा सब जगत् के उपकारक पुरुषों से जो कोई द्वेष करेगा वह अवश्य नष्ट होगा परन्तु जो ब्राह्मण नहीं हों उनका न ब्राह्मण नाम और न उनकी सेवा करनी योग्य है (प्रश्न) तो हम कौन हैं (उत्तर) तुम पोप हो। (प्रश्न) पोप किसको कहते हैं (उत्तर) इसकी सूचना रूमन भाषा में तो बड़ा और पिता का नाम पोप है परन्तु अब छल कपट से दूसरे को ठगकर अपना मतलब साधने वाले को पोप कहते हैं। (प्रश्न) हम तो ब्राह्मण और साधु हैं क्योंकि हमारा पिता ब्राह्मण और माता ब्राह्मणी तथा हम फलाने साधु के चेले हैं। (उत्तर) यह सत्य है परन्तु सुनो भाई मा बाप ब्राह्मणी ब्राह्मण होने से और किसी साधु के शिष्य होने पर ब्राह्मण वा साधु नहीं हो सकते किन्तु ब्राह्मण और साधु अपने उत्तम गुण कर्म स्वभाव से होते हैं जो कि परोपकारी हों, जैसे (रूम के पोप) अपने चेलों को कहते थे कि तुम अपने पाप हमारे सामने कहोगे तो हम क्षमा कर देंगे विना हमारी सेवा और आज्ञा के कोई भी स्वर्ग में नहीं जा सकता जो तुम स्वर्ग में जाना चाहो तो हमारे पास जितने रुपये जमा करोगे उतने ही की सामग्री स्वर्ग में तुमको मिलेगी ऐसा सुनकर जब किसी आंख के अंधे और गांठ के पूरे स्वर्ग में जाने की इच्छा करके (पोप) जी को यथेष्ट रुपया देता था तब वह पोप जी ईसा और मर्यम की मूर्ति के सामने खड़ा होकर इस प्रकार की हुंडी लिखकर देता था कि (हे खुदावन्द ईसामसी अमुक मनुष्य ने तेरे नाम पर लाख रुपया स्वर्ग में आने के लिये हमारे पास जमा कर दिये हैं जब वह स्वर्ग में आवे तब तू अपने पिता के स्वर्ग के राज्य में पच्चीस हजार रुपयों में बाग बगीचा और मकानात पच्चीस हजार में सवारी शिकारी और नौकर चाकर पच्चीस हजार रुपयों में खाना पीना कपड़ा लत्ता और पच्चीस हजार रुपये इसके इष्ट मित्र भाई बन्धु आदि के जियाफत के वास्ते दिला देना) फिर उस हुंडी के नीचे पोपजी अपनी सही करके हुंडी उसके हाथ में देकर कह देते थे कि जब तू मरे तब इस हुंडी को कबर में अपने सिराने धर लेना फिर तेरे को ले जाने के वास्ते फिरिश्ते आवेंगे तब तुझे और तेरी हुंडी को स्वर्ग में ले जाकर लिखे प्रमाणे सब चीजें तुझको दिला देंगे। अब देखिये जानो स्वर्ग का ठेका पोपजी ने ही ले लिया हो। जब तक यूरोप देश में मूर्खता थी तभी तक वहां पोपजी की लीला चलती थी परन्तु अब विद्या के होने से पोपजी की झूठी लीला बहुत नहीं चलती किन्तु निर्मूल भी नहीं हुई। वैसे ही आर्यावर्त देश में भी जानो

पोपजीने लम्बा चौड़ा अवतार लेकर लीला फैलाई है अर्थात् राजा और प्रजाको विद्या न पढ़ने देना अच्छे पुरुषोंका संग न होने देना रात दिन बहकानेके सिवाय दूसरा कुछ भी काम न करना है परन्तु यह बात ध्यानमें रखना कि जो२ छल कपटादि कुत्सित व्यवहार करते हैं वे ही पोप कहाते हैं जो कोई उनमें भी धार्मिक विद्वान् परोपकारी हैं वे सच्चे ब्राह्मण और साधू हैं, अब उन्ही पोपोंने अर्थात् छली कपटी स्वार्थी लोग मनुष्योंको ठगकर अपना प्रयोजन सिद्ध करने वालों हीका ग्रहण पोप शब्दसे करना और ब्राह्मण तथा साधु नामसे उत्तम पुरुषोंका स्वीकार करना योग्य है देखो जो कोई भी उत्तम ब्राह्मण वा साधु न होता तो वेदादि सत्यशास्त्रोंके पुस्तक स्वरसहितका पठन पाठन जैन मुसलमान ईसाई आदिके जालसे बचकर आर्योंको वेदादि सत्यशास्त्रोंमें प्रीतियुक्त वर्णाश्रमोंमें रखना ऐसा कौन कर सकता। सिवाय ब्राह्मण साधुओंके (विषादप्यमृतं ग्राह्यम्) मनु० विषसे भी अमृतके ग्रहण करनेके समान पोपलीलासे बहकानेमें से भी आर्योंका जैन आदि मतोंसे बचा रहना। जानो विषमें अमृतके समान गुण समझना चाहिये। जब यजमान विद्याहीन हुए और आप कुछ पाठ पूजा पढ़कर अभिमानमें आके सब लोगोंने परस्पर सम्मति करके राजा आदिसे कहा कि ब्राह्मण और साधू अदण्ड्य हैं देखो (ब्राह्मणो न हन्तव्यः) साधुर्न हन्तव्यः) ऐसे२ बचन जो कि सच्चे ब्राह्मण और साधुओंके विषयमें थे सो पोपोंने अपने पर घटालिये और भी झूठे२ बचनयुक्त ग्रंथ रचकर उनमें ऋषि मुनियोंके नाम धरके उन्हीके नामसे सुनाते रहे उन प्रतिष्ठित ऋषि महर्षियोंके नामसे अपने परसे दंडकी व्यवस्था उठवादी पुनः यथेष्टाचार करने लगे अर्थात् ऐसे कड़े नियम चलाये कि उन पोपोंकी आज्ञाके बिना सोना उठना बैठना जाना आना खाना पीना आदि भी नहीं कर सकते थे, राजाओंको ऐसा निश्चय कराया कि पोपसंज्ञक कहने मात्रके ब्राह्मण साधु चाहें सो करें उनको कभी दंड न देना अर्थात् उनपर मनमें दंड देनेकी इच्छा न करनी चाहिये जब ऐसी मूर्खता हुई तब जैसी पोपोंकी इच्छा हुई वैसा करने कराने लगे अर्थात् इस बिगाड़के मूल महाभारत युद्धसे पूर्व एक हजार वर्षसे प्रवृत्त हुए थे क्योंकि उस समयमें ऋषि मुनि भी थे तथापि कुछ२ आलस्य प्रमाद ईर्ष्या द्वेषके अंकुर उगे थे वे बढ़ते२ बढ़ गये जब सच्चा उपदेश न रहा तब आर्यावर्त्तमें अविद्या फैलकर आपसमें लड़ने झगड़ने लगे क्योंकि (उपदेश्योपदेष्टृत्वात्तत्सिद्धिः)॥ (इतरथान्धपरम्परा) सांख्यसूत्र — अर्थात् जब उत्तम२ उपदेशक होते हैं तब अच्छे प्रकार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सिद्ध होते हैं, और जब उत्तम उपदेशक और श्रोता नहीं रहते तब अंधपरम्परा चलती है। फिर भी जब सत्पुरुष उत्पन्न होकर सत्योपदेश करते हैं तभी अंधपरम्परा नष्ट होकर प्रकाशकी परम्परा चलती है पुनः वे पोपलोग अपनी और अपने चरणोंकी पूजा कराने लगे और कहने लगे कि इसीमें तुम्हारा कल्याण है जब ये लोग इनके वशमें हो गये तब प्रमाद और विषयासक्तिमें निमग्न होकर गडरियेके समान झूठे गुरु और चेले फंसे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम, शूरवीरतादि शुभगुण सब नष्ट होते चले पश्चात् जब विषयासक्त हुए तो मांस मद्यका सेवन गुप्त करने लगे पश्चात् उन्हीमेंसे एक वाममार्ग

खड़ा किया (शिव उवाच, पार्वत्युवाच, भैरव उवाच,) इत्यादि नाम लिखकर उनका तंत्र नाम ध
रा उनमें ऐसी २ विचित्र लीला की बातें लिखीं कि (मद्यं मांसंच मीनंच मुद्रा मैथुनमेवच
एते पंच मकाराः स्युर्मोक्षदाहि युगे युगे ॥१॥ प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजात
यः। निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्ववर्णाः पृथक् पृथक् ॥२॥ पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्प
तति भूतले। पुनरुत्थाय वैपीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥३॥ मातृयोनिं परित्यज्य विहरे
त्सर्वयोनिषु ॥४॥ वेदशास्त्र पुराणानि सामान्यगणिका इव। एकैव शांभवी मुद्रा गु ओं कि
प्ता कुलवधूरिव ॥५॥ अर्थ– देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीलाँ जो वेद विरुद्ध महा अधर्म
के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वाम मार्गियों ने माना मद्य, मांस, मीन, अर्थात् मच्छी, मुद्रा पूरी कचौरी
और बड़े आदि चर्वणा योनि पात्राधार मुद्रा और पांचवां मैथुन अर्थात् पुरुष सब शिव और
स्त्री सब पार्वती के समान मान कर। अहं भैरवस्त्वं भैरवी ह्यावयोरस्तु सङ्गमः। चाहें कोई
पुरुष वा स्त्री हो इस ऊटपटांग वचन को पढ़के समागम करने में वे वाम मार्गी दोष नहीं मानते
अर्थात् जिन नीच स्त्रियों को छूना नहीं उनको अति पवित्र उन्होंने माना है जैसे शास्त्रों में रजस्व
लादि स्त्रियों के स्पर्श का निषेध है उनको वाम मार्गियों ने। रजस्वला पुष्करं तीर्थं चांडाली तु स्वयं काशी, चर्मका
री प्रयागः स्याद्रजकी मथुरा मता। अयोध्या पुक्कसी प्रोक्ता ॥ इत्यादि रजस्वला के साथ समागम क
रने से जानो पुष्कर का स्नान, चांडाली से समागम में काशी की यात्रा, चमारी से समागम करने से।
मानो प्रयाग स्नान, धोबी की स्त्री के साथ समागम करने में मथुरा यात्रा और कंजरी के साथ लीला करने से
मानो अयोध्या तीर्थ कर आये। मद्य का नाम धरा तीर्थ मांस का नाम शुद्धि और पुष्प मच्छी
का नाम तृतीया जलतुम्बिका, मुद्रा का नाम चतुर्थी और मैथुन का नाम पंचमी इस लिये ऐसे
२ नाम धरे हैं कि जिससे दूसरा न समझ सके; ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ अपने कौल, आर्द्र वीर, शांभव और गण आदि नाम रक्खे हैं और जो वाम मार्ग मत में
नहीं है उनका कंटक, विमुख, शुष्क पशु आदि नाम धरे हैं और कहते हैं कि जब भैरवी चक्र
हो तब उसमें ब्राह्मण से लेकर चांडाल पर्यन्त का नाम द्विज हो जाता है और जब भैरवी चक्र से
अलग हों तब ~~उसमें~~ सब अपने २ वर्णस्थ हो जायें, भैरवी चक्र में वाम मार्गी लोग भूमि वा
पट्टे पर एक बिन्दु त्रिकोण चतुष्कोण वर्तुलाकार बनाकर उस पर मद्य का घड़ा रख के उसकी
पूजा करते हैं फिर ऐसा मंत्र पढ़ते हैं (ब्रह्मशापं विमोचय) हे मद्य तू ब्रह्मा आदि के शाप
से रहित हो एक गुप्त स्थान में कि जहां सिवाय वाम मार्गी के दूसरे को नहीं आने देते वहां स्त्री और
पुरुष इकट्ठे होते हैं वहां एक स्त्री को नंगी कर पूजते और स्त्री लोग किसी पुरुष को नंगा कर
पूजती हैं पुनः कोई किसी की स्त्री कोई अपनी वा दूसरे की कन्या कोई किसी की वा अपनी माता
भगिनी पुत्रवधू आदि आती हैं पश्चात् एक पात्र में मद्य भरके मांस और बड़े आदि एक स्था
ली में धर रखते हैं उस मद्य के प्याले को जो कि उनका आचार्य होता है वह हाथ में लेकर
बोलता है कि (भैरवोऽहम् शिवोऽहम्) मैं भैरव वा शिव हूं कहकर पी जाता है फिर उसी जूंठे
पात्र से सब पीते हैं और जब किसी की स्त्री वा वेश्या नङ्गी कर अथवा किसी पुरुष को नंगा कर हाथ में

तलवार देके उसका नाम देवी और पुरुषका नाम महादेव धरते हैं उनके उपस्थ इन्द्रियकी पूजाक
रते हैं तब उस देवी वा शिवको मद्यका प्याला पिलाकर उसी जूंठे पात्रसे सबलोग एक २ प्याला
पीते फिर उसी प्रकार क्रमसे पीपीके मस्त होकर चाहें कोई किसीकी बहिन कन्या वा माता क्यों न हो
जिसकी जिसके साथ इच्छा हो उसके साथ कुकर्म करते हैं कभी २ बहुत नशा चढ़ने से जूते
लात मुक्का मुक्की केशाकेशी आपसमें लड़ते हैं किसी २ को वहीं वमन होता है उनमें जो पहुंचा
हुआ अघोरी अर्थात् सबमें सिद्ध गिनाजाता है वह वमन हुई चीजको भी खालेता है अर्थात्
इनके सबसे बड़े सिद्धकी ये बातें हैं कि (हालां पिबति दीक्षितस्य मंदिरे सुप्तो निशायां गणि
का गृहेषु । विराजते कौलवचक्रवर्ती) जो दीक्षित अर्थात् कलार के घरमें जाके बोतलपर
बोतल चढ़ावे रंडियोंके घरमें जाके सोवे जो इत्यादि कर्म निर्लज्ज निःशंक होकर करे वही वाममा
र्गियोंमें सर्वोपरि मुख्य चक्रवर्ती राजाके समान मानाजाता है अर्थात् जो बड़ा कुकर्मी वही उनमें ब
ड़ा और जो अच्छे काम करे और बुरे कामोंसे डरे वही छोटा क्योंकि (पाशबद्धो भवेज्जीवः पाश
मुक्तः सदाशिवः) ऐसा तन्त्रमें कहते हैं कि जो लोकलज्जा, शास्त्रलज्जा, कुललज्जा, देशलज्जा आ
दि पाशोंमें बंधा है वह जीव और जो निर्लज्ज होकर बुरे काम करे वही सदाशिव है ॥ उड्डीसतंत्रमें
एक प्रयोग लिखा है कि एक घरमें चारों ओर आलय हों उसमें मद्यके बोतल भरके धरदेवे इस
आलयसे एक बोतल पीके दूसरे आलयपर जावे उसमें से पी तीसरे और तीसरेमें से पीके
चौथे आलयमें जावे खड़ा खड़ा तबतक मद्य पीवे कि जबतक लकड़ीके समान पृथिवीमें न
गिर पड़े फिर जब नशा उतरे तब उसी प्रकार पीकर गिर पड़े पुनः तीसरी वार इसी प्रकार पीके
गिरके उठे तो उसका पुनर्जन्म न हो अर्थात् सच तो यह है कि ऐसे २ मनुष्योंका पुनः मनुष्यजन्म
होना ही कठिन है किन्तु नीच योनिमें पड़कर बहुकालपर्यन्त पड़ा रहेगा ॥ वामियोंके तंत्रग्रं
थोंमें यह नियम है कि एक माताको छोड़के किसी स्त्रीको भी न छोड़ना चाहिये अर्थात् चाहे कन्या हो वा
भगिनी आदि क्यों न हो सबके साथ संगम करना चाहिये इन वाममार्गियोंमें दश महाविद्या प्रसिद्ध
हैं उनमेंसे एक मातंगी विद्यावाला कहता है कि (मातरमपि न त्यजेत्) अर्थात् माताको भी समाग
म किये विना न छोड़ना चाहिये और स्त्रीपुरुषके समागम समयमें मन्त्र जपते हैं कि हमको सि
द्धि प्राप्त होजाये ऐसे पागल महामूर्ख मनुष्य भी संसारमें बहुत न्यून होंगे ॥ जो मनुष्य झूंठ चलाना
चाहता है वह सत्यकी निन्दा अवश्य ही करता है देखो वाममार्गी क्या कहते हैं—वेद शास्त्र औ
र पुराण ये सब सामान्य वेश्याओंके समान हैं और जो यह शांभवी वाममार्गकी मुद्रा है—
वह गुप्त कुलकी स्त्रीके तुल्य है ॥५॥ इसीवास्ते इन लोगोंने केवल वेदविरुद्ध मत खड़ा के
या है पश्चात् इन लोगोंका मत बहुत चला तब धूर्तता करके वेदोंके नामसे भी वाममार्गकी थो
ड़ी २ लीला चलाई अर्थात् (सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्) प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसं वैदिकी हिंसा
हिंसा न भवति) न मांसभक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने । प्रवृत्तिरेषा भूतानां
निवृत्तिस्तु महाफला ॥ मनु० सौत्रामणि यज्ञमें मद्य पीवे इसका अर्थ तो यह है कि सौ
त्रामणि यज्ञमें सोमरस अर्थात् सोमवल्लीका रस पिये प्रोक्षित अर्थात् यज्ञमें मांस खाने

में दोष नहीं ऐसी बातें पामर पन की वाम मार्गियों ने चलाई हैं उन से पूछना चाहिये कि जो वैदिकी हिंसा हिंसा न हो तो तुझ और तेरे कुटुम्ब को मार के होम कर डालें तो क्या चिन्ता है ॥ ११ ॥ मांस भक्षण करने मद्य पीने परस्त्रीगमन करने आदि में दोष नहीं है यह कहना छोकड़ पन है क्योंकि विना प्राणियों को पीड़ा दिये मांस प्राप्त नहीं होता और विना अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं मद्यपान का तो सर्वथा निषेध ही है क्योंकि अब तक वाम मार्गियों के विना किसी ग्रंथ में नहीं लिखा किन्तु सर्वत्र निषेध है और विना विवाह के मैथुन में भी दोष है इसको निर्दोष करनेवाला सदोष है ऐसे २ वचन भी ऋषियों के ग्रंथ में डाल के कितने ही ऋषि मुनियों के नाम से ग्रंथ बनाकर गोमेध अश्वमेध नाम के यज्ञ भी कराने लगे थे अर्थात् इन पशुओं को मार के होम करने से यजमान और पशु को स्वर्ग की प्राप्ति होती है ऐसी प्रसिद्धि करी निश्चय तो यह है कि जो ब्राह्मण ग्रंथों में अश्वमेध गोमेध नरमेध आदि शब्द हैं उनका ठीक २ अर्थ नहीं जाना है क्योंकि जो जानते तो ऐसा अनर्थ क्यों करते (प्रश्न) अश्वमेध, गोमेध, नरमेध, आदि शब्दों का अर्थ तो यह है कि (राष्ट्रं वा अश्वमेधः । अन्नं हि गौः) अग्निर्वा अश्वः । आज्यं मेधः) शतपथ ब्राह्मण — घोड़े गाय आदि पशु तथा मनुष्य मार के होम करना कहीं नहीं लिखा केवल वाममार्गियों के ग्रंथों में ऐसा अनर्थ लिखा है किन्तु यह भी बात वाममार्गियों ने चलाई और जहां २ लेख है वहां २ भी वाममार्गियों ने प्रक्षेप किया है देखो राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे विद्यादि का देनेहारा यजमान और अग्नि में घी आदि का होम करना अश्वमेध अन्न इन्द्रियां किरण पृथिवी आदि को पवित्र रखना गोमेध - जब मनुष्य मर जाय तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना नरमेध कहाता है (प्रश्न) यज्ञकर्त्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्गगामी तथा होम करके फिर पशु को जीता करते थे यह बात सच्ची है वा नहीं (उत्तर) नहीं जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहनेवाले को मार के होम कर स्वर्ग में पहुंचाना चाहिये वा उसके प्रिय माता पिता स्त्री और पुत्रादि को मार होम कर स्वर्ग में क्यों नहीं पहुंचाते वा वेदी में से पुनः क्यों नहीं जिला लेते हैं (प्रश्न) जब यज्ञ करते हैं तब वेदों के मंत्र पढ़ते हैं जो वेदों में न होता तो कहां से पढ़ते (उत्तर) मंत्र किसी को कहीं पढ़ने से नहीं रोकता क्योंकि वह एक शब्द है परन्तु उनका अर्थ ऐसा नहीं है कि पशु को मार के होम करना जैसे (अग्नये स्वाहा) इत्यादि मंत्रों का अर्थ अग्नि में हवि पुष्ट्यादिकारक घृतादि उत्तम पदार्थों के होम करने से वायु वृष्टि जल शुद्ध होकर जगत् को सुखकारक होते हैं परन्तु इन सत्य अर्थों को वे मूढ़ नहीं समझते थे क्योंकि जो स्वार्थबुद्धि होते हैं वे केवल अपने स्वार्थ करने के दूसरा कुछ भी नहीं जानते मानते अब इन पोपों का ऐसा अनाचार देखा और दूसरा मरे का तर्पण श्राद्धादि करने को देखकर एक महा भयंकर वेदादि शास्त्रों का निन्दक बौद्ध वा जैन मत प्रचलित हुआ है एक इसी देश में गोरखपुर का राजा था उस से पोपों ने यज्ञ कराया उसकी प्रियराणी का समागम घोड़े के साथ कराने से उसके मर जाने पर पश्चात् वैराग्यवान् होकर अपने पुत्र को राज्य दे साधु हो पोपों की पोल निकालने लगा। इसी की शाखा रूप चारवाक और आभाणक

कमतभीहुआथा। उन्होंने इस प्रकार के श्लोक बनाये हैं - पशुश्चेन्निहतः स्वर्गं ज्योतिष्टोमे गमिष्यति। स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते ॥१॥ मृतानामिह जन्तूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्। गच्छतामिह जन्तूनां व्यर्थं पाथेयकल्पनम्॥ जो पशु मार कर अग्नि में होम करने से पशु स्वर्ग को जाता है तो यजमान अपने पितादि को भी मार के स्वर्ग में क्यों नहीं भेजते ॥१॥ जो मरे हुए मनुष्यों की तृप्ति के वास्ते श्राद्ध और तर्पण होता है तो विदेश में जाने वाले मनुष्य को मार्ग का खर्च खाने पीने के लिये बांधना व्यर्थ है क्योंकि जब मुर्दे को श्राद्ध तर्पण से अन्न जल पहुंचता है तो जीते हुए परदेश में रहने वाले वा मार्ग में चलने हारों को घर में रसोई बनी हुई का पत्तल परोस लोटा भर के उसके नाम पर रखने से क्यों नहीं पहुंचता जो जीते हुए दूर देश अथवा दश हाथ पर दूर बैठे हुए को दिया हुआ नहीं पहुंचता तो मरे हुए के पास किसी प्रकार नहीं पहुंच सकता। उनके ऐसे युक्तिसिद्ध उपदेशों को मानने लगे और उनका मत बढ़ने लगा जब बहुत से राजा रईस उनके मत में हुए तब पोपजी भी उनकी ओर झुके क्योंकि इनको जिधर गप्फा-चच्छा मिले वहीं चले जायें झट जैन बनने चले जैन में भी और प्रकार की पोपलीला बहुत है सो १२वें समुल्लास में लिखेंगे बहुतों ने इनका मत स्वीकार किया परन्तु कितने कहीं जो पर्वत काशी कनोज पश्चिम दक्षिण देश वाले थे उनने जैनों का मत स्वीकार नहीं किया था वे जैनी वेद का अर्थ न जानकर बाहर की पोपलीला की भ्रान्ति से वेद पर भी आकर वेदों की भी निन्दा करने लगे उसके पठनपाठन यज्ञोपवीतादि और ब्रह्मचर्यादि नियमों को भी नाश किया जहां जितने पुस्तक वेदादि के पाये नष्ट किये आर्यों पर बहुत सी राजसत्ता भी चलाई जब उनको भयशंका न रही तब अपने मत वाले गृहस्थ और साधुओं की प्रतिष्ठा और वेदमार्गियों का अपमान और पक्षपात से दण्ड भी देने लगे और आप सुख आराम और घमंड में आ फूल कर फिरने लगे ऋषभदेव से लेके महावीर पर्यन्त अपने तीर्थंकरों की बड़ी २ मूर्तियां बना कर पूजा करने लगे अर्थात् पाषाणादि मूर्त्तिपूजा की जड़ जैनियों से प्रचलित हुई परमेश्वर का मानना कम हुआ पाषाणादि मूर्त्तिपूजा में लगे ऐसा तीन सौ वर्ष पर्यन्त आर्यावर्त्त में जैनों का राज्य रहा प्रायः वेदार्थज्ञान से शून्य हो गये थे इस बात को अनुमान से अढ़ाई हजार वर्ष व्यतीत हुए होंगे बाईस सौ वर्ष हुए कि एक शंकराचार्य द्रविड़ देशोत्पन्न ब्राह्मण ब्रह्मचर्य से व्याकरणादि सब शास्त्रों को पढ़ कर सोचने लगे कि अहह सत्य आस्तिक वेदमत का छूटना और जैन नास्तिक मत का चलना बड़ी हानि की बात हुई है इनको किसी प्रकार हटाना चाहिये शंकराचार्य शास्त्र तो पढ़े ही थे परन्तु जैन मत के भी पुस्तक पढ़े थे और उनकी युक्ति भी बहुत प्रबल थी उन्होंने विचारा कि इनको किस प्रकार हटावें निश्चय हुआ कि उपदेश और शास्त्रार्थ करने से ये लोग हटेंगे ऐसा विचार कर उज्जैन नगरी में आये वहां उस समय सुधन्वा राजा था जो जैनियों के ग्रन्थ और कुछ संस्कृत भी पढ़ा था वहां जाकर वेद का उपदेश करने लगे और राजा से मिल कर कहा कि आप संस्कृत और जैनियों के भी ग्रन्थों को पढ़े हो और जैन मत को मानते हो इसवास्ते

आपको मैं कहता हूं कि जैनियों के पंडितों के साथ मेरा शास्त्रार्थ कराइये इस प्रतिज्ञा पर जो हारे सो जीतने वाले का मत स्वीकार करले और आप भी जीतने वाले का मत स्वीकार कीजियेगा यद्यपि सुधन्वा जैन मत में थे तथापि संस्कृत ग्रंथ पढ़ने से उनकी बुद्धि में कुछ विद्या का प्रकाश था इससे उनके मन में अत्यन्त पशुता नहीं छाई थी क्योंकि जो विद्वान् होता है वह सत्याऽसत्य की परीक्षा करके सत्य का ग्रहण और असत्य को छोड़ देता है। जब तक सुधन्वा राजा को बड़ा विद्वान् उपदेशक नहीं मिला था तब तक सन्देह में थे कि इन में कौन सा सत्य और कौन सा असत्य है जब शंकराचार्य की यह बात सुनी और बड़ी प्रसन्नता के साथ बोले कि हम शास्त्रार्थ करा के सत्याऽसत्य का निर्णय अवश्य करावेंगे जैनियों के पंडितों को दूर २ से बुला कर सभा कराई उसमें शंकराचार्य का वेद मत और जैनियों का वेद विरुद्ध मत था अर्थात् शंकराचार्य का पक्ष वेद मत का स्थापन और जैनियों का खंडन और जैनियों का पक्ष अपने मत का स्थापन और वेद का खंडन था। शास्त्रार्थ कई दिनों तक हुआ जैनियों का मत यह था कि सृष्टि का कर्त्ता अनादि ईश्वर कोई नहीं यह जगत् और जीव अनादि हैं इन दोनों की उत्पत्ति और नाश कभी नहीं होता इससे विरुद्ध शंकराचार्य का मत था कि अनादि सिद्ध परमात्मा ही जगत् का कर्त्ता है यह जगत् और जीव झूंठा है क्योंकि उसी परमेश्वर ने अपनी माया से जगत् बनाया वही धारण और प्रलय कर्त्ता है और यह जीव और प्रपंच स्वप्नवत् है परमेश्वर आप ही सब रूप होकर लीला कर रहा है बहुत दिन तक शास्त्रार्थ होता रहा परन्तु अन्त में युक्ति और प्रमाण से जैनियों का मत खंडित और शंकराचार्य का मत अखंडित रहा तब उन जैनियों के पंडित और सुधन्वा राजा ने वेद मत का स्वीकार कर लिया जैन मत को छोड़ दिया पुनः बड़ा हल्ला गुल्ला हुआ और सुधन्वा राजा ने अन्य अपने इष्ट मित्र राजाओं को लिखकर शंकराचार्य से शास्त्रार्थ कराया परन्तु जैन का पराजय समय होने से पराजित होते गये पश्चात् शंकराचार्य के सर्वत्र आर्यावर्त्त देश में घूमने का प्रबंध सुधन्वादि राजाओं ने कर दिया और उसके रक्षा के लिये साथ में नौकर चाकर भी रख दिये उसी समय से सब के यज्ञोपवीत होने लगे और वेदों का पठन पाठन भी चला दश वर्ष के भीतर सर्वत्र आर्यावर्त्त देश में घूम कर जैनियों का खंडन और वेदों का मंडन किया परन्तु शंकराचार्य के समय में जैन विध्वंस अर्थात् जितनी मूर्त्तियां जैनियों की निकलती हैं वे शंकराचार्य के समय में टूटी थीं और जो बिना टूटी निकलती हैं वे जैनियों ने भूमि में गाड़ दी थीं कि तोड़ी न जावें शंकराचार्य के पूर्व शैव मत भी थोड़ा सा प्रचरित था उसका भी खंडन किया वाममार्गियों का खंडन किया उस समय इस देश में धन बहुत था और स्वदेशभक्ति भी थी जैनियों के मंदिर सुधन्वा राजा ने क्यों नहीं तुड़वाये थे किन्तु उन में वेदादि की पाठशाला करने की इच्छा थी जब वेद मत का स्थापन हो चुका और विद्या प्रचार करने का विचार करते ही थे उतने में दो जैन ऊपर से कथन मात्र वेद मत और भीतर से कट्टर जैन अर्थात् कपट मुनि थे शंकरा

चार्य्य उनपर अति प्रसन्न थे उन दोनों ने अवसर पाकर शंकराचार्य्य को ऐसी विषयुक्त वस्तु खिलाई कि उनकी क्षुधा मन्द होगई पश्चात् शरीर में फोड़े फुन्सी होकर छः महीने के भीतर शरीर छूट गया तब सब निरुत्साही होगये और जो विद्या का प्रचार होने वाला था वह भी न होने पाया जो २ उन्होंने शारीरक भाष्यादि बनाये थे उनका प्रचार शंकराचार्य्य के शिष्य करने लगे अर्थात् जो जैनियों के खंडन के वास्ते ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या और जीव ब्रह्म की एकता कथन की थी उसका उपदेश करने लगे दक्षिण में शृंगेरी पूर्व में भूगोवर्धन उत्तर में जोसी और द्वारिका में सारदामठ बांधकर शंकराचार्य्य के शिष्य महान्त बन और श्रीमान् होकर आनन्द करने लगे क्योंकि शंकराचार्य्य के पश्चात् उनके शिष्यों की बड़ी प्रतिष्ठा होने लगी। अब इसमें विचारना चाहिये कि जो जीव ब्रह्म की एकता जगत् मिथ्या शंकराचार्य्य का निज मत था तो वह अच्छा मत नहीं और जो जैनियों के खंडन के लिये उस मत का स्वीकार किया हो तो कुछ अच्छा है। नवीन वेदान्तियों का मत॥ (प्रश्न) जगत् स्वप्नवत् रज्जु में सर्प्प सीप में चांदी मृगतृष्णिका में जल गंधर्वनगर इन्द्रजालवत् यह संसार झूठा है एक ब्रह्म ही सच्चा है (सिद्धान्ती) झूठा तुम किसको कहते हो जो वस्तु न हो और प्रतीत होवे जो वस्तु ही नहीं उसकी प्रतीति कैसे हो सकती है (नवीन०) अध्यारोप से। (सिद्धा०) अध्यारोप किसको कहते हो (नवीन०) वस्तुन्यवस्त्वारोपणमध्यासः। अध्यारोपापवादाभ्यां निष्प्रपंचं प्रपंच्यते ॥ (सिद्धा०) तुम रज्जु को वस्तु और सर्प्प को अवस्तु मानकर इस भ्रमजाल में पड़े हो क्या सर्प्प वस्तु नहीं है जो कहो कि रज्जु में नहीं तो देशान्तर में और उसका संस्कार मात्र हृदय में है फिर वह सर्प्प भी अवस्तु नहीं रहा वैसे ही स्थाणु में पुरुष सीप में चांदी आदि की व्यवस्था समझ लेना और स्वप्न में भी जिनका भान होता है वे देशान्तर में हैं और उनके संस्कार आत्मा में भी हैं इसलिये वह स्वप्न भी वस्तु में अवस्तु के आरोपण के समान नहीं (नवीन०) जो कभी न देखा न सुना जैसा कि अपना शिर कटा है और आप रोता है जल की धारा ऊपर चली जाती है जो कभी न हुआ था देखा जाता है (सिद्धा०) यह भी दृष्टान्त तुम्हारे पक्ष को सिद्ध नहीं करता क्योंकि विना देखे सुने संस्कार नहीं होता संस्कार के विना स्मृति और स्मृति के विना साक्षात् अनुभव नहीं होता जब किसी से सुना वा देखा कि फलाने का शिर कटा और उसके भाई वा बाप आदि को लड़ाई में प्रत्यक्ष रोते देखा और फुहारे का जल ऊपर चढ़ते देखा वा सुना उसका संस्कार उसी के आत्मा में होता है जब वह जाग्रत् के पदार्थ से अलग होके देखता है तब अपने आत्मा में उन्हीं पदार्थों को जिनको देखा वा सुना होता है देखता है जब अपने ही में देखता है तब जानो अपना शिर कटा आप रोता और ऊपर जाती जल की धारा को देखता है यह भी वस्तु में अवस्तु के आरोपण के सदृश नहीं किन्तु जैसे नकशा निकालने वाले पूर्व दृष्ट श्रुत वा किये हुओं को आत्मा में से निकाल कर कागज पर लिख देते हैं अथवा प्रतिबिम्ब का उतारने वाला बिम्ब को देख आत्मा में आकृति को धर बराबर लिख देता है हां इतना है कि कभी २ स्वप्न में स्मरणयुक्त प्रतीति जैसा कि अपने अध्यापक को देखता है और कभी बहुत काल देखने और सुनने में अतीत ज्ञान को सा

ब्रह्म को साक्षात्कार करता है तब स्मरण नहीं रहता कि जो मैंने उस समय देखा सुना वा किया था उसी को देखता सुनता वा करता हूं जैसा जाग्रत में स्मरण करता है वैसा स्वप्न में नहीं होता इसलिये तुम्हारा अध्यास और आरोप का लक्षण झूठा है और जो वेदान्ति लोग विवर्त्तवाद अर्थात् रज्जू में सर्पादि के भान होने का दृष्टान्त ब्रह्म में जगत् के भान होने में देते हैं यह भी ठीक नहीं (नवीन) अधिष्ठान के विना अध्यस्त प्रतीत नहीं होता जैसे रज्जू न हो तो सर्प का भान भी नहीं हो सकता ~~[illegible]~~ जैसे रज्जू में सर्प तीन काल में नहीं है परन्तु अंधकार कुछ प्रकाश के मेल में अकस्मात् रज्जू को देखने से सर्प का भ्रम होकर भय से कंपता है जब उसको दीप आदि से देख लेता है उसी समय भ्रम और भय निवृत्त हो जाता है वैसे ब्रह्म में जो जगत् की मिथ्या प्रतीति हुई है वह ब्रह्म के साक्षात्कार होने में जगत् की मिथ्या प्रतीति हुई है ~~वह ब्रह्म के साक्षात्कार होने में जगत्~~ की निवृत्ति और ब्रह्म की प्रतीति जैसी कि सर्प की निवृत्ति और रज्जू की प्रवृत्ति होती है (सिद्धा०) इन से पूछना चाहिये कि ब्रह्म में जगत् का भान किसको हुआ ~~(नवीन वे० जीव कहां से हुआ (सिद्धा०)~~ (नवीन वे०) जीव को (सिद्धा०) जीव कहां से हुआ (नवीन वे०) अज्ञान से (नवीन) अज्ञान कहां से हुआ और कहां रहता है (नवीन) अज्ञान अनादि और ब्रह्म में रहता है (सिद्धा०) ब्रह्म में ब्रह्म का अज्ञान हुआ वा किसी अन्य का है और वह अज्ञान किसको हुआ (नवीन) चिदाभास को (सिद्धा०) चिदाभास का स्वरूप क्या है (नवीन) ब्रह्म, ब्रह्म को ब्रह्म का अज्ञान अर्थात् अपने स्वरूप को आप ही भूल जाता है (सिद्धा०) उसके भूलने में निमित्त क्या है (नवीन) अविद्या (सिद्धा०) अविद्या सर्वव्यापी सर्वज्ञ का गुण है वा अल्पज्ञ का (नवीन) अल्पज्ञ का (सिद्धा०) तो तुम्हारे मत में सिवाय एक अनन्त सर्वज्ञ चेतन के दूसरा कोई चेतन है वा नहीं और अल्पज्ञ कहां से आया हां जो अल्पज्ञ चेतन ब्रह्म से भिन्न मानो तो ठीक है जब एक ठिकाने ब्रह्म को अपने स्वरूप का अज्ञान हो तो सर्वत्र अज्ञान फैल जाय जैसे शरीर में फोड़े की पीड़ा सब शरीर के अवयवों को निकम्मा कर देती है इसी प्रकार ब्रह्म भी एक देश में अज्ञानी और क्लेशयुक्त हो तो सब ब्रह्म भी ~~[illegible]~~ अज्ञानी और पीड़ा के अनुभव युक्त हो जाय। (नवीन) यह सब उपाधि का धर्म है ब्रह्म का नहीं। (सिद्धा०) उपाधि जड़ है वा चेतन। सत्य है वा असत्य (नवीन) अनिर्वचनीय है अर्थात् जिसको जड़ वा चेतन सत्य वा असत्य नहीं कह सकते। (सिद्धा०) यह तुम्हारा कहना वदतोव्याघात है क्योंकि कहते हो अविद्या है जिसको जड़, चेतन, सत्, असत् नहीं कह सकते यह ऐसी बात है कि जैसे सोने में पीतल मिला हो उसको सराफ के पास परीक्षा करावे कि यह सोना है वा पीतल तब यही कहोगे कि इसको हम न सोना न पीतल कह सकते हैं किन्तु इसमें दोनों धातु मिली हैं (नवीन वे०) देखो जैसे घटाकाश, मठाकाश, मेघाकाश और महदाकाश ~~[illegible]~~ उपाधि अर्थात् घड़ा घर और मेघ के होने से भिन्न २ प्रतीत होते हैं वास्तव में महदाकाश ही है ऐसे ही माया, अविद्या समष्टि व्यष्टि और अन्तःकरणों की उपाधियों से ब्रह्म अज्ञानियों को पृथक् २ प्रतीत होता है वास्तव में एक ही है देखो अ[illegible]म प्रमाण में क्या कहा है।

। अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव । एकस्तथा सर्वभूता
न्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥ मुण्ड० अर्थ — जैसे अग्नि लंबे चौड़े गोल छो
टे बड़े [illegible] सब आकृति वाले पदार्थों में व्या
पक होकर तदाकार दीखता और उन से पृथक् है वैसे सर्वव्या
पक परमात्मा अन्तःकरणों में व्यापक होके अन्तःकरणाकार हो रहा है परन्तु उ
न से अलग है । (सिद्धा०) यह भी तुम्हारा कहना व्यर्थ है क्योंकि जैसे घट मठ और मेघों
[illegible] और आकाश को भिन्न मानते हो वैसे कारण कार्य्यरूप ज
गत् और जीव को ब्रह्म से और ब्रह्म को इन से भिन्न मान लो । (नवीन०) जैसा अग्नि सब में
प्रविष्ट होकर देखने में तदाकार दीखता है इसी प्रकार परमात्मा जड़ और जीव में व्यापक होकर

आकारवाला अज्ञानियों को दीखता है वास्तव में ब्रह्म न जड़ और न जीव है जैसे हज़ार जल के कूंडे
धरे हों उन में सूर्य्य के हज़ार प्रतिबिम्ब दीखते हैं वस्तुतः सूर्य्य एक है कूंडों के नष्ट होने से जल
के चलने वा फैलने से सूर्य्य न नष्ट होता न चलता और न फैलता इसी प्रकार अन्तः
करणों में ब्रह्म का आभास जिसको चिदाभास कहते हैं पड़ा है जब तक अन्तःकरण है
[illegible] तभी तक जीव है जब तक अन्तःकरण ज्ञान से नष्ट होता है न जीव ब्रह्म स्वरूप
है [illegible] इस चिदाभास को अपने ब्रह्मस्वरूप का अज्ञान करता, भोक्ता, सुखी, दुःखी
पापी, पुण्यात्मा, जन्म, मरण अपने में आरोपित करता है तब तक संसार के बंधनों से न
हीं छूटता । (सिद्धा०) यह दृष्टान्त तुम्हारा व्यर्थ है क्योंकि सूर्य्य आकार वाला जल कूंडे भी साकार
वाले हैं सूर्य्य जल कूंडे से भिन्न और सूर्य्य से जल कूंडे भिन्न हैं तभी प्रतिबिम्ब पड़ता है यदि निराकार होते तो
[illegible] परमेश्वर निराकार सर्वत्र आकाशवत् व्यापक होने से ब्रह्म से कोई पदार्थ वा पदार्थों से
ब्रह्म पृथक् नहीं हो सकता और व्याप्य व्यापक सम्बन्ध से एक भी नहीं हो सकता अर्थात् अन्वय व्यति
रेक भाव से देखने से व्याप्य व्यापक मिले हुए और सदा पृथक् रहते हैं जो एक होते तो अपने
में व्याप्य व्यापक भाव सम्बन्ध कभी न घट सकता सो बृहदारण्यक के अन्तर्यामी ब्राह्मण में स्पष्ट
लिखा है और ब्रह्म का आभास भी नहीं पड़ सकता क्योंकि बिना आकार के आभास का होना
असम्भव है जो अन्तःकरणोपाधि से ब्रह्म को जीव मानते हो सो तुम्हारी बात बालक के सदृश
न है अन्तःकरण चलायमान खण्ड २ और ब्रह्म अचल अ
खण्ड है जहां २ अन्तःकरण चला जायगा वहां २ के ब्रह्म को अज्ञानी और जिस २
देश देश को छोड़ेगा वहां २ का ब्रह्म ज्ञानी होता जायगा जैसे छाता प्रकाश के बीच में
जहां २ जाता है वहां २ के प्रकाश को आवरण सहित होता है वैसे ही अन्तःकरण ब्रह्म
को क्षण २ में ज्ञानी अज्ञानी बद्ध और मुक्त करता जायगा अखण्ड ब्रह्म के एक देश में आवरण का प्रभाव
सर्व देश में होने से सब ब्रह्म अज्ञानी हो जायगा क्योंकि वह चेतन है और जो मथु
रा में अन्तःकरणस्थ ब्रह्म ने जो चीज देखी उसका स्मरण उसी अन्तःकरण से काशी में नहीं हो सकता क्योंकि (अन्यदृष्टमन्यो न स्मरतीति न्यायात्) और के देखे का
स्मरण और को नहीं होता जिस चिदाभास ने मथुरा में देखा वह चिदाभास

काशीमें नहीं रहता किन्तु मथुरास्थ अन्तःकरण का प्रकाशक और काशीस्थ ब्रह्म
होता है जो ब्रह्म ही जीव है पृथक् नहीं "प्रत्यभिज्ञा" अर्थात् पूर्व दृष्ट
श्रुत का ज्ञान किसी को नहीं हो सकेगा जो कहो कि ब्रह्म एक है इसलिये स्मरण होता है तो
एक ठिकाने अज्ञान वा दुःख होने से सब ब्रह्म को अज्ञान वा दुःख हो जाना चाहिये और ऐसे ऐसे
दृष्टान्तों से नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव ब्रह्म को तुमने अशुद्ध अज्ञानी और बद्ध आ
दि दोषयुक्त कर दिया है और अखण्ड को खण्ड कर दिया (नवीन०) निराकार भी आ
भास होता है जैसा कि दर्पण वा जलादि में आकाश का आभास पड़ता है वह नीला वा
किसी अन्य प्रकार गंभीर गहरा दीखता है वैसा ब्रह्म का भी सब अन्तःकरणों में आभा
स पड़ता है (सिद्धा०) जब आकाश में रूप ही नहीं है तो उसको आंख से कोई भी नहीं देख
सकता जो पदार्थ दीखता ही नहीं वह दर्पण और जलादि में कैसे दीखेगा गहरा वा छि
दरा साकार चीज दीखता है निराकार नहीं (नवीन०) तो फिर जो यह ऊपर नीलासा दीखता है
वही आदर्श वा जल में भान होता है वह क्या पदार्थ है (सिद्धा०) वह पृथिवी से उड़कर
जल पृथिवी और अग्नि के त्रसरेणु हैं जहां से वर्षा होती है वहां जल न
हो तो वर्षा कहां से होवे इसवास्ते जो दूर दूर तम्बू के समान
दीखता है वह जल का चक्र है जैसे कुहिर दूर से घनाकार दीखता है और निकट से छिदरा
और डेरे के समान भी दीखता है वैसा आकाश में जल दीखता है (नवीन०) क्या हमारे रज्जु
सर्प और स्वप्नादि के दृष्टान्त मिथ्या हैं (सिद्धा०) नहीं तुम्हारी समझ मिथ्या है सो
हमने पूर्व लिख दिया भला यह तो कहो कि प्रथम अज्ञान किसको होता है (नवीन०)
ब्रह्म को (सिद्धा०) ब्रह्म अल्पज्ञ है वा सर्वज्ञ (नवीन०) न सर्वज्ञ और न अल्पज्ञ क्योंकि
सर्वज्ञता और अल्पज्ञता उपाधि सहित में होती है (सिद्धा०) उपाधि से सहित कौन
है (नवीन०) ब्रह्म (सिद्धा०) तो ब्रह्म ही सर्वज्ञ और अल्पज्ञ हुआ तो तुमने सर्वज्ञ और
अल्पज्ञ का निषेध क्यों किया था जो कहो कि उपाधि कल्पित अर्थात् मिथ्या है
तो कल्पक अर्थात् कल्पना करने वाला कौन है (नवीन०) जीव ब्रह्म है वा अन्य (सिद्धा०)
अन्य है क्योंकि जो ब्रह्म स्वरूप है तो जिसने मिथ्या कल्पना की वह ब्रह्म ही नहीं हो सकता
जिसकी कल्पना मिथ्या है वह सच्चा कब हो सकता है (नवीन०) हम सत्य और असत्य
को झूठ मानते हैं और वाणी से बोलना भी मिथ्या है (सिद्धा०) जब तुम झूठ कहने और मानने वाले हो तो झूठे
क्यों नहीं (नवीन०) रहो झूठ और सच हमारे ही में कल्पित है और हम दोनों के साक्षी अधिष्ठा
न हैं (सिद्धा०) जब तुम सत्य और झूठ के आधार हुए तो साहूकार और चोर के सदृ
श तुम्हीं हुए इससे तुम प्रामाणिक भी नहीं रहे क्योंकि प्रामाणिक वह होता है जो सर्व
दा सत्य माने सत्य बोले सत्य करे झूठ न माने झूठ न बोले और झूठ कदापि न करे जब तुम अप
नी बात को आपही झूठ करते हो तो तुम अपने आप मिथ्यावादी हो (नवीन०) अनादि माया
जो कि ब्रह्म के आश्रय और ब्रह्म ही का आवरण करती है उसको मानते हो वा नहीं —
(सिद्धा०) नहीं मानते क्योंकि तुम माया का अर्थ ऐसा करते हो कि जो वस्तु न हो और भासे

तो सब जीव सर्वज्ञ होना चाहिये परि ब्रह्म का प्रतिबिंब पड़ता है तो

होता है

सत्य है क्योंकि

और वाणी से बोलना भी मिथ्या है

इससे तु

हम

साक्षी

है तो इस बात को न ह मानेगा जिसके हृदय की आंख फूट गई हो क्योंकि जो वस्तु नहीं उसका भास मान होना सर्वथा असंभव है जैसे बन्ध्या के पुत्र का प्रतिबिम्ब कभी नहीं हो सकता और यह (सन्मूलाः सोम्येमाः प्रजाः) इत्यादि उपनिषदों के वचनों से विरुद्ध कहते हो (नवीन०) क्या तुम शंकराचार्य आदि और निश्चलदास पर्यन्त से अधिक पंडित हो उनने लिखा है हम को तो शंकराचार्य और निश्चलदास आदि अधिक दीखते हैं। (सिद्धा०) तुम विद्वान् हो वा अविद्वान् (नवीन०) हम भी कुछ विद्वान् हैं। (सिद्धा०) अच्छा तो वासिष्ठ शंकराचार्यादि और निश्चलदास के पक्ष का हमारे सामने स्थापन करो हम खंडन करते हैं जिसका पक्ष सिद्ध होवे वही बड़ा है जो उसकी और तुम्हारी बात अखंडनीय होती तो तुम उनकी युक्ति लेकर हमारी बात को खंडन क्यों न कर सकते तब तुम्हारी और उनकी बात माननी योग्य होवे अनुमान है कि शंकराचार्य आदि ने तो जैनियों के मत के खंडन करने ही के लिये यह मत स्वीकार किया हो क्योंकि देश काल के अनुकूल अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिये बहुत से स्वार्थी विद्वान् अपने आत्मा के ज्ञान से विरुद्ध भी कर लेते हैं और जो इन बातों को अर्थात् जीव ईश्वर की एकता जगत् मिथ्या आदि व्यवहार सच्चा नहीं मानते थे तो उनकी बात सच्ची नहीं हो सकती और निश्चलदास का पांडित्य देखो ऐसा है (जीवो ब्रह्माऽभिन्नश्चेतनत्वात्) वृत्तिप्रभा में जीव ब्रह्म की एकता के लिये अनुमान लिखा है कि चेतन होने से जीव ब्रह्म से अभिन्न है यह बहुत कम समझ पुरुष के सदृश बात है क्योंकि साधर्म्यमात्र से एक दूसरे के साथ एकता नहीं होती वैधर्म्य भेदक होता है जैसे कोई कहे कि (पृथिवीजलाऽभिन्ना जडत्वात्) जड़ के होने से पृथिवी जल से अभिन्न है जैसा यह वाक्य संगत कभी नहीं हो सकता वैसे निश्चलदास जी का भी लक्षण व्यर्थ है क्योंकि जो अल्प अल्पज्ञता और भ्रान्तिमत्त्वादि धर्म जीव में ब्रह्म से और सर्वगत सर्वज्ञता और निर्भ्रान्तित्वादि वैधर्म्य ब्रह्म में जीव से विरुद्ध है इससे ब्रह्म और जीव भिन्न रहे जैसे गंधवत्त्व कठिनत्व आदि भूमि के धर्म रसवत्त्व द्रवत्वादि जल के धर्म से विरुद्ध होने से पृथिवी और जल एक नहीं वैसे जीव और ब्रह्म के वैधर्म्य होने से जीव और ब्रह्म एक न कभी थे न हैं और न कभी होंगे इतने ही से निश्चलदासादि को समझ लीजिये कि उनमें कितना पांडित्य था और जिसने योगवासिष्ठ बनाया है वह कोई आधुनिक वेदान्ती था न वाल्मीकि वसिष्ठ और रामचन्द्र का बनाया वा कहा सुना है क्योंकि वे सब वेदानुयायी थे वेद से विरुद्ध न बना सकते और न कह सुन सकते थे।

(प्रश्न) क्या व्यास जी ने जो शारीरिक सूत्र बनाये हैं उनमें भी जीव ब्रह्म की एकता दीखती है देखो (सम्पद्याऽऽविर्भावः स्वेन शब्दात् ॥१॥ ब्राह्मेण जैमिनिरुपन्यासादिभ्यः ॥२॥ चितितन्मात्रेण तदात्मकत्वादित्यौडुलोमिः ॥३॥ एवमप्युपन्यासात्पूर्वभावादविरोधं बादरायणः ॥४॥ अत एव चानन्याधिपतिः ॥५॥) अर्थ—जीव अपने स्वस्वरूप को प्राप्त होकर प्रकट होता है जो कि पूर्व ब्रह्मस्वरूप था क्योंकि स्व शब्द से अपने ब्रह्मस्वरूप का

प्राप्त होता है ।१। अयमात्मा अपहतपाप्मा इत्यादि उपन्यास ऐश्वर्य्यप्रा
प्तिपर्य्यन्त हेतुओं से ब्रह्म स्वरूप से जीव स्थित होता है ऐसा जैमिनि आचार्य्य का मत
है ।२। और औडुलोमि आचार्य्य तदात्मक स्वरूप निरूपणादि बृहदारण्यक
के हेतुरूप के वचनों से चैतन्यमात्र स्वरूप से जीव मुक्ति में स्थित रहता है ।३। व्या
सजी इन्हीं पूर्वोक्त उपन्यासादि ऐश्वर्य्य प्राप्ति रूप हेतुओं से जीव का ब्रह्मस्वरूप
होने में अविरोध मानते हैं ।४। योगी ऐश्वर्य्य सहित अपने ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त
होकर अन्य अधिपति से रहित अर्थात् स्वयं आप अपना और सब का अधिप
तिरूप ब्रह्म स्वरूप से मुक्ति में स्थित रहता है ।(उत्तर) इन सूत्रों का अर्थ इस
प्रकार का नहीं [illegible] किन्तु जबतक जीव अपने स्वकीय शुद्ध स्वरूप को प्राप्त
सब मलों से रहित होकर पवित्र नहीं होता तबतक योग से ऐश्वर्य्य को प्राप्त हो
कर अपने अन्तर्यामी ब्रह्म को प्राप्त होके आनन्द में स्थित नहीं हो सकता ।१।
इसी प्रकार जब पापादि रहित ऐश्वर्य्य युक्त योगी होता है तभी ब्रह्म के साथ मुक्ति
के आनन्द को भोग सकता है ऐसा जैमिनि आचार्य्य का मत है ।२। जब अविद्यादि
दोषों से छूट शुद्ध चैतन्य मात्र स्वरूप से जीव स्थिर होता है तभी (तदात्मकत्व) अर्था
त् ब्रह्म स्वरूप के साथ सम्बन्ध को प्राप्त होता है ॥३॥ जब ब्रह्म के साथ ऐश्वर्य्य
और शुद्ध विज्ञान को जीते ही जीवन्मुक्त होता है तब अपने निर्मल [illegible]
स्वरूप को [illegible] होकर आनन्दित होता है [illegible] ऐसा व्यास मुनिजी का मत है ।४।
जब योगी का सत्य संकल्प होता है तब स्वयं परमेश्वर को प्राप्त होकर मुक्ति सुख
को पाता है वहां स्वाधीन स्वतंत्र रहता है जैसा संसार में एक प्रधान दूसरा अप्र
धान होता है वैसा मुक्ति में नहीं किन्तु सब मुक्त जीव एकसे रहते हैं ।५। जो
ऐसा न हो तो:- नेतरोऽनुपपत्तेः ।१। भेदव्यपदेशाच्च ।२। विशेषण
भेदव्यपदेशाभ्यां नेतरौ ।३। अस्मिन्नस्य च तद्योगं शास्ति ।४। प्रकाशादिवच्चैवं परः ।७।
अन्तस्तद्धर्मोपदेशात् ।५। भेदव्यपदेशाच्चान्यः ।६। गुहां प्रविष्टा
वात्मानौ हि तद्दर्शनात् ।७। अनुपपत्तेस्तु न शारीरः ।८। शारी
रश्चोभयेऽपि हि भेदेनैनमधीयते [illegible] ।१०। व्यास मुनिकृत वेदान्त
सूत्र । अर्थ-ईश्वर से इतर जीव सृष्टिकर्त्ता नहीं है क्योंकि इस अल्प अल्पज्ञ सामर्थ्य
वाले जीव में सृष्टिकर्तृत्व नहीं घट सकता इससे जीव ब्रह्म नहीं ।१। (रसं ह्ये
वायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति) यह उपनिषद् का वचन है। जीव और ब्रह्म
भिन्न हैं क्योंकि इन दोनों का भेद प्रतिपादन किया है जो ऐसा न होता तो रस
अर्थात् आनन्दस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त होकर जीव आनन्दस्वरूप होता है यह
प्राप्ति विषय ब्रह्म और प्राप्त होनेवाले जीव का निरूपण नहीं घट सकता इसलिये
[illegible] जीव और ब्रह्म एक नहीं ।२। दिव्यो ह्यमूर्त्तः पुरुषः सबाह्याभ्य
न्तरो ह्यजः। अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः ॥ मुंडक उप०

दिव्य शुद्ध मूर्त्तिमत्व रहित सब में पूर्ण बाहर भीतर निरन्तर व्यापक अज जन्म म
रण शरीर धारणादि रहित श्वास प्रश्वास शरीर और मन के सम्बन्ध से रहित प्रका
श स्वरूप इत्यादि परमात्मा के विशेषण और अक्षर नाश रहित प्रकृति ~~उससे~~ परे
अर्थात् सूक्ष्म जीव उससे भी परमेश्वर परे अर्थात् सूक्ष्म है प्रकृति और जीवों से ब्रह्म
ब्रह्म का भेद प्रतिपादन रूप हेतुओं से प्रकृति और जीवों से भिन्न है । ३ । इसी सर्वव्या
पक ब्रह्म में जीव का योग वा जीव में ब्रह्म का योग प्रतिपादन करने से जीव और ब्रह्म
भिन्न हैं क्योंकि योग भिन्न पदार्थों का हुआ करता है । ४ । इस ब्रह्म के अन्तर्या
मि आदि धर्म कथन किये हैं और जीव के भीतर व्यापक होने से व्याप्य जीव व्यापक ब्रह्म
से भिन्न है क्योंकि व्याप्य व्यापक सम्बन्ध भी भेद में संघटित होता है । ५ । जैसे परमा
त्मा जीव से भिन्न स्वरूप है वैसे इन्द्रिय अन्तःकरण, पृथिवी आदि भूत दिशा वायु विद्वानों
सूर्यादि दिव्य गुणों के योग से देवतावाच्य से भी परमात्मा भिन्न है । ६ । गुहां प्रवि
ष्टौ सुकृतस्य लोके । इत्यादि उपनिषदों के वचनों से जीव और परमात्मा भिन्न हैं । वैसा
ही उपनिषदों में बहुत ठिकाने दिखलाया है । ७ । शरीरे भवः शारीरः । शरीरधा
री जीव ब्रह्म नहीं है क्योंकि ब्रह्म के गुण कर्म स्वभाव जीव में नहीं घटते । ८ । (अधिदैव)
मन आदि इन्द्रियादि सब दिव्य पदार्थों (अधिभूत) पृथिव्यादि भूत (अध्यात्म) सब जीवों में परमात्मा अन्त
र्यामी रूप से स्थित है क्योंकि उसी परमात्मा के व्यापकत्वादि धर्म सर्वत्र उपनिषदों में
व्याख्यात हैं । ९ । शरीरधारी जीव ब्रह्म नहीं है क्योंकि ब्रह्म से जीव का भेद स्वरूप से सि
द्ध है । १० । इत्यादि शारीरक सूत्रों से भी स्वरूप से ब्रह्म और जीव का भेद सिद्ध है ।
वैसे ही वेदान्तियों का उपक्रम और उपसंहार भी नहीं घट सकता क्योंकि (उपक्रम)
अर्थात् आरंभ ब्रह्म से और (उपसंहार) अर्थात् प्रलय भी ब्रह्म ही में करते हैं जब दू
सरा कोई वस्तु नहीं मानते तो उत्पत्ति और प्रलय भी ब्रह्म के धर्म हो जाते हैं और वेदादि सत्य
उत्पत्ति विनाश रहित ब्रह्म का प्रतिपादन किया है वह नवीन ~~वे~~ वेदान्तियों पर को शास्त्रों में
प करेगा क्योंकि ब्रह्म निर्विकार, अपरिणामि शुद्ध, सनातन, निर्भ्रान्तित्वादि वि
शेषण युक्त ब्रह्म में विकार, उत्पत्ति और अज्ञान आदि का संभव किसी प्रकार न
हीं हो सकता तथा ~~आदि का संभव किसी प्रकार नहीं हो सकता~~ उपसंहार प्रलय
के होने पर भी ब्रह्म कारणात्मक जड़ और जीव बराबर बने रहते हैं इसलिये
उपक्रम और उपसंहार भी इन वेदान्तियों की अन्य बहुत सी अशुद्ध बातें हैं कि जो कल्पना झूठी है
शास्त्र और प्रत्यक्षादि प्रमाणों से विरुद्ध हैं । इसके पश्चात् कुछ जैनियों और कुछ ऐसी
शंकराचार्य के अनुयायी लोगों का उपदेश के संस्कार आर्यावर्त्त में फैले थे
और आपस में खंडन मंडन भी चलता था । शंकराचार्य के तीन सौ वर्ष के
पश्चात् उज्जैन नगरी में विक्रमादित्य राजा कुछ प्रतापी हुआ जिसने सब राजा
ओं के मध्य प्रवृत्त हुई लड़ाई को मिटाकर शान्ति स्थापन की तत्पश्चात् भर्त्तृ
हरी राजा काव्यादि शास्त्र और अन्य में भी कुछ २ विद्वान् हुआ वह वैराग्यवान्

होकर राज्यको छोड़ दिया। विक्रमादित्य के पांचसौ वर्षों के पश्चात् राजा भोज हुआ उसने थोड़ा
सा व्याकरण और काव्यालंकारादि का इतना प्रचार किया कि जिसके राज्य में कालीदास बक
री चराने वाला भी रघुवंश काव्य का कर्त्ता हुआ राजा भोज जो कोई अच्छा श्लोक बनाकर ले जा
ता था उसको बहुत सा धन देते थे और प्रतिष्ठा होती थी। उसके पश्चात् राजाओं और
श्रीमानों ने पढ़ना ही छोड़ दिया, यद्यपि शंकराचार्य के पूर्व वाममार्गियों के प
श्चात् शैव आदि सम्प्रदायस्थ मतवादी भी हुए थे परन्तु उनका बहुत बल नहीं हुआ
था महाराजे विक्रमादित्य से लेके शैवों का बल बढ़ता आया शैवों में पाशुपतादि बहुत
सी शाखा हुई थीं जैसी वाममार्गियों में दश महाविद्यादि की शाखा हैं शंकराचा लोगों ने
र्य को शिव का अवतार ठहराया, उनके अनुयायी संन्यासी भी शैवमत में प्रवृत्त हो गए हैं इस
ये और वाममार्गियों को भी मिलते रहे वाममार्गी देवी जो शिव की पत्नी है के उपास
क और शैव महादेव के उपासक हुए ये दोनों रुद्राक्ष और भस्म अद्यावधि धारण
करते हैं परन्तु जितने वाममार्गी वेदविरोधी नहीं हैं इन लोगों में। (धिग्धिक्क
पालं भस्मरुद्राक्षविहीनम्॥१॥ रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्त
के विंशती द्वे षट् षट् कर्णप्रदेशे करयुगलगतान्द्वादश द्वादशैव। बा
ह्वोरिन्दोः कलाभिः पृथगिति गणितमेकमेवं शिखायां वक्षस्यष्टाधिकं
यः कलयति शतकं स स्वयं नीलकण्ठः॥२॥) इत्यादि बहुत प्रकार के श्लो
क बनाये और कहने लगे कि जिसके कपाल में भस्म और कण्ठ में रुद्राक्ष नहीं
है उसको धिक्कार है (तं त्यजेदन्त्यजं यथा) उसको चांडाल के तुल्य त्याग कर
ना चाहिये॥१॥ जो कण्ठ में ३२ शिर में ४०, छः छः कानों में, बारह २ ~~भुजा~~
~~ओं में~~ करों में, सोलह २ भुजाओं में, एक शिखा में और हृदय में
१०८ रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् महादेव के सदृश है॥२॥ ऐसा
ही शाक्त भी मानते हैं पश्चात् इन वाममार्गी और शैवों ने सम्मति करके भगलिंग का
स्थापन किया जिसको जलाधारी और लिंग कहते हैं और उसकी पूजा करने लगे उन नि
र्लज्जों को तनिक भी लज्जा न आई कि यह [illegible] हम क्यों करते हैं। किसी
कवि ने कहा है कि (स्वार्थी दोषं न पश्यति) मतलबी लोग अपने स्वार्थ सिद्ध करने में
दोषकों नहीं देख
दुष्ट कामों को भी श्रेष्ठ मान लेते हैं उसी पाषाणादि भगलिंग की पूजा में सारे धर्म,
अर्थ, काम, मोक्ष, आदि सिद्धियां मानने लगे जब राजा भोज के पश्चात् जैनी लोग अप
ने मंदिरों में मूर्ति स्थापन करने और दर्शन स्पर्शन को आने जाने लगे तब तो इन पो
पों के चेले भी जैन मंदिर में आने जाने लगे और उधर पश्चिम में कुछ दूसरों के म
त और यवन लोग आर्यावर्त्त में आने जाने भी लगे तब पोपों ने यह श्लोक बनाया। (न
वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि। हस्तिना ताड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमं
दिरम्॥१॥) चाहे कितना ही दुःख प्राप्त हो और प्राण कण्ठगत अर्थात् मृत्यु का स
मय भी क्यों न आया हो तो भी म्लेच्छ अर्थात् यावनी भाषा मुखसे न बोलनी और उन्मत्त

हस्ती मारने को क्यों न दौड़ा आता हो तो भी जैन के मंदिर में जाने से प्राण बचाता हो तो भी जैन मन्दिर में प्रवेश न करे किन्तु हाथी के सामने जाकर मर जाना अच्छा है ऐसे अपने चेलों को उपदेश करने लगे जब उनसे कोई प्रमाण पूछता था कि तुम्हारे मत में किसी माननीय ग्रन्थ का भी प्रमाण है तो कहते थे कि हां है जब वे पूछते थे कि दिखलाओ तब मार्कण्डेय पुराणादि के वचन पढ़ते और सुनाते थे जैसा कि दुर्गापाठ में देवी का वर्णन लिखा है राजा भोज के राज्य में व्यासजी के नाम से मार्कण्डेय और शिव पुराण किसी ने बनाकर खड़ा किया था उसकी खबर राजा भोज को होने से उन पंडितों को हस्तछेदनादि दंड दिया और उनसे कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रंथ बनावे तो अपने नाम से बनावे ऋषि मुनियों के नाम से नहीं यह बात राजा भोज का बनाया संजीवनी नामक इतिहास में लिखी है कि जो ग्वालियर के राज्य भिंड नामक सहर के तिवाड़ी ब्राह्मणों के घर में है जिसको लखना के राव साहेब और उनके गुमास्ते रामदयाल चौबेजी ने अपनी आंख से देखा है उसमें स्पष्ट लिखा है कि व्यासजी ने चार हजार चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच हजार छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् सब दश हजार श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था वह महाराजे विक्रमादित्य के समय में बीस हजार, महाराजे भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में पचीस और अब मेरी आधी उमर में तीस हजार श्लोकयुक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊंट का बोझ हो जायगा और ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रंथ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़के वैदिक धर्म विहीन होके भ्रष्ट हो जायंगे इससे विदित होता है कि राजा भोज को कुछ वेदों का संस्कार था इनके भोज प्रबंध में लिखा है कि (घट्यैकया क्रोशदशैकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चारुगत्या। वायुं ददाति व्यजनं विना मनुष्येण चलत्यजस्रम् ॥ १॥ राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे २ शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार एक यान यंत्रकलायुक्त बनाया था कि जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घंटे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था वह भूमि अन्तरिक्ष में भी चलता था और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि कलायंत्र के बल से नित्य चला करे और पुष्कल वायु देवे जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते जब पोपजी अपने चेलों को जैनियों से रोकने लगे तो भी मन्दिरों में जाने से न रुक सके और जैनियों की कथा में भी लोग जाने लगे जैनियों के पोप इन पुराणियों के पोपों के चेलों को बहकाने लगे तब पुराणियों ने विचारा कि इसका कोई उपाय करना चाहिये नहीं तो अपने चेले जैनी हो जायंगे पश्चात् पोपों ने यही सम्मति की कि जैनियों के सदृश अपने भी मंदिर मूर्त्ति और कथा के पुस्तक बनावें इन लोगों ने जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों के सदृश चौबीस अवतार मन्दिर और मूर्त्तियां बनाईं और जैनियों के आदि और उत्तर पुराणादि हैं वैसे अठारह पुराण बनाने लगे राजा भोज के डेढ़ सौ वर्ष के पश्चात् वैष्णव मत का आरंभ हुआ एक शठकोप नामक कंजरवर्ण में उ

जैन मंदिर में प्रवेश न करना बतलाते थे

विना मनुष्य के बल से

ता था

ता और

जैसे

त्पन्न से थोड़ा सा चला उसके पश्चात् मुनिवाहन भंगी कुलोत्पन्न और तीसरा यावनाचार्य यवनकुलोत्पन्न आचार्य हुए तत्पश्चात् ब्राह्मण कुलज चौथा रामानुज हुआ उनने अपना मत फैलाया शैवों ने शिव पुराणादि शाक्तों ने देवीभागवतादि वैष्णवों ने विष्णु पुराणादि बनाये उनमें अपना नाम इसलिये नहीं धरा कि हमारे नाम से बनेंगे तो कोई प्रमाण न करेगा इसलिये व्यासादि ऋषि मुनियों के नाम धर के पुराण बनाये नाम भी इनका वास्तव में नवीन रखना चाहिये था परन्तु जैसे कोई दरिद्र अपने बेटे का नाम महाराजाधिराज और आधुनिक पदार्थ का नाम सनातन रख दे तो क्या आश्चर्य है। अब इनके आपस में जैसे झगड़े हैं वैसे ही पुराणों में भी धरे हैं देखो देवीभागवत में (श्री) नामा एक देवी स्त्री जो श्रीपुर की स्वामिनी लिखी है उसी ने सब जगत् को बनाया और ब्रह्मा विष्णु महादेव को भी उसी ने रचा जब उस देवी की इच्छा हुई तब उसने अपना हाथ घिसा उससे हाथ में एक छाला हुआ उसमें से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई उससे देवी ने कहा कि तू मुझसे विवाह कर ब्रह्मा ने कहा कि तू मेरी माता लगती है मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकता सुनकर माता को क्रोध चढ़ा और लड़के को भस्म कर दिया और फिर हाथ घिसके उसी प्रकार दूसरा लड़का उत्पन्न किया उसका नाम विष्णु रक्खा उससे भी उसी प्रकार तीसरे लड़के को उत्पन्न करा उसका नाम महादेव रक्खा और उससे कहा कि तू मुझसे विवाह कर महादेव बोला कि मैं तुझसे विवाह नहीं कर सकता तू दूसरी स्त्री का शरीर धारण कर वैसा ही देवी ने किया तब महादेव बोला कि ये दो ठिकाने राख सी क्या पड़ी है देवी ने कहा कि ये दोनों तेरे भाई हैं इन्होंने मेरी आज्ञा न मानी इसलिये भस्म कर दिये महादेव ने कहा कि मैं इकेला क्या करूंगा इनको जिला दे और दो स्त्री और उत्पन्न कर तीनों का विवाह तीनों से होगा ऐसा ही देवी ने किया फिर तीनों का तीनों के साथ विवाह हुआ वाह रे माता से विवाह न किया और बहिन से कर लिया क्या इसको उचित समझना चाहिये पश्चात् इन्द्रादि को उत्पन्न किया ब्रह्मा विष्णु रुद्र और इन्द्र इनको पालकी के उठाने वाले कहार बनाया इत्यादि गपोड़े लम्बे चौड़े मनमाने लिखे हैं कोई उनसे पूछे कि उस देवी का शरीर और उस श्रीपुर का बनाने वाला और देवी के पिता माता कौन थे जो कहो कि देवी अनादि है तो जो संयोगजन्य वस्तु है वह अनादि कभी नहीं हो सकता जो माता पुत्र के विवाह करने में डरे तो भाई बहिन के विवाह में कौन सी अच्छी बात निकलती है जैसी इस देवीभागवत में महादेव विष्णु और ब्रह्मादि की क्षुद्रता और देवी की बड़ाई लिखी है इसी प्रकार शिवपुराण में देवी आदि की बहुत क्षुद्रता लिखी है अर्थात् ये सब महादेव के दास और महादेव सब का ईश्वर है जो रुद्राक्ष अर्थात् एक वृक्ष के फल की गोठली और राख धारण करने से मुक्ति मानते हैं तो राख में लोटने और घुंघुची आदि के धारण करने वाले भील कंजर आदि मुक्ति को जावें और सूअर कुत्ते गधा आदि पशु राख में लोटने वालों की मुक्ति क्यों नहीं होती। (प्रश्न) कालाग्निरुद्रोपनिषद् में भस्म लगाने का विधान लिखा है वह क्या झूठा है और (त्र्यायुषं जमदग्नेः) यजुर्वेद वचन। इत्यादि वेद मंत्रों से भी

करने

उससे भी उसी प्रकार कहा उसने भी न माना तो उसको भी राख कर दिया

हारे गए ... आदि

भस्मधारण का विधान और पुराणों में रुद्र की आंख के अश्रुपात से जो वृक्ष हुआ उसी का नाम रुद्राक्ष है इसीलिये उसके धारण में पुण्य लिखा है एक भी रुद्राक्ष धारण करे तो सब पापों से छूट स्वर्ग को जाय और यमराज और नरक का डर न रहे। (उत्तर) काला मिरुद्रोपनिषद् किसी रखोडिया आदमी अर्थात् राख धारण करने वाले ने बनाई है क्योंकि (यास्य प्रथमा रेखा सा भूर्लोकः) इत्यादि वचन अनर्थक हैं जो प्रतिदिन हाथ से बनाई रेखा है वह भूलोक वा इसका वाचक कैसे हो सकता है और जो (त्र्यायुषं जमदग्नेः) इत्यादि मंत्र हैं वे भस्म वा त्रिपुंड्र धारण के नहीं (चक्षुर्वै जमदग्निः) शतप० वाची हैं ही बिनते।

(आपद्यमान) हे परमेश्वर मेरे नेत्र की ज्योति त्रिगुणी अर्थात् तीन सौ वर्ष पर्यन्त रहे और मैं भी ऐसे धर्म के काम करूं कि जिस से दृष्टिनाश न हो भला यह कितनी बड़ी मूर्खता की बात है कि आंख के अश्रुपात से कभी वृक्ष उत्पन्न हो सकता है क्या परमेश्वर की सृष्टिक्रम को कोई अन्यथा कर सकता है जैसा जिस वृक्ष का बीज परमात्मा ने रचा है उसी से वह वृक्ष उत्पन्न हो सकता है अन्यथा नहीं इससे जितना रुद्राक्ष भस्म तुलसी कमला घास चन्दन आदि को कण्ठ में धारण करना है वह बहुत जंगली पशुवत् मनुष्य का काम है ऐसे वाममार्गी और शैव बहुत मिथ्याचारी विरोधी और कर्त्तव्यकर्म के त्यागी होते हैं उनमें जो कोई श्रेष्ठ पुरुष है वह इन बातों का विश्वास न करके अच्छे कर्म करता है जो रुद्राक्ष भस्म से यमराज डरते हैं तो पुलिस के सिपाही भी डरते होंगे जब रुद्राक्ष भस्म धारण करने वालों से कुत्ता सिंह सर्प बिच्छू और मच्छर आदि भी नहीं डरते तो न्यायाधीश के क्या डरेंगे (प्रश्न) वाममार्गी और शैव तो अच्छे नहीं परन्तु वैष्णव तो अच्छे हैं (उत्तर) यह भी वेदविरोधी होने से उनसे भी अधिक बुरे हैं (प्रश्न) (नमस्ते रुद्र मन्यवे। विष्णवे त्वा। गणानां त्वा गणपतिं हवामहे। भगवती भूयाः। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च) इत्यादि वेदप्रमाणों से शैवादि मत सिद्ध होते हैं पुनः क्यों खंडन करते हो (उत्तर) इन वचनों से शैवादि संप्रदाय सिद्ध नहीं होते क्योंकि (रुद्र) परमेश्वर प्राणादि वायु जीव अग्नि आदि का नाम है जो क्रोधकर्त्ता रुद्र अर्थात् दुष्टों को रुलाने वाले परमात्मा को नमस्कार करना प्राण और जठराग्नि को अन्न देना (नम इति अन्ननाम-निघं० २।७) जो मङ्गलकारी सब संसार का अत्यन्त कल्याण करने वाला है उस परमात्मा को नमस्कार करना चाहिये (शिवस्य परमेश्वरस्यायं भक्तः शैवः। विष्णोः परमात्मनोऽयं भक्तो वैष्णवः। गणपतेः सकलसामिनोऽयं सेवको गाणपतः। भगवत्या वाण्या अयं सेवकः भागवतः। सूर्यस्य चराचरस्यात्मनोऽयं सेवकः सौरः) यह सब रुद्र, शिव, विष्णु, गणपति, सूर्यादि परमेश्वर के और भगवती सत्यभाषणयुक्त वाणी का नाम है। इसमें बिना समझे ऐसा झगड़ा मचाया है जैसे एक किसी वैरागी के दो चेले थे वे प्रतिदिन गुरु के पग दाबा करते थे एक ने दहिना पग और दूसरे ने बांयें पग की सेवा करनी बांट ली थी एक दिन ऐसा हुआ कि एक चेला कहीं बजार हाट को चला गया और दूसरा अपने सेव्य पग की सेवा कर रहा था इतने में गुरुजी ने करवट फेरा तो उसके पग

है बहुत ब

भ करी

भक्त

ऐसा

पर दूसरे गुरुभाई का सेव्य पग पड़ा उसने ले डंडा पग पर धर मारा गुरु ने कहा कि
अरे दुष्ट तूंने यह क्या किया. चेला बोला कि मेरे सेव्य पग के ऊपर यह पग क्यों
आ चढ़ा. इतने में दूसरा चेला जो कि बजार हाट को गया था आ पहुंचा वह भी
अपने सेव्य पग की सेवा करने लगा देखा तो पग सूजा पड़ा है बो
ला हे गुरु जी यह मेरे सेव्य पग में क्या हुआ गुरु ने सब वृत्तान्त सुना दिया वह
भी मूर्ख न बोला न चाला चुप चाप डंडा उठा के बड़े बल से गुरु के दूसरे पग में
मारा तो गुरु ने उच्च स्वर से पुकार मचाई तब तो दोनों चेले डंडा ले पड़े और गुरु के
पग को पीटने लगे तब तो बड़ा कोलाहल मचा और लोग सुनकर आये कहने
लगे कि साधु जी क्या हुआ उन में से किसी बुद्धिमान पुरुष ने साधु को
छुड़ा के पश्चात् उन मूर्ख चेलों को उपदेश किया कि देखो ये दोनों पग तुम्हारे गु
रु के हैं उन दोनों की सेवा करने से उसी को सुख पहुंचता और दुःख देने से भी उसी
एक को दुःख होता है. जैसे एक गुरु की सेवा में चेलाओं ने लीला की इसी प्रका
र महा मूर्ख संप्रदायी लोगों ने एक अखंड सच्चिदानन्दा
नन्त स्वरूप परमात्मा के विष्णु रुद्रादि अनेक नाम हैं इन नामों के
अर्थ जैसे कि प्रथम समुल्ला में प्रकाश कर आये हैं उस सत्यार्थ को न जान
कर शैव शाक्त वैष्णवादि संप्रदायी लोक परस्पर एक दूसरे नाम की निन्दा
करते हैं मन्दमति तनिक भी अपनी बुद्धि को फैला कर नहीं विचारते हैं कि ये
सब नाम एक अद्वितीय सर्वनियन्ता सर्वान्तर्यामी जगदीश्वर के अनेक गुण
कर्म स्वभाव युक्त होने से उसी के वाचक विष्णु रुद्र शिव आदि नाम हैं भला ऐ
से मूर्खों पर ईश्वर का कोप न होता होगा. अब देखिये चक्रांकित वैष्णवों की
अद्भुत माया (तापः पुंड्र तथा नाम माला मंत्र स्तथैव च । अमी हि पंच
संस्काराः परमैकान्त हेतवः ॥ १ ॥ अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते इति श्रुतेः)
अर्थ — (तापः) अर्थात् शंख, चक्र, गदा और पद्म के चिन्हों को अग्नि में तपा के
भुजा के मूल में दाग देकर पश्चात् दुग्ध युक्त पात्र में बुझाते हैं
और कहते हैं कि बिना शंख चक्रादि से शरीर तपाये जीव परमेश्वर को प्रा
प्त नहीं होता क्योंकि वह (आमः) अर्थात् कच्चा है और जैसे राज्य के चपरास आदि चि
न्हों के होने से राज पुरुष जान के सब से सब लोग डरते हैं वैसे ही विष्णु के शंख चक्रादि
आयुधों के चिन्ह देख कर यमराज और उन के गण डरते हैं और कहते हैं कि (बाना
बड़ा दयाल का तिलक छाप और माला यम डरै काल कहे भय मानै भूपाल) भगवान्
का बाना तिलक छाप और माला धारण करना बड़ा है जिस से यमराज और राजा भी डरता है
(पुंड्रम्) अर्थात् त्रिशूल के सदृश ललाट में चित्र निकालना (नाम) नारायणदास
विष्णुदास, अर्थात् दासशब्दान्त नाम रखना (माला) कमल गट्टे की रखनी और पांचवां (मंत्र) जैसे:
ओं नमो नारायणाय, यह इन्होंने साधारण मनुष्यों के लि

ये मंत्र बनाए के हैं ओं श्रीमन्नारायणचरणं शरणं प्रपद्ये। श्रीमते नारायणाय नमः। श्रीमते रामानुजाय नमः। ३। इत्यादि मंत्र धनाढ्य और माननीयों के लिये बनाए के हैं। देखिये यह भी एक दुकान ठहरी! जैसा मुख वैसा तिलक। इन पांच संस्कारों को चक्रांकित मुक्ति के हेतु मानते हैं। इन मंत्रों का अर्थ—मैं नारायण को नमस्कार करता हूं॥१॥ और मैं लक्ष्मीयुक्त नारायण के चरणारविन्द के शरण को प्राप्त होता हूं॥२॥ और श्रीयुत नारायण को नमस्कार करता हूं। जो शोभायुक्त नारायण है उसको मेरा नमस्कार होवे। जैसे वाममार्गी पांच मकार मानते हैं वैसे चक्रांकित पांच संस्कार मानते हैं और अपने शंख चक्र से दागने के लिये जो वेदमंत्र का प्रमाण रक्खा है उसका इस प्रकार का पाठ है। पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः। अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥१॥ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे॥२॥ ऋ० मं० ९ सू० ८३ मंत्र १। २। अर्थ—हे ब्रह्माण्ड और वेदों के पालन करने वाले प्रभु सर्वसामर्थ्ययुक्त सर्वशक्तिमान् आप अपनी व्याप्ति से संसार के सब अवयवों को व्याप्त कर रहे हैं उस आपका जो व्यापक स्वरूप है उसको ब्रह्मचर्य सत्यभाषण शम दम योगाभ्यास जितेन्द्रिय सत्संगादि तपश्चर्या से रहित जो अपरिपक्व आत्मा अन्तःकरणयुक्त है वह उस तेरे स्वरूप को प्राप्त नहीं होता और जो पूर्वोक्त तप से शुद्ध हैं वेही इस तप का आचरण करते हुए उस तेरे शुद्ध स्वरूप को अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं॥१॥ जो प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की सृष्टि में विस्तृत पवित्राचरणरूप तप करते हैं वेही परमात्मा को प्राप्त होने में योग्य होते हैं॥२॥ अब विचार कीजिये कि रामानुजीयादि लोग इस मंत्र से चक्रांकित होना क्योंकर सिद्ध करते हैं। भला कहिये वे विद्वान् थे वा अविद्वान्? जो कहो कि विद्वान् थे। जो विद्वान् होते तो ऐसा असंभव अर्थ इस मंत्र का क्यों करते—क्योंकि इस मंत्र में (अतप्ततनूः) शब्द है किन्तु (अतप्तभुजैकदेशः) नहीं। पुनः (अतप्ततनूः) यह नखशिखापर्यन्त समुदायार्थवाची है इस प्रमाण करके अग्नि से तपाना चक्रांकित लोग स्वीकार करें तो अपने शरीर को भाड़ में झोंक के सब शरीर को जलावें तो भी इस मंत्र के अर्थ से विरुद्ध है क्योंकि इस मंत्र में सत्यभाषणादि पवित्र कर्म करना तप लिया है। (ऋतं तपः सत्यं तपो दमस्तपः स्वाध्यायस्तपः) तैत्तिरीयोपनि०—इत्यादि तप कहाता है अर्थात् (ऋतं तपः) यथार्थ शुद्ध भाव सत्य मानना सत्य बोलना सत्य करना मन को अधर्म में न जाने देना बाह्य इन्द्रियों को अन्यायाचरणों में जाने से रोकना अर्थात् शरीर इन्द्रिय और मन से शुभ कर्मों का आचरण करना वेदादि सत्य विद्याओं का पढ़ना पढ़ाना वेदानुसार आचरण करना आदि उत्तम धर्मयुक्त कर्मों का नाम तप है। धातु को तपा के चमड़ी को जलाना तप नहीं कहाता। देखो चक्रांकित लोग अपने को बड़े वैष्णव मानते हैं परन्तु अपनी परंपरा और कुकर्म की ओर ध्यान नहीं देते कि प्रथम इनका मूलपुरुष (शठकोप) हुआ कि जो चक्रांकितों ही के ग्रन्थ और भक्तमाल ग्रंथ जो नाभा डूम ने बनाया है उनमें लिखा है:—

चक्रांकितोंके ग्रन्थोंमें
(दिव्यसूरिविचारयोगी) इत्यादि बहुत लिखे हैं शठकोप योगीरूपको बना था चक्रांकितोंने विचारना अर्थात् कंजर जातिमें उत्पन्न हुआ था
जब उसने ब्राह्मणोंसे पढ़ना वा सुनना चाहा होगा तब ब्राह्मणोंने तिरस्कार किया होगा
उसने ब्राह्मणोंके विरुद्ध संप्रदाय तिलक चक्रांकितादि शास्त्रविरुद्ध मनमानी बातें च
लाई होंगी उसका चेला (मुनिवाहन) जो कि चांडालवर्णमें उत्पन्न हुआ था उसका
चेला (यावनाचार्य) जो कि यवनकुलोत्पन्न था जिसका नाम बदलाके कोई २ (याम
नाचार्य) भी कहते हैं उनके पश्चात् (रामानुज) ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होकर चक्रांकित
हुआ उसके पूर्व कुछ भाषाके ग्रंथ बनाये थे रामानुजने कुछ संस्कृत पढ़के संस्कृतमें
श्लोकबद्ध ग्रंथ और शारीरक सूत्र और उपनिषदोंकी टीका शंकराचार्यकी टीकासे वि
रुद्ध बनाई। और शंकराचार्यकी बहुतसी निन्दा की जैसा शंकराचार्यका मत जीव
ब्रह्मकी एकता जगत् प्रपंच सर्व मिथ्या मायारूप अनित्य है। इससे विरुद्ध रामानु
जने जीव ब्रह्म और माया तीनों नित्य हैं शंकराचार्यका अद्वैत अर्थात् जीव ब्रह्म
एक ही है दूसरी कोई वस्तु वास्तविक नहीं है ~~रामानुजने तीनों अर्थात् जीव ब्रह्म और~~
यहां ~~माया को नित्य माना~~ शंकराचार्यका मत ब्रह्मसे अतिरिक्त जीव और कारण वस्तुका न
मानना अच्छा नहीं रामानुजका इस अंशमें जो कि विशिष्टाद्वैत जीव और माया सहि
त परमेश्वर एक है यह तीनका मानना और अद्वैतका कहना सर्वथा व्यर्थ है और स
र्वथा ईश्वरके आधीन परतंत्र जीवको मानना कंठी तिलक माला मूर्तिपूजादि पाखं
ड मत चलाने आदि बुरी बातें चक्रांकित आदि में हैं। जैसे चक्रांकित आदि वेदविरोधी
हैं वैसे शंकराचार्यके मतके नहीं। (प्रश्न) मूर्तिपूजा कहांसे चली? (उत्तर) जैनि
योंसे। (प्रश्न) जैनियोंने कहांसे चलाई? (उत्तर) अपनी मूर्खतासे। (प्रश्न) जैनी लोग कह
ते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देखके अपने जीवका भी शुभ परिणाम वैसा ही
होता है। (उत्तर) जीव चेतन और मूर्ति जड़ क्या मूर्तिके सदृश जीव भी जड़ हो जायगा?
यह मूर्तिपूजाके वल पाखंड मत है जैनियोंने चलाई है इसलिये इनका खंडन
१२ वें समुल्लासमें करेंगे। (प्रश्न) शाक्त आदिने मूर्तियोंमें जैनियोंकी नकल नहीं की
है क्योंकि जैनियोंकी मूर्तियोंके सदृश वैष्णवादिकी मूर्तियां नहीं हैं (उत्तर) हां,
यह ठीक है जो जैनियोंके तुल्य बनाते तो जैनमतमें मिल जाते इसलिये जैनकी मूर्तियों
से विरुद्ध बनाई क्योंकि जैनोंसे विरोध करना इनका काम और इनसे विरोध करना मु
ख्य उनका था जैसे जैनियोंकी मूर्तियां नंगी, ध्यानावस्थित और विरक्त मनुष्यके समा
न बनाई हैं और वैष्णवादिने यथेष्ट श्रृंगारित स्त्रीके सहित रंग राग भोग विषया
सक्ति सहिताकार खड़ी और बैठी हुई बनाई हैं। जैनी लोग बहुतसे शंख घंटा घरि
यार आदि बाजे नहीं बजाते येलोग बड़ा कोलाहल करते हैं तब तो ऐसी लीलाके
रचने से वैष्णवादि संप्रदायी पोपोंके चेले जैनियोंके जालसे बचके इनकी लीलामें

आफंसे और बहुत से व्यासादि महर्षियों के नाम से मनमानी असंभव गाथा युक्त
ग्रंथ बनाये उनका नाम पुराण रखकर कथा भी सुनाने लगे और फिर ऐसी
रविचित्र माया रचने लगे कि पाषाणादि की मूर्त्ति बनाकर गुप्त कहीं पहाड़ व जंगला
दि में धर आये वा भूमि में गाड़ दीं पश्चात् अपने चेलों में प्रसिद्ध किया कि मुझ
को रात्रि में स्वप्न में महादेव पार्वती राधाकृष्ण सीता राम वा लक्ष्मी ना
राय और भैरव हनुमान आदि ने कहा है कि हम फलाने २ ठिकाने हैं हमको वहां
से ला मंदिर में स्थापन कर और तू ही हमारा पूजारी होवे तो हम मनवांछित फल देवें जब
आंख के अंधे और गांठ के पूरे लोगों ने पोपजी की लीला सुनी तब तो सच ही मान ली
और उनसे पूछा कि ऐसी वह मूर्त्ति कहां पर है तब तो पोपजी बोले कि फलाने पहा
ड़ वा फलाने जंगल में है चलो मेरे साथ दिखला दूं तब तो वे अंधे उस धूर्त्त के साथ च
लके वहां पहुंच कर देखा आश्चर्य होकर उस पोप के पग में गिरकर कहा कि आपके ऊपर
इस देवता की बड़ी ही कृपा है अब आप ले चलिये और हम मंदिर बनवा देवेंगे उसमें इस
देवता की स्थापना कर आपही पूजा करना और हम लोग भी इस प्रतापी देवता के दर्शन
पर्सन करके मनोवांछित फल पावेंगे। इसी प्रकार जब एक ने लीला रची तब तो उस
को देख सब पोपलोग अपनी जीविकार्थ छल कपट से मूर्त्तियां स्थापन कीं। (प्रश्न) पर
मेश्वर निराकार है वह ध्यान में नहीं आसकता इसलिये अवश्य मूर्त्ति होनी चाहिये भला
जो कुछ भी न करें तो मूर्त्ति के सम्मुख जा हाथ जोड़ परमेश्वर का स्मरण करते और नाम लेते हैं इस
में क्या हानि है। (उत्तर) जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्त्ति ही
नहीं बन सकती और जो मूर्त्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर
की बनाई पृथिवी और जल अग्नि वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिनमें
ईश्वर ने अद्भुत रचना की है क्या ऐसी रचना देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं

पृथिवी पहाड़ अद्भुत महामूर्त्तियां कि जिन पहाड़ आदि से ये मनुष्यकृत मूर्त्तियां बनती हैं पाषाणादि

हो सकता जो तुम कहते हो कि मूर्त्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होता है यह तु
म्हारा कथन सर्वथा मिथ्या है और जब वह मूर्त्ति सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण
न होने से मनुष्य एकान्त पाकर चोरी जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत्त
भी हो सकता है क्योंकि वह जानता है कि इस समय यहां मुझे कोई नहीं देखता
इसलिये वह अनर्थ करे बिना नहीं चूकता इत्यादि अनेक दोष मूर्त्ति पूजा के क
रने से सिद्ध होते हैं। अब देखिये जो पाषाणादि मूर्त्तियों को न मानकर सर्वदा स
र्वव्यापक सर्वान्तर्यामी न्यायकारी परमात्मा को सर्वत्र जानता और मानता है
वह पुरुष सर्वत्र सर्वदा परमेश्वर को सबके बुरे भले कर्मों का द्रष्टा जा
नकर एक क्षणमात्र भी परमात्मा से अपने को पृथक् न जान के कुकर्म करना तो
कहां रहा किन्तु मन में कुचेष्टा भी नहीं कर सकता क्योंकि
वह जानता है जो मैं मन वचन और कर्म से कुछ भी
बुरा काम करूंगा तो इस अन्तर्यामी के न्याय से बिना दंड पाये कदापि न बचूंगा

~~को भी जानते हैं कि परमेश्वर निराकार है परन्तु उसने शिव विष्णु गणेश सूर्य देवी आदि के शरीर धारण करके राम कृष्णादि अवतार लेने से उसकी मूर्ति बनती है~~

ओं नाम स्मरण मात्र से कुछ भी फल नहीं होता जैसा कि मिश्री २ कहने से मुंह मीठा और नीम २ कहने से कडुवा नहीं होता किन्तु जीभ से चाखने ही से मीठा वा कडुवा पन जाना जाता है। (प्रश्न) क्या नाम लेना सर्वथा मिथ्या है जो सर्वत्र पुराणों में नाम स्मरण का बड़ा माहात्म्य लिखा है? (उत्तर) नहीं जिस प्रकार तुम नाम स्मरण करते हो वह रीती झूठी है (प्रश्न) हमारी कैसी रीति है (उत्तर) वेद विरुद्ध। (प्रश्न) भला अब आप हम को वेदोक्त नाम स्मरण की रीति बतलाइये।

(उत्तर) नाम स्मरण इस प्रकार करना चाहिये जैसे (न्यायकारी) ईश्वर का एक नाम है इस नाम से जो इसका अर्थ है कि जैसे पक्षपात रहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है वैसे उस को ग्रहण कर न्याययुक्त व्यवहार सर्वदा करना अन्याय कभी न करना इस प्रकार एक नाम से भी मनुष्य का कल्याण हो सकता है। (प्रश्न) हम भी जानते हैं कि परमेश्वर निराकार है परन्तु उसने शिव, विष्णु, गणेश, सूर्य, देवी आदि के शरीर धारण करके राम कृष्णादि अवतार लेने से उसकी मूर्ति बनती है क्या यह भी बात झूठी है। (उत्तर) हां २ झूठी क्योंकि (अज एकपात्) (अकायम्) इत्यादि विशेषणों से परमेश्वर को जन्म मरण और शरीर धारण रहित वेदों में कहा है तथा युक्ति से भी परमेश्वर का अवतार कभी नहीं हो सकता क्योंकि जो आकाशवत् सर्वत्र व्यापक अनन्त और सुख दुःख दृश्यादि गुणरहित है वह एक छोटे से वीर्य गर्भाशय और शरीर में क्योंकर आ सकता है आता जाता वह है कि जो एकदेशी हो जो अचल अदृश्य जिसके विना एक परमाणु भी खाली नहीं है उसका अवतार कहना जानो वन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है। (प्रश्न) जब परमेश्वर व्यापक है तो मूर्ति में भी है पुनः चाहें किसी पदार्थ में भावना करके पूजा करना अच्छा क्यों नहीं देखो (न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृन्मये। भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम्॥१॥) परमेश्वर देव न काष्ठ न पाषाण न मृत्तिका से बनाये पदार्थों में है किन्तु परमेश्वर तो भाव में विद्यमान है। (उत्तर) जब परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है तो किसी एक वस्तु में परमेश्वर की भावना करना अन्यत्र न करना यह ऐसी बात है कि जैसी चक्रवर्ती राजा को सब राज्य की सत्ता से छुड़ा के एक छोटी सी झोंपड़ी का स्वामी मानना कितना बड़ा अपमान है वैसा तुम परमेश्वर का भी अपमान करते हो जब व्यापक मानते हो तो वाटिकाओं में से पुष्प पत्र तोड़ के क्यों चढ़ाते चंदन घिस के क्यों लगाते धूप को जला के क्यों देते घंटा घरियाल झांझ पखाजों को लकड़ी से कूटना पीटना क्यों करते हो तुम्हारे हाथों में है क्यों जोड़ते शिर में है क्यों शिर नमाते अन्न जलादि में है क्यों नैवेद्य धरते जल में है स्नान क्यों कराते क्योंकि उन सब पदार्थों में परमात्मा व्यापक है और तुम व्यापक की पूजा करते हो वा व्याप्य की जो व्यापक की करते हो तो पाषाण लकड़ी आदि पर चंदन पुष्पादि क्यों चढ़ाते हो और जो व्याप्य की करते हो तो हम परमेश्वर की पूजा करते हैं ऐसा झूठ क्यों बो

जहां भाव करें वहीं ही परमेश्वर सिद्ध होता है

लते हो हम पाषाणादि के पुजारी हैं ऐसा सत्य क्यों नहीं बोलते॥ अब कहिये (भाव) सच्चा है वा झूंठा जो कहो सच्चा है तो तुम्हारे भाव के आधीन होकर परमेश्वर बद्ध होजायगा और तुम मृत्तिका में सुवर्ण रजतादि, पाषाण में हीरा पन्ना आदि, समुद्रफेन में मोती, जल में घृत, दुग्ध दधि आदि और धूलि में मैदा शक्कर आदि की भावना करके उन को वैसे क्यों नहीं बनाते हो। तुम लोग दुःख की भावना कभी नहीं करते वह क्यों होता और सुख की भावना सदैव करते हो वह क्यों नहीं प्राप्त होता। अंधा पुरुष नेत्र की भावना करके क्यों नहीं देखता मरने की भावना नहीं करते क्यों मर जाते हो। इसलिये तुम्हारी भावना सच्ची नहीं क्योंकि जैसे में वैसी करने का नाम भावना कहते हैं जैसे अग्नि में अग्नि जल में जल जानना और जल में अग्नि अग्नि में जल समझना अभावना है क्योंकि जैसे को वैसा जानना ज्ञान और अन्यथा जानना अज्ञान है इसलिये तुम अभावना को भावना और भावना को अभावना कहते हो। (प्रश्न) अजी जबतक वेद मंत्रों से आवाहन करते तबतक देवता नहीं आता नहीं और आवाहन करने से झट आता और विसर्जन करने से चला जाता है। (उत्तर) जो मंत्र को पढ़कर आवाहन करने से देवता आजाता है तो मूर्ति चेतन क्यों नहीं हो जाती और विसर्जन करने से चली क्यों नहीं जाती और वह कहां से आता और कहां जाता है। सुनो अंधो पूर्ण परमात्मा न आता और न जाता है जो तुम मंत्र बल से परमेश्वर को बुला लेते हो तो उन्हीं मंत्रों से अपने मरे हुए पुत्र के शरीर में जीव को क्यों नहीं बुला लेते और शत्रु के शरीर में जीवात्मा का विसर्जन करके क्यों नहीं मार सकते। सुनो भाई भोले भाले लोगो यह पोपजी तुमको ठगकर अपना मतलब सिद्ध करते हैं वेदों में पाषाणादि मूर्ति पूजा और परमेश्वर के आवाहन विसर्जन करने का एक अक्षर भी नहीं है। (प्रश्न) प्राणा इहागच्छन्तु सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। आत्मेहागच्छतु सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा। इन्द्रियाणीहागच्छन्तु सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा) इत्यादि वेद मंत्र हैं क्यों कहते हो नहीं हैं। (उत्तर) अरे भाई बुद्धि को थोड़ी सी तो अपने काम में लाओ ये सब कपोलकल्पित वाममार्गियों की वेदविरुद्ध तंत्र ग्रंथों की पोपरचित पंक्तियां हैं वेदवचन नहीं। (प्रश्न) क्या तंत्र झूंठा है। (उत्तर) हां सर्वथा झूंठा है जैसे आवाहन प्राणप्रतिष्ठादि पाषाणादि मूर्ति विषयक वेदों में एक मंत्र भी नहीं वैसे (स्नानं समर्पयामि) इत्यादि वचन भी नहीं अर्थात् इतना भी नहीं है कि (पाषाणादि मूर्तिं रचयित्वा मंदिरेषु संस्थाप्य गंधादिभिरर्चयेत्) पाषाण की मूर्ति बना मंदिरों में स्थापन कर चंदन अक्षतादि से पूजे ऐसा लेश मात्र भी नहीं। (प्रश्न) जो वेदों में विधि नहीं तो खंडन भी नहीं है और जो खंडन है तो (प्राप्तौ सत्यां निषेधः) मूर्ति के होने ही से खंडन हो सकता है। (उत्तर) विधि तो नहीं परन्तु परमेश्वर के स्थान में किसी अन्य पदार्थ को पूजनीय न मानना और सर्वथा निषेध किया है जैसे (अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ संभूत्याᳪ रताः) यजुः अ० ४० मं० ९॥

न तस्य प्रतिमा अस्ति यजु० ३४ मं० ४३। यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥१॥ यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतं। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते। २। यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते। ३। यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतं। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते। ४। यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥ ५ ॥ केनोपनिषद् वचन — अर्थ — जो असंभूति अर्थात् अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान में उपासना करते हैं वे अंधकार अर्थात् अज्ञान और दुःख सागर में डूबते हैं और संभूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्यरूप पृथिवी आदि भूत पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान में करते हैं वे उस अंधकार से भी अधिक अंधकार अर्थात् महा मूर्ख चिरकाल घोर नरक दुःखसागर में गिर के महाक्लेश भोगते हैं ॥ १ ॥ जो सब जगत् में व्यापक है उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिमाण सादृश्य वा मूर्ति नहीं है ॥ २ ॥ जो वाणी का (इदंता) अर्थात् यह जल है लीजिये वैसा विषय नहीं और जिसके धारण और सत्ता से वाणी की प्रवृत्ति होती है उसी को ब्रह्म जान और उपासना कर और जो उससे भिन्न है वह उपासनीय नहीं ॥ १ ॥ जो मन से (इयत्ता) करके मनन में नहीं आता जो मन को जानता है उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर जो उससे भिन्न जीव और अन्तःकरण है उसकी उपासना ब्रह्म के स्थान में मत कर ॥ २ ॥ जो आंख से नहीं दीख पड़ता और जिससे सब आंखें देखती हैं उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर [और जो उससे भिन्न सूर्य विद्युत और अग्नि आदि जड़ पदार्थ हैं उनकी उपासना मत कर] ॥ ३ ॥ जो श्रोत्र से नहीं सुना जाता और जिससे श्रोत्र सुनता है उसी को तू ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर [और उससे भिन्न शब्दादि की उपासना उसके स्थान में मत कर] ॥ ४ ॥ जो प्राणों से चलायमान नहीं होता जिससे प्राण गमन को प्राप्त होता है उसी ब्रह्म को तू जान और उसी की उपासना कर जो यह उससे भिन्न वायु है उसकी उपासना मत कर ॥ ५ ॥ इत्यादि बहुत से निषेध हैं। निषेध प्राप्त और अप्राप्त का भी होता है (प्राप्त) का जैसे कोई कहीं बैठा हो उसको वहां से उठा देना (अप्राप्त) का जैसे हे पुत्र तू चोरी कभी मत करना कुवे में मत गिरना दुष्टों का संग मत करना विद्याहीन मत रहना इत्यादि अप्राप्त का भी निषेध होता है सो मनुष्यों के ज्ञान में अप्राप्त परमेश्वर के ज्ञान में प्राप्त का निषेध किया है इसलिये पाषाणादि मूर्ति पूजा अत्यन्त निषिद्ध है (प्रश्न) मूर्ति पूजा में पुण्य नहीं तो पाप तो नहीं है। (उत्तर) कर्म दो ही प्रकार के होते हैं विहित जो कर्तव्यता से वेद में सत्यभाषणादि प्रतिपादित हैं दूसरा निषिद्ध जो अकर्तव्यता से मिथ्याभाषणादि वेद में निषिद्ध हैं जैसे विहित का अनुष्ठान करना वह धर्म उसका न करना अधर्म है वैसे ही निषिद्ध कर्म का करना अधर्म और न करना धर्म है जब वेदों से निषिद्ध मूर्तिपूजादि कर्मों को तुम करते हो तो पापी क्यों नहीं। (प्रश्न) देखो वेद अनादि हैं उस समय मूर्ति का क्या काम था क्योंकि पहिले तो देवता प्रत्यक्ष थे यह रीति तो पीछे से तंत्र और पुराणों से

चली तब मनुष्यों का ज्ञान और सामर्थ्य न्यून हो गया जिस में परमेश्वर को ध्यान में नहीं ला सके मूर्त्ति का ध्यान और तो कर सकते हैं इस कारण अज्ञानियों के लिये मूर्त्ति पूजा है क्योंकि सीढ़ी २ से चढ़े तो महल पर पहुंच जाय पहिली सीढ़ी छोड़कर ऊपर जाना चाहै तो नहीं जा सकता इस लिये मूर्त्ति प्रथम सीढ़ी है इसको पूजता २ जब ज्ञान होगा और अन्तःकरण पवित्र होगा तब परमात्मा का ध्यान कर सकेगा जैसे निसाने के मारने वाले प्रथम स्थूल लक्ष्य में तीर गोली वा गोला आदि मारता २ पश्चात् सूक्ष्म में भी निसाना मार सकता है वैसे स्थूल मूर्त्ति की पूजा करता २ पुनः सूक्ष्म ब्रह्म को भी प्राप्त होता है जैसे लड़कियां गुड़ियों का खेल तब तक करती हैं कि जब तक सच्चे पति को प्राप्त नहीं होतीं इत्यादि प्रकार से मूर्त्ति पूजा करना दुष्ट काम नहीं। (उत्तर) जब वेदविहित धर्म और वेदविरुद्धाचरण में अधर्म है तो पुनः तुम्हारे कहने से भी मूर्त्तिपूजा करना अधर्म ठहरा जो ग्रंथ वेद से विरुद्ध हैं उन का प्रमाण करना जानो नास्तिक होना है सुनो॥ या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः। सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः॥१॥ उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानिचित्। तान्यर्वाक्कालिकतया निष्फलान्यनृतानि च॥२॥ मनु० अ० १२ मनुजी कहते हैं कि जो ग्रंथ वेदबाह्य कुत्सित पुरुषों के बनाये संसार को दुःखसागर में डुबाने वाले हैं वे सब निष्फल असत्य अंधकाररूप इसलोक और परलोक में दुःखदायक हैं॥१॥ जो इन वेदों से विरुद्ध ग्रंथ उत्पन्न होते हैं वे आधुनिक होने से शीघ्र नष्ट हो जाते हैं उन का मानना निष्फल और झूठा है इसी प्रकार ब्रह्मा से लेकर जैमिनि महर्षि पर्यन्त का मत है कि वेदविरुद्ध को न मानना किन्तु वेदानुकूल ही का आचरण करना धर्म है क्योंकि वेद सत्य अर्थ का प्रतिपादक है इससे विरुद्ध जितने तन्त्र और पुराण हैं वेदविरुद्ध होने से झूठे हैं कि जो वेद से विरुद्ध चलते हैं उन में कही हुई मूर्त्तिपूजा भी अधर्मरूप है। मनुष्यों का ज्ञान जड़ की पूजा से नहीं बढ़ सकता किन्तु जो कुछ ज्ञान है वह भी नष्ट हो जाता है इसलिये ज्ञानियों की सेवा संग से ज्ञान बढ़ता है पाषाणादि से नहीं। क्या पाषाणादि मूर्त्तिपूजा से परमेश्वर को ध्यान में कभी ला सकता है? नहीं २ मूर्त्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिस में गिरकर चकनाचूर हो जाता है पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है हां छोटे धार्मिक विद्वानों से लेकर परम विद्वान् योगियों के संग से सद्विद्या और सत्यभाषणादि परमेश्वर की प्राप्ति की सीढ़ियां हैं जैसी ऊपर घर में जाने की निःश्रेणी होती है किन्तु मूर्त्तिपूजा करते २ ज्ञानी तो कोई न हुआ किन्तु सब मूर्त्तिपूजक अज्ञानी रहकर मनुष्यजन्म व्यर्थ खोके बहुत से मर गये और जो अब हैं वा होंगे वे भी मनुष्यजन्म के धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्तिरूप फलों से विमुख होकर निरर्थ नष्ट हो जायंगे मूर्त्तिपूजा ब्रह्म की प्राप्ति में स्थूल लक्ष्यवत् नहीं किन्तु धार्मिक विद्वान् और सृष्टिविद्या है इसको बढ़ाता २ ब्रह्म को भी पाता है और मूर्त्ति गुड़ियों के खेलवत् नहीं किन्तु प्रथम अक्षराभ्यास सुशिक्षा का होना गुड़ियों के खेलवत् ब्रह्म की प्राप्ति का साधन है [illegible] जब अच्छी शि-

नास्तिक को वेदनिन्दक॥ — वेदों की निन्दा वा उनका त्याग विरुद्धाचरण करता है वह नास्तिक कहाता है॥१॥

वर्जित

निःश्रेणी होती है॥

क्षा और विद्या को प्राप्त होगा तब सब के स्वामी परमात्मा को भी प्राप्त हो जाय गा (प्रश्न) साकार में म
न स्थिर होता और निराकार में स्थिर होना कठिन है इसलिये मूर्त्ति पूजा रहना चाहिये (उ
त्तर) साकार में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता क्योंकि उसको मन झट ग्रहण करके उसी
के एक २ अवयव में घूमता और दूसरे में दौड़ जाता है और निराकार परमा
त्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता निरवयव होने से चंचल भी
नहीं रहता किन्तु उसी के गुण कर्म स्वभाव का विचार करता २ आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जा
ता है और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत् में मनुष्य स्त्री पुत्र
धन मित्र आदि साकार में फंसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता जब तक नि
राकार में न लगावे क्योंकि वह निरवयव होने से उसमें मन स्थिर हो जाता है इसलिये मूर्त्ति पूजन करना
अधर्म है दूसरा उसमें क्रोड़ों रुपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उसमें प्रमाद
होता है तीसरा स्त्री पुरुषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार लड़ाई बखेड़ा और रोगादि
उत्पन्न होते हैं चौथा उसी को धर्म अर्थ काम और मुक्ति का साधन मानके पुरुषार्थ रहित होकर
मनुष्य जन्म व्यर्थ गमाता है पांचवां नाना प्रकार की विरुद्ध स्वरूप नाम चरित्र युक्त मूर्त्तियों
के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके विरुद्ध मत में चलकर आपस में फूट बढ़ा के देश का नाश
करते हैं छठा उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं
~~(अपना पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं)~~ उनका पराजय होकर राज्य स्वातंत्र्य
और धन का ~~[illegible]~~ सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन होते हैं और आप पराधीन भ
ठियारे के टट्टू और कुंभार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में अनेकविध दुःख पाते
हैं। सातवां जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन वा नाम पर पत्थर धरें
तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान देता है वैसे ही जो परमेश्व
र की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्त्तियां धरते हैं उन दुष्ट बु
द्धि वालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करे। आठवां भ्रान्त होकर मंदिर २ देशदेशान्त
र में घूमते २ दुःख पाते धर्म और संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते चोर आदि से
पीड़ित होते ठगों से ठगाते रहते हैं। नववां दुष्ट पूजारियों को धन देते हैं वे उस
धन को वेश्या परस्त्री गमन मद्य मांसाहार लड़ाई बखेड़ों में खर्च करते हैं जिससे
दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। दशवां माता पिता आदि माननीयों का
अपमान कर पाषाणादि मूर्त्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं। ग्यारहवां उन मू
र्त्तियों को कोई तोड़ डालता वा चोर ले जाता है तब हा २ करके रोते रहते हैं। बारहवां पूजा
री पर स्त्रियों के संग और पूजारिन पर पुरुषों के संग से प्रायः दुःखित होकर स्त्री पुरु
ष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। तेरहवां स्वामी सेवक की आज्ञा पालन
यथावत् न होने से परस्पर विरुद्ध भाव होकर नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं। चौदहवां जड़
का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि होता है क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तः
करण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है॥

मुगंधयुक्त पदार्थ

[illegible] । परन्तु हवा परमेश्वर ने पुष्पादि [illegible] वा पुजल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं उनको पुजारी जी तोड़ताड़ कर [illegible] कर देते हैं न जाने उन पुष्पों की कितने दिन तक सुगन्धी आकाश में चढ़कर वायु जल की शुद्धि करती पारन्तु पुष्पों को मध्य ही में नाश कर देते हैं क्या परमात्मा ने पत्थर पर चढ़ाने के लिये पुष्पादि रचे हैं। सो लह वो पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प चंदन और अक्षत आदि सब का जल और मृत्तिका के संयोग होने से मोरी वा कुंड में आकर सड़ के इतना उससे दुर्गन्ध आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का और हजारों जीव उसमें पड़ते उसी में मरते और सड़ते हैं। ऐसे २ अनेक मूर्त्ति पूजा के करने में दोष आते हैं इसलिये सर्वथा पाषाणादि मूर्त्ति पूजा सज्जन लोगों को त्यक्तव्य है। और जिन्होंने पाषाणमय मूर्त्ति की पूजा की करते हैं और करेंगे वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे न बचते हैं और न बचेंगे (प्रश्न) किसी प्रकार की मूर्त्ति पूजा करनी करानी नहीं और जो अपने आर्य्यावर्त्त में पंचदेव पूजा शब्द प्राचीन परम्परा से चला आता है उसका यही पंचायतन पूजा जो कि शिव, विष्णु, अम्बिका गणेश और सूर्य्य की मूर्त्ति बनाकर पूजते हैं यह पंचायतन पूजा है वा नहीं (उत्तर) किसी प्रकार की मूर्त्ति पूजा न करना किन्तु (मूर्त्तिमान्) जो नीचे कहेंगे उनकी पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिये वह पंच देव पूजा पंचायतन पूजा शब्द बहुत अच्छे अर्थवाला है परन्तु विद्याहीन मूढ़ों ने उसके उत्तम अर्थ को छोड़कर निकृष्ट अर्थ पकड़ लिया जो आजकल शिवादि पांचों की मूर्त्तियां बनाकर पूजते हैं उनका खंडन तो अभी कर चुके हैं पर सच्ची पंचायतन वेदोक्त देव पूजा और मूर्त्ति पूजा है सुनो (मा वधीः पितरं मोत मातरम्) यजु० ॥ १ ॥ आचार्य्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणमिच्छते ॥ २ ॥ अतिथिर्गृहानुपगच्छेत् ॥ ३ ॥ अथर्व० ॥ त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ॥ ४ ॥ तैत्तिरीयोपनि० कतम एको देव इति स ब्रह्म त्यदित्याचक्षते ॥ ५ ॥ शतप० प्रपाठ० ६ ब्राह्म० ७ कंडिका १० मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य्यदेवो भव अतिथिदेवो भव ॥ ६ ॥ तैत्ति० (प्रथम माता मूर्त्तिमती पूजनीय देवता) अर्थात् सन्तानों को तन मन धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना दूसरा पिता सत्कर्त्तव्य देव उसकी भी माता के समान सेवा करनी ॥ १ ॥ तीसरा आचार्य्य जो विद्या का देने वाला है उसकी तन मन धन से सेवा करना ॥ २ ॥ चौथा अतिथि जो विद्वान् धार्मिक निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला जगत् में भ्रमण करता हुआ, सत्य उपदेश से सब को सुखी करता है उसकी सेवा करें पांचवां मूर्त्तिमान् देव जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति पालन, सत्य शिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है यही परमेश्वर को प्राप्ति होने की सीढ़ियां हैं इनकी सेवा न करके जो पाषाणादि मूर्त्ति पूजते हैं वे अतीव पामर नरकगामी हैं (प्रश्न) माता पिता आदि की सेवा करें और मूर्त्ति पूजा भी करें तब तो कोई दोष नहीं (उत्तर) पाषाणादि मूर्त्ति पूजा तो सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्त्तिमानों की सेवा करने ही में कल्याण है बड़े अनर्थ की बात है साक्षात् [illegible]

माता आदि प्रत्यक्ष सुखदायक देवों को छोड़के अदेव पाषाणादि में शिर मारना मूढ़ोंने
इसी लिये स्वीकार किया है कि जो माता पितादि के सामने नैवेद्य वा भेट पूजा धरेंगे
तो वे स्वयं खा लेंगे और भेट पूजा ले लेंगे तो हमारे मुख वा हाथ में कुछ न पड़ेगा इससे पाषाणादि
मूर्ति बना उसके आगे नैवेद्य धर घंटा नाद टं टं पूं पूं शंख बजा कोलाहल कर अंगूठा
दिखला अर्थात् (त्वमंगुष्ठं गृहाण भोजनं पदार्थं वाऽहं ग्रहीष्यामि) जैसे कोई किसी को
छले वा चिड़ावे कि तू घंटा ले और अंगूठा दिखलावे उसके आगे से सब पदार्थ ले आप भो
गे वैसी ही लीला इन पुजारियों अर्थात् पूजानाम सत्कर्म के शत्रुओं की लीला है मूढ़ों को
चटक मटक चलक झलक मूर्तियों को बना ठना आप वैश्या वा भडुओं के तुल्य बन
ठन के बिचारे निर्बुद्धि अनाथों का माल मार के मौज करते हैं जो कोई धार्मिक राजा होता
तो इन पाषाणप्रियों को पत्थर तोड़ने बनाने और घर रचने आदि कामों में लगाके खा
ने पीने को देता निर्वाह कराता (प्रश्न) जैसे स्त्री आदि की पाषाणादि मूर्त्ति देखने से [कामोत्पत्ति होती है वैसे वीतराग शान्त की मूर्त्ति देखने से] वैराग्य
और शान्ति की प्राप्ति क्यों न होगी (उत्तर) नहीं हो सकती क्योंकि वह मूर्त्ति के जड़त्व धर्म आत्मा
में आने से विचारशक्ति घट जाती है विवेक के विना न वैराग्य और वैराग्य के विज्ञान के विना
शान्ति नहीं होती और जो कुछ होता है सो उनके संग उपदेश और उनके इतिहासादि के देखने से हो
ता है क्योंकि जिसका गुण वा दोष न जानके उसकी मूर्त्तिमात्र देखने से प्रीति नहीं होती
प्रीति होने का कारण गुणज्ञान है ऐसे मूर्त्तिपूजादि बुरे कारणों ही से आर्यावर्त्त में
निकम्मे पुजारी भिक्षुक आलसी पुरुषार्थरहित करोड़ों मनुष्य हुए हैं वे मूढ़ होने से
सब संसार में मूढ़ता उन्होंने फैलाई है झूठ छल भी बहुत सा फैला है (प्रश्न) देखो काशी में
(औरङ्गजेब) बादशाह को (लाटभैरव) आदि ने बड़े २ चमत्कार दिखलाये थे जब मुसल
मान उनको तोड़ने गये और उन्होंने जब उनके पर तोप गोला आदि मारे तब बड़े २ भम
रे निकल कर सब फौज को व्याकुल कर भगा दिया (उत्तर) यह पाषाण का चमत्कार नहीं किन्तु
वहां भमरे के छत्ते लग रहे होंगे उनका स्वभाव ही क्रूर है जब कोई उनको छेड़े तो वे काट
ने को दौड़ते हैं और जो दूध की धारा का चमत्कार होता था वह पुजारी जी की लीला थी (प्रश्न) देखो
महादेव म्लेच्छ को दर्शन न देने के लिये कूप में और वेणीमाधव एक ब्राह्मण के घर
में जा छिपे (उत्तर) भला जिसका कोटवाल कालभैरव लाटभैरव आदि भूत प्रेत और ग
रुड़ आदि गण मुसलमानों को लड़ के क्यों न हटाये जब महादेव और विष्णु की पुराणों
में कथा अनेक त्रिपुरासुर आदि बड़े भयंकर दुष्टों को भस्म कर दिया तो मुसलमा
~~नों से क्यों न लड़ के हटाये जब महादेव और विष्णु की पुराणों में कथा अनेक~~ को भस्म
क्यों न किया इससे यह सिद्ध होता है कि वे बिचारे पाषाण क्या लड़ते लड़ाते जब मुस
लमान मंदिर और मूर्त्तियों को तोड़ते फोड़ते हुए काशी के पास आये तब पुजारियों ने उ
स पाषाण के लिंग को कूप में डाल और वेणीमाधव को ब्राह्मण के घर में छिपा दिया जब का
शी में कालभैरव के डर के मारे यमदूत नहीं जाते और प्रलय समय में भी काशी का ना

क्या यह भी चमत्कार नहीं

श्राद्ध नहीं देते तो म्लेच्छों के द्वन्द्व क्यों न डराये और अपने राज्य के मंदिर का नाश होने क्यों दिया
यह सब पोप माया है (प्रश्न) गया में श्राद्ध करने से पितरों का पाप छूट कर वहां के श्राद्ध के पु-
ण्य प्रभाव से स्वर्ग में जाते और पितर अपना हाथ निकाल कर पिण्ड लेते हैं क्या यह भी बात
झूठी है (उत्तर) सर्वथा झूठ जो वहां पिण्ड देने का वही प्रभाव है तो जिन पण्डों को पितरों के सुख के
लिये लाखों रुपये देते हैं उनका वेश्यागमनादि पाप जो वे करते हैं वह पाप क्यों नहीं छूटता और हाथ निकलता
आजकल कहीं नहीं दीखता बिना पण्डों के हाथों के यह कभी किसी धूर्त ने पृथिवी में गुफा
खोद उसमें एक मनुष्य बैठा दिया होगा पश्चात् उसके मुख पर कुश बिछा पिण्ड दिया हो
गा और उस कपटी ने उठा लिया होगा किसी आंख के अंधे गांठ के पूरे को इस प्रकार ठगा हो
तो आश्चर्य नहीं ऐसे ही वैजनाथ को रावण लाया था यह भी मिथ्या बात है (प्रश्न) देखो कलकत्ते की
काली और कामाक्षा आदि देवी को लाखों मनुष्य मानते हैं क्या यह चमत्कार नहीं है (उत्तर) कुछ
भी नहीं ये अंधे लोग भेड़ के तुल्य एक के पीछे दूसरे चलते हैं कूप खाड़े में गिरते हैं हट नहीं सकते
वैसे ही एक मूर्ख के पीछे दूसरे चल कर मूर्तिपूजा रूप गढ़े में फंस कर दुःख पाते हैं (प्रश्न) भला
यह तो जाने दो परन्तु जगन्नाथ जी में प्रत्यक्ष चमत्कार है एक कलेवर बदलने के समय चं
दन का लकड़ा समुद्र में से स्वयमेव आता है चूल्हे पर ऊपर ऊपर सात हंडे धरने से ऊपर ऊपर के प
हिले पकते हैं जो कोई वहां जगन्नाथ की परसादी न खावे तो कुष्ठी हो जाता है और रथ आप से आप
चलता पापी को दर्शन नहीं होता है इन्द्रदमन के राज्य में देवताओं ने मंदिर बनाया है एक राजा यही कलेवर बदलने के समय
एक पंडा एक बढ़ई मर जाने आदि चमत्कारों को तुम झूठ कर
सकोगे (उत्तर) जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी वह विरक्त होकर मथु
रा में आया था मुझ से मिला था मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था उन्होंने ये सब बातें झू
ठ बतलाईं विचार से निश्चय यह है कि जब कलेवर बदलने का समय आता है तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले स
मुद्र में डालते हैं वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है उसको ले सुतार लोग मूर्ति
यां बनाते हैं जब रसोई बनती है तब कपाट बन्द करके रसोइयों के विना अन्य
किसी को न जाने न देखने देते हैं भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्राकार
चूल्हे बनते हैं उन हंडों के नीचे घी मट्टी और राख लगा छः चूल्हों पर चावल चुड़ा उनके तले
मांज कर उस बीच के हंडे में उसी समय चावल डाल छः चूल्हों के मुख लोहे के तवों से बंध
कर दर्शन करने वालों को जो कि धनाढ्य हों बुला के दिखलाते हैं ऊपर ऊपर के हंडों से चावल नि
काल चुड़े हुए चावलों को दिखला नीचे के कच्चे चावल निकाल दिखा के उनसे कहते हैं
कि कुछ हंडों के लिये रख दो आंख के अंधे गांठ के पूरे रुपये अशर्फी धरते और कोई मासिक भी
बांध देते हैं। शूद्र नीच लोग मंदिरों में नैवेद्य लाते हैं जब नैवेद्य हो चुकता है तब वे शूद्र लो
ग मंदिर में से जूठा कर देते हैं पश्चात् जो कोई रुपया देकर हंडा लेवे उसके घर पहुंचाते
और गरीब गृहस्थ और साधु सन्तों को लेके शूद्र और अन्त्यज पर्यन्त एक पंक्ति में बैठ जूठा
एक दूसरे का करते हैं जब वह पंक्ति उठती है तब उन्हीं पत्तलों पर दूसरों को बैठाते जा

ते हैं महा अनाचार है, बहुतेरे मनुष्य वहां जाकर (उन का झूठा न खाके) अपने साथ अन्न ला कर चले आते हैं कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत से कुष्ठी हैं नित्य प्रति झूठा खाने से भी रोग नहीं छूटता और यह जगन्नाथ में वाम मार्गियों ने भैरवी चक्र बनाया है क्योंकि सुभद्रा श्रीकृष्ण और बलदेव की बहिन लगती है उसी को दोनों भाइयों के बीच में स्त्री के स्थान बैठाई है जो भैरवी चक्र न होता तो यह बात कभी न होती। और रथ के पहियों के साथ कला बनाई हैं जब उनको सुधी घुमाते हैं तब रथ चलता है जब मेले के बीच में पहुंचता है तभी उस की कील को उलटी घुमा देने से रथ खड़ा हो जाता है पूजारी लोग पुकारते हैं दान देओ पुण्य करो जिस से जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें अपना धर्म रहे जब तक [illegible]

[illegible]

भेट आती जाती है तब तक ऐसे ही पुकारते जाते हैं जब आ चुकती है तब एक ब्रजवासी अच्छे कपड़े दुसाला ओढ़कर आगे खड़ा रहके हाथ जोड़ स्तुति करता है कि (हे जगन्नाथ स्वामिन् आप कृपा करके रथ को चलाइये हमारा धर्म रक्खो) इत्यादि बोल के साष्टाङ्ग दंडवत् प्रणाम कर रथ पर चढ़ता है उसी समय कील को सूधा घुमा देते हैं और जय २ शब्द बोल हजारह मनुष्य रस्सी खींचते हैं रथ चलता है। जब बहुत से लोग दर्शन को जाते हैं तब इतना बड़ा मंदिर है कि जिस में दिन में भी अंधेरा रहता है और दीपक जलाना पड़ता है उन मूर्त्तियों के खैंच कर लगा के पर्दे दोनों ओर रहते हैं पण्डे पुजारी भीतर खड़े रहते हैं जब बगल वाले ने पर्दे को खींचा झट मूर्त्ति आड़ में आ जाती है तब सब पण्डे और पुजारी पुकारते हैं कि तुम भेट धरो तुम्हारे पाप छूट जायेंगे तब दर्शन होगा शीघ्र करो वे बिचारे भोले मनुष्य धूर्तों के हाथ लुटे जाते हैं और पर्दा दूसरा खेंचते तो ही दर्शन होते हैं तभी

दर्शन होता है तब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खा के तिरस्कृत हो चले आते हैं। इन्द्रदमन तब ही है कि जिनके कुल के अब तक कलकत्ते में हैं वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था उसने लाखों रुपये लगाकर मन्दिर बनवाया इसलिये कि भोग लगावें परन्तु वे मूर्ख कब छोड़ते हैं देव मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया। राजा पण्डा और भड्डे उस समय नहीं मरते परन्तु वे तीनों वहां प्रधान रहते हैं छोटों को दुःख देते होंगे उन्होंने संमति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय वे तीनों उपस्थित रहते हैं मूर्त्ति का हृदय पोला है उसमें एक सोने के सम्पुट में एक सालिग्राम रखते हैं कि जिसको प्रतिदिन धोके चरणामृत बनाते हैं उस पर रात्रि की शयन आरती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा उसको धोके उन्हीं तीनों को पिलाया होगा कि जिससे वे कभी मर गये होंगे मरे तो इस प्रकार और भोजन भट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथजी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गये ऐसी झूठी बातें पराये धन ठगने के लिये बहुत सी हुआ करती हैं। (प्रश्न) जो रामेश्वर में गंगोत्री के जल चढ़ाने समय लिंग बढ़ जाता है क्या यह भी बात झूठी है? (उत्तर) झूठी क्योंकि उस मन्दिर में भी दिन में अंधेरा रहता है दीपक रात दिन जलाकते हैं जब जल की धारा छोड़ते हैं तब उस जल में बिजुली के समान दीपक का प्रतिबिम्ब चलकता है और कुछ भी नहीं न पाषाण घटे न बढ़े जितना का उतना रहता है। (प्रश्न) रामेश्वर को रामचन्द्र ने स्थापन किया है जो मूर्त्तिपूजा वेदविरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्त्ति स्थापन क्यों करते और वाल्मीकिजी रामायण में क्यों लिखते (उत्तर) रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम निशान भी न था किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्थ राम नामक राजा ने मन्दिर बनवा लिंग का नाम रामेश्वर धर दिया है जब रामचन्द्र सीताजी को ले हनुमान आदि के साथ लंका से आकाश मार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे तब सीताजी से कहा है कि—

(अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः। सेतुबन्ध इति विख्यातम् ॥ वाल्मीकि रा० लंका कां०।

कहा था कि हे सीते तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभु व्यापक देवों का देव महादेव परमात्मा है उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई और देख यह सेतु हमने बांध कर लंका में आके उस रावण को मार तुझको ले आये इसके सिवाय वहां वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा (प्रश्न) रङ्ग है कालियाकन्त को जिसने हुक्का पिलाया सन्त को) दक्षिण में एक कालियाकन्त की मूर्त्ति है वह अब तक हुक्का पिया करती है जो मूर्त्तिपूजा झूठी होवे तो यह भी चमत्कार झूठा है। (उत्तर) झूठी यह सब पोपलीला है क्योंकि वह मूर्त्ति का मुख पोला होगा उसका छिद्र पृष्ठ में निकाल के भित्ती के पार दूसरे मकान में नल लगा होगा जब पुजारी हुक्का भरकर वा पेचवान लगा मुख में नली जमा के पड़दे डाल नि

ऐसी लीला करके बिचारे निर्बुद्धियों को ठगाते हैं

Gour. 6 220 15/8/83

कल आता होगा न भी पीछे वाला आदमी मुख से खींचता होगा तो इधर हुक्का अड़ खोलता होगा दूसरा छिद्र नाक और मुख के साथ लगा होगा जब पीछे फूंक मार देता होगा तब नाक और मुख के छिद्रों से धुआं निकलता होगा उस समय बहुत से मूढ़ों को धनादि पदार्थों से लूट कर ठगते होंगे। देखो डाकोर जी की मूर्त्ति द्वारिका से भगत के साथ चली आई एक सवा रत्ती सोने में कई मन की मूर्त्ति तुल गई क्या यह भी चमत्कार नहीं (उत्तर) नहीं वह भक्त मूर्त्ति को चोर ले आया होगा और सवा रत्ती के बराबर मूर्त्ति का तुलना किसी भंगड़ आदमी ने गप्प मारा होगा (प्रश्न) देखो सोमनाथ जी पृथिवी से ऊपर रहता था और बड़ा चमत्कार था क्या यह भी मिथ्या बात है (उत्तर) नीचे ऊपर चुम्बक पाषाण लगा रक्खे थे उसके आकर्षण से अधर खड़ी थी जब (महमूद गजनी) आकर लड़ा तब यह चमत्कार हुआ कि उसका मन्दिर तोड़ा गया और पुजारी भक्तों की दुर्दशा हो गई और लाखों फ़ौज दस हजार फ़ौज से भाग गई जो पोप पुजारी पूजा पुरश्चरण स्तुति प्रार्थना करते थे हे महादेव इस म्लेच्छ को तू मार डाल हमारी रक्षा कर और वे अपने चेले राजाओं को समझाते थे कि आप निश्चिन्त रहिये महादेव जी भैरव अथवा वीरभद्र को भेज देंगे वे सब म्लेच्छों को मार डालेंगे वा अंधा कर देंगे अभी हमारा देवता सिद्ध होता है हनुमान दुर्गा और भैरव ने स्वप्न दिया है कि हम सब काम कर देंगे वे बिचारे भोले राजा और क्षत्रिय पोपों के बहकाने से विश्वास में रहे कितने ही ज्योतिषी पोपों ने कहा कि अभी तुम्हारे चढ़ाई का मुहूर्त्त नहीं है एक ने आठवां चन्द्रमा बतलाया दूसरे ने योगिनी सामने दिखलाई इत्यादि बहकावट में रहे जब म्लेच्छों की फ़ौज ने आकर घेर लिया तब दुर्दशा से भागे कितने ही पोप पुजारी और उनके चेले पकड़े गये पुजारियों ने यह भी हाथ जोड़ कहा कि तीन क्रोड़ रुपया ले लो मंदिर और मूर्त्ति मत तोड़ो मुसलमानों ने कहा कि हम (बुत परस्त) नहीं किन्तु (बुत शिकन्) अर्थात् बुतों के तोड़ने वाले हैं जा के झट मंदिर तोड़ दिया जब मूर्त्ति तोड़ी तब सुनते हैं कि अठारह करोड़ के जवाहरात निकले जब पुजारी और पोपों पर चाबुक पड़े तब रोने लगे कहा कि खजाना बतला ओ मार के मारे झट बतला दिया तब सब खजाना लूट मार कर पोप और उनके चेलों को गुलाम बिगारी बना पिसना पिसवाया घास खुदवाया मल मूत्रादि उठवाया और चना खाने को दिया हाय क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए क्यों परमेश्वर की भक्ति न की जो म्लेच्छों के दांत तोड़ डालते और अपना विजय करते देखो जितनी मूर्त्तियां हैं उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती पुजारियों ने इन को इतनी भक्ति पाषाणों की की परन्तु मूर्त्ति एक भी उनके शिर पर उड़ के न लगी जो किसी एक शूरवीर पुरुष की मूर्त्ति के सदृश सेवा करते तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता (प्रश्न) द्वारिका जी के रणछोड़ जी जिसने (नरसिंह मेहता) के पास हुंडी भेज दी और उसका कर्जा चुका दिया इत्यादि बात भी क्या झूठ है (उत्तर) किसी साहूकार ने रुपये दे दिये होंगे किसी ने झूठा नाम उड़ा दिया होगा कि (श्रीकृष्ण ने भेजे जब सम्वत् १९१४ के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर मूर्त्तियां अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्त्ति कहां गई

जब ऊपर की छत टूटी तब चुंबक पाषाण पृथक् होने से मूर्त्ति गिर पड़ी

थी प्रद्युम्न आदि रत्नों ने जितनी मर्दमी कि और लड़ के शत्रुओं को मारा परन्तु मूर्त्ति एक म
लेच्छ की टांग भी न तोड़ सकी जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता और ये भा
गते फिरते भला यह तो कहो कि जिसका रक्षक मार खाय उसके शरणागत क्यों न पीटे जायें।
(प्रश्न) ज्वालामुखी तो प्रत्यक्ष देवी है सब को खा जाती है और प्रसाद देवे तो आधा खा जाती
और आधा छोड़ देती है मुसलमान बादशाहों ने उस पर जल की नहर छुड़वाई और लो
हे के तवे जड़वाये थे तो भी ज्वाला न बुझी और न रुकी वैसे हिंगलाज भी आधी रात को सवारी कर
पहाड़ पर दिखाई देती पहाड़ को गर्जना कराती है चन्द्रकूप बोलता और योनि यंत्र से निकलने
से पुनर्जन्म नहीं होता ठुमरी बांधने से पूरा महापुरुष कहाता जब तक हिंगलाज न हो आवे तब
तक आधा महापुरुष बजता है इत्यादि सब बातें क्या मानने योग्य नहीं? (उत्तर) नहीं क्योंकि यह ज्वाला
मुखी पहाड़ से आगी निकलती है उसमें पुजारी पोपों की विचित्र लीला है जैसे बघार के घी के
चमचे में ज्वाला आ जाती अलग करने से वा फूंक मारने से बुझ जाती और थोड़ा सा घी को खा जाती
बाकी छोड़ जाती है उसी के समान वहां भी है जैसी चूल्हे की ज्वाला में जो डालो सब भस्म हो जाता जं
गल वा घर में लग जाने से सब को खा जाती है इससे वहां क्या विशेष है बिना एक मंदिर कुण्ड औ
र इधर उधर नल रचना के हिंगलाज में न कोई सवारी होती और जो कुछ होता है वह सब पोप पुजा
रियों की लीला के दूसरा कुछ भी नहीं एक जल और दलदल का कुण्ड बना रक्खा है जिसके नी
चे से बुदबुदा उठते हैं उसको सफल यात्रा होना मूढ़ मानते हैं योनि का यंत्र पोप जी ने धन हरने
के लिये बनवा रक्खा है और ठुमरे भी उसी प्रकार पोपलीला के हैं उससे महापुरुष हो तो ए
क पशु पर ठुमरों का बोझ लाद दें तो क्या महापुरुष हो जायगा महापुरुष तो बड़े उत्तम धर्म यु
क्त पुरुषार्थ से होता है (प्रश्न) अमृतसर का तालाव अमृतरूप एक मुरेठी का फल आधा मीठा और एक
भित्ती नमती और गिरती नहीं रेवालसर में बेड़े तरते अमरनाथ में आप से आप लिंग बन जाते
हिमालय से कबूतर के जोड़े आके सबको दर्शन देकर चले जाते हैं क्या यह भी मानने योग्य नहीं? (उत्तर) नहीं,
उस तलाव का नाम मात्र है जब कभी जंगल होगा तब उसका जल अच्छा होगा इससे उसका ना
म अमृतसर धरा होगा जो अमृत होता तो पुराणियों के मानने के तुल्य कोई क्यों मरता भित्ती
की कुछ बनावट ऐसी होगी रीठे कलम के पैवंदी होंगे अथवा गपोड़ा होगा रेवालसर में बेड़ा तरने में कुछ कारीगरी होगी अमरनाथ में
बर्फ के पहाड़ बनते हैं तो जल जम के छोटे लिंग का बनना कौन आश्चर्य है और कबूतर के जो
ड़े पालित होंगे पहाड़ की आड़ में से मनुष्य छोड़ते होंगे दिखला कर टका हरते होंगे। (प्रश्न) हर
द्वार स्वर्ग का दरवाजा हर की पैड़ी में स्नान करे तो पाप छूट जाते हैं और तपोवन में रहने से त
पस्वी होता, देवप्रयाग, गंगोत्तरी में गोमुख, उत्तरकाशी में गुप्तकाशी, त्रियुगीनारायण के ... के
दार और बद्रीनारायण की पूजा छः महीने तक मनुष्य और छः महीने तक देवता करते हैं।
महादेव का मुख नेपाल में पशुपती, चूतड़ केदार और तुंगनाथ में जानु और पग अमर
नाथ में इनके दर्शन स्पर्शन स्नान करने से मुक्ति हो जाती है वहां केदार और बद्री से स्वर्ग जाना
चाहे तो जा सकता है इत्यादि बातें कैसी हैं? (उत्तर) हरद्वार उत्तर पहाड़ों में जाने का एक मा

गा का आरंभ है हरकी पैड़ी एक स्नान के लिये कुण्ड की सिड़ियों को बनाया है सच पूछो तो हाड़ पैड़ी है
क्योंकि देश देशान्तर के मृतकों के हाड़ उसमें पड़ा करते हैं पाप कभी नहीं कहीं छूट सकता विना भोगे अथवा नहीं कटते, तपोवन जब होगा तब होगा अब तो भिक्षुक वन है तपोवन
में जाने रहने से तप नहीं होता किन्तु तप तो करने से होता है क्योंकि वहां बहुत से दुकान
दार झूंठ बोलने वाले भी रहते हैं (हिमवतः प्रभवति गंगा) पहाड़ के ऊपर से जल गिर
ता है गोमुख का आकार पोपलीला से बनाया होगा और वही पहाड़ पोप का स्वर्ग है वहां
उत्तर काशी आदि स्थान ध्यानियों के लिये अच्छा है परन्तु दुकानदारों के लिये वहां भी दुकान
दारी है, देवप्रयाग पुराण के गपोड़ों की लीला है अर्थात् जहां अलखनंदा और गंगा मिली है
इस लिये वहां देवता बसते हैं ऐसे गपोड़े न मारें तो वहां कौन जाय और टका कौन देवे।
गुप्तकाशी तो नहीं है वह तो प्रसिद्ध काशी है तीनयुग की धूनी तो नहीं दीखती परन्तु पोपों
की दश बीस पीढ़ी की होगी जैसी खाखियों की धूनी और पार्सियों की अग्यारी सदैव
बजलती रहती है, तप्तकुण्ड भी पहाड़ों के भीतर उष्मा गर्मी होती है उसमें तपकर जल
आता है उसके पास दूसरे कुण्ड में ऊपर का जल वा जहां गर्मी नहीं वहां का आता है इस
से ठण्ढा है केदार का स्थान वह भूमि बहुत अच्छी है परन्तु वहां भी एक जमे हुए पत्थर पर
पोप वा पोपों के चेलों ने मंदिर बना रक्खा है वहां महन्त पुजारी पंडे आंख के अंधे गांठ के
पूरों से माल लेकर विषयानन्द करते हैं वैसे ही बद्रीनारायण में ठग विद्यावाले बहुत
से बैठे हैं रावलजी, वहां के मुख्य हैं एक स्त्री छोड़ अनेक स्त्री रख बैठे हैं पशुपति एक मं
दिर और पंचमुखी मूर्त्ति का नाम धर रक्खा है जब कोई न पूछे तभी पोपलीला बलवती हो
ती है परन्तु जैसे तीर्थों के लोग धूर्त्त धनहरे होते हैं वैसे पहाड़ी लोग नहीं होते वहां की
भूमि बड़ी रमणीय और पवित्र है (प्रश्न) विंध्याचल में विंध्येश्वरी काली अष्टभुजा प्रत्यक्ष
सत्य है, विंध्येश्वरी तीन समय में तीन रूप बदलती है और उसके बाड़े में मक्खी एक भी
नहीं होती प्रयाग तीर्थराज वहां शिर मुंडाये सिद्ध गंगा जमुना के संगम में स्नान करने से इ
च्छा सिद्ध होती है वैसे ही अयोध्या कई वार उड़कर सब बस्ती सहित स्वर्ग में चली गई
मथुरा सब तीर्थों से अधिक, वृंदावन लीलास्थान और गोवर्धन ब्रजयात्रा बड़े भाग्य
से होती है सूर्यग्रहण में कुरुक्षेत्र में लाखों मनुष्यों का मेला होता है क्या ये सब बातें मि
थ्या हैं (उत्तर) प्रत्यक्ष तो आंखों से तीनों मूर्त्तियां दीखती हैं कि पाषाण की मूर्त्तियां हैं –
और तीन काल में तीन प्रकार के रूप होने का कारण पुजारी लोगों के वस्त्र आदि आभू
षण पहिराने की चतुराई है और मक्खियां हजारों लाखों होती हैं मैंने अपनी आंखों
से देखा है प्रयाग में कोई नापित श्लोक बनाने हारा अथवा पोपजी को कुछ धन दे के मु
ण्डन कराने का महात्म्य बनाया वा बनवाया होगा प्रयाग में स्नान करके स्वर्ग को जाता
तो लौटकर घर में आता कोई नहीं दीखता किन्तु घर को सब आते हुए दीखते
हैं अथवा जो कोई वहां डूब मरता और उसका जीव भी आकाश में वायु के साथ घूमकर

भी नहीं

जन्म लेता होगा तीर्थराज भी नाम पोपों ने धरा है जड़ में राजा प्रजा भाव कभी हो
सकता यह बड़ी असंभव बात है कि अयोध्या नगरी वस्ती कुत्ते गधे भंगी चमार जाजरू
सहित तीन वार स्वर्ग में तो नहीं गई वहीं वहीं है परन्तु पोपजी के मुख गपोड़ों में अयोध्या
स्वर्ग को उड़ गई यह गपोड़ा शब्दरूप उड़ता फिरता है ऐसे ही नैमिषारण्य आदि की भी
पोपलीला जाननी मथुरा तीन लोक से निराली तो नहीं परन्तु उसमें तीन जन्तु बड़े
लीलाधारी हैं कि जिनके मारे जल स्थल और अन्तरिक्ष में किसी को सुख मिलना कठिन है। एक चौ
बे जो कोई स्नान करने जाय अपना कर लेने को खड़े रहकर बकते रहते हैं लाओ यजमान भां
ग मर्ची और लड्डू खावें पीवें यजमान की जै २ मनावें जल में कछुवे काट ही खाते हैं जिनके मा
रे स्नान करना भी घाट पर कठिन पड़ता है आकाश के ऊपर लाल मुख के बन्दर पगड़ी, टोपी,
गहने और जूते तक भी न छोड़ें काट खावें धक्के दे गिरा मार डालें और ये तीनों पोप और पो
पजी के चेलों के पूजनीय हैं मनों चना आदि अन्न कछुवे और बन्दरों को चना गुड़ आदि
और चौबों की दक्षिणा और लड्डुओं से उनके सेवक सेवा किया करते हैं और वृन्दावन जब
था तब था अब तो वेश्यावनवत् लल्ला लल्ली और गुरु चेली आदि की लीला फैल रही है
वैसे ही दीपमालिका का मेला गोवर्धन और व्रजयात्रा में भी पोपों की बन पड़ती है
कुरुक्षेत्र में भी वही जीविका की लीला समझलो इनमें जो कोई धार्मिक परोपकारी पुरु
ष है इस पोपलीला से पृथक् हो जाता है। (प्रश्न) यह मूर्तिपूजा और तीर्थ सनातन से
चले आते हैं झूठे क्यों? (उत्तर) तुम सनातन किसको कहते हो जो सदा से चला आता है,
जो यह सदा से होता तो वेद और ब्राह्मणादि ऋषि मुनि कृत पुस्तकों में इनका नाम क्यों
नहीं? यह मूर्तिपूजा अढ़ाई तीन हजार वर्ष के इधर २ वाममार्गी और जैनियों से चली
है प्रथम आर्यावर्त्त में नहीं थी और ये तीर्थ भी नहीं थे जब जैनियों ने गिरनार, पालि
टाना, शिखर, शत्रुंजय और आबू आदि तीर्थ बनाये उनके अनुकूल इन लोगों ने
भी बना लिये जो कोई इनके आरंभ की परीक्षा करना चाहे वे पंडों की पुरानी से पुरा
नी बही और पत्र आदि लेख देखें तो निश्चय हो जायगा कि ये सब तीर्थ पांच सौ
अथवा हजार वर्ष से इधर ही बने हैं हजार वर्ष के उधर का लेख किसी के पास नहीं
निकलता इससे आधुनिक हैं। (प्रश्न) जो २ तीर्थ वा नाम का महात्म्य अर्थात् जैसे-
(अन्यक्षेत्रे कृतं पापं काशीक्षेत्रे विनश्यति, इत्यादि) बातें सच्ची हैं वा नहीं? (उत्तर)
नहीं क्योंकि जो पाप छूट जाते हों तो दरिद्रों को धन, राजपाट, अन्धों को आंख मिल जाती,
कोढ़ियों का कोढ़ आदि रोग छूट जाता ऐसा नहीं होता इसलिये पाप वा पुण्य किसी का
नहीं छूटता। (प्रश्न) गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापे
भ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥ आजन्मकृतमध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्॥ न
इत्यादि श्लोक पोपपुराण के हैं जो सैकड़ों हजारों कोश दूर से भी गङ्गा २ कहे तो
उसके पाप नष्ट होकर वह विष्णुलोक अर्थात् वैकुण्ठ को जाता है। (उत्तर) इनसे

[illegible]नाम स्मरण सब पापको हरलेता है वैसे ही राम कृष्ण शिव भगवती आदि
नामों का माहात्म्य है॥ और जो मनुष्य प्रातःकाल में शिव अर्थात् लिङ्ग वा उसकी मूर्त्ति का द
र्शन करे तो रात्रि में किया हुआ मध्याह्न में दर्शन से जन्म भर का सायंकाल में दर्शने का [illegible] मोंके पाप [illegible] दर्शन
माहात्म्य है॥ क्या झूठा हो जायगा। (उत्तर) मिथ्या होने में क्या शंका क्योंकि गंगा गंगा वा हरे राम
कृष्ण नारायण शिव और भगवती नाम स्मरण से पाप कभी नहीं छूटता जो छूटे
तो दुःखी कोई न रहे और पाप करने से कोई भी न डरे जैसे आजकल पोपलीला में
पाप बढ़कर हो रहे हैं क्योंकि मूढ़ों को विश्वास है कि हम पाप कर नाम स्मरण वा तीर्थ या
त्रा करेंगे तो पापों की निवृत्ति हो जायगी इसी विश्वास पर पाप करके इस लोक और पर
लोक का नाश करते हैं और किया हुआ पाप भोगना ही पड़ता है ~~[illegible]~~
नाम स्मरण सत्य है वा नहीं (उत्तर) है वेदादि सत्य शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना धार्मि
क विद्वानों का संग परोपकार धर्मानुष्ठान योगाभ्यास निर्वैर निष्कपट सत्यभाषण
सत्य का मानना सत्य करना ब्रह्मचर्य आचार्य अतिथि माता पिता की सेवा परमेश्वर की
स्तुति प्रार्थना उपासना शान्ति जितेन्द्रियता सुशीलता धर्मयुक्त पुरुषार्थ ज्ञान विज्ञान
आदि शुभ गुण कर्म दुःखों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं और जो जल स्थल मय हैं वे तीर्थ
कभी नहीं हो सकते क्योंकि (जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि) मनुष्य जिनसे करके
दुःखों से तरें उनका नाम तीर्थ है जल स्थल तराने वाले नहीं किन्तु डुबाकर मारने वाले
हैं प्रत्युत नौका आदि का नाम तीर्थ हो सकता है क्योंकि उनसे भी समुद्र आदि को तरते
हैं (समानतीर्थे वासी) १ अष्टाध्यायी पाणिनि महर्षिकृत सूत्र (नमस्तीर्थ्याय
च) यजुः अ० १६ जो ब्रह्मचारी एक आचार्य और एक शास्त्र को साथ २ पढ़ते हों वे
सब सतीर्थ्य अर्थात् समानतीर्थसेवी होते हैं जो वेदादि शास्त्र और सत्यभाषणादि
धर्म लक्षणों में साधु हो उसको अन्नादि पदार्थ देना और उनसे विद्या लेनी इत्यादि
तीर्थ कहाते हैं नाम स्मरण इसको कहते हैं कि (यस्य नाम महद्यशः) यजु०
परमेश्वर का नाम बड़े यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना है जैसे ब्रह्म परमेश्वर ईश्वर
न्यायकारी दयालु सर्वशक्तिमान् आदि नाम परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव से हैं
जैसे ब्रह्म सबसे बड़ा परमेश्वर ईश्वरों का ईश्वर ईश्वर सामर्थ्ययुक्त न्यायकारी क
भी अन्याय नहीं करता दयालु सब पर कृपादृष्टि रखता सर्वशक्तिमान् अपने सा
मर्थ्य ही से सब जगत् की उत्पत्ति स्थिति प्रलय करता सहाय किसी का नहीं लेता ब्रह्मा विवि
ध जगत् के पदार्थों का बनाने हारा विष्णु सब में व्यापक होकर रक्षा करता महादेव सब दे
वों का देव रुद्र प्रलय करने हारा आदि नामों के अर्थों को अपने में धारण करे अर्थात्
बड़े कामों से बड़ा हो समर्थों में समर्थ हो सामर्थ्यों को बढ़ाता जाय अधर्म कभी न करे
सब पर दया करे सब प्रकार के साधनों को समर्थ करे शिल्प विद्या से नाना
प्रकार के पदार्थों को बनावे सब संसार में अपने आत्मा के तुल्य सुख दुःख स

प्रजासे दंड और
के सबकी रक्षा करे विद्वानों में विद्वान् होके दुष्टकर्म और दुष्टकर्म करनेवालों को दंड देके
सज्जनों की रक्षा करे इस प्रकार परमेश्वर के नामों का अर्थ जान का परमेश्वर के गुण
कर्म स्वभाव को करते जाना ही परमेश्वर का नामस्मरण है। (प्रश्न) गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्वि-
ष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥ इत्यादि गु
रुमहात्म्य तो सच्चा है गुरु के पग धोके पीना जैसी आज्ञा करे वैसा करना गुरु लोभी होतो
वामन के समान, क्रोधी हो तो नरसिंह के सदृश मोही हो तो राम के तुल्य और कामी हो तो कृष्ण
के समान गुरु को जानना चाहै गुरुजी कैसा ही पाप करें तो भी अश्रद्धा न करनी सन्त वा गुरु के
दर्शन को जाने में पग २ में अश्वमेध का फल होता है यह बात ठीक है वा नहीं। (उत्तर) ब्रह्मा ठीक नहीं,
विष्णु महेश्वर और परब्रह्म परमेश्वर के नाम हैं उसके तुल्य गुरु कभी नहीं हो सकता यह गुरु
माहात्म्य गुरुगीता भी एक बड़ी पोपलीला है गुरु तो माता पिता आचार्य्य और अतिथि
होते हैं उनकी सेवा करनी, उनसे विद्या शिक्षा लेनी देनी शिष्य और गुरु का काम है परन्तु
जो गुरु लोभी, क्रोधी, मोही और कामी हो तो उसको सर्वथा छोड़ देना शिक्षा करनी सहज शिक्षा
से न माने तो अर्घ्य पाद्य अर्थात् ताड़ना दंड प्राण हरण तक भी करने में कुछ भी दोष न
ही जो विद्यादि सद्गुणों में गुरुत्व नहीं है झूठमूठ कंठी तिलक वेदविरुद्ध मंत्रोपदेश कर
ने वाले हैं वे गुरु ही नहीं किन्तु गड़रिये हैं जैसे गड़रिये अपनी भेड़ बकरियों से दूध आ
दि से प्रयोजन सिद्ध करते हैं वैसे ही शिष्यों के चेले चेलियों के धन हर के अपना मतल
ब करते हैं (गुरु लोभी चेला लालची दोनों खेलें दाव। भवसागर में डूबते बैठ पत्थर की नाव)
वे गुरु समझें कि चेले कुछ न कुछ देवेंगे और चेला समझे कि चलो गुरु झूठे सौगन्द
खाने पाप छुड़ाने आदि लालच से दोनों कपट मुनि भवसागर के दुःख में डूबते हैं जैसे
पत्थर की नौका में बैठने वाले समुद्र में डूब मरते हैं ऐसे गुरु और चेलों के मुख पर धूड़
राख पड़े उसके पास कोई भी खड़ा न रहे जो रहे वह दुःखसागर में पड़ेगा जैसे पोपली
ला पुजारी पुराणियों ने चलाई है वैसी इन गड़रिये गुरुओं ने भी लीला मचाई है
यह सब काम स्वार्थी लोगों का है जो परमार्थी लोग हैं वे आप दुःख पावें तो भी जगत का
उपकार करना नहीं छोड़ते और गुरुमाहात्म्य तथा गुरुगीता आदि भी इन्हीं लोभी कुकर्मी गु
~~कर्मी गुरुओं ने पन्थ के ... ...~~
रुओं ने बनाई है। (प्रश्न) अष्टादश पुराणानां कर्त्ता सत्यवती सुतः। १। इतिहास पुरा
णाभ्यां वेदार्थमुपबृंहयेत्। २। महाभारत। पुराणान्यखिलानि च। ३। शिव
मनु० इतिहासपुराणानि पंचमो वेदानां वेदः। ४। छान्दोग्य० दशमेऽहनि किं
चित्पुराणमाचक्षीत। ५। पुराणविद्या वेदः। ६। सूत्र ॥ अर्थ- अठारह
पुराणों के कर्त्ता व्यासजी हैं व्यासवचन का प्रमाण अवश्य करना चाहिये। १। इतिहास महा
भारत अठारह पुराणों से वेदों का अर्थ पढ़ें पढ़ावें क्योंकि इतिहास और पुराण वेदों ही के गृह्य सूत्र
अर्थ अनुकूल हैं। २। पितृकर्म में पुराण और हरिवंश की कथा सुनें। ३। अश्वमेध
की समाप्ति में दशमें दिन थोड़ी सी पुराण की कथा सुनें। ४। पुराणविद्या वेदार्थ के जा

इतिहास और पुराण पंचम वेद कहाते हैं ॥ इत्यादि प्रमाणों से पुराणों का प्रमाण और इनके
प्रमाणों से मूर्त्ति पूजा और तीर्थों का भी प्रमाण है क्योंकि पुराणों में मूर्त्ति पूजा और तीर्थों का विधा
न है (उत्तर) जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यासजी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते क्योंकि
शारीरक सूत्र योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रंथों के देखने से विदित होता है कि व्यास
जी बड़े विद्वान् सत्यवादी धार्मिक योगी थे वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते और इससे यह सि
द्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोल कल्पित ग्रंथ बनाये हैं उनमें व्यास
जी के गुणों का लेश भी नहीं था और वेद शास्त्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास सदृश विद्वानों का
काम नहीं किन्तु यह काम विरोधी स्वार्थी अविद्वान् पामरों का है इतिहास और पुराण शिवपुराणादि का नाम नहीं किन्तु (ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान्गाथा
नाराशंसीरिति) यह ब्राह्मण और सूत्रों का वचन है। ऐतरेय, शतपथ, साम, और गोपथ ब्रा
ह्मण ग्रंथों ही के इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, और नाराशंसी ये पांच नाम हैं। (इतिहास) जैसे जनक और
याज्ञवल्क्य का संवाद (पुराण) जगदुत्पत्ति आदि का वर्णन (कल्प) वेद शब्दों के सामर्थ्य का वर्णन अर्थ निरूपण करना (गाथा) किसी का दृष्टान्त दार्ष्टान्तरूप कथा प्रसंग कहना। (नाराशंसी) मनु
ष्यों के प्रशंसनीय व अप्रशंसनीय कर्मों का कथन करना, इनही से वेदार्थ का बोध होता है पितृकर्म अर्थात् ज्ञानियों की प्रशंसा
में कुछ सुनना, अश्वमेध के अन्त में भी इन्हीं का सुनना लिखा है क्योंकि जो व्यासकृत ग्रंथ हैं उनका सु
नना सुनाना व्यासजी के जन्म के पश्चात् हो सकता है पूर्व नहीं जब व्यासजी का जन्म भी नहीं था तब वे
दार्थ को पढ़ते पढ़ाते सुनते सुनाते थे इसीलिये सब से प्राचीन ब्राह्मण ग्रंथों ही में यह सब घट
ना हो सकती है इन नवीन कपोलकल्पित श्रीमद्भागवत शिवपुराणादि मिथ्या वा दूषित ग्रंथों में नहीं घट सकती। जब व्यास
जी ने वेद पढ़े और पढ़ाकर वेदार्थ फैलाया इसी लिये उनका नाम वेदव्यास हुआ क्योंकि व्या
सजी कहते हैं वार पार की मध्य रेखा को अर्थात् ऋग्वेद के आरम्भ से लेकर अथर्ववेद के पार
पर्य्यन्त चारों वेद पढ़े थे और शुकदेव तथा जैमिनि आदि शिष्यों को पढ़ाये थे नहीं तो उनका
जन्म का नाम (कृष्णद्वैपायन) था जो कोई यह कहते हैं कि वेदों को व्यासजी ने इकट्ठे किये यह
बात झूठी है क्योंकि व्यासजी के पिता पितामह प्रपितामह पराशर, शक्ति, और वशिष्ठ और ब्रह्मा आदि
ने भी चारों वेद पढ़े थे यह बात क्योंकर घट सके (प्रश्न) पुराणों में सब बातें झूठी हैं
वा कोई सच्ची भी है (उत्तर) बहुत सी बातें झूठी हैं और कोई घुणाक्षरन्याय से सच्ची भी है जो सच्
ची है वह वेदादि सत्यशास्त्रों की और जो झूठी हैं वे इन पोपों के पुराण रूप घर की हैं। जैसे शिव पुराण में
शैवों ने शिव को परमेश्वर मान के विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, गणेश और सूर्यादि को उनके दास
ठहराये। वैष्णवों ने विष्णुपुराण आदि में विष्णु को परमात्मा माना और शिव आदि को
विष्णु के दास। देवीभागवत में देवी को परमेश्वरी और शिव, विष्णु आदि उसके किंकर सब बनाये
बनाये गणेशखण्ड में गणेश को ईश्वर और शेष सब दास बनाये। भला य
ह बात इन सम्प्रदायी पोपों की नहीं तो किनकी है एक मनुष्य के बनाने में ऐसी परस्पर वि
रुद्ध बात नहीं होती तो विद्वान् के बनाये में कभी नहीं आ सकती इसमें एक बात को सच्ची मानें तो दूसरी

झूठी और जो दूसरी को सच्ची मानें तो तीसरी झूठी और जो तीसरी को सच्ची मानें तो अन्य
सब झूठी होती हैं। शिव पुराण वाले ने शिव से, विष्णु पुराण वाले ने विष्णु से देवी पुराण
वाले ने देवी से गणेश खंड वाले ने गणेश से और सूर्य पुराण वाले ने सूर्य से और
वायु पुराण वाले ने वायु से सृष्टि की उत्पत्ति लिख के पुनः एक, २ से एक, २ जो-
जगत् के कारण लिखे उनकी उत्पत्ति एक, २ से लिखी। कोई पूछे कि जो जगत् की उत्पत्ति-
स्थिति प्रलय करने वाला है वह उत्पन्न और जो उत्पन्न होता है वह सृष्टि का कारण कभी
वा नहीं? हो सकता है? तो केवल चुप रहने के कुछ भी नहीं कह सकते और इन सब के शरीर की उ-
त्पत्ति भी इसी से हुई होगी फिर वे आप सृष्ट पदार्थ और परिच्छिन्न होकर संसार की उ-
त्पत्ति के कर्त्ता क्योंकर हो सकते हैं और उत्पत्ति भी विलक्षण २ प्रकार से मानी है जो
शिवपुराण में कि सर्वथा असंभव है जैसे शिव ने इच्छा की मैं सृष्टि करूं तो एक नारायण जलाशय
को उत्पन्न कर उसकी नाभी से कमल कमल में से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ उसने देखा कि सब
जलमय है जल की अंजलि उठा देख जल में पटक दी उससे एक बुदबुदा उठा और बुद-
बुदे में से एक पुरुष उत्पन्न हुआ उसने ब्रह्मा से कहा कि हे पुत्र! सृष्टि उत्पन्न कर ब्र-
ह्मा ने उससे कहा मैं तेरा पुत्र नहीं किन्तु तू मेरा पुत्र है उनमें विवाद हुआ और दिव्य हजार वर्ष
पर्यन्त दोनों जल पर लड़ते रहे। तब महादेव ने विचार किया कि जिनको मैंने सृष्टि
करने के लिये भेजा था वे दोनों आपस में लड़ झगड़ रहे हैं तब उन दोनों के बीच में से ए-
क तेजोमय लिंग उत्पन्न हुआ और वह शीघ्र आकाश में चला गया उसको देख के दो-
नों आश्चर्य हो गये विचारा कि इसका आदि अन्त लेना चाहिये जो
आदि अन्त लेके शीघ्र आवे वह पिता और जो पीछे वा थाह लेके न आवे वह पुत्र क-
हावे विष्णु कूर्म का स्वरूप धरके नीचे को चला और ब्रह्मा हंस का शरीर धारण करके
ऊपर को उड़ा दोनों मनोवेग से चले दिव्य हजार वर्ष पर्यन्त दोनों चलते रहे तो भी उस
का अन्त न पाया तब नीचे से ऊपर विष्णु और ऊपर से नीचे ब्रह्मा चला ब्रह्मा ने विचा-
रा कि छेड़ा ले आया होगा तो मुझको पुत्र बनना पड़ेगा ऐसा सोच रहा था कि उसी स-
मय एक गाय और एक केतकी का वृक्ष ऊपर से उतर आया उनसे ब्रह्मा ने पूछा कि
तुम कहां से आये उन्होंने कहा हम हजार वर्षों से इस लिंग के आधार से चले आते हैं
ब्रह्मा ने पूछा कि इस लिंग का थाह है वा नहीं उन्होंने कहा कि नहीं ब्रह्मा ने उनसे कहा
कि तुम हमारे साथ चलो और ऐसी साक्षी देओ कि मैं इस लिंग के शिर पर दूध की धा-
रा वर्षाती थी और वृक्ष कहे कि मैं फूल वर्षाता था ऐसी साक्षी देओ तो मैं तुमको ठिकाने
पर ले चलूं उन्होंने कहा कि हम झूठी साक्षी नहीं देंगे तब ब्रह्मा कुपित होकर बोला जो सा-
क्षी नहीं देओगे तो मैं तुमको अभी भस्म कर देता हूं तब दोनों ने डर के कहा कि ह-
म जैसी तुम कहते हो वैसी साक्षी देवेंगे तब तीनों नीचे की ओर चले विष्णु प्रथम ही
आ गये थे ब्रह्मा भी पहुंचा विष्णु से पूछा कि तू थाह ले आया वा नहीं तब विष्णु बोला

मुझको इच्छा था परन्तु नहीं मिला ब्रह्माने कहा मैं ले आया विष्णु ने कहा कोई साक्षी दे ओ तब गाय और वृक्ष केतकी ने साक्षी दी हम दोनों लिंग के शिर परथे । तब लिंग में से शब्द निकला और शाप दिया कि जिससे तू झूठ बोला इसलिये तेरा फूल मुझ वा अन्य देवता पर जगत् में कहीं नहीं चढेगा और जो कोई चढावेगा उसका सत्यानाश होगा। गाय को शाप दिया कि जिस मुखसे तू झूठ बोली उसी से विष्ठा खाया करेगी तेरे मुख की पूजा कोई नहीं करेगा किन्तु पूंछ की करेंगे और ब्रह्मा को शाप दिया कि जिससे तू मिथ्या बोला इसलिये तेरी पूजा संसार में कहीं न होगी । और विष्णु को वर दिया जिससे तू सत्य बोला इससे तेरी पूजा सर्वत्र होगी । पुनः दोनों ने लिंग की स्तुति की उससे प्रसन्न होकर उस लिंग में से एक जटाजूट मूर्त्ति निकल आई और कहा कि तुमको मैंने सृष्टि करने के लिये भेजा था झगड़े में क्यों लगे रहे ब्रह्मा और विष्णु ने कहा कि हम बिना सामग्री सृष्टि कहां से करें तब महादेव ने अपनी जटा में से एक भस्म का गोला निकाल कर दिया कि जाओ इसमें से सब सृष्टि बनाओ इत्यादि । भला कोई इन पुराणों के बनाने वाले पोपों से पूछे कि जब सृष्टि तत्व और पंचमहाभूत भी नहीं थे तो ब्रह्मा विष्णु महादेव के शरीर जल कमल लिंग गाय और केतकी का वृक्ष और भस्म का गोला क्या तुम्हारे बाबा के घर में से आ गिरे? वैसे ही भागवत में विष्णु की नाभी से कमल कमल से ब्रह्मा और ब्रह्मा के दहिने पग के अंगूठे से स्वायंभव और बायें अंगूठे से सत्यरूपा राणी ललाट से रुद्र और मरीचि आदि दश पुत्र उनसे दश प्रजापति उनकी तेरह लड़कियों का विवाह कश्यप से उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव अदिति से आदित्य विनता से पक्षी कद्रू से सर्प, सरमा से कुत्ते, स्याल आदि और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊंट, गधा, भैंसा, घास फूस और बबूर आदि वृक्ष कांटे सहित उत्पन्न होगये । वाहरे वाह भागवत के बनाने वाले लाल बुझक्कड़ क्या कहना तुझको ऐसी २ मिथ्या बातें लिखने में तनिक भी लज्जा और शर्म न आई निपट अंधा ही बन गया। भला परमेश्वर की सृष्टिक्रम के विरुद्ध मनुष्य स्त्री पुरुष के रजवीर्य के संयोग से मनुष्य तो बनते ही हैं परन्तु पशु पक्षी सर्प आदि कभी उत्पन्न नहीं हो सकते । और हाथी ऊंट सिंह कुत्ता गधा और वृक्षादि का स्त्री के गर्भाशय में स्थित होने का अवकाश भी कहां हो सकता है । और सिंह आदि उत्पन्न होकर अपने मा बाप को क्यों न खा गये और मनुष्य शरीर से पशु पक्षी वृक्षादि का उत्पन्न होना क्यों कर संभव हो सकता है । धिक्कार है पोप और पोपरचित इस महा असंभव लीला को जिसने संसार को अभी तक भ्रमा रक्खा है । भला इन महा झूठ बातों को वे अंधे पोप और बाहर भीतर की फूटी आंखों वाले उनके चेले सुनते और मानते हैं बड़े ही आश्चर्य की बात है कि ये मनुष्य हैं वा अन्य कोई!!! इन भागवतादि पुराणों के बनाने हारे जन्मते ही क्यों न गर्भ ही में नष्ट हो गये वा जन्मते समय मर क्यों न गये क्योंकि इन पापों से बचते तो आर्य्यावर्त्त देश दुःखों से बच जाता । (प्रश्न) इन बातों

में विरोध नहीं आ सकता क्योंकि जिसका विवाह उसीका गीत जब विष्णु की स्तुति करने लगे तब विष्णु को परमेश्वर अन्य को दास जब शिव के गुण गाने लगे तब शिव को परमात्मा अन्य को किंकर बनाया और परमेश्वर की माया में सब बन सकता है मनुष्य से पशु आदि और पशु आदि से मनुष्यादि की उत्पत्ति परमेश्वर कर सकता है देखो बिना कारण अपनी माया से सब सृष्टि खड़ी कर दी है उसमें कौनसी बात अघटित है जो करना चाहे सो सब कर सकता है। (उत्तर) अरे भोले लोगो विवाह में जिसके गीत गाते हैं उसको सबसे बड़ा और दूसरों को छोटा वा निन्दा अथवा उसको सबका बाप तो नहीं बनाते कहो पोपजी तुम भाट और चारणों से भी बढ़कर गप्पी हो अथवा नहीं कि जिसके पीछे लगो उसी को सबसे बड़ा बनाओ और जिससे विरोध करो उसको सबसे नीच ठहराओ तुमको सत्य और धर्म से क्या प्रयोजन [illegible] तुमको तो अपने मतलब ही से काम है माया मनुष्य में हो सकती है जो कि छली कपटी हैं उन्हीं को मायावी कहते हैं परमेश्वर में छलकपटादि दोष न होने से उसको मायावी नहीं कह सकते जो आदि सृष्टि में कश्यप और कश्यप की स्त्रियों से पशु पक्षी सर्प वृक्षादि हुए होते तो आजकल भी वैसे सन्तान क्यों नहीं होते सृष्टिक्रम जो पहिले लिख आये वही ठीक है और अनुमान है कि पोपजी यहीं से धोखा खाकर बके होंगे (तस्मात्काश्यप्य इमाः प्रजाः) शतपथ में यह लिखा है कि यह सब सृष्टि कश्यप की बनाई हुई है (कश्यपः कस्मात् पश्यको भवतीति) निरु० सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का नाम कश्यप इसलिये है कि जो पश्यक अर्थात् (पश्यतीति पश्यः पश्य एव पश्यकः) जो निर्भ्रम होकर चराचर जगत् सब जीव और इनके कर्म सकल विद्याओं को यथावत् देखता है इसका अर्थ न जान के भांग के लोटे चढ़ा अपना जन्म सृष्टिविरुद्ध कथन करने में नष्ट किया। जैसे मार्कण्डेय पुराण के दुर्गापाठ में देवों के शरीरों से तेज निकल के एक देवी बनी उसने महिषासुर को मारा रक्तबीज के शरीर से एक बिन्दु भूमि में पड़ने से उसके सदृश रक्तबीज के उत्पन्न होने से सब जगत में रक्तबीज भर जाना रुधिर की नदी बह चलनी आदि गपोड़े बहुत से लिख रक्खे हैं जब रक्तबीज से सब जगत् भर गया था तो देवी और देवी का सिंह और उसकी सेना कहां रही थी जो कहो कि देवी से दूर २ रक्तबीज थे तो सब जगत् रक्तबीज से नहीं भरा था जो भर जाता तो पशु पक्षी मनुष्यादि प्राणी और जलस्थ मगर मच्छ कच्छप मत्स्यादि वनस्पति आदि वृक्ष कहां रहते यहां यही निश्चित जानना कि दुर्गापाठ बनाने वाले पोप के घर में भागकर चले गये होंगे। देखिये क्या ही असंभव कथा का भंग की लहरी में गपोड़ा उड़ाया जिनका बोर न छोर अब जिसको (श्रीमद्भागवत) कहते हैं उसकी लीला सुनो ब्रह्माजी को नारायण ने चतुःश्लोकी भागवत का उपदेश किया (ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्। सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया ॥) अर्थ - जब मूल ही झूठा है तो उसका वृक्ष क्यों न झूठा होगा। हे ब्रह्माजी तू मेरा परम गुह्यज्ञान जो विज्ञान और रहस्य युक्त और

और (आर्यावर्त विषय में आ) इस महाभाष्य के वचन से आर्यों का अधिष्ठान और अन्त का वर्णन आदि में आने से पुस्तक [illegible] बन गया है

भागवत का

काम
भक्ति मोक्ष का अंग मानते हैं उसी का खण्डन करते हैं यह गाकर जब विज्ञान युक्त ज्ञान को मानते
परम अर्थात् ज्ञान का विशेषण रखना व्यर्थ है और गुह्य विशेषण से रहस्य भी
पुनरुक्त है जब मूल श्लोक अनर्थक है तो ग्रंथ अनर्थक क्यों नहीं ब्रह्माजी को वर दिया कि
(भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित्) भाग० आप कल्प सृष्टि और विक-
ल्प प्रलय में भी मोह को प्राप्त कभी न होंगे ऐसा लिख के पुनः दशम स्कंध में मोहित
हो के वत्स हरण किया इन दोनों में से एक बात सच्ची दूसरी झूठी ऐसा होकर दोनों
बात झूठी जब वैकुण्ठ में राग द्वेष क्रोध ईर्ष्या दुःख नहीं है तो सनकादिकों को वैकुण्ठ के द्वार
बीजे में क्रोध क्यों हुआ जो क्रोध हुआ तो वह स्वर्ग ही नहीं तब जय विजय द्वारपाल थे स्वा-
मी की आज्ञा पालनी अवश्य थी उन्होंने सनकादिकों को रोका तो क्या अपराध हुआ इस
पर बिना अपराध शाप ही नहीं लग सकता, जब शाप लगा कि तुम पृथिवी में गिर
पड़ो इसके कहने से यह सिद्ध होता है कि वहां पृथिवी न होगी आकाश वायु अग्नि और
जल होगा तो ऐसा द्वार मन्दिर और जल किसके आधार थे पुनः जय विजय ने सन
कादिकों की स्तुति की महाराज पुनः हम वैकुण्ठ में कब आवेंगे उन्होंने उनसे कहा कि जो प्रे-
म से नारायण की भक्ति करोगे तो सात जन्म और जो विरोध से भक्ति करोगे तो तीसरे
जन्म वैकुण्ठ को प्राप्त होगे इसमें विचारना चाहिये कि जय विजय नारायण के नौकर थे
तथ्य उनकी रक्षा और सहाय करना नारायण का काम था जो अपने नौकरों को बिना अपरा-
ध दुःख देवें उनको उनका स्वामी दंड न देवे तो उसके नौकरों की दुर्दशा सब कोई क-
र डाले नारायण को उचित था कि जय विजय का सत्कार और सनकादिकों को खूब दं-
ड देते क्योंकि उन्होंने भीतर आने के लिये हठ क्यों किया और नौकरों से लड़के शाप दिया
उनके बदले सनकादिकों को पृथिवी में डाल देना नारायण का न्याय था जब इतना अं-
धेर नारायण के घर में है तो उसके सेवक जो कि वैष्णव कहाते हैं उनकी जितनी दुर्दशा
हो उतनी थोड़ी है पुनः वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु उत्पन्न हुए उनमें से हिरण्या-
क्ष को वराह ने मारा उसकी कथा इस प्रकार से लिखी है कि वह पृथिवी को चटाई के समा-
न लपेट शिराने धर सो गया विष्णु वराह का स्वरूप धारण करके उसके शिर के नीचे से
पृथिवी को मुख में धर लिया वह उठा दोनों की लड़ाई हुई वराह ने हिरण्याक्ष को मार डा-
ला. इन पोपों से कोई पूछे कि पृथिवी गोल है वा चटाई के समान तो कुछ न कह सकेंगे क्यों
कि पौराणिक लोग भूगोल विद्या के शत्रु हैं भला जब लपेटकर शिराने धरके किस पर सो-
या और वराह जी किस पर पग धर के दौड़ आये फिर पृथिवी को तो वराह जी ने मु-
ख में रक्खी फिर दोनों किस पर खड़े होके लड़े वहां तो और कोई ठहरने की जगह न
थी किन्तु भागवतादि पुराण बनानेवाले पोपजी की छाती पर खड़े होके लड़े होंगे —
परन्तु पोपजी किस पर सोया होगा यह बात ऐसे (गप्पी के घर गप्पी आये
बोलो गप्पीजी) जब मिथ्यावादियों के घर में दूसरे गप्पी लोग आते हैं फिर गप्प मारने
में क्या कमती इस प्रकार की यह बात है। अब रहा हिरण्यकशिपु उसके लड़का ८.

जो प्रह्लाद बड़ा भक्त हुआ था उसका पिता पढ़ाने को पाठशाला में भेजता था तब वह
अध्यापकों से कहता था कि मेरी पट्टी में राम राम लिख देओ जब उसके बाप ने
सुना उससे कहा तू हमारे शत्रु का भजन क्यों करता है छोकरे ने न माना उसको बांध
के पहाड़ से गिराया कूप में डाला परन्तु उसको कुछ न हुआ तब उसने एक लोहे का
खंभा आगी में तपा के उससे बोला जो तेरा इष्टदेव राम सच्चा हो तो तू इसको पक
ड़ने से न जलेगा प्रह्लाद पकड़ने को चला मन में शंका हुई जलने से बचूंगा वा न
हीं नारायण ने उस खंभे पर छोटी २ चीटियों की पंक्ति चलाई उसको निश्चय
हुआ झट खंभे को पकड़ा वह फट गया उस में से नृसिंह निकला और उसके बाप को
पकड़ पेट फाड़ डाला पश्चात् प्रह्लाद को लाड से चाटने लगा प्रह्लाद से कहा व
र मांग उसने अपने पिता की सद्गती मांगी नृसिंह ने वर दिया कि तेरे इक्कीस पु
रुषे सद्गती को गये। अब देखो यह भी दूसरे गपोड़े का भाई गपोड़ा है किसी
भागवत सुनने वा बांचने वाले को कोई ऊपर पहाड़ से गिरावे तो कोई न बचावे
चकनाचूर होकर मर ही जावे प्रह्लाद को उसका पिता पढ़ने के लिये भेज
ता था। क्या बुरा काम किया था और वह प्रह्लाद ऐसा मूर्ख पढ़ना छोड़ वैरागी
होना चाहता था जो जलते हुए खंभे से कीड़ी चढ़ने लगी और प्रह्लाद स्पर्श कर
ने से न जला इस बात को जो सच्ची माने उसको भी खंभे के साथ लगा देना चाहिये-
जो यह न जले तो जानो वह भी न जला होगा और नृसिंह भी क्यों न जला प्रथम
तीसरे जन्म में वैकुण्ठ में आने का वर सनकादिक का था क्या उसको तुम्हारा
नारायण भूल गया भागवत की रीति से ब्रह्मा, प्रजापति, कश्यप, हिरण्याक्ष
और हिरण्यकश्यपु चौथी पीढ़ी में होता है इक्कीस पीढ़ी प्रह्लाद की हुई भी नहीं
पुनः इक्कीस पुरुषे सद्गती को गये कह देना कितना प्रमाद है और फिर वे ही हिर
ण्याक्ष हिरण्यकश्यपु रावण, कुम्भकर्ण, पुनः शिशुपाल, दन्तवक्र, उत्पन्न हुए
तो नृसिंह का वर कहां उड़ गया ऐसी प्रमाद की बातें प्रमादी करते सुनते और मा
नते हैं विद्वान् नहीं और अक्रूरजी (रथेन वायुवेगेन जगाम गोकुलं प्रति) कं
स के भेजने से वायु के वेग के समान दौड़ने वाले घोड़ों के रथ पर बैठ के सूर्योदय से
चले और चार मील गोकुल में सूर्यास्त समय पहुंचे अथवा घोड़े भागवत ब
नाने वाले की परिक्रमा करते रहे होंगे वा मार्ग भूल कर भागवत बनाने वाले के घर
में घोड़े हांकने वाले और अक्रूरजी आकर सो गये होंगे। पूतना का शरीर छः कोश
चौड़ा और बहुत सा लम्बा लिखा है मथुरा और गोकुल के बीच में उसको मार कर श्री
कृष्णजी ने डाल दिया जो ऐसा होता तो मथुरा और गोकुल दोनों दब कर पोपजी का
घर भी दब गया होता। और अजामेल की कथा ऊटपटांग लिखी है उसने नारद
के कहने से अपने लड़के का नाम नारायण रक्खा था मरते समय अपने पुत्र को पुका
रा बीच में नारायण कूद पड़े क्या नारायण उसके अन्तःकरण के भाव को नहीं जान

जैसे कि वह अपने पुत्र को पुकारता है मुझको नहीं जो ऐसा ही नाममहात्म्य है तो आ
जकल भी नारायण के स्मरण करने वालों के दुःख छुड़ाने को क्यों नहीं आते? ऐसा ही
सुमेरु पर्वत का परिमाण लिखा है और प्रियव्रत राजा के रथ के चक्र की लीक से समु
द्र हुए उंचास कोटि योजन पृथिवी है इत्यादि मिथ्या बातों का गपोड़ा भागवत में
लिखा है जिसका कुछ पारावार नहीं। और यह भागवत बोपदेव का बनाया है जि
सके भाई जयदेव ने गीतगोविंद बनाया है उसने देखो ये श्लोक अपने बनाये हिमा
द्रि नामक ग्रंथ में लिखे हैं कि श्रीमद्भागवत मैंने बनाया है पंडित बोपदेव ~~लिखता है कि जिस ग्रंथ का~~ अपने बनाये हिमाद्रि ग्रंथ में लिखता है कि श्रीमद्भागवत पु
राण मैंने बनाया है उसके लेख तीन पत्र हमारे पास थे उनमें से एक पत्र खोग
या है उस पत्र में श्लोकों का जो आशय था उस आशय के हमने दो श्लोक बना के नीचे
लिखे हैं जिसको देखना हो वह हिमाद्रि ग्रंथ में देख लेवे —
श्लोक। हिमाद्रेः सचिवस्यार्थे सूचना क्रियतेऽधुना। स्कंधाध्यायकथानां
च यत्प्रमाणं समासतः ॥१॥ श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं च मयेरितम्।
विदुषा बोपदेवेन श्रीकृष्णस्य यशोऽन्वितम् ॥२॥ इसी प्रकार के नष्ट पत्र में
श्लोक थे अर्थात् राजा का सचिव हिमाद्रि ने बोपदेव पंडित से कहा कि मुझको
तुम्हारे बनाये श्रीमद्भागवत के संपूर्ण सुनने का अवकाश नहीं है इसलिये
तुम संक्षेप से श्लोकबद्ध सूचीपत्र बनाओ जिसको देखके मैं श्रीमद्भागव
त की कथा को संक्षेप से जान लूं सो नीचे लिखा हुआ सूचीपत्र उ
स बोपदेव ने बनाया उसमें से उस नष्ट पत्र में दश २० श्लोक खोगये हैं ग्यारहवें श्लोक
से लिखते हैं, ये नीचे लिखे श्लोक सब बोपदेव के बनाये हैं (श्लोक)॥
बोधयंतीति हि प्राहुः श्रीमद्भागवतं पुनः।
पंच प्रश्नाः शौनकस्य सूतस्यात्रोत्तरं त्रिषु ॥११॥ प्रश्नावतारयोश्चैव व्यासस्यानि
र्वृतिः कृतात्। नारदस्यात्र हेतूक्तिः प्रतीत्यर्थं स्वजन्म च ॥१२॥ सुप्तघ्नं द्रौणिपरि
भवस्तदस्त्रात्पांडवावनम्। भीष्मस्य स्वपदप्राप्तिः कृष्णस्य द्वारकागमः ॥१३॥
श्रोतुः परीक्षितो जन्म धृतराष्ट्रस्य निर्गमः। कृष्णमर्त्यत्यागसूचा ततः पार्थम
हापथः ॥१४॥ इत्यष्टादशभिः पादैरध्यायैः क्रमात्स्मृतः। स्वपरप्रतिबंधोनं
स्फीतं राज्यं जहौ नृपः ॥१५॥ इति वैराग्यदार्ढ्य प्रोक्ता द्रौणिजयादयः।
इति प्रथमः स्कन्धः ॥१॥ इत्यादि बारह स्कंधों का सूचीपत्र इसी प्रकार बोपदेव पं
डित ने बनाकर हिमाद्रि सचिव को दिया है जो विस्तार देखना चाहे वह बोपदेव के बनाये हिमाद्रि
इसी प्रकार अन्य पुराणों की भी लीला समझनी परन्तु उन्नीस बीस इक्कीस एक दूस
रे से बढ़कर हैं देखो श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उनका गुण
कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है जिसमें कोई अधर्म का आचरण
बुरा काम ~~नहीं~~ श्रीकृष्णजी ने जन्म से मरण पर्यन्त कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इ
स भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं दूध दही मक्खन आदि की चोरी
और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियों से रासमंडल क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष

ज्योतिष शास्त्र से विरुद्ध

यदि यह बात सच्ची हो तो कैसी लोगों नारायण स्मरण करने वालों के क्यों नहीं छूट जाते

[illegible]

श्रीकृष्णजी भी न गाये हैं इसको पठ पढ़ा सुन सुनाके अन्यमत वाले श्रीकृष्णजी की बहुत सी निंदा
करते हैं जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा करने वैं क्योंकर
होती। शिव पुराण में बारह ज्योतिर्लिंग और जिन में प्रकाश का लेश भी नहीं रात्रि को बिना दीप
किये लिङ्ग भी अंधेरे में नहीं दीखते ये सब लीला पोपजी की है (प्रश्न) जब वेद पढ़ने का सामर्थ्य
नहीं रहा तब स्मृति जब स्मृति के पढ़ने की बुद्धि नहीं रही तब शास्त्र जब शास्त्र पढ़ने का सामर्थ्य न
रहा तब पुराण बनाये केवल स्त्री और शूद्रों के लिये क्योंकि इनको वेद पढ़ने सुनने का अधि
कार नहीं है (उत्तर) यह बात मिथ्या है क्योंकि सामर्थ्य पढ़ने पढ़ाने ही से होती है और वेद पढ़ने
सुनने का अधिकार सबको है देखो गार्गी आदि स्त्रियां और छान्दोग्य में जानश्रुति शूद्र ने भी वेद रैक्य
मुनि के पास पढ़ा था और यजुर्वेद के २६ वें अध्याय २ मन्त्र में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़
ने पढ़ाने और सुनने का अधिकार मनुष्यमात्र को है पुनः जो ऐसे २ मिथ्या ग्रंथ बना लोगों को
सत्य ग्रन्थों से विमुख जाल में फसा अपने मतलब को साधते हैं वे महापापी क्यों न हों देखो ग्रहों का चक्र कैसा चलाया है
कि जिसने विद्याहीन मनुष्यों को ग्रसित कर लिया है। आ कृष्णेन रजसा० सूर्य्य का मं
। इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वम्० चन्द्र०। अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः० ३। मं
गल०। उद्बुध्यस्वाग्ने० ४। बुध०। बृहस्पते अति यदर्यो० ५। बृहस्पति०। शुक्रमन्धसः० ६
शुक्र०। शन्नो देवीरभिष्टये० ७। शनि०। कया नश्चित्र आभुव० ८। राहु०। केतुं कृ
ण्वन्नकेतवे० । ९। इसको केतु की कण्डिका कहते हैं ॥ (आ कृष्णे०) यह सूर्य्य और भूमि का
आकर्षण ॥ १ ॥ दूसरा राजगुण विधायक ॥ २ ॥ तीसरा अग्नि ॥ ३ ॥ चौथा यजमान ॥ ४ ॥ पां
चवां विद्वान् ॥ ५ ॥ छठा वीर्य्य अन्न ॥ ६ ॥ सातवां जल प्राण और परमेश्वर ॥ ७ ॥ आठवां मित्र ॥ ८ ॥
नववां ज्ञान ग्रहण के विधायक मन्त्र हैं ॥ ९ ॥ अर्थ न जानने से भ्रमजाल में पड़े हैं (प्रश्न) ग्रहों का फ
ल होता है वा नहीं (उत्तर) जैसा पोपलीला का है वैसा नहीं किन्तु जैसा सूर्य्य चन्द्रमा की किरण द्वा
रा उष्णता शीतता अथवा ऋतुवत् कालचक्र का सम्बन्ध मात्र से अपनी प्रकृति के अनुकूल
प्रतिकूल सुख दुःख के निमित्त होते हैं परन्तु जो पोपलीला वाले कहते हैं सुनो महारा
ज सेठजी यजमानो! तुम्हारे आज आठवां चन्द्र सूर्य्यादि क्रूर घर में आये हैं अढ़ाई वर्ष का शनैश्च
र पग में आया है तुमको बड़ा विघ्न होगा घर द्वार छुड़ा कर परदेश में घुमावेगा परन्तु जो
तुम ग्रहों का दान जप पाठ पूजा कराओगे तो दुःख से बचोगे इनसे कहना चाहिये कि सुनो पो
पजी तुम्हारा और ग्रहों का क्या सम्बन्ध है यह क्या वस्तु है (पोपजी) देवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधी
नाश्च देवताः। ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मणदैवतम्॥ देखो कैसा प्रमाण है—देव
ताओं के आधीन सब जगत् मन्त्रों के आधीन सब देवता और वे मन्त्र ब्राह्मणों के आधीन
है इसलिये ब्राह्मण देवता कहाते हैं। क्योंकि चाहैं उस देवता को मन्त्र के बल से बुला प्रसन्न
कर काम सिद्ध कराने का हमारा ही अधिकार है जो हम में मन्त्रशक्ति न होती तो तुम्हारे
से नास्तिक हमको संसार में रहने ही न देते (सत्यवादी) जो चोर डाकू कुकर्मी लोग हैं वे भी
तुम्हारे देवताओं के आधीन होंगे देवता ही उनसे दुष्ट काम कराते होंगे जो वैसा है तो तुम्हा

ये देवता और राक्षसोंमें कुछ भेद नहीं है गा जो तुम्हारे आधीन मंत्र हैं उनसे तुम चाहो सो करा
सकते हो तो उन मंत्रोंसे देवताओंको वश कर राजाओंके खजाने उठवाकर अपने घरमें बैठके २ आरा आनन्द क्यों नहीं भोगते घर २ में शनैश्चरादिके तैल आदिका छायादान लेनेको मारे २ क्यों
फिरते हो और जिसको तुम कुबेर मानते हो उसको वशमें करके चाहो जितना धन लिया करो बि-
चारे गरीबोंको क्यों लूटते हो तुमको दान देनेसे ग्रह प्रसन्न और न देनेसे अप्रसन्न होते हो तो हमको सूर्य्यादि ग्रहोंकी
प्रसन्नता अप्रसन्नता प्रत्यक्ष दिखलाओ जिसको ८ वां सूर्य्य चन्द्र और दूसरे को ३ तीसरा सूर्य्य हो उन दोनोंको ज्येष्ठ महीनेमें बिना जूते पहिने तपी हुई भूमिपर चलाओ जिसपर प्रसन्न
है उनके पग शरीर न जलने और जिसपर क्रोधित हैं उनके जल जाने चाहियें तथा पौष
मासमें दोनोंको नंगे कर पौर्णमासीकी रात्री भर मैदानमें रक्खें एकको शीत लगे दूसरे
को नहीं तो जानो कि ग्रह क्रूर और सौम्य दृष्टिवाले होते हैं और क्या तुम्हारे ग्रह सम्बन्धी हैं औ
र तुम्हारी डाक वा तार उनके पास आता जाता है अथवा तुम उनके वा वे तुम्हारे पा
स आते जाते हैं जो तुममें मंत्र शक्ति हो तो तुम स्वयं राजा वा धनाढ्य क्यों नहीं बन जाओ
वा शत्रुओंको अपने वशमें क्यों नहीं करते हो नास्तिक वह होता है जो वेद ईश्वरकी आज्ञा वेद
विरुद्ध पोपलीला चलावें जब तुमको ग्रहदान न देवे जिसपर ग्रह है वही ग्रहदानको भोगे तो क्या
चिन्ता है जो तुम कहो कि नहीं हमहीको देनेसे वे प्रसन्न होते हैं अन्यको देनेसे नहीं तो क्या तुमने
ग्रहोंका ठेका ले लिया है जो ठेका लिया हो तो सूर्य्यादिको अपने घरमें बुलाके जल मरो सच
तो यह है कि सूर्य्यादि लोक जड़ हैं वे न किसीको दुःख और न सुख देनेकी चेष्टा कर सकते हैं-
किन्तु जितने तुम ग्रहदानोपजीवी हो वे सब तुम ग्रहों की मूर्त्तियां ही हो क्योंकि ग्रह शब्दका अर्थ भी तुममें
ही घटित होता है (ये गृह्णन्ति ते ग्रहाः) जो ग्रहण करते हैं उनका नाम ग्रह है जबतक तुम्हारे
चरण राजा रईस साहूकार और दरिद्रोंके पास नहीं पहुंचते तबतक किसीको नव ग्रहका स्मर
ण भी नहीं होता जब तुम साक्षात् सूर्य्य शनैश्चरादि मूर्त्तिमान् उनपर जा चढ़ते हो तब
विना ग्रहण किये उनको कभी नहीं छोड़ते और जो कोई तुम्हारे ग्रासमें न हो (पोपजी) देखो ज्यो
तिषका प्रत्यक्ष फल आकाशमें रहनेवाले सूर्य्य चन्द्र और राहु के ~~...~~ का संयोग
रूप ग्रहणको पहिले ही कह देते हैं जैसा यह प्रत्यक्ष होता है वैसा ग्रहोंका भी फल प्रत्य
क्ष हो जाता है देखो धनाढ्य दरिद्र राजा रंक सुखी दुःखी ~~...~~ ग्रहों ही से होते हैं
(सत्यवादी) जो यह ग्रहणरूप प्रत्यक्ष फल है सो गणित विद्याका है फलितका नहीं जो ग
णित विद्या है वह सच्ची और फलित विद्या स्वाभाविक सम्बन्धजन्यको छोड़के झूठी है जै
से ~~...~~ अनुलोम प्रतिलोम घूमनेवाले पृथिवी और चन्द्रकी गणितसे स्पष्ट विदि
त होता है कि अमुक समय अमुक देश अमुक अवयवमें सूर्य्य वा चन्द्र ग्रहण हो
गा जैसे (छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभाः) यह सिद्धान्तशिरोमणिका वचन और इसी
प्रकार सूर्य्यसिद्धान्तादिमें भी है अर्थात् जब सूर्य्य भूमिके मध्यमें चन्द्रमा आता है तब सू
र्य्यग्रहण और जब भूमि सूर्य्य और चन्द्रके बीचमें आती है तब चन्द्रग्रहण होता है अर्थात्

चन्द्रमा की छाया भूमि पर और भूमि की छाया चन्द्रमा पर पड़ती है सूर्य्य के प्रकाश होने से उसके स
न्मुख छाया किसी की नहीं पड़ती किन्तु जैसे प्रकाश[illegible]मान सूर्य्य वा दीप से देहादि
की छाया उलटी जाती है वैसे ही यह ग्रह में समझो जो धनाढ्य दरिद्र प्रजा राजा रंक होते हैं
कर्मों से होते हैं ग्रहों से नहीं बहुत से ज्योतिषी लोग अपने
वे अपने लड़का लड़की का विवाह ग्रहों की गणित के अनुसार करते हैं पुनः उनमें विरोध
वा विधवा अथवा मृतस्त्रीपुरुष होजाता है जो फल सच्चा होता तो ऐसा क्यों होता इसलिये क
र्म्म की गति सच्ची और ग्रहों की गति सुख दुःख भोग में कारण नहीं। भला ग्रह आकाश में और
पृथिवी भी आकाश में बहुत दूर पर हैं इनका सम्बन्ध कर्त्ता और कर्मों के साथ साक्षात् नहीं कर्म्म और
कर्म्म के फल का कर्त्ता भोक्ता जीव और कर्मों के फल भोगाने हारा परमात्मा है जो तुम ग्रहों का
फल मानो तो इसका उत्तर देओ कि जिस क्षण में एक मनुष्य का जन्म होता है जिसको तुम
ध्रुवा त्रुटि मान कर जन्मपत्र बनाते हो उसी समय में भूगोल पर दूसरे का जन्म होता है वा नहीं
जो कहो नहीं तो झूंठ और जो कहो होता है तो एक चक्रवर्त्ति के सदृश भूगोल में दूसरा चक्रवर्त्ती
राजा क्यों नहीं होता। हां इतना तुम कह सकते हो कि यह लीला हमारे उदर भरने की है तो कोई मा
(प्रश्नः) गरुड़पुराण में लिखा है (उत्तर) हां असत्य है
न भी लेवे। (प्रश्न) फिर मरे हुए जीव की क्या गति होती है (उत्तर) जैसे उसके कर्म हैं (प्रश्न)
जो यमराज राजा चित्रगुप्त दीवान उसके बड़े भयंकर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीर वा
ले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं पाप पुण्य के अनुसार नर्क स्वर्ग में डालते हैं उसके लिये
दान पुण्य श्राद्ध तर्पण गोदानादि वैतरणी नदी तरने के लिये करते हैं ये सब बात झूं
ठ क्योंकर हो सकती हैं (उत्तर) ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं जो अन्यत्र के जीव वहां
उनका
जाते हैं धर्मराज चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो वे पाप करें तो दूसरा यमलोक
मानना चाहिये कि वहां के न्यायाधीश उनका न्याय करें और पर्वत के समान यमग
णों के शरीर हों तो दीखते क्यों नहीं और मरने वाले जीव को लेने में छोटे दरवाजे में उनकी
एक अंगुली भी नहीं जा सकती और सड़क गली में क्यों नहीं रुक जाते जो कहो कि वे सूक्ष्म
देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वतवत् शरीर के बड़े २ हाड़ पोपजी बि
कहां धरेंगे॥
ना अपने घर के जब जंगल में आगी लगती है तब एकदम पिपीलिकादि जीवों के श
रीर छूटते हैं उनको पकड़ने के लिये असंख्य यम के गण आवें तो वहां अंधकार होजाना
चाहिये और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकर खाजा
येंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े २ शिखर टूट कर पृथिवी पर गिरते हैं वैसे उनके बड़े २ अ
वयव गरुड़पुराण के बांचने सुनने वालों के आंगन में गिर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा
घर का द्वार अथवा सड़क रुक जायगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे। श्राद्ध तर्पण
पिण्डप्रदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुंचता किन्तु मुर्दों के प्रतिनिधि पोपजी
के घर उदर और हाथ में पहुंचाता है जो वैतरणी के लिये गोदान लेते हैं वह तो पोपजी के
घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुंचती है वैतरणी पर नहीं जाती पुनः किसकी पूं
छ पकड़ के तरेगा और हाथ तो यहीं जलाया वा गाड़ दिया गया पूंछ को कैसे पकड़ेगा

दृष्टान्त इस बात में उपयुक्त है कि एक

यहां एक जाट था उसके घर में एक गाय बहुत अच्छी और २० सेर दूध देनेवाली थी। दूध उसका
बड़ा स्वादिष्ठ होता था कभी २ पोपजी के मुख में भी पड़ता था उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा
था कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों
में दैवयोग से उसका बाप का मरण समय आया जीभ बन्द हो गई और खाट से
भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा उस समय जाट के इष्ट मित्र
और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे तब पोपजी पुकारा कि यजमान अब तू इसके हाथ से गो
दान करा जाट ने १०) रुपया निकाल पिता के हाथ में रख कर बोला पढ़ो संकल्प पोपजी बो
ला वाह २ क्या बाप बारंबार मरता है इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती हो बु
ड्ढी न हो सब प्रकार उत्तम हो ऐसी गौ का दान करना चाहिये (जाट) हमारे पास तो एक ही
गाय है उसके बिना हमारे लड़के बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिये उसको न दूंगा लो
२०) रुपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रुपयों से दूसरी दुधार गाय ले लेना (पोपजी)
वाह जी वाह तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो क्या अपने बाप को वैत
रणी नदी में डुबाकर दुःख देना चाहते हो तुम अच्छे सुपुत्र हुए तब तो पोपजी की ओर सब कुटु
म्बी हो गये क्योंकि उन सबको पहिले ही पोपजी ने बहका रक्खा था और उस समय भी इशारा कर
दिया सबने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उसी पोपजी को दिला दिया उस समय
जाट कुछ भी न बोला उसका पिता मर गया और पोपजी बच्छा सहित गाय और
दोहने की बटलोही को ले अपने घर में गौ बांध बटलोही धर पुनः जाट के घर आया और
मृतक के साथ श्मशान भूमि में जाकर दाहकर्म कराया वहां भी कुछ २ पोपलीला चलाई
पश्चात् दशगात्र सपिंडी कराने आदि में भी उसको मूंडा महाब्राह्मणों ने भी लूटा और
भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने
जिस किसी के घर से दूध मांग मूंग निर्वाह किया चौदहवें दिन प्रातःकाल पोपजी के घर पहुंचा
देखे तो पोपजी गाय दुह बटलोई भर पोपजी की उठने की तैयारी थी इतने ही में जाटजी प
हुंचे उसको देख पोपजी बोला आइये यजमान बैठिये (जाटजी) तुम भी पुरोहित
जी इधर आओ (पोपजी) अच्छा दूध धर आऊं (जाटजी) नहीं २ दूध की बटलोई इधर लाओ
(पोपजी) बिचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी (जाटजी) कहो तुमने गाय किसलिये
लीनी थी (पोपजी) तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तरने के लिये (जाटजी) अच्छा तो तुमने वहां
क्यों न पहुंचाई हमतो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे न जाने मेरे बाप ने वैतरणी
में कितने गोते खाये होंगे (पोपजी) नहीं २ वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय
बनकर उसको उतार दिया होगा (जाटजी) वैतरणी नदी यहां से कितनी दूर और कि
धर की ओर है (पोपजी) अनुमान से कोई क्रोड़ कोश दूर है क्योंकि उंचास कोटि योजन पृथि
वी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है (जाटजी) इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा
तार की खबर गई हो उसका उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई फलाने

फलाने के पिता को पार उतार दिया दिखलाओ (पोपजी) हमारे पास गरुड़पुराण के
लेख के बिना डांक वा तारबर्की दूसरी कोई नहीं। (जाटजी) इस गरुड़पुराण को हम
सच्चा कैसे मानें (पोपजी) जैसे सब मानते हैं (जाटजी) यह पुस्तक तुम्हारे पुरुषाओं ने
तुम्हारी जीविका के लिये बनाया है क्योंकि पिता को बिना अपने पुत्रों के कोई प्रियन
बातार हीं जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री भेजेगा तब भी मैं वैतरणी के किनारे गाय पंहुचा
दूंगा और उनको पार उतार पुनः गाय को घर में ले आ दूध को मैं और मेरे लड़के बाले पिया
करेंगे लाओ दूध की भरी हुई बटलोही गाय बछड़ा लेकर जाटजी अपने घर को चला
(पोपजी) तुम दान देकर लेते हो तुम्हारा सत्यानाश हो जायगा (जाटजी) चुप रहो नहीं
तो तेरह दिन लों दूध के बिना जितना दुःख हमने पाया है सब कसर निकाल दूंगा तब पो
पजी चुप रहे और जाटजी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे। जब ऐसे ही जाटजी के से पुरुष
हों तो पोपलीला संसार में न चले जो ये लोग कहते हैं कि दशगात्र के पिंडों से
दश अंग सपिंडी करने से शरीर के साथ जीव का मेल होके अंगुष्ठमात्र शरीर बनके
पश्चात् यमलोक को जाता है तो मरती समय यमदूतों का आना व्यर्थ होता है त्रयोदशाह
के पश्चात् आना चाहिये जो शरीर बन जाता हो तो अपनी स्त्री सन्तान और इष्टमित्रों के मो
ह से क्यों नहीं लौट आता। (प्रश्न) स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता जो दान किया जाता है वही
वहां मिलता है इसलिये सब दान करने चाहियें (उत्तर) उस तुम्हारे स्वर्ग से यही लोक अच्छा
जिसमें धर्मशाला हैं लोग दान देते हैं इष्टमित्र और जाति में खूब निमन्त्रण होते हैं अच्छे
२ वस्त्र मिलते हैं तुम्हारे कहने प्रमाणे स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता ऐसे निर्दय कृपण,
कंगले स्वर्ग में पोपजी जा के खराब होवें वहां भले भले मनुष्यों का क्या काम (प्रश्न) जब तुम्हा
रे कहने से यमलोक और यम नहीं है तो मरकर जीव कहां जाता और इनका न्याय कौन करता
है (उत्तर) तुम्हारे गरुड़पुराण का कहा हुआ तो अप्रमाण है परन्तु जो वेदोक्त है कि —
(यमेन वायुना। सत्यराजन्) इत्यादि वेदवचनों से निश्चय है कि (यम) नाम वायु का
है शरीर छोड़ वायु के साथ अन्तरिक्ष में जीव रहते हैं और जो सत्यकर्त्ता पक्षपातरहित परमात्मा
(धर्मराज) है वही सबका न्यायकर्त्ता है (प्रश्न) तुम्हारे कहने से गोदानादि दान किसी को
न देना और कुछ दान पुण्य करना ऐसा सिद्ध होता है (उत्तर) यह तुम्हारा कहना सर्वथा
व्यर्थ है क्योंकि सुपात्रों को परोपकारियों को परोपकारार्थ सोना चांदी हीरा मोती माणिक अन्न
जल स्थान वस्त्रादि दान अवश्य करना उचित है किन्तु कुपात्रों को कभी न देना चाहिये (प्रश्न) कुपात्र और सुपात्र का
लक्षण क्या है (उत्तर) जो छली कपटी स्वार्थी विषयी काम क्रोध लोभ मोह से युक्त परहानि करने
वाले लंपटी मिथ्यावादी अविद्वान् कुसंगी आलसी जो कोई दाता हो उसके पास वारम्वार मांग
ना धरना देना ना किये पश्चात् भी हठता से मांगते ही जाना सन्तोष न होना जो न दे उसकी
निन्दा करना, शाप और गालिप्रदानादि देना, अनेक वार जो सेवा करे और एक वार न करे तो
उसका शत्रु बन जाना, ऊपर से साधु का वेश बना लोगों को बहका कर ठगना और अपने पास

फल्गुकर स्वार्थसिद्धकर

पदार्थ होतो भी मेरे पास कुछ भी नहीं है कहना सब को फुसलाना, रातदिन भी मांगनेही में प्रवृत्त रहना, निमंत्रण दिये पर यथेष्ट भंगादि मादक द्रव्य खा पीकर बहुतसा पराया पदार्थ खाना, पुनः उन्मत्त होकर प्रमादी होना सत्यमार्ग का विरोध और झूठमार्ग में अपने प्रयोजनार्थ चलना वैसेही अपने चेलों को केवल अपनीही सेवा करने का उपदेश करना अन्य योग्य पुरुषों की सेवा करने का नहीं, सद्विद्यादि प्रवृत्ति के विरोधी जगत् के व्यवहार अर्थात् स्त्री पुरुष, माता, पिता सन्तान राजा प्रजा इष्ट मित्रों में अप्रीति कराना कि ये सब असत्य हैं और जगत् भी मिथ्या है इत्यादि दुष्ट उपदेश करना आदि कुपात्रों के लक्षण हैं। और जो ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय वेदादि विद्या के पढ़ने पढ़ाने हारे सुशील, सत्यवादी परोपकारप्रिय पुरुषार्थी, उदार विद्या धर्म की निरन्तर उन्नति करने हारे धर्मात्मा शान्त निन्दा स्तुति में हर्ष शोक रहित निर्भय उत्साही योगी ज्ञानी सृष्टिक्रम वेदाज्ञा ईश्वर के गुण कर्म स्वभावानुकूल वर्त्तमान करनेहारे, न्याय की रीति युक्त पक्षपात रहित सत्योपदेश और सत्य शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने हारे परीक्षक किसी की लल्लो पत्तो न करें, प्रश्नों के यथार्थ समाधानकर्त्ता अपने आत्मा के तुल्य अन्य का भी सुख, दुःख, हानि, लाभ, समझने वाले अविद्यादि क्लेश, हठ, दुराग्रह, अभिमान रहित, अमृत के समान अपमान और विष के समान मान को समझने वाले, सन्तोषी जो कोई प्रीति से जितना देवे उतने ही से प्रसन्न एक वार आपत्काल में मांगे भी न देने वा वर्जने पर भी दुःख वा बुरी चेष्टा न करना, वहां से झट लौट जाना, उसकी निन्दा न करना, सुखी पुरुषों के साथ मित्रता, दुःखियों पर करुणा, पुण्यात्माओं से आनन्द और पापियों से उपेक्षा, अर्थात् राग द्वेष रहित रहना, सत्यमानी, सत्यवादी सत्यकारी निष्कपट ईर्ष्या द्वेष रहित, गंभीराशय, सत्पुरुष, धर्म से युक्त और सर्वथा दुष्टाचार से रहित, अपने तन मन धन को परोपकार करने में लगाने वाले, पराये सुख के लिये अपने प्राणों को भी समर्पित कर्त्ता इत्यादि शुभ लक्षण युक्त सुपात्र होते हैं परन्तु दुर्भिक्षादि आपत्काल में अन्न, जल वस्त्र और औषध पथ्य स्थान के अधिकारी सब प्राणीमात्र हो सकते हैं। (प्रश्न) दाता कितने प्रकार के होते हैं। (उत्तर) तीन प्रकार के, उत्तम, मध्यम और निकृष्ट। उत्तम दाता उसको कहते हैं जो देश काल और पात्र को जानकर सत्यविद्या धर्म की उन्नति रूप परोपकारार्थ देवे। मध्यम वह है जो कीर्त्ति वा स्वार्थ के लिये दान करे। नीच वह है कि अपना वा पराया कुछ उपकार न कर सके किन्तु वेश्यागमनादि वा भांड भाटों आदि को देवे, देते समय तिरस्कार अपमानादि भी कुचेष्टा करे, पात्र कुपात्र का कुछ भी भेद न जाने किन्तु सब अन्न बारह पसेरी बेचनेवालों के समान [illegible] विवाद [illegible] लड़ाई, दूसरे धर्मात्मा को दुःख देकर सुखी होने के लिये दिया करे वह अधम दाता है अर्थात् जो परीक्षापूर्वक विद्वान् धर्मात्माओं का सत्कार करे वह उत्तम और जो कुछ परीक्षा करे वा न करे परन्तु जिस में अपनी प्रशंसा हो उसको मध्यम और जो अंधाधुंध परीक्षा रहित निष्फल दान दिया करे वह नीच दाता कहाता है। (प्रश्न) दान के फल यहां होते हैं

फल देनेवाला ईश्वर है

वा परलोक में (उत्तर) सर्वत्र होते हैं (प्रश्न) स्वयं होते हैं वा कोई फल देनेवाला है (उत्तर) जैसे
कोई चोर डाकू स्वयं बन्दीघर में नहीं चाहता राजा उसको अवश्य भेजता है धर्मात्माओं के सुख
की रक्षा करता भुगाता डाकू आदि से बचाकर उनको सुख में रखता है वैसे ही परमात्मा सब
को पाप पुण्य के दुःख और सुख रूप फलों को यथावत् भुगाता है। जो ये गरुड़ पुराणादि
ग्रंथ हैं वे व्यर्थ वा वेद की पुष्टी करनेवाले नहीं किन्तु वेद के विरोधी और उलटे चलते हैं
तथा तंत्र भी ऐसे ही हैं जैसे कोई मनुष्य एक का मित्र सब संसार का शत्रु हो, वैसा ही पुराण और
तंत्र का मानने वाला पुरुष होता है क्योंकि एक दूसरे से विरोध करानेवाले ये ग्रंथ हैं इनका
मानना किसी मनुष्य का काम नहीं देखो शिव पुराण में त्रयोदशी सोमवार आदित्य पुराण
में रवि, चन्द्र खंड में सोम ग्रहवाले मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु के वैष्णव ए
कादशी वामन की द्वादशी नृसिंह की चतुर्दशी चन्द्रमा की पौर्णमासी दिग्पालों की
दशमी दुर्गा की नौमी वसुओं की अष्टमी मुनियों की सप्तमी, कार्तिक स्वामी की षष्ठी, ना
ग की पंचमी गणेश की चतुर्थी गौरी की तृतीया अश्विनीकुमार की द्वितीया,
आद्या देवी की प्रतिपदा और पितरों की अमावास्या पुराण रीति से ये दिन उपवास
करने के हैं और सर्वत्र यही लिखा है कि जो मनुष्य इन वार और तिथियों में अन्न पान ग्रह
ण करेगा वह नरकगामी होगा अब पोप और पोपजी के चेलों को चाहिये कि किसी वार
अथवा किसी तिथि में भोजन न करें क्योंकि जो भोजन वा पान किया तो नरकगामी होंगे।
अब निर्णय सिंधु धर्म सिंधु व्रतार्क आदि ग्रंथ जो कि प्रमादी लोगों के बनाये हैं उन्हीं में ए
क २ व्रत की ऐसी दुर्दशा की है कि जैसे एकादशी को शैव, दशमी विद्धा कोई द्वादशी
में एकादशी व्रत करते हैं अर्थात् क्या बड़ी विचित्र पोपलीला है कि भूखे मरने में भी वाद विवा
द ही करते हैं जिसने एकादशी का व्रत चलाया है उसमें अपना स्वार्थपन ही है और दया कुछ भी नहीं वे कह
ते हैं (एकादश्यामन्नेपापानि वसंति) जितने पाप हैं वे सब एकादशी के दिन अन्न में वस
ते हैं इस पोपजी से पूछना चाहिये कि किसके पाप उसमें बसते हैं तेरे वा तेरे पिता आ
दि के जो सबके सब पाप एकादशी में जा बसें तो एकादशी के दिन किसी को दुःख न रहना
चाहिये ऐसा तो नहीं होता किन्तु उलटा क्षुधा आदि से दुःख होता है दुःख पाप का फल है इससे भूखे मरना पाप है इसका बड़ा माहात्म्य ब
नाया है जिसकी कथा बांच के बहुत ठगे जाते हैं उसमें एक गाथा है कि ब्रह्मलोक में एक वेश्या
थी उसने कुछ अपराध किया उसको श्राप हुआ वह पृथिवी पर गिर उसने स्तुति की कि मैं पुनः
स्वर्ग में क्योंकर आ सकूंगी उसने कहा जब कभी एकादशी के व्रत का फल तुझे कोई देगा त
भी तू स्वर्ग में आ जायगी वह विमान सहित किसी शहर में गिर पड़ी वहां के राजा ने उस
से पूछा कि तू कौन है तब उसने सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि जो कोई मुझको ए
कादशी का फल अर्पण करे तो फिर भी स्वर्ग को जा सकती हूं राजा ने नगर में खोज क
राया कोई भी एकादशी के व्रत करनेवाला न मिला किन्तु एक दिन किसी शूद्र स्त्री पुरुष
में लड़ाई हुई थी क्रोध से स्त्री दिन भर रात भर रोती रही थी दैवयोग से उस दिन एकादशी

होथी उसने कहा कि मैंने एकादशी जान कर तो नहीं कि अकस्मात् उस दिन भूखी रह गई थी के राजा के सिपाहियों ने ... सामने ... उससे राजा ने कहा कि कुछ इस विमान को धू उसने धूआ दे दिया उसी वक्त विमान ऊपर को उड़ गया बाहर आ के औरों ने जो यह बात सच्ची है तो हम एक पान की लाड़ी जो कि स्वर्ग में नहीं होती भेजना चाहते हैं सब एकादशी वाले अपना फल देदो जो एक पान बीड़ा ऊपर को चला जाय गा तो पुनः लाख व क्रोड़ह पान वहां भेजेंगे और हम भी एकादशी किया करेंगे और जो ऐसा न हो गा तो तुम लोगों को इस भूख मरने रूप आपत्काल से बचावेंगे इन चौबीस एकादशियों का नाम पृथक् २ रक्खा है किसी का धनदा किसी की कामदा किसी का पुत्रदा और किसी का निर्जला बहुत से दरिद्र बहुत से कामी और बहुत से निर्वंशी लोग एकादशी करके बूढ़े होगये और मर भी गये परन्तु धन कामना और पुत्र प्राप्त न हुआ और ज्येष्ठ महीने के शुक्ल पक्ष में कि जिस समय एक घड़ी भर जल न पावे तो मनुष्य व्याकुल हो जाता है व्रत करने वालों को महा दुःख प्राप्त होता है विशेषकर बंगाले में सब विधवा स्त्रियों की एकादशी के दिन बड़ी दुर्दशा होती है इस निर्दयी कसाई को लिखते समय कुछ भी मन में दया न आई नहीं तो निर्जला का नाम सजला और पौष महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम निर्जला रख देता तो भी कुछ अच्छा होता परन्तु इस पोप को दया से क्या काम कोई जियो वा मरो पोपजी का पेट पूरा भरो भला गर्भवती वा सद्यो विवाहिता स्त्री लड़के वा युवा पुरुषों को तो कभी उपवास न करना चाहिये परन्तु किसी को करना भी हो तो जिस दिन अजीर्ण हो क्षुधा न लगे उस दिन सर्बत वा दूध पीकर रहना चाहिये जो भूख में नहीं खाते और विना भूख के भोजन करते हैं वे दोनों रोग सागर में गोते खा दुःख पाते हैं इन प्रमादियों के कहने लिखने का प्रमाण कोई भी न करे ॥

अब गुरु शिष्य मंत्रोपदेश और मत मतान्तर के चरित्रों का वर्त्तमान करते हैं मूर्त्तिपूजक संप्रदायी लोग प्रश्न करते हैं कि वेद अनन्त हैं ऋग्वेद की २१ यजुर्वेद की १०१ सामवेद की १००० और अथर्ववेद की ९ शाखा हैं इन में से थोड़ी सी शाखा मिलती हैं बाकी लोप हो गई हैं उन्हीं में पूजा और तीर्थों का प्रमाण होगा जो न होता तो पुराणों में कहां से आता जब कार्य देखकर कारण का अनुमान होता है तब पुराणों को देखकर मूर्त्तिपूजा में क्या शंका है (उत्तर) जैसे शाखा वृक्ष की होती है उसके सदृश हुआ करती है विरुद्ध नहीं चाहे शाखा छोटी बड़ी हो परन्तु उनमें विरोध नहीं हो सकता वैसे ही जितनी शाखा मिलती हैं जब इनमें पाषाणादि मूर्त्ति और जल स्थल विशेष तीर्थों का प्रमाण नहीं मिलता तो उन लुप्त शाखाओं में भी नहीं था और चार वेद पूर्ण मिलते हैं उनसे विरुद्ध शाखा नहीं हो सकतीं और जो विरुद्ध हैं उनको शाखा कोई भी सिद्ध नहीं कर सकता जब यह बात है तो पुराण वेदों की शाखा नहीं किन्तु संप्रदाई लोगों ने परस्पर विरुद्ध रूप ग्रंथ बना रक्खे हैं वेदों को तुम परमेश्वर कृत मानते हो तो

यह तो बिना जाने एकादशी के व्रत का फल है जो जान के करे तो उसके फल का क्या पारावार है!!!

(आश्वलायनादि) ऋषिमुनियोंकेनामसे प्रसिद्धग्रंथोंको वेदक्योंमानते हो जैसे डाली
और पत्तोंके देखने से पीपल बड़ और आम आदि वृक्षोंकी पहिचान होती है वैसे ही
ऋषिमुनियोंके किये वेदांग चारों ब्राह्मण, अंग और उपवेदों से वेदार्थ पहिचाना जा (अंग उपांग और उपवेद आदि)
ता है इसीलिये इनग्रंथोंको शाखा माने हैं जो वेदों से विरुद्ध हैं उसका प्रमाण और अ
नुकूल का अप्रमाण नहीं हो सकता जो तुम अदृष्ट शाखाओं में मूर्त्ति आदि के प्रमाण की
कल्पना करोगे तो जब कोई ऐसा पक्ष करेगा कि लुप्त शाखाओं में वर्णाश्रम व्यवस्था
उलटी अर्थात् अंत्यज और शूद्र का नाम ब्राह्मणादि और ब्राह्मणादि का नाम शूद्र अं
त्यजादि अगमनीयागमन अकर्त्तव्य कर्त्तव्य मिथ्याभाषणादि धर्म सत्यभाषणा
दि अधर्म आदि लिखा होगा तो तुम उसको वही उत्तर दोगे जो कि हमने दिया अर्थात् वे
द और प्रसिद्ध शाखाओं में जैसा ब्राह्मणादि का नाम ब्राह्मणादि और शूद्रादि का नाम
शूद्रादि लिखा है वैसा ही अदृष्ट शाखाओं में भी माना चाहिये नहीं तो वर्णाश्रमव्यव
स्था आदि सब अन्यथा हो जायँगे। भला जैमिनि व्यास और पतंजली के समय पर्यन्त तो
सब शाखा ~~[illegible]~~ वा नहीं तो तुम कभी निषेध न कर सकोगे ~~[illegible]~~ और जो कहो (थीं नहीं)
कि नहीं थे तो फिर शाखाओं के होने का क्या प्रमाण है देखो जैमिनि ने ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ मीमांसा में सब कर्मकाण्ड पतंजलि मुनि ने योगशास्त्र में सब उपासनाकाण्ड
और व्यासमुनि ने शारीरक सूत्रों में सब ज्ञानकाण्ड वेदानुकूल लिखा है उनमें पाषाणादि मू (वेदों में)
र्त्तिपूजा वा प्रयागादि तीर्थों का नाम निशान भी नहीं लिखा। लिखें कहां से जो कहीं होता
तो लिखे बिना कभी न छोड़ते इसलिये लुप्त शाखाओं में भी इनका प्रमाण नहीं था। ये सब (मूर्त्तिपूजादिका)
शाखा वेद नहीं है क्योंकि इनमें ईश्वरकृत वेदों की प्रतीक धर के व्याख्या और संसारी जनों के
इतिहासादि लिखे हैं इसलिये वेद में कभी नहीं हो सकते ~~[illegible]~~ वेदों में तो केवल मनुष्यों
को विद्या का उपदेश है किसी मनुष्य का नाम मात्र भी नहीं इसलिये मूर्त्तिपूजा का सर्वथा
खण्डन है देखो मूर्त्ति पूजा से श्रीरामचन्द्र श्रीकृष्ण नारायण और शिवादि की बड़ी नि
न्दा और उपहास होता है ~~[illegible]~~ सब कोई जानते हैं कि वे बड़े महाराजाधिराज और उनकी स्त्री
सीता तथा रुक्मिणी लक्ष्मी और पार्वती आदि महारानियां थीं परन्तु जब उनकी मूर्त्ति
यां मंदिर आदि में रख के पूजारी लोग उनके नाम से भीख मांगते हैं अर्थात् उनको भिखा
री बनाते हैं कि आओ महाराज जी सेठ साहूकारो दर्शन कीजिये बैठिये चरणामृत ली
जिये कुछ भेंट चढ़ाइये महाराज सीताराम, कृष्ण रुक्मणी, वा राधा कृष्ण, लक्ष्मीनारा
यण, और महादेव पार्वती जी को तीन दिन से बालभोग वा राजभोग अर्थात् जलपान वा
खान पान भी नहीं मिला है आज इनके पास कुछ भी नहीं है सीता आदि को नथनी आदि रा
णीजी वा सेठानी जी बनवा दीजिये अन्न आदि भेजो तो राम कृष्णादि को भोग लगावें वस्त्र
सब फट गये हैं मंदिर के कोने सब गिर पड़े हैं ऊपर से चूता है और दुष्ट चोर जो कुछ था उठा
ले गये कुछ ऊंदरों ने काट कूट डाले देखिये एक दिन ऊंदरों ने ऐसा अनर्थ किया कि इनकी

आंख भी निकाल के भाग गये अब हम चांदी की आंख न बना सके इसलिये कौड़ी की
लगा दी है रामलीला और रासमंडल भी करवाते हैं सीताराम राधाकृष्ण नाच रहे
हैं राजा और महन्त आदि उनके सेवक आनन्द में बैठे हैं मंदिर में सीतारामादि खड़े
और पुजारी वा महन्त जी आसन अथवा गद्दी पर तकिया लगाये बैठते हैं महागर
मी में भी ताला लगा भीतर बंद कर देते हैं और आप सुन्दर हवा में पलंग बिछा कर
सोते हैं बहुत से पुजारी अपने नारायण को डब्बी में बंद कर ऊपर से कपड़े आदि बांध ग
ले में लटका लेते हैं जैसे कि वानरी अपने बच्चे को छाती से लगाये रखती है वैसे पुजारियों के गले में भी लटते हैं जब कोई मूर्ति को तोड़ता है तब हा
य २ कर छाती पीट बकते हैं कि सीता रामजी राधाकृष्णजी और शिवपार्वती को दुष्टों ने
तोड़ डाला अब दूसरी मूर्ति मंगवाकर जो कि अच्छे कारीगर ने सिंगमरमर की बनाई
हो स्थापन कर पूजनी चाहिये नारायण को घी के बिना भोग नहीं लगता बहुत नहीं तो
थोड़ा सा अवश्य भेज देना इत्यादि बातें इनपर ठहराते हैं और रासमंडल वा रामलीला के अ
न्त में सीताराम वा राधाकृष्ण से भीख मंगवाते हैं जहां मेला ठेला होता है वहां छोकरे पर मुक
ट धर कन्हैया बना मार्ग में बैठाकर भीख मंगवाते हैं इत्यादि बातों को आप लोग विचार लीजि
ये कि कितने बड़े शोक की बात है भला कहो तो सीतारामादि ऐसे दरिद्र और भिक्षुक थे यह उन
का उपहास और निन्दा नहीं तो क्या है इससे बड़ी अपने माननीय पुरुषों की निन्दा होती
है भला जिस समय ये विद्यमान थे उस समय सीता रुक्मिणी लक्ष्मी और पार्वती को सड़क
पर वा किसी मकान में खड़ी कर पुजारी कहते कि आओ इनका दर्शन करो और कुछ भेंट
पूजा धरो तो सीतारामादि इन मूर्खों के कहने से ऐसा काम कभी न करते और न करने देते जो कोई
ऐसा उपहास उनका करता उसको ~~[illegible]~~ बिना दंड दिये कभी छोड़ते हां जब उ
न्हों से दंड न पाया तो इनके कर्मों ने पुजारियों को बहुत सी मूर्ति विरोधियों से प्रसादी दिला
दी और अब भी मिलती है और जब तक इस कुकर्म को न छोड़ेंगे तब तक मिलेगी इसमें
क्या सन्देह है जो कि आर्यावर्त्त की प्रतिदिन महाहानि पाषाणादि मूर्तिपूजकों का पराज
य इन्हीं कर्मों से होता है क्योंकि पाप का फल दुःख है इन्हीं पाषाणादि मूर्तियों के विश्वास से
बहुत सी हानि हो गई जो न छोड़ेंगे तो प्रतिदिन अधिक २ होती जायगी इनमें से वाममार्गी ब
ड़े भारी अपराधी हैं जब वे चेला करते हैं तब साधारण को (दुं दुर्गायै नमः। भैं भैरवाय नमः।
ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) इत्यादि मंत्रों का उपदेश कर देते हैं ऐसे ही दशमहाविद्याओं
के मंत्र (ह्रां ह्रीं ह्रूं बगलामुख्यै फट् स्वाहा) कहीं २ (हुं फट् स्वाहा) और मारण मोहन उच्चा
टन विद्वेषण वशीकरण आदि प्रयोग करते हैं सो मंत्र से तो कुछ भी नहीं होता किन्तु क्रि
या से सब कुछ करते हैं जब किसी को मारने का प्रयोग करते हैं तब इधर करानेवाले से ध
न लेके आटे वा मट्टी का पुतला जिसको मारना चाहते हैं ~~उस~~ उसका बनाते हैं उस
की छाती नाभी कंठ में छुरे प्रवेश कर देते हैं आंख हाथ पग में कीलें ठोकते हैं उसके ऊप
र भैरव वा दुर्गा की मूर्ति बना हाथ में त्रिशूल दे उसके हृदय पर लगाते हैं एक वेदी बनाकर

और बंगाले में विशेष करके [illegible] मंत्रोपदेश करते हैं [illegible] करते हैं २

मांस आदि का होम करने लगे हैं और उधार दूत आदि भेज के उसको विष आदि से
मारने का उपाय करते हैं जो अपने पुरश्चरणों के बीच में उसको मार डाला तो अपने
को भैरव देवी की सिद्धि वाले बतलाते हैं (भैरवो भूतनाथश्च) इत्यादि का पाठ करते
हैं (मारय २ उच्चाटय २ विद्वेषय २ छिन्धि २ भिन्धि २ वशीकुरु २ खादय २ भक्ष
य २ त्रोटय २ नाशय २ मम शत्रून् वशीकुरु २ हुं फट् स्वाहा) इत्यादि मंत्र जपते
मद्य मांसादि यथेष्ट खाते पीते भृकुटी के बीच में सिन्दूर रेखा देते कभी २ काली
आदि के लिये किसी आदमी को पकड़ मार होम कर कुछ २ उसका मांस खाते भी हैं जो
कोई भैरवी चक्र में जावे मद्य मांस न पीवे न खावे तो उसको मार होम कर देते हैं उ
नमें से जो अघोरी होता है वह मनुष्य के मुर्दे का भी मांस खाता है अजरी बजरी करने वाले विष्ठा
मूत्र भी खाते पीते हैं एक चोली मार्ग और बीजमार्गी भी होते हैं चोली मार्ग वाले एक गुप्त
स्थान वा भूमि में एक स्थान बनाते हैं वहां सब की स्त्रियां पुरुष लड़का लड़की बहिन माता
पुत्रवधू आदि सब ~~की स्त्रियां पुरुष~~ इकट्ठे हो सब लोग मिल मिलाकर मांस खाते मद्य
पीते एक स्त्री को नंगी कर उसके गुप्त इन्द्रिय की पूजा सब पुरुष करते हैं और उसका
नाम दुर्गा देवी धरते हैं एक पुरुष को नंगा कर उसके गुप्त इन्द्रिय की पूजा सब स्त्रि
यां करती हैं जब मद्य पी पी के उन्मत्त हो जाते हैं तब सब स्त्रियों की छाती का वस्त्र जिस
को चोली कहते हैं एक बड़ी मट्टी की नांद में सब वस्त्र मिलाकर रख के एक २ पुरुष उ
समें हाथ डाल के जिसके हाथ में जिसका वस्त्र आवे वह माता बहिन कन्या और पुत्रव
धू क्यों न हो उस समय के लिये वह उसकी स्त्री हो जाती है आपस में कुकर्म करने और बहु
त नशा चढ़ने से जूते आदि से लड़ते भिड़ते हैं जब प्रातःकाल कुछ अंधेरे २ अपने २ घर
को चले जाते हैं तब माता २ कन्या २ बहिन २ और पुत्रवधू पुत्रवधू हो जाती है और बी
जमार्गी स्त्री पुरुष के समागम कर जल में वीर्य डाल मिलाकर पीते हैं । ये पामर
ऐसे कर्मों को मुक्ति के साधन मानते हैं विद्या विचार सज्जनतादि रहित होते हैं (प्रश्न) शैव
मत वाले तो अच्छे होते हैं (उत्तर) अच्छे कहां से होते हैं जैसा प्रेतनाथ वैसा भूतनाथ
जैसे वाममार्गी मंत्रोपदेशादि से उनका धन हरते हैं वैसे शैव भी (ओं नमः शिवा
य) इत्यादि पंचाक्षरादि मंत्रों का उपदेश करते रुद्राक्ष भस्म धारण करते मट्टी के औ
प. र पाषाणादि के लिंग बनाकर पूजते हैं हर २ बं बं रु चिन्ह कहां से आया क्या कोई वैकुंठ वहीं कं वह त्रुट
में जाकर विष्णु के पग का चिन्ह ललाट में कर आया है (विवेकी) और श्री जड़ है वा चेत है
न (वैष्णव) चेतन है (विवेकी) तो यह रेखा जड़ होने से श्री नहीं हम पूछते हैं कि श्री बनाई हुई है
वा बिना बनाई जो बिना बनाई है तो यह श्री नहीं क्योंकि इसको तो तुम नित्य अपने हाथ से ब
नाते हो फिर श्री नहीं हो सकती जो तुम्हारे ललाट में श्री होती तो कितने ही वैष्णवों का मु
ख अर्थात् शोभा रहित क्यों दीखता है ललाट में श्री और घर २ भीख मांगते और सदा वृत्ते
लेकर पेट भरते हैं क्योंकि ये तो यह बात खीड़ी और बेशर्मों की है कि कपाल में श्री और

बड़बड़बड़

१. पृष्ठ २४४ – पंक्ति २६ — और बकरे के शब्द के समान मुख से शब्द करते हैं उसका कारण यह कहते हैं कि ताली बजाने और बंबं शब्द बोलने से पार्वती प्रसन्न और महादेव अप्रसन्न होता है क्योंकि जब भस्मासुर के आगे से तब बंबं और ठट्ठे की तालियां बजी थीं और गाल बजाने से पार्वती अप्रसन्न और महादेव प्रसन्न होते हैं क्योंकि पार्वती के पिता दक्ष प्रजापति का शिर काट आग में डाल उसके धड़ पर बकरे का शिर लगा दिया था उसी की नकल बकरे के शब्द की तुल्य गाल बजाना मानते हैं शिवरात्री प्रदोष का व्रत करते हैं इत्यादि से मुक्ति मानते हैं इसलिये जैसे वाममार्गी भ्रान्त हैं वैसे शैव भी इनमें विशेष कर कनफटे नाथ, गिरी पुरी बन आरण्य पर्वत और सागर तथा गृहस्थ भी शैव होते हैं कोई २ दोनों घोड़ों पर चढ़ते हैं अर्थात् वाम और शैव दोनों मतों को मानते हैं और कितने ही वैष्णव भी रहते हैं उन का [illegible] (अन्तः शाक्ता बहिः शैवाः सभामध्ये च वैष्णवाः। नानारूपधराः कौला विचरन्तीह महीतले) यह तंत्र का श्लोक है। भीतर शाक्त अर्थात् वाममार्गी, बाहर शैव अर्थात् रुद्राक्ष भस्म धारण करते हैं और सभा में वैष्णव कहाते हैं कि हम विष्णु के उपासक हैं ऐसे नाना प्रकार के रूप धारण करके वाममार्गी लोग पृथिवी में विचरते हैं (प्रश्न) वैष्णव तो अच्छे हैं (उत्तर) क्या! धूड़ अच्छे हैं जैसे वे वैसे ये हैं देख लो वैष्णवों की लीला अपने को विष्णु का दास मानते हैं उनमें से श्री वैष्णव जो कि चक्रांकित होते हैं वे अपने को सर्वोपरि मानते हैं सो कुछ भी नहीं हैं (प्रश्न) क्यों! सब कुछ नहीं सब कुछ हैं देखो ललाट में नारायण के चरणारविंद के सदृश तिलक और बीच में पीली रेखा श्री होती है इसलिये हम श्रीवैष्णव कहाते हैं एक नारायण को छोड़ दूसरे किसी को नहीं मानते महादेव के लिंग का दर्शन भी नहीं करते क्योंकि हमारे ललाट में श्री विराजमान है वह लज्जित होती है आलमंदारादि स्तोत्रों के पाठ करते हैं नारायण की मंत्रपूर्वक पूजा करते हैं मांस नहीं खाते न मद्य पीते हैं फिर अच्छे क्यों नहीं? (उत्तर) इस तिलक को हरिपदाकृति इस पीली रेखा को श्री मानना व्यर्थ है क्योंकि यह तो तुम्हारे हाथ की कारीगरी और ललाट का चित्र है जैसा हाथी का ललाट चित्र विचित्र करते हैं क्या! तुम्हारे ललाट में विष्णु के पद का ×

और महादरिद्रों के काम हैं इनमें एक परिकाल नामक वैष्णव भक्त था वह चोरी डाका
मार छल कपट कर पराया धन हर वैष्णवों के पास धर प्रसन्न होता था एक समय उ
सको चोरी में पदार्थ कोई नहीं मिला कि जिसको लूटे व्याकुल होकर फिरता था नाराय
ण ने समझा कि हमारा भक्त दुःख पाता है सेठजी का स्वरूप धर अंगूठी आदि आभूषण
पहिन रथ में बैठ के सामने आये तब तो परिकाल रथ के पास गया सेठ से कहा सब
चीज जल्दी ~~विकाल~~ उतार दो नहीं तो मार डालूंगा उतारते २ अंगूठी उतारने में देर ल
गी परिकाल ने नारायण की अंगुली काट अंगूठी लेली नारायण बड़े प्रसन्न होके च
तुर्भुज शरीर बना दर्शन दिया कहा कि तू मेरा बड़ा प्रिय भक्त है क्योंकि सब धन मार
लूट चोरी कर वैष्णवों की सेवा करता है इसलिये तू धन्य है जाकर वैष्णवों के पास
सब गहने धर दिये एक समय परिकाल को कोई साहूकार नौकर कर जहाज में
बिठा के देशान्तर में ले गया वहां से जहाज में सुपारी भरी परिकाल ने एक सुपारी तो
ड़ आधा टुकड़ा कर बनिये से कहा यह मेरी आधी सुपारी जहाज में धर दो और लिख दो कि ज
हाज में आधी सुपारी परिकाल की है बनिये ने कहा कि चाहे तुम हजार सुपारी ले लेना प
रिकाल ने कहा नहीं हम अधर्मी नहीं हैं जो हम झूठमूठ लें हमको तो आधी चाहिये बनि
यें बिचारा भोला भाला था लिख दिया जब अपने देश में बन्दर पर जहाज आया और सुपारी
उतारने की तैयारी हुई तब परिकाल ने कहा हमारी आधी सुपारी दे दो बनिये वही
आधी सुपारी देने लगा तब परिकाल झगड़ने लगा मेरी तो जहाज में आधी सुपारी
है आधा बांट लूंगा राजपुरुषों तक झगड़ा गया परिकाल ने बनिये का लेख दिखलाया
कि इसने आधी सुपारी देनी लिखी है बनिया बहुत सा कहता रहा परन्तु उसने न मा
ना आधी सुपारी लेकर वैष्णवों के अर्पण कर दी तब तो वैष्णव बड़े प्रसन्न हुए अ
ब तक उस डाकू चोर परिकाल की मूर्ति मंदिरों में रखते हैं यह कथा भक्तमाल में लिखी
है बुद्धिमान् देखलें कि वैष्णव उनके सेवक और नारायण तीनों चोरमंडली हैं वा नहीं
(मतमतांतरों में कोई थोड़ा अच्छा भी होता है तथापि) यद्यपि उस मत में रहकर सर्वथा अच्छा नहीं हो सकता अब जैसा वैष्णवों में फूट टूट भिन्न २
तिलक कंठी धारण करते हैं रामानन्दी बगल में गोपीचन्दन बीच में लाल नीमावत
दोनों पतली रेखा बीच में काला बिन्दु माधव काली रेखा और गौड़ बंगाली कटारी के तु
ल्य और रामप्रसाद वाले दोनों चांदले रेखा के बीच में एक सफेद गोल टीका इत्यादि इन
का कथन विलक्षण है रामानन्दी लाल रेखा को लक्ष्मी ~~[illegible]~~
का चिह्न और नारायण के हृदय में श्री कृपा से विराजमान है इत्यादि कथन करते हैं एक क
था भक्तमाल में लिखी है कोई एक मनुष्य वृक्ष के नीचे सोता था सोता २ ही मर गया
ऊपर से काक ने विष्ठा की वह ललाट पर तिलकाकार हो गई थी वहां यम के दूत उसको लेने
आये इतने में विष्णु के दूत भी पहुंच गये दोनों विवाद करते थे यह हमारे स्वामी की आज्ञा है ह
म ले जायेंगे विष्णु के दूतों ने कहा कि हमारे स्वामी की आज्ञा है वैकुंठ में ले जाने की देखो

इसके ललाट में वैष्णव का तिलक है तुम कैसे ले जाओगे न बने तो यम के दूत चुप होकर
चले गये विष्णु के दूत सुख से उसको वैकुण्ठ में ले गये नारायण ने उसको वैकुण्ठ में र
क्खा देखो जब अकस्मात् तिलक बन जाने का ऐसा महात्म्य है तो जो अपनी प्रीति से तिल आर
क करते हैं वे नरक से छूट वैकुण्ठ में जावें तो इसमें क्या आश्चर्य है हम पूछते हैं कि जब छो
टे से तिलक के करने से वैकुण्ठ में जावें तो सब मुख के ऊपर लेपन करने वा काला मुख क
रने वा शरीर पर लेपन करने से वैकुण्ठ से भी आगे सिधार जाते हैं क्या ये बातें सब व्यर्थ हैं अ बान,
ब इन में बहुत से खाखी लकड़ी की लंगोटी लगा धूनी तापते जटा बढ़ाते सिद्ध का वेश कर ले इसने
ते हैं बगुले के समान ध्यानावस्थित होते हैं गांजा भांग चरस के दम लगाते लाल सुर्ख नेत्र क
र रखते सब से चुटकी २ अन्न पिसान कौड़ी पैसे मांगते गृहस्थों के लड़कों को बहका कर चे
ले बना लेते हैं बहुत कर के मजूर लोग उनमें होते हैं कोई विद्या को पढ़ता हो तो उसको पढ़
ने नहीं देते किन्तु कहते हैं कि (पठितव्यं तदपि मर्त्तव्यं दन्तकटाकटेति किं कर्त्तव्यम्)
सन्तों को विद्या पढ़ने से क्या काम क्योंकि विद्या पढ़ने वाले भी मर जाते हैं फिर दन्तकटा
कट क्यों करना साधुओं को चार धाम फिर आना सन्तों की सेवा करनी, राम जी का भजन करना
जो किसी ने मूर्ख अविद्या की मूर्त्ति न देखी हो तो खाखी जी का दर्शन कर आवें उनके पास
जो कोई जाता है उनको बच्चा, बच्ची कहते हैं चाहे वे खाखी जी के बाप मा के समान क्यों न हों
जैसे खाखी जी हैं वैसे ही रूखड़ सूखड़ गोदड़िये और जमात वाले सुतरे साई और अका
ली कान फड़े जोगी औघड़ आदि सब एक से हैं एक खाखी का चेला (श्रीगणेशायनमः)
घोखता २ कूवे पर जल भरने को गया वहां (स्रीगने साजन में) घोखता था पंडित जी बोले
अरे साधू अशुद्ध घोखता है (श्रीगणेशायनमः) ऐसा घोख वह झट लोटा भर गुरु जी
के पास जा कहा कि एक बम्मन मेरे घोखने को अशुद्ध कहता है ऐसा सुन कर झट
खाखी जी उठा कूपे पर गया और पंडित से कहा तू मेरे चेले को बहकाता है तू गुरु की
लंडी क्या पढ़ा है देख तू एक प्रकार का पाठ जानता है हम तीन प्रकार का जानते हैं
(स्रीगने साजन्न में। स्रीगने सापन्न मे। स्रीगने सापन में) (पंडित) सुनो साधू जी
विद्या की बात बहुत कठिन है बिना पढ़े नहीं आती (खाखी) चल बे सब विद्वान् को हमने ये
रगड़ मारे जो भांग में घोट एक दम सब उड़ा दिये सन्तों का घर बड़ा है तू बाबूड़ा
क्या जाने (पंडित) देखो जो तुमने विद्या पढ़ी होती तो ऐसे अपशब्द क्यों बोलते सब
प्रकार का तुमको ज्ञान होता (खाखी) अबे तू हमारा गुरु बनता है तेरा उपदेश हम नहीं सुन
ते (पंडित) सुनो कहां से बुद्धि ही नहीं है उपदेश सुनने समझने के लिये विद्या चाहिये (खाखी)
जो सब वेद शास्त्र पढ़ सन्तों को न माने तो जानो कि वह कुछ भी नहीं पढ़ा (पंडित) हां हम सन्तों
की सेवा करते हैं परन्तु तुम्हारे से हुर्दङ्गों की नहीं करते क्योंकि सन्त सज्जन विद्वान् धार्मिक परो
पकारी पुरुषों को कहते हैं (खाखी) देख हम रात दिन नंगे रहते धूनी तापते, गांजा चरस के
सैकड़ों दम लगाते तीन तीन लोटा भांग पीते गांजे भांग धतूरा की पत्ती की भाजी बना खाते,

संखिया और अफीम भी चाबके निगल जाते नशा में गर्क हो के रात दिन बेगम रहते दुनियां को कुछ नहीं समझते भीख मांगकर टिक्कड़ बना खाते रात भर ऐसी खांसी उठती जो पास में सोवे उस को नींद कभी न आवे इत्यादि सिद्धियां और साधूपन हम में हैं फिर तू हमारी निन्दा क्यों करता है चेत बाबूड़े जो हम को दिक्क करेगा हम तुम को भस्म कर डालेंगे (पंडित) ये सब लक्षण असाधु मूर्ख और गवर्गण्डों के हैं साधुओं के नहीं सुनो (साध्नोति पराणि धर्मकार्याणि स साधुः) जो धर्मयुक्त उत्तम काम करे सदा परोपकार में प्रवृत्त हो कोई दुर्गुण जिस में न हो विद्वान् सत्योपदेश से सब का उपकार करे उस को साधु कहते हैं (खाखी) चल बे तू साधू के कर्म क्या जाने सन्तों का घर बड़ा है किसी सन्त से अटकना नहीं नहीं तो देख एक चीमटा उठाकर मारेगा कपाल फूट जावेगा (पंडित) अच्छा खाखी जाओ अपने आसन पर हम से बहुत गुस्से मत हो जानते हो राज्य कैसा है किसी को मारोगे तो पकड़े जाओगे कैद भोगोगे बेंत खाओगे वा कोई तुम को भी मार बैठेगा क्या करोगे यह साधू का लक्षण नहीं (खाखी) चल बे चेले किस राक्षस का मुख दिखलाया (पंडित) तुम ने कभी किसी महात्मा का संग नहीं किया है नहीं तो ऐसे जड़ मूर्ख न रहते (खाखी) हम आप ही महात्मा हैं हम को किसी दूसरे की गर्ज नहीं (पंडित) जिन के भाग्य नष्ट होते हैं उन की तुम्हारी सी बुद्धि और अभिमान होता है। खाखी चला गया आसन पर और पंडित घर को गये जब सन्ध्या आरती हो गई तब उस खाखी को बुड्ढा समझ बहुत से खाखी (ठण्डोत २ कहते साष्टांग करके बैठे) उस खाखी ने पूछा अबे रामदासिया तू क्या पढ़ा है (रामदास) महाराज मैंने (वेष्णुसहस्रनाम) पढ़ा है। अबे गोविन्दासिये तू क्या पढ़ा है (गोविन्दास) मैं रामसतवराज पढ़ा हूं फलाने खाखी जी के पास से तब रामदास बोला कि महाराज आप क्या पढ़े हैं (खाखी) हम गीता पढ़े हैं (रामदास) किस के पास (खाखी जी) चल बे छोकरे हम किसी को गुरु नहीं करते देख हम प्रयागराज में रहते थे हम को अक्षर नहीं आता था जब किसी लम्बी धोती वाले पंडित को देखता था तब गीता के गोटके में पूछता था कि इस कलंगी वाले अक्षर का क्या नाम है ऐसे पूछता २ अठारह अध्याय गीता रगड़ मारी गुरु एक भी नहीं किया ॥ भला ऐसे विद्या के शत्रुओं को अविद्या घर करके ठहरे नहीं तो कहां जाय ये लोग विना नशा प्रमाद लड़ना खाना सोना झांझ पीटना घंटा घड़ियाल शंख बजाना धूनी चिता रखनी नहाना धोना सब दिशाओं में व्यर्थ घूमते फिरने के अन्य कुछ भी अच्छा काम नहीं करते जो कोई पत्थर को भी पिघला लेवे परन्तु इन खाखियों के आत्माओं को बोध कराना कठिन है क्योंकि बहुधा वे शूद्र वर्ण मजूर किसान कहार आदि अपनी मजूरी छोड़ केवल खाख रमाके वैरागी खाखी आदि हो जाते हैं उन को विद्या वा सत्संग आदि का महात्म्य नहीं जान पड़ सकता इन में से नाथों का मंत्र (नमः शिवाय) खाखियों का (नृसिंहायनमः) रामावतों का (श्रीरामचन्द्रायनमः) अथवा (सीतारामाभ्यांनमः) कृष्णोपासकों का (श्रीराधाकृष्णाभ्यांनमः । नमो भगवते वासुदेवाय) और बंगालियों का (गोविन्दायनमः) इन मंत्रों को कान में पढ़ने मात्र से शिष्य कर लेते हैं और ऐसी शिक्षा करते हैं कि बच्चा तूंबे का मंत्र पढ़ले - (जल पवित्र स्थल पवित्र और पवित्र कुआ शिव कहे सुन पार्वती तूंबा पवित्र हुआ)

भला ऐसे पुरुषों की योग्यता साधू होने वा विद्वान् होने अथवा जगत के उपकार करने की कभी हो सकती है ! खाखी रात दिन लकड़े धूनी में जलाया करते हैं एक महीने में कई रुपये की लकड़ी फूंक देते हैं जो एक महीने की लकड़ी के मूल्य से कंबलादि वस्त्र लेलें तो शतांश धन से आनन्द में रहें उनको इतनी बुद्धि कहां से आवे और अपना नाम उसी धूनी में तपने ही से तपस्वी धर रक्खा है जो इस प्रकार तपस्वी हो सकें तो जंगली मनुष्य इनसे भी अधिक तपस्वी हो जावें जो जटा बढ़ाने राख लगाने तिलक करने से तपस्वी हो जायें तो सब कोई कर सके ये ऊपर का त्याग रूप और भीतर के महा संग्रही होते हैं (प्रश्न) कबीर पंथी तो अच्छे हैं (उत्तर) नहीं (प्रश्न) क्यों अच्छे नहीं पाषाणादि मूर्त्ति पूजा का खंडन करते हैं कबीर साहब फूलों से उत्पन्न हुए और अन्त में भी फूल हो गये ब्रह्मा विष्णु महादेव ~~प्रसन्न नहीं जानता उसको कबीर साहब जानते हैं बड़े सिद्ध जिस बात को वेद पुराण का जन्म न हीं था~~ तब भी कबीर साहब ऐसे बड़े सिद्ध हैं कि जिस बात को वेद पुराण भी नहीं जान सकते उसको कबीर जानता है सच्चा रस्ता है सो कबीर ही ने दिखलाया है इनका मंत्र (सत्यनाम कबीर) आदि है (उत्तर) पाषाणादि को छोड़ पलंग गद्दी तकिये खड़ाऊं ज्योति अर्थात् दीप आदि पूजना पाषाण मूर्त्ति से का कम नहीं क्या कबीर साहब भुनगा था वा कलियां थीं जो फूलों से उत्पन्न हुआ और अन्त में फूल हो गया यहां जो यह बात सुनी जाती है वही सच्ची होगी कि कोई जुलाहा काशी में रहता था उसके लड़केबाले नहीं थे एक समय थोड़ी सी रात्री थी एक गली में चला जाता था तो देखा सड़क के किनारे में एक टोकनी में फूलों के बीच में उसी रात का जन्मा बालक था वह उसको उठा ले गया अपनी स्त्री को दिया उसने पालन किया जब वह बड़ा हुआ तब जुलाहे का काम करता था किसी पंडित के पास संस्कृत पढ़ने के लिये गया उसने उसका अपमान किया कहा कि हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते इसी प्रकार कई पंडितों के पास फिरा परन्तु किसी ने न पढ़ाया तब ऊटपटांग भाषा बनाकर जुलाहे आदि नीच लोगों को समझाने लगा तंबूरे लेकर गाता था भजन बनाता था विशेष पंडित शास्त्र वेदों की निन्दा किया करता था कुछ मूर्ख लोग उसके जाल में फंस गये जब मर गया तब लोगों ने उसको सिद्ध बना लिया जो २ उसने जीते जी बनाया था उसको उसके चेले पढ़ते हैं कान को मूंद के जो शब्द सुना जाता है उसको अनहत शब्द सिद्धान्त ठहराया मन की वृत्ति को (सुरति) कहते हैं उसको उस शब्द सुनने में लगाना उसी को सन्त और परमेश्वर का ध्यान बतलाते हैं वहां काल नहीं पहुंचता बर्छी के समान तिलक और चन्दनादि लकड़े की कंठी बांधते हैं भला विचार के देखो कि इसमें आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ़ सकता है यह केवल लड़कों के खेल के समान लीला है (प्रश्न) नानक जी ने एक मार्ग चलाया है क्योंकि वह भी मूर्त्ति का खंडन करते थे मुसलमान होने से बचाये वह साधू भी नहीं हुआ किन्तु गुरु बने बैठे हो देखो उन्होंने यह मंत्र उपदेश किया है इसी से विदित होता है कि उनका आशय अच्छा था । १ ओं सत्यनाम कर्त्ता पुरुष निर्भौ निर्वैर अकाल मूर्त्त अजोनि सहभं गुरु प्रसाद जप आदि सच जुगादि सच है भी सच नानक होसी भी सच) अर्थ—(ओ३म्) जिसका सत्यनाम है वह कर्त्ता पुरुष भय और वैर रहित अकाल मूर्त्ति जो काल में और जोनि में नहीं आता प्रकाशमान है उसी का जप गुरु की

गुरुकी कृपासे एक ओंकार आदिमें सच युगोंकी आदिमें सच वर्त्तमानमेंसच और हो गाभी सच ॥ (आर) नानकजीका आशय तो अच्छा था परन्तु विद्या कुछभी नहीं थी हां भाषा उस देशकी जो कि ग्रामोंकी है उसे जानते थे वेदादि शास्त्र और संस्कृत कुछभी न हीं जानते था जो जानते होते तो (निर्भय) शब्दको (निर्भौ) क्यों लिखते और इसका दृष्टान्त उनका बनाया संस्कृती स्तोत्र है चाहते थे कि मैं संस्कृत मेंभी पग अड़ाऊं परन्तु विना पढ़े संस्कृत कैसे आ सकता है हां उन ग्रामीणोंके सामने कि जिन्होंने संस्कृत कभी सुनाभी न हो संस्कृती बनाकर संस्कृतके भी पंडित बनगये होंगे भला यह बात अपने मान प्रतिष्ठा और अपनी प्रख्यातीकी इच्छाके बिना कभी न करते उनको अपनी प्रतिष्ठाकी इच्छा अवश्य थी न हीं तो जैसी भाषा जानते थे कहते रहते और यहभी कहदेते कि मैं संस्कृत नहीं पढ़ा जब कुछ अभिमान था तो मान प्रतिष्ठाके लिये कुछ दंभभी किया होगा इसीलिये उनके ग्रंथमें जहां तहां वेदोंकी निंदा और स्तुतिभी है क्योंकि जो ऐसा न करते तो उनसेभी कोई वेदका अर्थ पूछता जब न आता तब प्रतिष्ठा नष्ट होती इसलिये पहिलेही अपने शिष्योंके सामने कहीं २ वेदोंके विरुद्ध बोलते थे और कहीं २ वेदके लिये अच्छाभी कहा है क्योंकि जो कहीं अच्छा न कहते तो लोग उनको नास्तिक बनाते जैसे (वेद पढ़त ब्रह्मा मरे चारों वेद कहानि। संतकी महिमा वेद न जानी। ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर) क्या वेद पढ़ने वाले मर गये और नानकजी आदि अपनेको अमर समझते थे क्या वे नहीं मर गये वेद तो सब विद्याओंका [illegible] है परन्तु जो चारों वेदोंको कहानी कहे उसकी सब बातें कहानी हैं जो मूर्खोंका नाम सन्त होता है वे बिचारे वेदोंकी महिमा कभी नहीं जान सकते जो नानकजी वेदोंहीका मान करते तो उनका संप्रदाय न चलता न वे गुरु बन सकते थे क्योंकि संस्कृत विद्या तो पढ़े ही नहीं थे तो दूसरेको पढ़ाकर शिष्य कैसे बना सकते थे यह सच है कि जिस समय नानकजी पंजाबमें हुए थे उस समय पंजाब संस्कृत विद्यासे सर्वथा रहित मुसलमानोंसे पीड़ित था उस समय उन्होंने कुछ लोगोंको बचाया नानकजीके सामने कुछ उनका सम्प्रदाय वा बहुत से शिष्य नहीं हुए थे क्योंकि अविद्वानोंमें यह चाल है कि मरे पीछे उनको सिद्ध बना लेते हैं हां नानकजी बड़े धनाढ्य और रईसभी नहीं थे परन्तु उनके चेलोंने नानकचन्द्रोदय और जन्मशाखी आदिमें बड़े सिद्ध और बड़े २ ऐश्वर्य वाले थे लिखा है नानकजी ब्रह्मा आदिसे मिले बड़ी बातचीतकी सबने इनका मान्य किया नानकजीके विवाहमें बहुतसे घोड़े रथ हाथी सोने चांदी मोती पन्ना आदि रत्नोंसे जड़े हुए और अमूल्य रत्नोंका पारावार न था लिखा है भला ये गपोड़े नहीं तो क्या है इसमें इनके चेलोंका दोष है दूसरा जो उनके पीछे उनके लड़केसे उदासी चले और रामदास आदिसे निर्मले कितनेही गद्दी वालोंने भाषा बनाकर ग्रंथमें रक्खी है अर्थात् इनका गुरु गोविंदसिंहजी दशमा हुआ उनके पीछे उस ग्रंथमें किसीकी भाषा नहीं मिलाई है किन्तु वहांतकके जितने छोटे २ पुस्तक थे उन सबको इकट्ठे करके जिल्द बंधवादी इन लोगोंने भी नानकजीके पीछे बहुतसी भाषा बनाई कितने हीने नाना प्रकारकी पुराणोंकी मिथ्या कथाके तुल्य बनादिये परन्तु ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर बनके उस

आतु बल नहीं ... कर के ब्रं केसमा मानलेतेहै

... नानक जी का

हुए जो मुसलमानोंने उनके पुरुषाओंको बहुतसा दुःख दिया था उनसे वैर लेना चाहते थे परन्तु
इनके पास कुछ सामग्री न थी और उधर मुसलमानोंकी बादशाही प्रज्वलित हो रही थी इन्हों
ने एक पुरश्चरण करवाया प्रसिद्धी की कि मुझको देवीने वर और खड्ग दिया है कि तुम मुस
लमानोंसे लड़ो तुम्हारा विजय होगा बहुतसे लोग उनके साथी हो गये और उन्होंने जैसे वा
ममार्गियोंने पंचमकार चक्राङ्कितोंने पंच संस्कार चलाये थे वैसे पंच ककार अर्थात्
इनके पंच ककार युद्धके उपयोगी थे एक (केश) अर्थात् जिसके रखनेसे लड़ाईमें लकड़ी और
तलवारसे कुछ बचावट हो दूसरा (कंगण) जो शिरके ऊपर पगड़ीमें अकाली लोग रखते हैं
और हाथमें (कड़ा) जिससे हाथ और शिर बच सकें तीसरा (काछ) अर्थात् जानुके ऊपर एक जांघिया
जो दौड़ने और कूदनेमें अच्छा होता है बहुत करके अखाड़मल्ल और नट भी इसको इसीलिये
धारण करते हैं कि जिससे शरीरका मर्मस्थान बचा रहै और अटकाव न हो चौथा कंगा कि जि
ससे केश सुधरते हैं पांचवां काचू कि जिससे शत्रुसे भेट भड़क्का होनेसे लड़ाईमें काम आवे
इसीलिये यह रीति गोविंदसिंहजीने अपनी बुद्धिमत्तासे उस समयके लिये की थी अब इस समयमें
उनका रखना कुछ उपयोगी नहीं है परन्तु अब जो युद्धके प्रयोजनके लिये बातें कर्त्तव्य थीं उनका धर्ममें
मान लिया है मूर्त्तिपूजा तो नहीं करते किन्तु उससे विशेष ग्रंथकी पूजा करते हैं क्या यह मूर्त्ति
पूजा नहीं है किसी जड़ पदार्थके सामने शिर झुकाना वा उसकी पूजा करनी सब मूर्त्तिपू
जा है जैसे मूर्त्तिवालोंने अपनी दुकान जमाकर जीविका ठाड़ी की है वैसे इन लोगों
ने भी कर ली है जैसे पुजारी लोग मूर्त्तिका दर्शन कराते भेट चढ़वाते हैं वैसे नानक
पंथी लोग ग्रंथकी पूजा करते कराते हैं भेट भी चढ़वाते हैं अर्थात् मूर्त्तिपूजावाले जितना वेदका मान्य करते
हैं उतना ये लोग ग्रंथसाहेबवाले नहीं करते हां यह कहा जा सकता है कि इन्होंने वेदोंको
न सुना न देखा क्या करें जो सुनने और देखनेमें आवें तो बुद्धिमान् लोग जो कि हठी दुराग्र
ही नहीं हैं वे सब सम्प्रदायवाले बुद्धिमान् वेदमतमें आ जाते हैं परन्तु इन सबने
भोजनका बखेड़ा बहुतसा हटा दिया है जैसे इसको हटाया वैसे विषयासक्ति दुरभिमान
को भी हटाकर वेदमतकी उन्नति करें तो बहुत अच्छी बात है (प्रश्न) दादूपंथीका मार्ग तो अच्छा
है (उत्तर) अच्छा तो वेदमार्ग है जो पकड़ा जाय तो पकड़ो नहीं तो सदा गोता खाते रहोगे इनके
मतमें दादूजीका जन्म गुजरातमें हुआ था पुनः जयपुरके पास आमेरमें रहते थे तेलीका काम क
रते थे ईश्वरकी सृष्टिकी विचित्र लीला है कि दादूजी भी पुजाने लग गये अब वेदादि शास्त्रोंकी
सब बातें छोड़कर (दादूराम २) में ही मुक्ति मान ली है जब सत्योपदेशक नहीं होता तब ऐसे २
ही बखेड़े चला करते हैं थोड़े दिन हुए कि एक (रामसनेही) मत शाहपुरासे चला है उन्हों
ने सब वेदोक्त धर्मको छोड़के (राम २) पुकारना अच्छा माना है उसीमें ज्ञान ध्यान मुक्ति मानते हैं परन्तु जब
भूख लगती है तब (राम नाम) में से रोटी शाक नहीं निकलता क्योंकि खान पान आदि तो गृहस्थों
के घर ही में मिलते हैं वे भी मूर्त्तिपूजाको धिक्कारते हैं परन्तु आप स्वयं मूर्त्ति बन रहे हैं स्त्रियों
को संग अधिक रखते हैं क्योंकि रामजी रामकीके विना आनन्द ही नहीं मिल सकता

अब थोड़ासा विशेष रामसनेही के मत विषय में लिखते हैं। एक रामचरण नामक साधु हुआ है जिसका मत मुख्य कर शाह पुरा स्थान मेवाड़ से चला है वे राम २ करने ही को परम मन्त्र और इसी को सिद्धान्त मानते हैं। उन का एक ग्रन्थ कि जिस में सन्त दासजी आदि की वाणी हैं ऐसा लिखते हैं ॥ उनका वचन ॥

भरम रोग तब ही मिट्या ॥ रट्या निरंजन राइ ॥ तब जम का कागज फट्या ॥ कट्या करम तब जाइ ॥१॥ साखी द

अब बुद्धिमान् लोग विचार लेवें कि राम २ करने से भ्रम जो कि अज्ञान है वा यम राज का पापानुकूल शासन अथवा किये हुए कर्म कभी छूट सकते हैं वा नहीं ! यह केवल मनुष्यों को पापों में फसाना और मनुष्य जन्म को नष्ट कर देना है ॥ अब इन का जो मुख्य गुरु हुआ है "रामचरण" उसके वचन ॥ महमा नांव प्रताप की ॥ सुणो सरवण चित लाइ ॥ रामचरण रसना रटौ ॥ क्रम सकल झड़ जाइ ॥१॥ जिन जिन सुमर्‍या नांव कूं ॥ सो सब उतर्‍या पार ॥ रामचरण जो बीसर्‍या ॥ सो ही जम के द्वार ॥२॥ रांम बिनां सब झूठ बतायो ॥ रांम भजत छूट्या सब क्रम्मा ॥ चंद अरु सूर देइ परकम्मा ॥ रांम कहे तिन कूं भै नांही ॥ तीन लोक में कीरति गांही ॥ रांम रटत जम जोर न लागै ॥ रांम नाम लिख्या पथर तराई ॥ भगति हेति ओतार ही धर ही ॥ ऊंच नीच कुल भेद बिचारै ॥ सो तो जनम आपणो हारै ॥ संतां के कुल दीसै नांही ॥ रांम रांम कह रांम सम्हांही ॥ ऐसो कुण जो कीरति गावै ॥ हरि हरिजन को पार न पावै ॥ रांम संतां का अंत न आवै ॥ आप आप की बुद्धि सम गावै ॥ इनका खण्डन ॥

प्रथम तो रामचरणआदि के ग्रन्थ देखने से विदित होता है कि यह ग्रामीण एक सादा सीधा आदमी था न वह कुछ पढ़ा था नहीं तो ऐसी गपड़चौथ क्यों लिखता, यह केवल इन को भ्रम है कि राम २ कहने से कर्म छूट जायें केवल ये अपना और दूसरों का जन्म खोते हैं। जम का भय तो बड़ा भारी है परंतु राज सिपाही चोर डाकू, व्याघ्र, सर्प, बीछू और मच्छर आदि का भय कभी नहीं छूट

तो चाहे रात दिन राम २ किया करे कुछ भी नहीं होगा जैसे शक्कर २ कहने से मुख मीठा नहीं होता वैसे सत्यभाषणादि कर्म किये बिना राम २ करने से कुछ भी नहीं होगा और यदि राम २ करना इनका राम नहीं सुनता तो जन्मभर कहने से भी नहीं सुनेगा और जो सुनता है तो दूसरी वार भी राम २ कहना व्यर्थ है इन लोगों ने अपना पेट भरने और और दूसरों का भी जन्म खराब करने के लिये एक पाखण्ड खड़ा किया है सो यह बड़ा आश्चर्य हम सुनते और देखते हैं कि नाम तो धरा रामस्नेही और काम करते हैं रांडस्नेही का, जहां देखो वहां रांड ही रांड सन्तों को घेर रही हैं यदि ऐसे २ पाखण्ड न चलते तो आर्यावर्त देश की दुर्दशा क्यों होती, ये लोग अपने चेलों को झूंठ खिलाते हैं और स्त्रियां भी लंबी पड़ के दंडवत् प्रणाम करती हैं एकान्त में भी स्त्रियों और साधुओं की लीला होती रहती है ॥ अब दूसरी इनकी शाखा "खेड़ापा" ग्राम मारवाड़ देश से चली है (उसका इतिहास) एक रामदास नामक जाती का ढेढ बड़ा चालाक था उसके दो स्त्रियां थी वह प्रथम बहुत दिन तक अघड़ होकर कुत्तों के साथ खाता रहा· पीछे वामी कूंडापंथी पीछे "रामदेव" का कामड़िया बना, अपनी दोनों स्त्रियों के साथ गाता था ऐसे घूमता २ "सीथल" में ढेढों का गुरु "रामदास" था, उससे मिला उसने उसको 'रामदेव' का पंथ बताके अपना चेला बनाया· उस रामदास ने खेड़ापा ग्राम में जगह बनाई और इसका इधर मत चला उधर साहपुरे में रामचरण का । उसका भी इतिहास ऐसा सुना है कि वह जैपुर का बनियां था उसने "दांतड़ा" ग्राम में एक साधु से वेष लिया और उसको गुरु किया और साहपुरे में आके टिक्की जमाई भोले मनुष्यों में पाखंड की जड़ शीघ्र जम जाती है जम गई इन सबमें ऊपर के रामचरण के २ वचनों के प्रमाण से चेला करके ऊंच नीच का कुछ भेद नहीं ब्राह्मण से अन्त्यजपर्यन्त इनमें चेले बनते हैं - अब भी कूंडापंथी से ही हैं क्योंकि मट्टी के कुंडों में ही खाते हैं - और साधुओं की झूंठ खाते हैं वेद धर्म से माता पिता संसार

के व्यवहार से बहकाकर छुड़ा देते, और चेला बना लेते हैं और
रामनाम को महामन्त्र मानते हैं और इसी को छुच्छम वेद भी
कहते हैं राम २ कहने से अनंत जन्मों के पाप छूट जाते हैं इ
सके विना मुक्ति किसी की नहीं होती, जो श्वास और प्रश्वास
के साथ राम २ कहना बतावे उसको सत्य गुरु कहते हैं और
सत्यगुरु को परमेश्वर से भी बड़ा मानते हैं और उसकी मूर्ति का
ध्यान करते हैं साधुओं के चरण धोके पीते हैं, जब गुरु से चेला
दूर जावे तो गुरु के नख और डाढ़ी के बाल अपने पास रख लेवे,
उसका चरनामृत नित्य लेवे, रामदास और हररामदास के बा
णी के पुस्तक को वेद से अधिक मानते हैं। उसकी परिक्रमा
और आठ दण्डवत प्रणाम करते हैं और जो गुरु समीप हो तो
गुरु को दंडवत प्रणाम कर लेते हैं स्त्री वा पुरुष को राम २ एक
सा ही मन्त्रोपदेश करते हैं और नामस्मरण से ही कल्याण
मानते हैं पुनः पढ़ने में पाप समझते हैं उनकी साखी॥
पंडत ज्ञान पड़ी॥ आपूरबलो पाप॥ राम २ सुमर्‍यां बिनां
रह ग्यो रीतो आप॥१॥ वेद पुराण पढे पढ गीता॥ राम भ
जन बिन रह गये रीता॥ ऐसे २ पुस्तक बनाये हैं स्त्री को पति
की सेवा करने में पाप और गुरु साधु की सेवा में धर्म बतला-
ते हैं वर्णाश्रम को नहीं मानते। जो ब्राह्मण रामस्नेही न होवे
उसको नीच और चांडाल रामस्नेही हो तो उसको उत्तम जा
नते हैं अब ईश्वर का अवतार नहीं मानते और रामचरण
का वचन जो ऊपर लिख आये कि: भगति हेति औतार ही
धरही, भक्ति और सन्तों के हित अवतार को भी मानते हैं
इत्यादि पाखण्ड प्रपंच इनका जितना है सो सब आर्यावर्त्त दे
श का अहितकारक है इतने ही से बुद्धिमान् बहुत सा समझ लेंगे॥

गोकुलिये गुसाइयों का मत तो बहुत अच्छा है देखो कैसा ऐश्वर्य भोगते हैं क्या यह ऐश्वर्य लीला के बिना ऐसा हो सकता है (उत्तर) यह ऐश्वर्य गृहस्थ लोगों का है गुसाइयों का कुछ नहीं (प्रश्न) वाह २ गुसाइयों के प्रताप से है क्यों कि ऐसा ऐश्वर्य दूसरों को क्यों नहीं मिलता? (उत्तर) दूसरे भी इसी प्रकार का छल प्रपंच रचें तो ऐश्वर्य मिलने में क्या सन्देह है और जो इन से अधिक धूर्त्तता करें तो अधिक भी ऐश्वर्य हो सकता है (प्रश्न) वाह जी वाह इस में क्या धूर्त्तता है यह तो सब गोलोक की लीला है (उत्तर) गोलोक की लीला नहीं किन्तु गुसाइयों की लीला है जो गोलोक की लीला है तो गोलोक भी ऐसा ही होगा। यह मत (तैलङ्ग) देश से चला है क्योंकि एक तैलंगी लक्ष्मणभट्ट नाम ब्राह्मण विवाह कर किसी कारण से माता, पिता, और स्त्री को छोड़ काशी में जाके संन्यास ले लिया था और झूठ बोला था कि मेरा विवाह नहीं हुआ है दैवयोग से उसके माता पिता और स्त्री काशी में पहुंचकर जिसने उसको संन्यास दिया था उस से कहा कि हमारे पुत्र को संन्यासी क्यों किया देखो इसकी यह युवती स्त्री है तब तो उसको बुलाके कहा कि तुझको मिथ्यावादी है संन्यास छोड़ गृहाश्रम कर क्यों कि तूने झूठ बोल कर संन्यास लिया उसने पुनः वैसा ही किया संन्यास छोड़ उसके साथ हो लिया देखो इस मत का मूल ही झूठ कपट से चला जब तैलिंग देश में गये उसको जाति में किसी ने न लिया तब वहां से निकल कर घूमने लगे (चरणार्गढ़) जो काशी के पास है उसके समीप (चंपारण्य) नाम जंगल में चले जाते थे वहां कोई एक लड़के को जंगल में छोड़ चारों ओर दूर २ आगी जला कर चला गया था क्यों कि छोड़ने वाले ने यह समझा था जो आगी न जलाऊंगा तो अभी कोई जीव मार डालेगा (लक्ष्मणभट्ट और उसकी स्त्री) ने लड़के को लेकर अपना पुत्र बना लिया फिर काशी में जा रहे जब वह लड़का बड़ा हुआ तब उसके मा बाप का शरीर छूट गया काशी में बाल्यावस्था से ज्वानी तक कुछ पढ़ता भी रहा फिर और कहीं जा एक विष्णुस्वामी के मंदिर में चेला हो गया वहां से कभी कुछ खटपट होने से काशी को फिर चला गया और संन्यास ले लिया फिर कोई वैसा ही जाति बहिष्कृत ब्राह्मण काशी में रहता था उस की लड़की ज्वान थी उसने इस से कहा कि तू संन्यास छोड़ मेरी लड़की से विवाह कर ले वैसा ही हुआ जिसके बाप ने जैसी लीला की थी वैसी पुत्र क्यों न करे उस स्त्री को ले के वहीं चला गया कि जहां प्रथम विष्णुस्वामी के मंदिर में चेला हुआ था विवाह करने से उनको वहां से निकाल दिया फिर ब्रज देश में कि जहां अविद्या ने घर कर रक्खा है जाकर अपना प्रपंच अनेक प्रकार की छल युक्तियों से फैलाने लगा ~~[illegible]~~ और मिथ्या बातों की प्रसिद्धि करने लगा कि ~~[illegible]~~ श्रीकृष्ण मुझ को मिले और कहा कि जो गोलोक से (दैवीजीव) मर्त्यलोक में आये हैं उनको ब्रह्मसंबन्ध आदि से पवित्र करके गोलोक में भेजो इत्यादि मूर्खों को प्रलोभन की बातें सुना के थोड़े से लोगों को अर्थात् ८४ चौराशी वैष्णव बनाये और निम्नलिखित मंत्र बनाये और उनमें भी भेद रक्खा जैसे (श्रीकृष्णः शरणं मम) ~~यह मंत्र स्त्रियों के लिये~~ (क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा) २ ये दोनों साधारण मंत्र हैं परन्तु आगे का मंत्र ब्रह्मसम्बन्ध

[Left margin: विद्युता किकाशी... संन्यासी होगा आहे उसके मा ताधि ता और स्त्री X]

[Right margin: और स्त्री ने कहा कि यदि आप मेरे पति मेरे साथ न करें तो मुझको भी संन्यास दे दीजिये।]

[Right margin, bottom: श्रीकृष्णः शरणं मम यह मंत्र स्त्रियों के लिये बनाया और दूसरा क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा]

ध और समर्पण कराने का है (श्रीकृष्णः शरणं मम सहस्रपरिवत्सरमितका
लजातकृष्णवियोगजनिततापक्लेशानन्ततिरोभावोऽहं भगवते कृष्णाय देहे-
न्द्रियप्राणान्तःकरणतद्धर्मांश्च दारागारपुत्राप्तवित्तेहपराण्यात्मना सह समर्प
यामि दासोऽहं कृष्ण तवास्मि) इस मंत्र का उपदेश करके शिष्य शिष्याओं को समर्प
ण कराते हैं। क्लींकृष्णायेति — यह (क्लीं) तंत्र ग्रंथ का है इससे विदित होता है कि यह व
ल्लभमत भी वाममार्गियों का भेद है इसी से स्त्री संग गुसाईं लोग बहुधा करते हैं। गोपीव
ल्लभेति — क्या कृष्ण गोपियों ही को प्रिय थे अन्य को नहीं स्त्रियों को प्रिय वह होता है जो स्त्रैण अ
र्थात् स्त्रीभोग में फसा हो क्या श्रीकृष्णजी ऐसे थे। अब सहस्रपरिवत्सरेति — सहस्र वर्षों
की गणना व्यर्थ है क्योंकि वल्लभ और उसके शिष्य सर्वज्ञ नहीं हैं क्या कृष्ण का वियोग हु
आ जो सहस्र वर्षों से हुआ और आजलों अर्थात् जबलों वल्लभ का मत न था न वल्लभ जन्मा था
उसके पूर्व अपने दैवीजीवों के उद्धार करने को क्यों न आया (ताप और क्लेश) ये दोनों पर्या
यवाची हैं इनमें से एक का ग्रहण करना उचित था दो का नहीं (अनन्त) शब्द का पाठ करना व्य
र्थ है क्योंकि जो अनन्त शब्द है तो सहस्र शब्द का पाठ न रखना चाहिये और
जो सहस्र शब्द का पाठ रक्खा तो अनन्त शब्द का पाठ रखना सर्वथा व्यर्थ है
और जो अनन्त काल लों (तिरोहित) अर्थात् आच्छादित रहै उसकी मुक्ति के लिये व
ल्लभ का होना भी व्यर्थ है क्योंकि अनन्त का अन्त नहीं होता भला देहेन्द्रिय, प्राणान्तः
करण और उसके धर्म स्त्री, स्थान, पुत्र, प्राप्त धन, का अर्पण कृष्ण को क्यों करना
क्योंकि कृष्ण पूर्णकाम होने से किसी के देहादि की इच्छा नहीं कर सकते और देहादि का अ
र्पण करना भी नहीं हो सकता क्योंकि देह के अर्पण से नखशिखाग्रपर्यन्त देह कहाता है उ
समें जो कुछ अच्छी बुरी वस्तु हैं मल मूत्रादि का भी अर्पण कैसे कर सकोगे और जो पाप पुण्य रू
प कर्म होते हैं उनको कृष्णार्पण करने से उनका फलभागी भी कृष्ण ही होवें अर्थात्
नाम तो कृष्ण का लेते हैं और समर्पण अपने लिये कराते हैं। जो कुछ देह में मलमूत्रा
दि हैं वह भी गोसाईंजी के अर्पण क्यों नहीं होता "क्या मीठा २ गड़प्प और कड़वा २ थू" औ
र यह भी लिखा है कि गोसाईंजी के अर्पण करना अन्य मत वाले के नहीं यह सब स्वार्थ
सिन्धुपन और पराये धनादि पदार्थ हरने और वेदोक्त धर्म नाश करने की लीला रची है। देखो यह वल्लभ का
प्रपंच — श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि। साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षर
श उच्यते ॥ १ ॥ ब्रह्मसम्बन्धकरणात्सर्वेषां देहजीवयोः। सर्वदोषनिवृत्ति
र्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः ॥ २ ॥ सहजा देशकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः। संयोगजाः
स्पर्शजाश्च न मन्तव्याः कदाचन ॥ ३ ॥ अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथंचन। अ
समर्पितवस्तूनां तस्माद्वर्जनमाचरेत् ॥ ४ ॥ निवेदिभिः समर्प्यैव सर्वं कुर्या
दिति स्थितिः। न मतं देवदेवस्य स्वामिभुक्तिसमर्पणम् ॥ ५ ॥ तस्मादादौ सर्व
कार्ये सर्ववस्तुसमर्पणम्। दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः ॥ ६ ॥
न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम्। सेवकानां यथा लोके व्यवहा-

र: प्रसिद्धाति ॥७॥ तथा कार्य्यसमर्पणेन सर्वेषां ब्रह्मतातत:। गंगात्वं गुण दोषाणं
गां गुण दोषादि वर्णनम् ॥८॥ इत्यादि श्लोक गोसांइयोंके सिद्धान्त रहस्यादि ग्रं
थोंमें लिखे हैं यही गोसांइयोंके मतका मूल तत्व है। भला इनसे कोई पूंछे कि श्री
कृष्णके देहान्त हुए कुछ कम पांच हजार वर्ष बीते वह वल्लभ श्रावण मासकी अर्द्धरात
को कैसे मिल सके ॥१॥ जो गोसांईका चेला होता है और उसको सब पदार्थोंका समर्प्पण
कर्ता है उसके शरीर और जीवकी सब दोषोंकी निवृत्ति होजाती है यही वल्लभका प्रपंच मू
र्खोंको बहकाकर अपने मतमें लानेका है जो गोसांईके चेले चेलियोंके सब दोष निवृत्त होज
वें तो रोग दारिद्र्यादि दुःखोंसे पीड़ित क्यों रहें और वे दोष पांच प्रकारके होते हैं ॥२॥ एक स
हज दोष जो कि स्वाभाविक अर्थात् कामक्रोधादिसे उत्पन्न होते हैं। दूसरे किसी देश का
लमें नाना प्रकारके पाप किये जायें। तीसरे लोकमें जिनको भक्ष्याभक्ष्य कहते और वेदो
क्त जो कि मिथ्याभाषणादि हैं। चौथे संयोगज जो कि बुरे संगसे अर्थात् चोरी,
जारी माता भगिनी कन्या पुत्रवधू गुरुपत्नी आदिसे संयोग करना। पांचवें स्पर्शज अस्पर्शनी
योंको स्पर्श करना इन पांच दोषोंको गोसांई लोगोंके मतवाले कभी न मानें अर्था
त् यथेष्टाचार करें ॥३॥ अन्य कोई प्रकार दोषोंकी निवृत्तिके लिये नहीं है विना गो
सांईजीके मतके इसलिये विना समर्पण किये पदार्थको गोसांईजीके चेले न भोगें इ
सीलिये इनके चेले अपनी स्त्री कन्या पुत्रवधू और धनादि पदार्थोंको भी समर्पित करते हैं
परन्तु समर्प्पणका नियम यह है कि जबलों गोसांईजीकी चरण सेवामें समर्पित न ह
वे तबलों उसका स्वामी स्वस्त्रीको स्पर्श न करे ॥४॥ इससे गोसांइयोंके चेले सम
र्पण करके पश्चात् अपने २ पदार्थको भोग करें क्योंकि स्वामीके भोग करे पश्चात्
समर्प्पण नहीं हो सकता ॥५॥ इससे प्रथम सब कामोंमें सब वस्तुओंका समर्प्प
ण करें प्रथम गोसांईजीको भार्यादि समर्प्पण करके पश्चात् ग्रहण करें वैसे ही हरि
के सम्पूर्ण पदार्थ समर्प्पण करके ग्रहण करें ॥६॥ गोसांईजीके मतसे भिन्न
मार्गके वाक्य मात्रको भी गोसांइयोंके चेला चेली कभी न सुने न ग्रहण करें यही उनके
शिष्योंका व्यवहार प्रसिद्ध है ॥७॥ वैसे ही सब वस्तुओंका समर्प्पण करके स
बके बीचमें ब्रह्मबुद्धि करे उसके पश्चात् जैसे गंगामें अन्य जल मिलकर गंगारूप
होजाते हैं वैसे ही अपने मतमें गुण और दूसरेके मतमें दोष और अपने मतमें गु
णोंका वर्णन किया करें ॥८॥ अब देखिये गोसांइयोंका मत सब मतोंसे अधिक
अपना प्रयोजन सिद्ध करनेहारा है भला इन गोसांइयोंको पूंछे कि ब्रह्मका एक ल
क्षण भी तुम नहीं जानते तो शिष्य शिष्याओंको ब्रह्मसम्बंध कैसे करा सकोगे जो
कहो कि हमहीं ब्रह्म हैं हमारे साथ सम्बंध होनेसे ब्रह्मसम्बंध होजाता है सो तुममें ब्र
ह्मके गुण कर्म्म स्वभाव एक भी नहीं है पुनः क्या तुम केवल भोग विलासके लि
ये ब्रह्म बन बैठे हो। भला शिष्य और शिष्याओंको तो तुम अपने साथ समर्पित
करके शुद्ध करते हो परन्तु तुम और तुम्हारी स्त्री कन्या तथा पुत्रवधू आदि असम
र्पित रहजानेसे अशुद्ध रहगये वा नहीं और तुम असमर्पित वस्तुको अशुद्ध मानते

हो पुनः (उनसे उत्पन्न हुए तुम लोग अशुद्ध क्यों नहीं इसलिये तुमको भी उचित है कि
अपनी स्त्री कन्या तथा पुत्रवधू आदि को अन्यमत वालों के साथ समर्पित कराया क
रो जो कहो कि नहीं २ तो तुम भी अन्य स्त्री पुरुष तथा धनादि पदार्थों को समर्पित क
रवाना कराना छोड़ दो । भला अब लों जो हुआ सो हुआ परन्तु अब तो अपनी मिथ्या
प्रपंचादि बुराइयों को छोड़ो और सुन्दर ईश्वरोक्त वेद विहित सुपथ में आकर अपने मनु
ष्य रूपी जन्म को सफल कर धर्म अर्थ काम मोक्ष इन चतुष्टय फलों को प्राप्त होकर आ
नन्द भोगो । और देखिये ये गोसाईं लोग अपने सम्प्रदाय को (पुष्टि) मार्ग कहते हैं अर्था
त् खाना पीना पुष्ट होना सब स्त्रियों के संग यथेष्ट भोग विलास करने को पुष्टि मार्ग कह
ते हैं। परन्तु इनसे पूछना चाहिये कि जब बड़े दुःखदायी भगंदरादि रोगों से ग्रसित हो
कर ऐसे झीक २ मरते हैं कि जिसको यही जानते होंगे सच पूछो तो पुष्टिमार्ग
तो नहीं किन्तु कुष्ठ मार्ग है जैसे कुष्ठी के शरीर की सब धातु पिघल २ के निकल जाती
हैं और विलाप करता हुआ शरीर छोड़ता है ऐसी ही लीला इनकी भी देखने में आती
है इसलिये नरक मार्ग भी इसी को कहना संघटित हो सकता है क्योंकि दुःख का ना
म नरक और सुख का नाम स्वर्ग है । इस प्रकार मिथ्या जाल रच के विचारे भोले भाले म
नुष्यों को जाल में फसाया और अपने आप को श्रीकृष्ण मान कर सब के स्वामी बनते हैं, यह कहते हैं
कि जितने दैवी जीव गोलोक से यहां आये हैं उद्धार करने के लिये हम लीला पुरुषोत्तम
जन्मे हैं जब लों हमारा उपदेश न ले तब लों गोलोक की प्राप्ति नहीं होती वहां एक श्रीकृष्ण पुरुष
और सब स्त्रियां हैं । वाह जी वाह भला तुम्हारा मत है गोसाइयों के जितने चेले हैं वे सब गोपियां
बन जावेंगी अब विचारिये जिस पुरुष के दो स्त्री होती हैं उसकी बड़ी दुर्दशा हो जाती है तो जहां
एक पुरुष और क्रोड़ों स्त्री एक के पीछे लगी हैं उसके दुःख का क्या पारावार है जो कहो कि श्री
कृष्ण में बड़ा भारी सामर्थ्य है सबको प्रसन्न करते हैं तो जो उसकी स्त्री जिसको स्वामिनीजी
कहते हैं उसमें भी श्रीकृष्ण के समान सामर्थ्य होगा क्योंकि वह उसकी अर्द्धांगी है जैसे यहां
स्त्री पुरुष की कामचेष्टा तुल्य अथवा पुरुष से स्त्री की अधिक होती है तो गोलोक में क्यों नहीं
जो ऐसा है तो अन्य स्त्रियों के साथ स्वामिनीजी की अत्यन्त लड़ाई बखेड़ा मचता होगा क्योंकि स
पत्नी भाव बहुत बुरा होता है पुनः गोलोक स्वर्ग के बदले नरकवत् हो गया होगा अथवा जैसे
बहुत स्त्रीगामी पुरुष भगंदरादि रोगों से पीड़ित रहता है वैसा ही गोलोक में भी होगा, छि छि ऐ
से गोलोक से मर्त्यलोक ही बिचारा भला है । देखो जैसे यहां गोसाईंजी अपने को श्रीकृष्ण मानते हैं
र बहुत स्त्रियों के साथ लीला करने से भगंदर तथा प्रमेहादि रोगों से पीड़ित होकर महादुःख भो
गते हैं। अब कहिये जिनका स्वरूप गोसाईं पीड़ित होता है तो गोलोक का स्वामी श्रीकृष्ण
इन रोगों से पीड़ित क्यों न होगा और जो नहीं है तो उनका स्वरूप गोसाईंजी पीड़ित क्यों होते
हैं ॥ (प्रश्न) मर्त्यलोक में लीलावतार धारण करने से रोग दोष होता है गोलोक में नहीं
क्योंकि वहां रोग दोष ही नहीं है (उत्तर) भोगे रोगभयम्— जहां भोग है वहां रोग अवश्य हो
ता है और श्रीकृष्ण के क्रोड़ान् क्रोड़ स्त्रियों से सन्तान होते हैं वा नहीं और जो होते हैं तो लड़के र
होते हैं वा लड़की र अथवा दोनों । जो कहो कि लड़कियां नहीं लड़कियां होती हैं तो उनका विवा

ह किनके साथ होता होगा क्यों कि यहां विना श्री कृष्ण के दूसरा कोई पुरुष जो दूसरा है तो तुम्हारी प्रतिज्ञा हानि हुई जो कहो लड़के ही लड़के होते हैं तो भी यही दोष आन पड़ेगा कि उन का विवाह कहां और किनके साथ होता है अथवा घर के घर ही में गटपट कर लेते हैं अथवा अन्य किसी की लड़कियां वा लड़के हैं और जो कहो कि सन्तान होते ही नहीं तो श्री कृष्ण में नपुंसकत्व और स्त्रियों में बन्ध्यापन दोष आवेगा भला यह गोलोक क्या हुआ जानो दिल्ली के बादशाह की बीबियों की सेना हुई। अब जो गोसांई लोग शिष्य और शिष्याओं का तन मन तथा धन अपने अर्पण करा लेते हैं सो भी ठीक नहीं क्यों कि तन तो विवाह समय में पति के समर्पण हो जाता है पुनः मन भी दूसरे के समर्पण नहीं हो सकता क्यों कि मन के साथ ही तन का भी समर्पण करना बन सकता अब रहा धन उसकी भी यही लीला समझो अर्थात् मन के विना कुछ भी अर्पण नहीं हो सकता इन गोसांइयों का अभिप्राय यह है कि कमावें तो चेला और आनंद करें गोसांई जी।

तो भी तुम्हारी प्रतिज्ञा गोलोक में एक ही श्री कृष्ण पुरुष नष्ट हो जायगी जो कहो तो अभि... की हानि होवे।

जितने वल्लभ सम्प्रदायी गोसांई लोग हैं वे अब लों तैलंगी जाति में नहीं हैं और जो कोई इनको म्लेछ की लड़की देता है वह भी जाति बाह्य होकर भ्रष्ट हो जाता है क्यों कि ये जाति से पतित किये गये हैं और वे विद्याहीन रात दिन प्रमाद में रहते हैं। और देखिये जब कोई गोसांई जी की पधरावनी करता है तब उसके घर पर जा चुपचाप काठ की पुतली के समान बैठा रहता है न कुछ बोलता न चालता विचारा बोले तो तब जो मूर्ख न होवे (मूर्खाणां बलं मौनम्) क्यों कि मूर्खों का बल मौन है जो बोले तो उसकी पोल निकल जाय परन्तु स्त्रियों की ओर खूब ध्यान लगा के ताकता रहता है और जिसकी ओर गोसांई जी देखें तो जानो बड़े ही भाग्य की बात है और उसके पति भाई बन्धु माता पिता बड़े प्रसन्न होते हैं वहां सब स्त्रियां गोसांई जी के पग छूती हैं जिस पर गोसांई जी कृपा करते हैं उसकी अंगुली पैर से दबा देते हैं वह स्त्री और उसके पति आदि अपना धन्य भाग्य समझते हैं और उस स्त्री से पति आदि सब कहते भी हैं किन्तु उसके २ गोसांई जी की चरण सेवा में जा और जहां कहीं उसके पति आदि प्रसन्न नहीं होते वहां दूती और कुटनियों से काम सिद्ध करा लेते हैं सच पूछो तो ऐसे काम करने वाले उनके मंदिरों में और उनके समीप बहुत से रहा करते हैं। अब इनकी दक्षिणा की लीला अर्थात् इस प्रकार मांगते हैं लाओ गोसांई जी की बहू जी की लाल जी की बेटी जी की मुखिया जी की बाहरिया जी की, गवैया जी की और ठाकुर जी की इन सात दुकानों से यथेष्ट माल मारते हैं। जब कोई गोसांई जी का सेवक मरने लगता है तब उसकी छाती में पग गोसांई जी धरते हैं और जो कुछ मिलता है उसको गोसांई जी गड़क कर जाते हैं क्या यह काम महाब्राह्मण और कर्टिया वा मुर्दा विको के समान नहीं है। कोई २ चेला विवाह में गुसांई जी को बुलाकर उन ही से लड़के लड़कियों का पाणिग्रहण कराते हैं और कोई २ सेवक जब केशरिया स्नान अर्थात् गोसांई जी के शरीर पर स्त्री लोग केशर का उपटना करके फिर एक बड़े पात्र में पट्टा रख के गोसांई जी को स्त्री पुरुष मिल के स्नान कराते हैं परन्तु विशेष स्त्री जन स्नान कराती हैं पुनः जब गोसांई जी पीताम्बर पहिर और खड़ाऊं पर चढ़ बाहर निकल आते हैं और धोती उसी में पटक देते हैं फिर उस जल का आचमन सेवक करते हैं और अच्छे मसाला धर के पान बीड़ी गोसांई जी को देते हैं वह चाब कर

कुछ निगल जाते हैं बाकी एक चांदी के कटोरे में जिसको उनका सेवक मुख के आगे कर देता है उसमें पीक उग
ल देते हैं उसको भी प्रसादी बांटते हैं जिसको खास प्रसादी कहते हैं अब विचारिये कि ये लोग कि
स प्रकार के मनुष्य हैं जो मूढ़ता और अनाचार होगा तो इतना ही होगा बहुत से समर्पण लेते हैं उनमें से
कितने ही वैष्णवों के हाथ का खाते हैं अन्य का नहीं कितने ही वैष्णवों के हाथ का भी नहीं खाते लकड़े लों धो लेते हैं परन्तु
आटा गुड़ चीनी घी आदि धोने से उनका स्वरूप बिगड़ जाता है क्या करें बिचारे जो इनको धोवें तो पदार्थ
ही हाथ से खो बैठें वे कहते हैं कि हम ठाकुर जी के रंग राग भोग में बहुत सा धन लगा देते हैं परन्तु वे रंग राग भो
ग आप ही करते हैं और सच पूछो तो बड़े २ अनर्थ होते हैं अर्थात् होली के समय पिचकारियां भर कर स्त्रि
यों के अस्पर्शनीय अवयव अर्थात् गुप्त स्थान हैं उन पर मारते हैं और रसविक्रय ब्राह्मण के लि
ये निषिद्ध कर्म है उसको भी करते हैं (प्रश्न) गुसांई जी रोटी, दाल, कढ़ी, भात, शाक और मठरी तथा लड्डू
आदि को प्रत्यक्ष हाट में बैठ के तो नहीं बेचते किन्तु अपने नौकर चाकरों को पत्तलें बांट देते हैं वे लोग
बेचते हैं गुसांई जी नहीं (उत्तर) जो गोसांई जी उनको मासिक रुपये देवें तो वे पत्तलें क्यों लेवें
गुसांई जी अपने नौकरों के हाथ दाल भात आदि नौकरी के बदले में देते हैं वे ले जाकर हाट ब
ज़ार में बेचते हैं जो गुसांई जी स्वयं बाहर बेचते तो ब्राह्मणादि हैं वे तो रसविक्रय दोष से बच जाते औ
र अकेले गुसांई जी ही रसविक्रय रूपी पाप के भागी होते प्रथम तो इस पाप में आप डूबे फिर औ
रों को भी समेटा और कहीं २ नाथद्वारा आदि में गुसांई जी भी बेचते हैं रसविक्रय करना नीचों का का
म है उत्तमों का नहीं ऐसे २ लोगों ने इस आर्य्यावर्त्त की अधोगति कर दी (प्रश्न) स्वामीनारायण
का मत कैसा है (उत्तर) यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनः खरः जैसी गोसांई जी की धनहरणादि में
विचित्र लीला है वैसी ही स्वामीनारायण की भी है देखिये एक सहजानन्द नामक अयोध्या के समीप
एक ग्राम का जन्मा हुआ था वह ब्रह्मचारी होकर गुजरात काठियावाड़ कच्छभुज आदि देशों में फिरता
था उसने देखा कि यह देश मूर्ख और भोला भाला है चाहें जैसे इनको अपने मत में झुका लें वैसे ही ये लो
ग झुक सकते हैं वहां उसने दो चार शिष्य बनाये उनने आपस में सम्मति कर प्रसिद्ध किया कि सहजा
नंद नारायण का अवतार और बड़ा सिद्ध है और भक्तों को चतुर्भुज मूर्त्ति धारण कर साक्षात् दर्श
न भी देता है एक बार काठियावाड़ में किसी काठी अर्थात् जिसका नाम (दादाखाचर) गढड़े का (जि
मींदार) था उसको शिष्यों ने कहा कि तुम चतुर्भुज नारायण का दर्शन करना चाहो तो हम सहजानन्द जी से
प्रार्थना करें उसने कहा बहुत अच्छी बात है वह भोला आदमी था एक कोठरी में सहजानन्द शिर पर
मुकुट धारण कर और ~~अपने~~ शंख चक्र अपने हाथ में ऊपर को धारण किया और एक दूसरा
आदमी उसके पीछे खड़ा रह कर गदा पद्म अपने हाथ में लेकर सहजानंद की बगल में से आगे को
हाथ निकाल चतुर्भुज के तुल्य बन ठन गये दादाखाचर से उनके चेलों ने कहा कि एक बार आंख
उठा के देख के फिर आंख मींच लेना और झट इधर को चले आना जो बहुत देखोगे तो नारायण को
प करेंगे अर्थात् चेलों के मन में तो यह था कि हमारे कपट की परीक्षा न कर लेवे उसको ले गये वह सहजानंद
कलाबत्तू और चलकते हुए रेशमी कपड़े धारण कर रहा था अंधेरी कोठरी में खड़ा था उसके चेलों ने
एकदम लालटेन से कोठरी की ओर उजाला किया दादाखाचर ने देखा तो चतुर्भुज मूर्त्ति दीखी फिर झट
दीपक को आड़ में कर दिया वे सब नीचे गिर नमस्कार कर दूसरी ओर चले आये और उसी समय बीच में बा
तें कीं कि तुम्हारा धन्य भाग्य है अब तुम महाराज के चेले हो जाओ उसने कहा बहुत अच्छी बात जब

लों फिर के दूसरे स्थान में गये तब लों पोशाक बदल के सहजानंद गद्दी पर बैठा मिला तब चेलों
ने कहा कि देखो अब दूसरा स्वरूप धारण कर के यहां विराजमान हैं वह दादा खाचर इन के जाल में
फँस गया वहीं से उनके मत की जड़ जमी क्योंकि वह एक बड़ा जिमीदार था यहीं अपनी जड़ जमा
ली पुनः इधर उधर घूमता रहा सब को उपदेश करता था बहुतों को साधु भी बनाता था कभी २ किसी
साधु की कण्ठ की नाड़ी को मल कर मूर्छित भी कर देता था और सब से कहता था कि हमने इनको समा
धि चढ़ादी है ऐसी २ धूर्त्तता में काठियावाड़ के भोले भाले लोग उसके पेच में फँस गये जब वह मर ग
या तब उसके चेलों ने बहुत सा पाखंड फैलाया इस में यह दृष्टान्त उचित होगा कि जैसे कोई एक चोरी करता पकड़ा गया था उसका नाक काट डालने का दंड न्यायाधीश ने किया
जब उसकी नाक काटी गई तब वह धूर्त नाचने गाने और हँसने लगा लोगों ने पूछा कि तू क्यों हँसता
है उसने कहा कुछ कहने की बात नहीं है लोगों ने पूछा ऐसी कौन सी बात है उसने कहा बड़ी भारी आश्च
र्य्य की बात है हमने ऐसी कभी नहीं देखी लोगों ने कहा कहो क्या बात है उसने कहा कि मेरे सामने
साक्षात् चतुर्भुज नारायण खड़े हैं मैं देखकर बड़ा प्रसन्न होकर नाचता गाता अपने भाग्य को धन्य
वाद देता हूं कि मैं नारायण का साक्षात् दर्शन कर रहा हूं लोगों ने कहा हम को दर्शन क्यों नहीं
होता वह बोला नाक की आड़ हो रही है जो नाक कटवा डालो तो नारायण दीखे नहीं तो नहीं
उनमें से किसी मूर्ख ने चाहा कि नाक जाय तो जाय परन्तु नारायण का दर्शन अवश्य करना चाहि
ये उसने कहा कि मेरी भी नाक काटो नारायण को दिखलाओ उसने उसकी नाक काट कर कान में
कहा कि तू भी ऐसा ही कर नहीं तो मेरा और तेरा उपहास होगा उसने भी समझा कि अब नाक तो
आती नहीं इसलिये ऐसा ही कहना ठीक है तब तो वह भी उसी के समान नाचने कूदने गाने बजा
ने हँसने और कहने लगा कि मुझको भी नारायण दीखता है वैसे होते २ एक हजार मनुष्यों की ज
मात हो गई और बड़ा कोलाहल मचा और अपने सम्प्रदाय का नाम (नारायणदर्शी) रक्खा कि
सी मूर्ख राजा ने सुना उनको बुलाया जब राजा उनके पास गया तब तो वे बहुत कुछ नाचने कूदने
हँसने लगे तब राजा ने पूछा कि यह क्या बात है उन्होंने कहा कि साक्षात् नारायण हम को दी
खता है (राजा) हम को क्यों नहीं दीखता (नारायणदर्शी) जब तक नाक है तब तक नहीं दीख
ेगा और जब नाक कटवा लोगे तब नारायण प्रत्यक्ष दीखेंगे उस राजा ने विचारा कि यह
बात ठीक है ज्योतिषी जी मुहूर्त देखिये जो हुकम अन्नदाता दशमी के दिन प्रातःकाल आ
ठ बजे नाक कटवाने और नारायण के दर्शन करने का बड़ा अच्छा मुहूर्त है वाह रे पोप जी अपनी पोथी में
नाक कटने कटाने का भी मुहूर्त लिख दिया जब राजा की इच्छा हुई और उन हजार नकटों के
सीधे बांध दिये तब तो वे बड़े ही प्रसन्न होकर नाचने कूदने गाने लगे यह बात राजा के दीवान
आदि कुछ २ बुद्धि वालों को अच्छी न लगी एक राजा के चार पीढ़ी का बूढ़ा ९० वर्ष का दीवा
न था उसको जाकर उसके परपोते ने जो कि उस समय दीवान था वह बात सुनाई तब उस बु
ड्ढे ने कहा कि वे धूर्त हैं तू मुझ को राजा के पास ले चल वह ले गया बैठते समय राजा ने बड़े हर्षित हो
के उन नाक कटों की बातें सुनाईं दीवान ने कहा कि सुनिये महाराज ऐसी शीघ्रता न करनी चाहिये बिना परीक्षा-
किये पश्चात्ताप होता है (राजा) क्या ये हजार पुरुष झूंठ बोलते होंगे (दीवान) झूंठ बोलो वा सच बिना प
रीक्षा के सच झूंठ कैसे कह सकते हैं (राजा) परीक्षा किस प्रकार करनी चाहिये (दीवान) विद्या सृ
ष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाणों से (राजा) जो पढ़ा न हो वह परीक्षा कैसे करे (दीवान) विद्वानों

के संगसे ज्ञान की वृद्धि करके (राजा) जो विद्वान् न मिले तो (दीवान) प्रमार्थी को कोई बात दुर्लभ नहीं है (राजा) तो आपही कहिये कैसा कियाजाय (दीवान) मैं बच्चा और घर में बैठा रहता हूं और अब थोड़े दिन में बुढ़ा होऊंगा भी इस लिये प्रथम परीक्षा मैं कर लेऊं तत्पश्चात् जैसा उचित समझें वैसा कीजियेगा (राजा) बहुत अच्छी बात है, (ज्योतिषीजी दीवानजी के लिये मुहूर्त्त देखो) (ज्योतिषी) जो महाराज की आज्ञा यही शुक्ल पंचमी १० बजे का मुहूर्त अच्छा है जब पंचमी आई तब राजाजी के पास आठ बजे बुड्ढे दीवानजी ने राजाजी से कहा कि हजार दो हजार फौज लेके चलना चाहिये (राजा) वहां फौज का क्या काम है (दीवान) आपको राजव्यवस्था की खबर नहीं है जैसा मैं कहता हूं वैसा कीजिये (राजा) अच्छा जाओ भाई फौज को तैयार करो साढ़े नौ बजे सवारी करके राजा सब को लेकर गया। उनको देखकर वे नाचने और गाने लगे जाकर बैठे उनके महन्त जिसने यह सम्प्रदाय चलाया था जिसकी प्रथम नाक कटी थी उसको बुलाकर कहा कि आज हमारे दीवानजी को नारायण का दर्शन कराओ उसने कहा अच्छा दश बजे का समय जब आया तब एक थाली आदमी ने नाक के नीचे पकड़ रक्खी उसने पैना चक्कू ले नाक काट थाली में डालदी और दीवानजी की नाक से रुधिर की धार छूटने लगी दीवानजी का मुख मलिन पड़ गया। फिर उस धूर्त्त ने दीवानजी के कान में मंत्रोपदेश किया कि आप भी हंसकर सबसे कहिये कि मुझको नारायण दीखता है अब नाक कटी हुई नहीं आवेगी जो ऐसा न कहोगे तो तुम्हारा बड़ा ठट्ठा होगा सब लोग हंसी करेंगे वह इतना कह अलग हुआ, और दीवानजी ने अंगोछा हाथ में ले नाक की आड़ में लगा दिया जब दीवानजी से राजा ने पूछा कहिये नारायण दीखता है वा नहीं, (दीवानजी ने) राजा के कान में कहा कि कुछ भी नहीं दीखता वृथा इस धूर्त्त ने इतने सहस्र मनुष्यों को खराब किया राजा ने दीवान से कहा अब क्या करना चाहिये दीवान ने कहा इनको पकड़ के कठिन दण्ड देना चाहिये जब लों जीवें तब लों बन्दीघर में रखना चाहिये और इस दुष्ट को गधे पर चढ़ा बड़ी दुर्दशा के साथ मारना चाहिये जब राजा और दीवान कान में बातें करने लगे तब उन्होंने डरके भागने की तैयारी की परन्तु चारों ओर फौज ने घेरा दे रक्खा था न भाग सके राजा ने आज्ञा दी कि सबको पकड़ बेड़ियां डालदो और इस दुष्ट का काला मुख करके गधे पर चढ़ा कण्ठ में फटे जूतों का हार पहिना सर्वत्र घुमा छोकरों से धूड़ राख इसपर डलवा चौक में जूतों से पिटवा कुत्तों से लुंचवा मरवा डाला जावे जो ऐसा न होवे तो पुनः दूसरे भी ऐसा काम करते न डरें जब ऐसा हुआ तब नाककटे का सम्प्रदाय बंद हुआ इसी प्रकार वेदविरोधी सब [दूसरों का धन हरने में बड़े चतुर हैं यह] सम्प्रदायों की लीला है यह स्वामिनारायण मतवाले धनहरे छल कपट युक्त काम करते हैं कितने ही मूर्खों के बहकाने के लिये मरते समय कहते हैं कि सफेद घोड़े पर बैठ सहजानन्दजी मुक्ति को लेजाने के लिये आये हैं और नित्य इस मंदिर में एकवार आया करते हैं जब मेला होता है तब मंदिर के भीतर पूजारी रहते हैं और नीचे दूकान लगा रक्खी है मंदिर में से दूकान में जाने का छिद्र रखते हैं जो किसीने नारियल चढ़ाया वही दुकान में फेंक दिया अर्थात् इसी प्रकार एक नारियल दिन में हजार बार बिकता है ऐसे ही सब पदार्थों को बेंचते हैं जैसे नापित हो उससे नापित का काम (जिस जाति का साधु हो उनसे वैसा ही काम कराते हैं)

से कुलालका कारीगर से कारीगरका बनियें से बनियेंका और शूद्र से शूद्रादिकोंका
कामलेते हैं अपने चेलों पर एक टिकस बांध रक्खा है लाखन क्रोड़ह रुपये ठग के
जमा कर लिये हैं और करते जाते हैं जो गद्दी पर बैठता है वह गृहस्थ विवाह करता है आभू
षणादि पहिनता है जहां कहीं पधरावनी होती है वहां गोकुलिये के समान गुसांईजी वहूजी
आदि के नाम से भेट पूजा लेते हैं अपने को सत्संगी और दूसरे मत वालों को कुसंगी कहते हैं अप
ने सिवाय दूसरा कैसाही उत्तम धार्मिक विद्वान् पुरुष क्यों न हो परन्तु उसका मान्य और सेवा कभी नहीं
करते क्योंकि अन्य मतस्थ की सेवा करने में पाप गिनते हैं प्रसिद्ध में उनके साधु स्त्रीजनों का
मुख नहीं देखते परन्तु गुप्त न जाने क्या लीला होती होगी इसकी प्रसिद्धि सर्वत्र कम हुई है क
हीं २ साधुओं की परस्त्रीगमनादि लीला प्रसिद्ध होगई है और उनमें जो २ बड़े २ हैं वे जब मर
ते हैं तब उनको गुप्त कुवे में फेंक देकर प्रसिद्ध करते हैं कि फलाने महाराज सदेह वैकुंठ में
गये सहजानंदजी आके ले गये हमने बहुत प्रार्थना करी कि महाराज इनको न ले जाइये
क्योंकि इस महात्मा के यहां रहने से अच्छा है सहजानंदजी ने कहा कि नहीं इनकी वैकुंठ में ब
हुत आवश्यकता है इसलिये ले जाते हैं हमने अपनी आंख से सहजानन्दजी को और विमा
न को तथा जो मरने वाले थे उनको विमान में बैठा दिया ऊपर को ले गये और पुष्पों
की वर्षा करते गये और जब कोई साधु बीमार पड़ता है और उसके बचने की आशा न
होती तब कहता है कि मैं कल रात को वैकुंठ में जाऊंगा सुना है कि उस रात में जो उसके प्राण न छू
टे और मूर्छित होगया हो तो भी कुवे में फेंक देते हैं क्योंकि जो उस रात को
न फेंक देंतो झूठे पड़ें इसलिये ऐसा काम करते होंगे। ऐसे ही जब गोकुलिया गुसांई मरता
है तब उनके चेले कहते हैं कि (गुसांईजी लीला विस्तार कर गये) जो इन गुसांई स्वामीनाराय
णवालों का उपदेश करने का मंत्र एकही है (श्रीकृष्णः शरणं मम) इसका अर्थ ऐ
सा करते हैं कि श्रीकृष्ण मेरा शरण है अर्थात् मैं श्रीकृष्ण के शरणागत हूं परन्तु इसका
अर्थ श्रीकृष्ण मेरे शरण को प्राप्त अर्थात् मेरे शरणागत हो ऐसा भी हो सकता है। ये
सब जितने मत हैं वे विद्याहीन होने से ऊट पटांग शास्त्रविरुद्ध वाक्यरचना करते हैं
क्योंकि उनको विद्या के नियम की खबर नहीं (प्रश्न) माध्व मत तो अच्छा है (उत्तर) जै
से अन्य मतावलम्बी हैं वैसा माध्व भी है क्योंकि ये भी चक्रांकित होते हैं इनमें चक्रांकितों
से इतना विशेष है कि रामानुजीय एक वार चक्रांकित होते हैं और माध्व वर्ष २ में फिर २ च
क्रांकित होते जाते हैं चक्रांकित पीली रेखा और माध्व काली रेखा लगाते हैं एक माध्व
पंडित से किसी एक महात्मा का शास्त्रार्थ हुआ था (महात्मा) तुमने यह काली रेखा और
चांदला क्यों लगाया (शास्त्री) इसके लगाने से हम वैकुंठ को जायेंगे और श्रीकृष्ण का
भी शरीर श्याम रंग था इसलिये हम काला तिलक करते हैं (महात्मा) जो काली रेखा और
चांदला लगाने से वैकुंठ में जाते हो तो सब मुख काला कर लेओ तो कहां जाओगे क्या
वैकुंठ के भी पार उतर जाओगे और जैसा श्रीकृष्ण का सब शरीर काला था वैसा तुम भी
सब शरीर काला कर लिया करो तब श्रीकृष्ण के सादृश्य हो सकता है इसलिये यह भी पू
र्व के सदृश है (प्रश्न) लिंगांकित का मत कैसा है (उत्तर) जैसा चक्रांकित का वैसा ही लिं

जैसे वाममार्गी किसी देवता के बिना दूसरे को नहीं मानते ऐसे
गांकित एक का मत है बिना महादेव के और किसी को नहीं मानते इनमें विशेष यह है कि
लिंगांकित पाषाण का एक लिंग सोने अथवा चांदी में मढ़वा के गले में डाल रखते हैं
जब पानी भी पीते हैं तब उसको दिखा के पीते हैं उनका भी मंत्र शैवों के तुल्य रहता है

अब ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज के गुणादोष कथन

६ (प्रश्न) ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज तो अच्छा है वा नहीं (उत्तर) कुछ २ बातें अच्छी
और बहुतसी बुरी हैं (प्रश्न) ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमाज सब से अच्छा है क्योंकि
इसके नियम बहुत अच्छे हैं (उत्तर) नियम सर्वांश में अच्छे नहीं क्योंकि वेदविद्या
हीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है जो कुछ ब्राह्मसमाज और प्रार्थनासमा करके
जियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाये और कुछ २ पाषाणादि मू
र्तिपूजा को हटाया अन्य जाल ग्रंथों के फंद से भी कुछ बचाये इत्यादि अच्छी बातें हैं।
इन लोगों में १ परन्तु स्वदेशभक्ति बहुत कम है ईसाइयों के आचरण बहुत से ले लिये हैं खान पान
विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। २ अपने देश की प्रशंसा वा पूर्वजों की बड़ाई क
रनी तो दूर रही उसके बदले पेट भर निंदा करते हैं व्याख्यानों में ईसाई आदि अंगरेजों की प्रशं
सा करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंगरेजों के सृष्टि में आज पर्य
न्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ आर्यावर्त्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं इनकी उन्नति कभी न
हीं हुई। ३ वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते ब्राह्मस
माज के उद्देश के पुस्तक में साधुओं की संख्या में (ईसा, मूसा, महंमद, नानक, और चैतन्य) लि
खे हैं किसी ऋषि महर्षि का नाम भी नहीं लिखा इससे जाना जाता है कि जिनका नाम लि ४ इन लोगों
खा है उन्हीं के मतानुसारी मतवाले हैं भला जब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का
अन्न जल खाया पिया अब भी खाते पीते हैं अपने माता पिता पितामहादि के मार्ग को छो
ड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना ब्राह्मसमाजी और प्रार्थनासमाजियों
को एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करते हैं इंगलिश
भाषा पढ़ के पंडिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त हुए मनुष्यों का
स्थिर और वृद्धिकारक काम क्योंकर हो सकता है ५ अंगरेज यवन अंत्यजादि से भी खाने
पीने का भेद नहीं रक्खा इन्होंने यही समझा होगा कि खाने पीने और जाति भेद तोड़ने से हम
और हमारा देश सुधर जायगा परन्तु ऐसी बातों से सुधार तो कहां है उलटा बिगाड़
होता है। ५ (प्रश्न) जातिभेद ईश्वरकृत है वा मनुष्यकृत (उत्तर) ईश्वरकृत और मनुष्य
कृत भी जातिभेद है (प्रश्न) कौन से ईश्वरकृत और कौन से मनुष्यकृत (उत्तर) मनु
ष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष, जल, जन्तु, आदि जातियां परमेश्वरकृत हैं जैसे पशुओं में गौ अश्व
हस्ति आदि जातियां वृक्षों में पीपल बड़ आम्र आदि पक्षियों में हंस काक बकादि
जलजन्तुओं में मत्स्य मकरादि जातिभेद हैं वैसे मनुष्यों में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र
अन्त्यज जातिभेद ईश्वरकृत हैं परन्तु मनुष्यों में ब्राह्मणादि को सामा
न्य जाति में नहीं किन्तु सामान्य विशेषात्मक जाति में गिनते हैं जैसे पूर्व वर्णाश्रम व्यवस्था
में लिख आये वैसे ही गुण कर्म स्वभाव से वर्णव्यवस्था माननी अवश्य है इसमें
मनुष्यकृतत्व उनके गुण कर्म स्वभाव से पूर्वोक्तानुसार ब्राह्मणादि

परीक्षाप्रकरणिक

क्षत्रिय वैश्य शूद्रादि वर्णों की व्यवस्था करनी राजा और विद्वानों का काम है भोजन
भेद भी ईश्वरकृत और मनुष्यकृत भी है जैसे सिंह मांसाहारी और अरणी भैंसा घासा
दिका आहार करते हैं यह ईश्वरकृत और देशकाल वस्तुभेद से भोजनभेद मनुष्यकृत
है (प्रश्न) देखो यूरोपियन लोग मुंडे जूते कोट पतलून पहरते होटल में सब के हाथ का
खाते हैं इसी वास्ते अपनी बढ़ती करते जाते हैं (उत्तर) यह तुम्हारी भूल है क्योंकि मुसलमा
न अंत्यज लोग सब के हाथ का खाते हैं पुनः उनकी उन्नति क्यों नहीं होती जो यूरोपिय
नों में बाल्यावस्था में विवाह न करना लड़का लड़की को विद्या सुशिक्षा करना कराना
स्वयंवर विवाह होना बुरे बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होता वे विद्वान् होकर जिस किसी के
पाखंड में नहीं फसते जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके
करते हैं अपनी स्वजाति की उन्नति के लिये तन मन धन खर्च करते हैं आलस्य को छोड़ उ
द्योग किया करते हैं देखो अपने देश के बने हुए जूते को (आफिस) और कचहरी में जाने देते हैं
इस देशी जूते को नहीं इतने ही में समझ लेओ कि अपने देश के बने जूतों की भी कितना मा
न प्रतिष्ठा करते हैं उतनी भी अन्य देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते देखो कुछ [illegible] सौ वर्ष
से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुए और आज तक वे लोग [illegible] मोटे कपड़े पहरते हैं
जैसा कि स्वदेश में पहिरते थे परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा और तुम
में से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं न
कल का करना किसी बुद्धिमान का काम नहीं जो जिस काम पर रहता है उसको यथोचित करता है
हुकम के पाबन्द बराबर रहते हैं अपने देश वालों को व्यापार आदि में सहाय देते हैं इत्यादि गु
णों और अच्छे अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है मुंडे जूते कोट पतलून होटल में खाने पीने आदि
साधारण और बुरे कामों से नहीं बढ़े हैं और इनमें जातिभेद भी है देखो जब कोई यूरोपि
यन चाहे कितने बड़े अधिकार पर और प्रतिष्ठित हो किसी अन्य देश अन्य मत वालों की ल
ड़की वा यूरोपियन की लड़की अन्य देश वाले से विवाह कर लेती है तो उसी समय उसका नि
मंत्रण, साथ बैठकर खाने और विवाह आदि अन्य लोग बंध कर देते हैं यह जातिभेद नहीं तो
क्या और तुम भोले भालों को बहकाते हैं कि हम में जातिभेद नहीं तुम अपनी मूर्खता से
मान भी लेते हो इसलिये जो कुछ काम करना वह सोच विचार के करना चाहिये जिसमें पुनः
पश्चात्ताप करना न पड़े देखो वैद्य और औषध की आवश्यकता [illegible] रोगी के लिये है नि
रोग के लिये नहीं विद्यावान् निरोग और विद्यारहित अविद्या रोग से ग्रसित रहता है उस
रोग के छुड़ाने के लिये सत्य विद्या और सत्योपदेश है उनको अविद्या से यह रोग है कि खाने पी
ने ही में धर्म रहता और जाता है जब किसी को खाने पीने में अनाचार करता देखते हैं तब कह
ते हैं कि वह धर्मभ्रष्ट हो गया उसकी बात न सुनते और न उसके पास बैठते न उसको
अपने पास बैठने देते अब कहिये कि तुम्हारी विद्या स्वार्थ के लिये है अथवा परमार्थ
के लिये परमार्थ तो तभी होता कि जब तुम्हारी विद्या से उन अज्ञानियों को लाभ पहुंचता
जो कहो कि वे नहीं लेते हम क्या करें यह तुम्हारा दोष है उनका नहीं क्योंकि तुम जो अप
ना आचरण अच्छा रखते तो तुम से प्रेम कर वे उपकृत होते सो तुमने हजारों का उ

॥४८॥

कारना शक्कर के अपना ही सुख किया सो यह तुम को बड़ा अपराध लगा क्योंकि परोपका
र करना धर्म और पर हानि करना अधर्म कहाता है इसलिये विद्वान् को यथायोग्य व्यवहार
करके अज्ञानियों को दुःख सागर से तारने के लिये नौका रूप होने चाहिये सर्वथा मूर्खों के सदृ
श कर्म न करने चाहिये किन्तु जिस में उन की और अपनी दिन प्रति उन्नति हो वैसे कर्म क
रने उचित हैं (प्रश्न) हम कोई पुस्तक ईश्वर प्रणीत वा सर्वांश सत्य नहीं मानते क्योंकि मनु
ष्यों की बुद्धि निर्भ्रान्त नहीं होती इस से उनके बनाये ग्रंथ सब भ्रान्त होते हैं इसलिये हम स
ब से सत्य ग्रहण करते और असत्य को छोड़ देते हैं सत्य चाहे वेद में बायबिल में कुरान में और अ
न्य किसी ग्रंथ में हो हम को ग्राह्य है असत्य किसी का नहीं (उत्तर) जिस बात से तुम सत्यग्रा
ही होना चाहते हो उसी बात से असत्यग्राही भी ठहरते हो क्योंकि जब सब मनुष्य भ्रान्तिर
हित नहीं हो सकते तो तुम भी मनुष्य होने से भ्रान्ति सहित हो जब भ्रान्ति सहित के वचन सर्वांश
में प्रामाणिक नहीं होते तो तुम्हारे वचन का भी विश्वास नहीं होगा फिर तुम्हारे वचन पर
भी सर्वथा विश्वास न करना चाहिये जब ऐसा है तो विषयुक्त अन्न के समान त्याग के योग्य
हैं फिर तुम्हारे व्याख्यान पुस्तक बनाये का प्रमाण किसी को भी न करना चाहिये (चले तो चौ
बेजी छब्बेजी बनने को गांठ के दो खोकर दुबेजी बन गये) क्या तुम सर्वज्ञ नहीं जैसे कि
अन्य मनुष्य सर्वज्ञ नहीं हैं कदाचित् भ्रम से असत्य को ग्रहण कर सत्य को छोड़ भी देते
होंगे इसलिये सर्वज्ञ परमात्मा के वचन का सहाय हम अल्पज्ञों को अवश्य होना चाहिये
जैसा कि वेद के व्याख्यान में लिख आये हैं वैसा तुम को अवश्य ही मानना चाहिये नहीं तो
(यतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टो हो जाना है) जब सर्व सत्य वेदों से प्राप्त होता है जिनमें असत्य कुछ
भी नहीं उनका ग्रहण करने में शंका करनी अपनी और पराई हानि मात्र कर लेनी है इसी
बात से तुम को आर्यावर्त्तीय लोग अपने नहीं समझते और तुम आर्यावर्त्त की उन्नति के
कारण भी नहीं हो सके क्योंकि तुम सब घर के भिक्षुक ठहरे हो तुमने समझा है कि इस बात से दो
हम लोग अपना और पराया उपकार कर सकेंगे सो न कर सकोगे जैसे किसी के माता पि
ता सब संसार के लड़कों का पालन करने लगें सब का पालन करना तो असंभव है किन्तु
उस बात से अपने लड़कों को भी नष्ट कर बैठें वैसे ही आप लोगों की गति है भला वेदादि स
त्य शास्त्रों को माने बिना तुम अपने वचनों की सत्यता और असत्यता की परीक्षा
और आर्यावर्त्त की उन्नति भी कभी कर सकते हो जिस देश को रोग हुआ है उसकी औष
धी तुम्हारे पास नहीं और यूरोपियन लोग तुम्हारी अपेक्षा नहीं करते और आर्यावर्त्तीय लो
ग तुम को अन्य मतियों के सदृश समझते हैं अब भी समझ कर वेदादि के मान्य से देशो
न्नति करने लगो तो भी अच्छा है जो तुम यह कहते हो कि सब सत्य परमेश्वर से प्रकाशि स
त होता है पुनः ऋषियों के आत्माओं में ईश्वर से प्रकाशित हुए वेदों को क्यों नहीं मानते हो यही
कारण है कि तुम लोग वेद नहीं पढ़े और न पढ़ने की इच्छा करते हो क्योंकर तुम को वेदो
क्त ज्ञान हो सकेगा ॥ ६ ॥ दूसरा जगत् के उपादान कारण के बिना जगत् की उत्पत्ति और जीव
को भी उत्पन्न मानते हो जैसा ईसाई और मुसलमान आदि मानते हैं इसका उत्तर सृष्टयु
त्पत्ति और जीवेश्वर की व्याख्या में देख लीजिये कारण के बिना कार्य्य का होना सर्वथा

 एक यह भी तुम्हारा दोष है
असंभव और उत्पन्न वस्तु का नाश न होना भी वैसा ही असंभव है जो पश्चात्ताप और प्रार्थना से
पापों की निवृत्ति मानते हो इसी बात से जगत् में बहुत से पाप बढ़ गये हैं क्योंकि पुराणी लोग
तीर्थादि यात्रा से जैनी लोग भी नवकार मंत्र जप और तीर्थादि से ईसाई लोग ईसा के विश्वा २८२ ।।५।
स से मुसलमान लोग तोबा करने से पाप का छूटना बिना भोग के मानते हैं इससे पापों से
भय न होकर पाप में प्रवृत्ति बहुत हो गई है इस बात में ब्राह्म और प्रार्थना समाजी भी पु
राणी आदि के समान हैं जो वेदों को मानते तो बिना भोग के पाप पुण्य की निवृत्ति न होने से पा
पों से डरते और धर्म में सदा प्रवृत्त रहते जो भोग के बिना निवृत्ति मानें तो ईश्वर अन्यायका
जो तुम री होता है ।८। जीव की अनन्त उन्नति कभी नहीं हो सकती क्योंकि ससीम जीव के गुण कर्म
स्वभाव का फल भी ससीम होना अवश्य है (प्रश्न) परमेश्वर दयालु है ससीम कर्मों का फल
अनन्त देदेगा (उत्तर) ऐसा करे तो परमेश्वर का न्याय नष्ट हो जाय और सत्कर्मों की उन्नति भी
कोई न करेगा क्योंकि थोड़े से भी सत्कर्म का अनन्त फल परमेश्वर देदेगा और पश्चात्ताप वा
प्रार्थना से पाप चाहें इतने हों छूट जायेंगे ऐसी बातों से धर्म की हानि और पापकर्मों की वृ
द्धि होती है (प्रश्न) हम स्वाभाविक ज्ञान को वेद से भी बड़ा मानते हैं नैमित्तिक को नहीं क्यों
कि जो स्वाभाविक ज्ञान परमेश्वरदत्त हममें न होता तो वेदों को भी कैसे पढ़ पढ़ा समझ
समझा सकते इसलिये हम लोगों का मत बहुत अच्छा है (उत्तर) यह तुम्हारी बात
निरर्थक है क्योंकि जो किसी का दिया हुआ ज्ञान होता है वह स्वाभाविक नहीं होता जो स्वाभा
विक है वह सहज ज्ञान होता है और न वह बढ़ घट सकता उससे उन्नति कोई भी नहीं कर
सकता क्योंकि जंगली मनुष्यों में भी स्वाभाविक ज्ञान है क्यों वे अपनी उन्नति नहीं कर
सकते और जो नैमित्तिक ज्ञान है वही उन्नति का कारण है देखो तुम हम बाल्यावस्था में
कर्त्तव्याकर्त्तव्य और धर्माधर्म कुछ भी ठीक २ नहीं जानते थे जब हम विद्वानों से पढ़े
तभी कर्त्तव्याकर्त्तव्य और धर्माधर्म को समझने लगे इसलिये स्वाभाविक ज्ञान को
सर्वोपरि मानना ठीक नहीं ।९। जो आप लोगों ने पूर्व और पुनर्जन्म नहीं माना है
वह ईसाई मुसलमानों से लिया होगा इसका भी उत्तर पुनर्जन्म की व्याख्या से स
मझ लेना परन्तु इतना समझो कि जीव शाश्वत अर्थात् नित्य है और उसके कर्म भी प्र
वाहरूप से नित्य हैं कर्म और कर्मवान् का नित्य संबंध होता है क्या वह जीव कहीं निकम्मा
बैठा रहा था वा रहेगा और परमेश्वर भी निकम्मा तुम्हारे कहने से होता है कृतहानि और पूर्वापर जन्म न मानने से
अकृताभ्यागम नैर्घृण्य और वैषम्य दोष भी ईश्वर में ~~पूर्वापर जन्म के न मानने से~~ आते
हैं क्योंकि जन्म न हो तो पाप पुण्य के फल भोग की हानि हो जाय क्योंकि जिस प्रकार दूसरे को सु
ख दुःख हानि लाभ पहुंचाया होता है वैसा उसका फल बिना शरीर धारण किये नहीं होता आगे
दूसरा पूर्वजन्म के पाप पुण्यों के बिना सुख दुःख की इस जन्म में क्यों कर होवे जो पूर्व
जन्म के पाप पुण्यानुसार न होवे तो परमेश्वर अन्यायकारी और बिना भोग किये नाश के पूर्व
समान कर्म का फल हो जावे इसलिये यह भी बात आप लोगों की अच्छी नहीं ।१०। और
एक यह कि ईश्वर के बिना दिव्य गुण वाले पदार्थों और विद्वानों को भी देव न मानना
ठीक नहीं क्योंकि परमेश्वर महादेव और जो देव न होते तो सब देवों का स्वामी होने से

महादेव क्यों कहाता ॥ ११ ॥ एक अग्निहोत्रादि परोपकारक कर्मों को कर्त्तव्य न समझ
ना अच्छा नहीं ।१२। ऋषि महर्षियों के किये उपकारों को न मानकर ईसा आदि के पीछे झु
क पड़ना अच्छा नहीं ।१३। और विना कारण विद्या वेदों के अन्य कार्य्य विद्याओं की प्रवृत्ति
मानना सर्वथा असंभव है ।१४। और जो विद्या का चिन्ह यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मु
सलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना यह भी व्यर्थ है जब पतलून आदि वस्त्र पहिरते हो और तम
कमों की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था ।१५। और ब्रह्मा से
लेकर पीछे २ आर्य्यावर्त्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियन ही
की स्तुति में उतर पड़ना सिवाय पक्षपात और खुशामद के विना क्या कहा जाय ॥१६॥ और बी
जांकुर के समान जड़ चेतन के योग से जीवोत्पत्ति मानना उत्पत्ति के पूर्व जीवतत्त्व का न मानना
और उत्पन्न का नाश न मानना पूर्वापर विरुद्ध है जो उत्पत्ति के पूर्व चेतन और जड़ वस्तु न था तो
जीव कहां से आया और संयोग किनका हुआ जो इन दोनों को सनातन मानते हो तो ठीक है
परन्तु सृष्टि के पूर्व ईश्वर के सिवाय दूसरे किसी तत्त्व को न माना यह आपका पक्ष व्यर्थ हो
जायगा इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो आर्य्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्दे
श्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि हम और
आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है
आगे होगा उसकी उन्नति तन मन धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें इसलिये जैसा
आर्य्यसमाज आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता यदि इस स
माज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना
समुदाय का काम है एक का नहीं (प्रश्न) आप सब का खंडन करते ही आते हो परन्तु अपने
२ धर्म में सब अच्छे हैं खंडन किसी का न करना चाहिये जो करते हो तो आप इनसे
विशेष क्या बतलाते हो जो बतलाते हो तो क्या आप से अधिक वा तुल्य कोई पुरुष न था और न है तुल्य
ऐसा अभिमान करना आपको उचित नहीं क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में एक एक से अधिक और
बहुत न्यून हैं किसी को घमंड करना उचित नहीं (उत्तर) धर्म सब का एक होता है वा अनेक
होते हैं जो कहो अनेक हैं तो एक दूसरे से विरुद्ध होते हैं वा अविरुद्ध जो कहो कि विरुद्ध होते हैं तो ए
क के विना दूसरा धर्म नहीं हो सकता और जो कहो अविरुद्ध हैं तो पृथक् २ होना व्यर्थ है इसलि
ये धर्म और अधर्म एक ही है अनेक नहीं यही हम विशेष कहते हैं कि जैसे सब संप्रदायों के
उपदेशों को कोई राजा इकट्ठा करे तो एक हजार से कम नहीं होंगे परन्तु इनका मुख्य भा
चारही हैं क्यों ग देखो तो पुरानी किरानी जैनी और कुरानी इन चारों में सब संप्रदाय आ जाते हैं कोई राजा
कि उनकी सभा करके कोई जिज्ञासु होकर प्रथम वाममार्गी से पूछे हे महाराज मैंने आज
तक न कोई गुरु किया और न किसी धर्म का ग्रहण किया है कहिये सब धर्मों में से उत्तम ध
र्म किसका है जिसको मैं ग्रहण करूं (वाममार्गी) हमारा है (जिज्ञासु) ये नौ सौ निन्यानवे कैसे न
हैं (वाममार्गी) सब झूठे और नरकगामी हैं क्योंकि (कौलात्परतरं नहि) इस वचन के प्रमाण हि
से हमारे धर्म से परे कोई धर्म नहीं है (जिज्ञासु) आपका क्या धर्म है (वाममार्गी) भग
वती का मानना मद्य मांसादि पंच मकारों का सेवन और रुद्रयामल आदि चौसठ तंत्रों

कामानना इत्यादि जो तू मुक्ति की इच्छा करता है तो हमारा चेला होजा (जिज्ञासु) अच्छा परन्तु
और महात्माओं का भी दर्शन कर पूछ पांछ आऊं पश्चात् जिसमें मेरी श्रद्धा और प्रीति होगी
उसका चेला होजाऊंगा (वाममार्गी) अरे क्यों भ्रान्ति में पड़ा है ये लोग तुझको बहका कर
अपने जाल में फसा देंगे किसी के पास मत जावे हमारे ही शरणागत होजा नहीं तो पछता
वेगा देख हमारे मत में भोग और मोक्ष दोनों हैं (जिज्ञासु) अच्छा देखतो आऊं आगे च
लकर शैव के पास जाके पूछा तो ऐसा ही उत्तर उसने दिया इतना विशेष कहा कि वि
ना शिव रुद्राक्ष भस्म धारण और लिंगार्चन के मुक्ति कभी नहीं होती वह उसको छोड़ नवी
न वेदान्तिजी के पास गया (जिज्ञासु) कहो महाराज आपका धर्म क्या है (वेदान्ति) हम धर्मा
ऽधर्म कुछ भी नहीं मानते हम साक्षात् ब्रह्म हैं हम में धर्माऽधर्म कहां है यह जगत् सब मिथ्या
है और जो ज्ञानी शुद्ध चेतन हुआ चाहै तो अपने को ब्रह्म मान जीव भाव को छोड़ नित्यमु
क्त होजाएगा (जिज्ञासु) जो तुम ब्रह्म नित्य मुक्त हो तो ब्रह्म के गुण कर्म स्वभाव तुम में क्यों न
हीं और शरीर में क्यों बंधे हो (वेदान्ती) तुझको शरीर दीखता है इसीसे तू भ्रान्त है हमको कुछ नहीं
दीखता विना ब्रह्म के (जिज्ञासु) तुम देखने वाले कौन और किसको देखते हो (वेदान्ति)
देखनेवाला ब्रह्म और ब्रह्म को ब्रह्म देखता है (जिज्ञासु) क्या दो ब्रह्म हैं (वेदान्ति) नहीं अपने
आपको देखता है (जिज्ञासु) क्या कोई अपने कंधे पर आप चढ़ सकता है तुम्हारी बात कुछ न
हीं केवल पागलपने की है। वह आगे चलकर जैनियों के पास जाके पूछा उन्होंने भी वैसा
ही कहा परन्तु इतना विशेष कहा कि जिन धर्म के विना सब धर्म खोटा जगत् का कर्त्ता अ
नादि ईश्वर कोई नहीं जगत् अनादि काल से जैसा का वैसा बना है और बना रहेगा आ तू हमा
रा चेला होजा क्योंकि हम सम्यक्त्वि अर्थात् सब प्रकार से अच्छे हैं (उत्तम) बातों को मानते हैं जै
न मार्ग से भिन्न सब मिथ्यात्वी हैं आगे चलके ईसाई से पूछा उसने वाममार्गी के तुल्य सब
जवाब सवाल किये इतना विशेष बतलाया सब मनुष्य पापी हैं अपने सामर्थ्य से पाप न
हीं छूटता विना ईसा पर विश्वास के पवित्र होकर मुक्ति को नहीं पा सकता ईसा ने सबके प्राय
श्चित्त के वास्ते अपनी जान देकर दया प्रकाशित की है तू हमारा ही चेला होजा (जिज्ञासु)
सुनकर मौलवी साहेब के पास गया उनसे भी ऐसे ही जवाब सवाल हुए इतना विशेष कहा
(लाशरीक खुदा) उसका पैगंबर और कुरान शरीफ के कोई निजात नहीं पा सकता।
जो इस मजहब को नहीं मानता वह दोजख की और काफिर है वाजबुल्कतल है (जिज्ञासु)
सुनकर वैष्णव के पास गया वैसे ही संवाद हुआ इतना विशेष कहा कि हमारे तिलक छापे
देखकर यमराज डरता है जिज्ञासु ने मन में समझा कि जब मच्छर मक्खी पुलिस के
सिपाही चोर डांकू और शत्रु नहीं डरते तो यमराज के गण क्यों डरेंगे फिर आगे चला तो स
ब मतवालों ने अपने २ को सच्चा कहा कोई हमारा कबीर सच्चा, कोई नानक, कोई दादू कोई वल्ल
भ, कोई सहजानंद कोई माधव, आदि को बड़ा और अवतार बतलाते हजार से पूछा उन
के परस्पर एक दूसरे का विरोध देख विशेष निश्चय किया कि इनमें कोई गुरु करने
योग्य नहीं क्योंकि एक २ की झूठ में नौसै निन्यानवे गवाही होगये जैसे झूठे दुकानदा
र वा वेश्या और भडुआ आदि अपनी २ चीजों की बड़ाई दूसरे की बुराई करते हैं

वैसेही ये हैं ऐसा जान (तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्। समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥१॥ तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक् प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय। येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्॥२॥ मुण्डक। उस सत्य के विज्ञानार्थ वह समित्पाणि अर्थात् हाथ जोड़ अरिक्तहस्त होकर वेदवित् ब्रह्मनिष्ठ परमात्मा को जानने हारे गुरु के पास जावे इन पाखण्डियों के जाल में न गिरे॥१॥ जब ऐसा जिज्ञासु विद्वान् के पास जाय उस शान्तचित्त जितेन्द्रिय समीप प्राप्त जिज्ञासु को यथार्थ ब्रह्मविद्या परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव का उपदेश करे और जिस २ साधन से वह श्रोता धर्मार्थ काम मोक्ष और परमात्मा को जान सके वैसी शिक्षा किया करे जब वह ऐसे पुरुष के पास जाकर बोला कि महाराज मैं अब इन संप्रदायों के बखेड़ों से मेरा चित्त भ्रान्त हो गया क्योंकि जो मैं इनमें से किसी एक का चेला होऊंगा तो नौसौ निन्यानवे से विरोधी होना पड़ेगा जिसके नौसौ निन्यानवे शत्रु और एक मित्र है उसको सुख कभी नहीं हो सकता इसलिये आप मुझको उपदेश कीजिये जिसको मैं ग्रहण करूं (आप्त विद्वान्) ये सब मत अविद्याजन्य विद्याविरोधी हैं मूर्ख पामर और जंगली मनुष्य को बहका कर अपने जाल में फंसा के अपना मतलब सिद्ध करते हैं वे बिचारे अपने मनुष्य जन्म के फल से रहित होकर अपना मनुष्यजन्म व्यर्थ गमाते हैं देख जिस बात में ये हजार एक मत हों वह वेदमत ग्राह्य है और जिसमें परस्पर विरोध हो वह कल्पित झूठा अधर्म अग्राह्य है (जिज्ञासु) इसकी परीक्षा कैसे हो (आप्त) तू जाकर इन २ बातों को पूछ सब की एक सम्मति हो जायगी तब वह उन हजारों की मंडली के बीच में खड़ा होकर बोला कि सुनो सब लोगो सत्यभाषण में धर्म है वा मिथ्या में सब एक होकर बोले कि सत्यभाषण में धर्म और असत्यभाषण में अधर्म है वैसे ही विद्या पढ़ने ब्रह्मचर्य करने पूर्ण युवावस्था में विवाह सत्संग पुरुषार्थ सत्य व्यवहारादि में धर्म और अविद्याग्रहण ब्रह्मचर्य न करने व्यभिचार करने कुसंग आलस्य असत्य व्यवहार छल कपट हिंसा परहानि करने आदि कर्मों में सब ने अधर्म बतलाया तब जिज्ञासु ने सब से कहा कि तुम इसी प्रकार सब जने एकमत हो सत्य धर्म की उन्नति और मिथ्या मार्ग की हानि क्यों नहीं करते हो वे सब बोले जो हम ऐसा करें तो हम को कौन पूछे हमारे चेले हमारी आज्ञा में न रहें जीविका नष्ट हो जाय फिर जो हम आनन्द कर रहे हैं सो सब हाथ से जाय इसलिये हम जानते हैं तो भी अपने २ मत का उपदेश और आग्रह करते ही जाते हैं क्योंकि (रोटी खाइये शक्कर से और दुनियां ठगिये मक्कर से) ऐसी बात ~~के समान लगते~~ है देखो संसार में सूधे सच्चे मनुष्य को कोई नहीं देता और न पूछता जो कुछ ढोंगबाजी और धूर्त्तता करता है वही पदार्थ पाता है (जिज्ञासु) जो तुम ऐसा पाखण्ड चलाकर अन्य मनुष्यों को ठगते हो तुमको राजा दंड क्यों नहीं देता (मतवाले) हमने राजा को भी अपना चेला बना लिया है हमने पक्का प्रबंध किया है छूटेगा नहीं (जिज्ञासु) जब तुम छल से अन्य मतस्थ मनुष्यों को ठग उनकी हानि करते हो परमेश्वर के सामने क्या उत्तर दोगे और घोर नरक में पड़ोगे थोड़े जीवन के लिये इतना बड़ा अपराध करना क्यों नहीं छोड़ते (मतवाले) जब ऐसा होगा तब देखा जायगा नरक और परमेश्वर का दंड जब होगा तब होगा अब तो आनन्द करते हैं हम को प्रसन्नता से

हां सब एक

एक मत होके कहा कि विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्यादि के ग्रहण में अधर्म कहा

धनादि पदार्थ देते हैं कुछ बलात्कार से नहीं लेते फिर राजा दंड क्यों देवे (जिज्ञासु) जैसे कोई
छोटे बालक को फुसला के धनादि पदार्थ हर लेता है जैसे उसको दण्ड मिलता है वैसे तुमको
क्यों नहीं मिलता क्योंकि (अज्ञो भवति वै बालः पिता भवति मंत्रदः) मनु० जो ज्ञानरहित
न होता है वह बालक कहाता है और जो ज्ञान का देने हारा है वह पिता, जो बुद्धिमान् विद्वान् और वृद्ध कहाता
है वह तो तुम्हारी बातों में नहीं फसता किन्तु अज्ञानी लोग जो बालक के सदृश हैं उनको ठगने में है
तुमको राजदण्ड अवश्य होना चाहिये (मतवाले) जब राजा प्रजा सब हमारे में हैं तो हमको दंड को मत
न देने वाला है जब ऐसी व्यवस्था होगी तब इन बातों को छोड़ कर दूसरी व्यवस्था करेंगे (जिज्ञासु)
जो तुम बैठे व्यर्थ माल मारते हो जो विद्याभ्यास कर गृहस्थों के लड़के लड़कियों को पढ़ाओ तो तुम्हारा
और गृहस्थों का कल्याण हो जाय (मतवाले) जब हम बाल्यावस्था से लेकर मरण पर्य्यन्त के सुखों
को छोड़ें बाल्यावस्था से युवावस्था पर्य्यन्त विद्या पढ़ने में रहें पश्चात् पढ़ाने में और उपदेश
करने में जन्मभर परिश्रम करें हमको क्या प्रयोजन हमको ऐसे ही लाखों रुपये मिल जाते हैं चैन
करते हैं उसको क्यों छोड़ें (जिज्ञासु) इसका परिणाम तो बुरा है देखो तुमको बड़े रोग होते हैं
शीघ्र मर जाते हो बुद्धिमानों में निन्दित होते हो फिर भी क्यों नहीं समझते (मतवाले) अरे भाई
(टका धर्मष्टका कर्म टका हि परमं पदम्। यस्य गृहे टका नास्ति हा टकां टकटकायते॥१।
आना अंशकलाः प्रोक्ता रुप्योऽसौ भगवान्स्वयम्। अतस्तं सर्व इच्छन्ति रुप्यं हि गुणवत्तमम्॥२॥ तू लड़का है संसार की बातें नहीं जानता देख टका के विना धर्म टका के विना कर्म टका के
विना परम पद नहीं होता जिसके घर में टका नहीं है वह हाय टका टका देखता रहता है कि टका के रतार उत्तम पदार्थों को टका
हाय मेरे पास टका होता तो इस उत्तम पदार्थ को मैं भोगता ॥१॥ क्योंकि सब कोई सोलह कला
युक्त अदृश्य भगवान् का कथन श्रवण करते हैं सो तो नहीं दीखता परन्तु सोलह आने और पैसे
कौड़ी रूप अंशकला युक्त जो रुपैया है वही साक्षात् भगवान् है इसीलिये सब कोई रुपयों की
खोज में लगे रहते हैं क्योंकि सब काम रुपयों से सिद्ध होते हैं ॥२॥ (जिज्ञासु) ठीक है तुम्हारी भी
तर की लीला बाहर आगई तुमने जितना यह पाखंड खड़ा किया है वह सब अपने सुख के लिये
किया है परन्तु इसमें जगत् का नाश होता है क्योंकि जैसा सत्योपदेश में संसार को लाभ पहुंचता है
वैसा ही असत्योपदेश से हानि होती है जब तुमको धन का ही प्रयोजन था तो नौकरी और व्या
पारादि कर्म कर के धन को इकट्ठा क्यों नहीं कर लेते हो (मतवाले) उसमें परिश्रम अधिक
और हानि भी हो जाती है परन्तु इस हमारी लीला में हानि कभी नहीं होती किन्तु सर्वदा लाभ ही
लाभ होता है देखो तुलसीदल डाल के चरणामृत देकर कंठी बांध देके चेला मूड़ने से वह जन्मभर को
पशुवत् हो जाता है फिर चाहे जैसे चलावें चल सकता है (जिज्ञासु) ये लोग तुमको बहुत सा
माल किस लिये देते हैं (मतवाले) धर्म स्वर्ग और मुक्ति के अर्थ (जिज्ञासु) जब तुम ही मुक्त न
हीं और न मुक्ति का स्वरूप वा साधन जानते हो तो तुम्हारी सेवा करने वालों को क्या मिलेगा (मतवा
ले) क्या इस लोक में मिलता है नहीं किन्तु मरकर पश्चात् परलोक में मिलता है जितना ये
लोग हमको देते हैं और सेवा करते हैं वह सब इन लोगों को परलोक में मिल जाता है
(जिज्ञासु) इनको तो दिया हुआ मिल जाता है वा नहीं तुम लेने वालों को क्या मिलेगा नरक वा अन्य
कुछ (मतवाले) हम भजन करा करते हैं इसका सुख हमको मिलेगा (जिज्ञासु) तुम्हारा भजन तो

रक्षा ही के लिये हैं वे सब रक्षा यहीं पड़े रहेंगे और जिस मांस पिंड को यहां पालते हो वह भी मर कर यहीं रह जायगा जो तुम परमेश्वर का भजन करते होते तो तुम्हारा आत्मा भी पवित्र होता (मतवाले) क्या हम अशुद्ध हैं (जिज्ञासु) भीतर के बड़े मैले हो (मतवाले) तुमने कैसे जाना (जिज्ञासु) तुम्हारे ही चाल चलन व्यवहार से (मतवाले) महात्माओं का व्यवहार हाथी के दांत के समान होता है जैसे हाथी के दांत खाने के भिन्न और दिखलाने के भिन्न होते हैं वैसे ही भीतर से हम पवित्र हैं और बाहर से लीला मात्र करते हैं (जिज्ञासु) जो तुम भीतर से शुद्ध होते तो तुम्हारे बाहर के काम भी शुद्ध होते इसलिये भीतर भी मैले हो (मतवाले) हम चाहें जैसे हों परन्तु हमारे चेले तो अच्छे हैं (जिज्ञासु) जैसे तुम गुरु हो वैसे तुम्हारे चेले भी होंगे (मतवाले) एक मत कभी नहीं हो सकता क्योंकि मनुष्यों के गुण कर्म स्वभाव भिन्न हैं (जिज्ञासु) जो बाल्यावस्था में एक सी शिक्षा हो सत्यभाषणादि धर्म का ग्रहण और मिथ्याभाषणादि अधर्म का त्याग करें तो एक मत अवश्य हो जाय और दो मत अर्थात् धर्मात्मा और अधर्मात्मा सदा रहते हैं परन्तु धर्मात्मा अधिक होने और अधर्मी कम होने से संसार में सुख बढ़ता है और जब अधर्मी अधिक होते हैं तब दुःख जब सब विद्वान् एक सा उपदेश करें तो एक मत होने में कुछ भी विलंब न हो (मतवाले) आज काल कलियुग है सतयुग की बात मत चाहो (जिज्ञासु) कलियुग नाम काल का है काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म के करने में साधक बाधक नहीं किन्तु तुम ही कलियुग की मूर्त्तियां बन रहे हो जो मनुष्य ही सतयुग कलियुग न हों तो कोई भी संसार में धर्मात्मा नहीं होता ये सब संग के गुण दोष हैं स्वाभाविक नहीं इतना कहकर आप्त के पास गया उनसे कहा कि महाराज तुमने मेरा उद्धार किया नहीं तो मैं भी किसी के जाल में फसकर नष्ट भ्रष्ट हो जाता अब मैं भी इन पाखंडियों का खंडन और वेदोक्त सत्यमत का मंडन किया करूंगा (आप्त) यही सब मनुष्यों को विशेष विद्वान् और संन्यासियों का काम है कि सब मनुष्यों को सत्य का मंडन और असत्य का खंडन करके सत्योपदेश से उपकार पहुंचाना चाहिये (प्रश्न) जो ब्रह्मचारी संन्यासी हैं वे तो ठीक हैं (उत्तर) ये आश्रम तो ठीक हैं परन्तु आज काल इन में भी बहुत सी गड़बड़ है कितने ही नाम ब्रह्मचारी रखते हैं और झूठ मूठ जटा बढ़ाकर सिद्धाई करते और जप पुरश्चरणादि में फसे रहते हैं विद्या पढ़ने का नाम नहीं लेते कि जिस हेतु से ब्रह्मचारी नाम होता है उस ब्रह्म अर्थात् वेद पढ़ने में परिश्रम कुछ भी नहीं करते वे ब्रह्मचारी बकरी के गले के स्तन के सदृश निरर्थक हैं और जो वैसे संन्यासी विद्याहीन दण्ड कमण्डलु ले भिक्षामात्र करते फिरते हैं जो कुछ भी वेदमार्ग की उन्नति नहीं करते कम उमर में संन्यास लेकर घूमा करते हैं और विद्याभ्यास को छोड़ देते हैं ऐसे ब्रह्मचारी और संन्यासी इधर उधर जल स्थल पाषाणादि मूर्त्तियों का दर्शन पूजन करते फिरते विद्या जानकर भी मौन हो रहते एकान्त देश में यथेष्ट खा पीकर सोते पड़े रहते हैं और ईर्ष्या द्वेष में फसकर निन्दा कुचेष्टा करके निर्वाह करते काषायवस्त्र और दण्डग्रहणमात्र से अपने को कृतकृत्य समझते अपने को सर्वोत्कृष्ट जानकर उत्तम काम नहीं करते वैसे संन्यासी भी जगत् में व्यर्थ वास करते हैं और जो सब जगत् का हित साधते हैं वे ठीक हैं (प्रश्न) गिरी पुरी भारती आदि गुसांई लोग तो अच्छे हैं क्योंकि मंडली बांध कर इधर उधर घूमते हैं सैकड़ों साधुओं को आनन्द कराते हैं और सर्वत्र

अद्वैतमत का उपदेश करते हैं और कुछ २ पढ़ते पढ़ाते भी हैं इसलिये ये अच्छे होंगे (उत्तर) ये
सब दश नाम पीछे से कल्पित किये हैं सनातन नहीं उनकी मंडलियां केवल भोजनार्थ हैं बहु
त से साधु भोजन ही के लिये मंडलियों में रहते हैं दंभी भी हैं क्योंकि एक को महन्त बना सायंका
ल में एक महन्त जो कि उनमें प्रधान होता है वह गद्दी पर बैठ जाता है सब ब्राह्मण और साधु खड़े
होकर हाथ में पुष्प ले (नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्र पराशरं च व्यासं शुकं
गौड़पदं महान्तम्) इत्यादि श्लोक पढ़के हर हर बोल उनके ऊपर पुष्प वर्षा कर साष्टांग
नमस्कार करते हैं जो कोई ऐसा न करे उसको वहां रहना भी कठिन है यह दंभ संसार को दिख
लाने के लिये करते हैं जिससे जगत् में प्रतिष्ठा होकर माल मिले कितने ही मठधारी गृहस्थ हो
कर भी संन्यास का अभिमान मात्र करते हैं कर्म कुछ नहीं संन्यास का वही कर्म है जो पांचवें
समुल्लास में लिख आये हैं उसको न करके व्यर्थ समय खोते हैं जो कोई अच्छा उपदेश करे उस
के भी विरोधी होते हैं बहुधा ये लोग भस्म रुद्राक्ष धारण करते और कोई २ शैव संप्रदाय का अ
भिमान रखते हैं और जब कभी शास्त्रार्थ करते हैं तो अपने मत अर्थात् शंकराचार्योक्त का स्था
पन और चक्राङ्कित आदि के खंडन में प्रवृत्त रहते हैं वेदमार्ग की उन्नति और यावत् पाखंड मार्ग हैं
उन के खंडन में प्रवृत्त नहीं होते ये संन्यासी लोग ऐसा समझते हैं कि हम को खंडन मंडन से क्या
प्रयोजन हम तो महात्मा हैं ऐसे लोग भी संसार में भाररूप हैं जब ऐसे हैं तभी तो वेदमार्ग
विरोधी वाममार्गादि संप्रदाय ईसाई मुसलमान जैनी आदि बढ़ गये अब भी बढ़ते जाते हैं
और इनका नाश होता जाता है तो भी इनकी आंख नहीं खुलती खुले कहां से जो कुछ उनके मन में
परोपकार बुद्धि और कर्त्तव्य कर्म करने में उत्साह होवे किन्तु ये लोग अपनी प्रतिष्ठा खाने पीने
के सामने अन्य अधिक कुछ भी नहीं समझते और संसार की निन्दा से बहुत डरते हैं पुनः
(लोकैषणा) अर्थात् लोक में प्रतिष्ठा (वित्तैषणा) धन बढ़ाने में तत्पर होकर विषय भोग (पुत्रैषणा) पुत्र
वत् शिष्यों पर मोहित होना ये तीन एषणाओं का त्याग करना उचित है जब एषणा ही नहीं छूटी
पुनः संन्यास क्योंकर हो सकता है अर्थात् पक्षपात रहित वेदमार्गोपदेश से जगत् के कल्याण
करने में अहर्निश प्रवृत्त रहना संन्यासियों का मुख्य काम है जब अपने २ अधिकार कर्मों को नहीं
करते पुनः संन्यासादि नाम धरना व्यर्थ है नहीं तो जैसे गृहस्थ व्यवहार स्वार्थ में परिश्रम क
रते हैं उन से अधिक परिश्रम परोपकार करने में संन्यासी भी तत्पर रहें तभी सब
आश्रम उन्नति पर रहें देखो तुम्हारे सामने पाखंड मत बढ़ते जाते हैं ईसाई मुसलमान तक हो
ते जाते हैं तनिक भी तुम से अपने घर की रक्षा और दूसरों को मिलाना नहीं बन सकता बने तो तब जब
तुम करना चाहो जब लों वर्त्तमान और भविष्यत् में उन्नतिशील नहीं होते तब लों आर्य्यावर्त्त
और अन्य देशस्थ मनुष्यों की वृद्धि नहीं होती जब वृद्धि के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों का पठनपाठन
ब्रह्मचर्य्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है चेत रक्खो
बहुत सी पाखंड की बातें तुम को सचमुच दीख पड़ती हैं जैसे कोई साधु वा दुकानदार पुत्रा
दि देने की सिद्धियां बतलाता है तब उसके पास बहुत स्त्री जाती हैं और हाथ जोड़ कर पुत्र मांग
ती हैं और बाबा जी सब को पुत्र होने का आशीर्वाद देता है उनमें से जिस २ को पुत्र होता है
वह २ समझती है कि बाबा जी के बचन से हुआ जब उससे कोई पूछे कि सुअरी कुत्ती गधी और

मुर्गी आदि के बच्चे किस बाबाजी के बचन से होते हैं तब कुछ भी उत्तर न दे सके गौं। जो को
ई कहे कि मैं लड़के को जीता रख सकता हूं तो आप ही क्यों मर जाता है कितने ही धूर्त लोग ऐसी माया र
चते हैं कि बड़े २ बुद्धिमान् भी धोखा खा जाते हैं जैसे धनसारी के ठग ये लोग पांच सात मिल के दूर २ देश
में जाते हैं जो शरीर से डौलडाल में अच्छा होता है उसको सिद्ध बनाते हैं जिस नगर वा ग्राम में ध
नाढ्य होते हैं उसके समीप जंगल में उस सिद्ध को बैठाते हैं उसके साधक नगर में जाके अ
जान बनके जिस किसी को पूछते हैं तुमने ऐसे महात्मा को यहां कहीं देखा वा नहीं वे ऐसा
सुनकर पूछते हैं कि वह महात्मा कौन और कैसा है (साधक) बड़ा सिद्ध पुरुष है मन की बातें
बतला देता जो मुख से कहता है वह हो जाता है बड़ा योगीराज है उसके दर्शन के लिये हम अ
पने घर द्वार छोड़कर देखते फिरते हैं मैंने किसी से सुना था कि वे महात्मा इधर की ओर आये हैं
(गृहस्थ) जब वह महात्मा तुमको मिले तो हमको भी कहना दर्शन करेंगे और मन की बातें पूछें
गे इसी प्रकार दिन भर नगर में फिरते और हर एक को उस सिद्ध की बात कहकर रात्रि को इक
ट्ठे सिद्ध साधक होकर खाते पीते और सो रहते हैं फिर भी प्रातःकाल नगर वा ग्राम में जाके उ
सी प्रकार दो तीन दिन कहकर फिर चारों साधक किसी एक २ धनाढ्य से बोलते हैं कि वह
महात्मा मिल गये तुमको दर्शन करना हो तो चलो वे जब तैयार होते हैं तब साधक उनसे पूछ
ते हैं कि तुम क्या बात पूछना चाहते हो हमसे
कहो कोई पुत्र की इच्छा करता कोई धन की कोई रोग निवारण की और कोई ~~पुत्र की इच्छा~~ शत्रु
के जीतने की उनको वे साधक ले जाते हैं सिद्ध साधकों ने जैसा संकेत किया होता है अर्थात् जिस
को धन की इच्छा हो उसको दहनी और जिस को पुत्र की इच्छा हो उसको
सन्मुख जिसको रोग निवारण की इच्छा हो उसको बांई ओर और जिसको शत्रु जीतने
पीछे से जा के — की इच्छा हो उसको ~~पीछे और~~ सामने वालों के बीच में बैठाते हैं जब नमस्कार करते हैं उ
सी समय वह सिद्ध अपनी सिद्धाई की झपट से उच्च स्वर से बोलता है क्या यहां हमारे पा
स पुत्र रक्खे हैं जो तू पुत्र की इच्छा करके आया है इसी प्रकार धन की इच्छा वाले से क्या यहां
थैलियां रक्खी हैं जो धन की इच्छा करके आया फकीरों के पास धन कहां धरा है रोगवा
ले से क्या हम वैद्य हैं जो तू रोग छुड़ाने की इच्छा से आया हम वैद्य नहीं जो तेरा रोग छु
ड़ावें जा किसी वैद्य के पास परन्तु जब उसका पिता बीमार हो तो उसका साधक अंगूठा,
जो माता बीमार हो तो तर्जनी जो भाई बीमार हो तो मध्यमा जो स्त्री बीमार हो तो अनामिका जो
कन्या बीमार हो तो कनिष्ठिका अंगुली चला देता है उसको देख वह सिद्ध कहता है कि तेरा पि
ता बीमार है तेरी माता तेरा भाई तेरी स्त्री और तेरी कन्या बीमार है तब तो वे चारों के चारों ब
ड़े मोहित हो जाते हैं साधक लोग उनसे कहते हैं देखो जैसा हमने कहा था वैसे ही हैं वा नहीं
(गृहस्थ) हां जैसा तुमने कहा था वैसे ही हैं तुमने हमारा बड़ा उपकार किया और हमारा भी
बड़ा भाग्योदय था जो ऐसे महात्मा मिले जिनके दर्शन करके हम कृतार्थ हुए (साधक)
सुनो भाई ये महात्मा मनोगामी हैं यहां बहुत दिन रहने वाले नहीं जो कुछ इनका आशी
र्वाद लेना हो तो अपनी २ सामर्थ्य के अनुकूल इनकी तन मन धन से सेवा करो क्योंकि (से
वा से मेवा मिलती है) जो किसी पर प्रसन्न हो गये तो जाने क्या वर दे दें सन्तों की — गति अपार है

(गृहस्थ) ऐसे लल्लोपत्तो की बातें सुनकर बड़े हर्ष से उनकी प्रशंसा करते हुए घर की ओर जाते हैं साधक भी उनके साथ ही चले जाते हैं क्योंकि कोई उनका पाखंड खोल न देवे उन धनाढ्यों का जो कोई मित्र मिला उनसे प्रशंसा करते हैं इसी प्रकार जो २ साधकों के साथ जाते हैं उन २ का हाल सब कह देते हैं जब नगर में हल्ला मचता है कि फलानी ठौर एक बड़े भारी सिद्ध आये हैं चलो उनके पास जब मेला का मेला जाकर बहुत से लोग पूछने लगते हैं कि महाराज मेरे मन का हाल कहिये तब तो व्यवस्था के बिगड़ जाने से चुपचाप होकर मौन साध जाता है और कहता है कि हमको बहुत मत सताओ तब तो झट उसके साधक भी कहने लग जाते हैं जो तुम इनको बहुत दिक करोगे तो चले जायेंगे और जो कोई बड़ा आदमी होता है वह साधक को अलग बुलाके पूछता है कि हमारे मन की बात कहला दो तो हम सच मानें साधक ने पूछा कि क्या बात है धनाढ्य ने उससे कह दी तब उसको उसी प्रकार के संकेत से लेजा के बैठाल देता है उस सिद्ध ने समझ के झट कह दिया तब तो सब मेला भर ने सुन ली कि अहो बड़े ही सिद्ध पुरुष हैं कोई मिठाई कोई पैसा कोई रुपया कोई अशर्फी कोई कपड़ा और कोई सीधा सामग्री भेट करता है फिर जब तक मान्यता बहुत सी रही तब तक खूब लूट करते हैं और किन्हीं २ दो एक आंख के अंधे गांठ के पूरों से पुत्र होने का आशीर्वाद वा राख उठाके दे देता है और उससे हजार हू रुपये लेकर कह देता है कि जो तेरी सच्ची भक्ति होगी तो पुत्र हो जायगा । इस प्रकार के बहुत से ठग होते हैं जिनकी विद्वान् ही परीक्षा कर सकते हैं और कोई नहीं इसलिये वेदादि विद्या का पढ़ना सत्संग करना होता है जिससे कोई उसको ठगाई में न फंसा सके औरों को भी बचा सके क्योंकि मनुष्य का नेत्र विद्या ही है बिना विद्या शिक्षा के ज्ञान नहीं होता जो बाल्यावस्था से उत्तम शिक्षा पाते हैं वे ही मनुष्य और विद्वान् होते हैं जिनको कुसंग है वे दुष्ट होकर पापी महामूर्ख होकर बड़े दुःख पाते हैं इसीलिये ज्ञान को विशेष कहा है कि जो जानता है (न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदां सततं करोति । यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति गुंजाः ॥१॥ यह किसी कवि का श्लोक है जो जिसका गुण नहीं जानता वह उसकी निंदा निरंतर करता है जैसे जंगली भील गजमुक्ताओं को छोड़ गुंजा का हार पहिन लेता है वैसे ही जो पुरुष विद्वान् ज्ञानी धार्मिक सत्पुरुषों का संगी योगी पुरुषार्थी जितेन्द्रिय सुशील होता है वही धर्मार्थ काम मोक्ष को प्राप्त होकर इस जन्म और परजन्म में सदा आनन्द में रहता है यह आर्यावर्त्त निवासी लोगों के मत विषय में संक्षेप से लिखा इसके आगे [illegible] विषय में लिखा जायगा ॥

~~इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वती [illegible] विरचिते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविभूषिते [illegible] एकादशः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥११॥~~

अब थोड़ासा आर्यावर्त देशीय राजवंश कि जिसमें श्रीमान् महाराजे (युधिष्ठिर) से लेके महाराजे (यशपाल) तक का इतिहास लिखते हैं। और श्रीमान्महाराजे "स्वायंभव मनु" जी से लेके महाराज "युधिष्ठिर" तक का इतिहास महाभारतादि में लिखा ही है और इससे सज्जन लोगों को इधर के कुछ इतिहास का वर्तमान विदित होगा। यद्यपि यह विषय विद्यार्थी संमिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहनचन्द्रिका जो कि पाक्षिक पत्र श्रीनाथद्वारे से निकलता था। जो राजपूताना देश मेवाड़ राज उदयपुर चितौड़गढ़, सबको विदित है उससे हमने अनुवाद किया है यदि ऐसे ही हमारे आर्य सज्जन लोग इतिहा। और विद्या पुस्तकों का खोज कर प्रकाश करेंगे तो देश को बड़ा ही लाभ पहुंचेगा॥ उस पत्र संपादक ने अपने मित्र से एक प्राचीन पुस्तक जो कि संवत् विक्रम के १७८२ सत्रहसौ बयासी का लिखा हुआ था उससे उक्त पत्र के सम्पादक महाशय ने ग्रहण आपने संवत् १९३९ मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष १९–२० किरण अर्थात् दो पाक्षिक पत्रों में छापा है। सो निम्नलिखे प्रमाणे जानिये।

आर्यावर्त देशीय राजवंशावली॥

इन्द्रप्रस्थ में आर्य श्रीमन्महाराजे लोगों ने राज्य किया जिन में श्रीमन्महाराजे "युधिष्ठिर" से महाराजे यशपाल तक वंश अर्थात् पीढ़ी अनुमान १८३ एकसौत्र्यासी राजा वर्ष ४८५९ मास ० दिन २४ समय में हुए हैं इनका ब्योरा

राजा	शक	वर्ष	मास	दिन
आर्यराजा	१२४	४०६७	३	१५

श्रीमन्महाराजे युधिष्ठिरादि वंश अनुमान पीढ़ी ३० वर्ष १७६२ मास १० दिन १९ इनका विस्तार :–

	आर्यराजा	वर्ष	मास	दिन
१	राजायुधिष्ठिर	३६	८	२५
२	राजापरीक्षित	६०	०	०
३	राजाजनमेजय	८४	७	२३
४	राजाअश्वमेध	८२	८	२२
५	द्वितीयराम	८८	२	८
६	छत्रमल	८१	११	२७
७	चित्ररथ	७५	३	१८
८	दुष्टशैल्य	७५	१०	२४
९	राजाउग्रसेन	७८	७	२१
१०	राजाशूरसेन	७८	७	२१
११	भुवनपति	६९	५	५
१२	रणजीत	६५	१०	४
१३	ऋक्षक	६४	७	४
१४	सुखदेव	६२	०	२४
१५	नरहरिदेव	५१	१०	२
१६	सुचिरथ	४२	११	२
१७	शूरसेनदूसरा	५८	१०	८
१८	पर्वतसेन	५५	८	१०
१९	मेधावी	५२	१०	१०
२०	सोनचीर	५०	८	२१
२१	भीमदेव	४७	९	२०
२२	नृहरिदेव	४५	११	२३
२३	पूर्णमल	४४	८	७
२४	करदवी	४४	१०	८
२५	अलंमिक	५०	११	८
२६	उदयपाल	३८	९	०
२७	दुवनमल	४०	१०	२६
२८	दमात	३२	०	०
२९	भीमपाल	५८	५	८
३०	क्षेमक	४८	११	२१

राजा क्षेमक का प्रधान विश्रवाने क्षेमकराजाकोमारकरराज्य किया पीढी १४ वर्ष ५०० मास ३ दिन ५ इनकाविस्तार—

	आ० रा०	वर्ष	मास	दिन
१	विश्रवा	१७	३	२९
२	पुरसेनी	४२	८	२१
३	वीरसेनी	५२	१०	७
४	अनंगशायी	४७	८	२३
५	हरिजित	३५	९	१७
६	परमसेनी	४४	२	२३
७	सुखपाताल	३०	२	२१
८	कद्रुत	४२	९	२४
९	सज्ज	३२	२	१४
१०	अमरचूड़	२७	३	१६
११	अमीपाल	२२	११	२५
१२	दशरथ	२५	४	१२
१३	वीरसाल	३१	८	११
१४	वीरसालसेन	४७	०	१४

राजावीरसालसेनकोवीरमहाप्रधानने मारकर राज्य किया वंश १६ वर्ष ४४५ मास ५ दिन ३ इनकाविस्तार—

	रा०	व०	मा०	दि०
१	राजावीरमहा	३५	१०	८
२	अजितसिंह	२७	७	१९
३	सर्वदत्त	२८	३	१०
४	भुवनपति	१५	४	१०
५	वीरसेन	२१	२	१३
६	महीपाल	४०	८	७
७	शत्रुशाल	२६	४	३
८	संघराज	१७	२०	१०
९	तेजपाल	२८	११	१०

	रा०	व	मा०	दि०
१०	माणिकचन्द	३७	७	२१
११	कामसेनी	४२	५	१०
१२	शत्रुमर्दन	८	११	१३
१३	जीवनलोक	२८	९	१७
१४	हरीराव	२६	१०	२९
१५	दूसरावीरसेन	३५	२	२०
१६	आदित्यकेतु	२३	११	१३

राजा आदित्यकेतु मगधदेशके राजाको (धंधर) नामकराजा प्रयागकेने मारकरराज्यकिया वंशपुरुष ९ वर्ष ३१६ मास ९ दिन ८ इनका विस्तार—

	रा०	व०	मा०	दि०
१	राजाधंधर	४२	७	२४
२	महर्षी	४१	२	२९
३	सनरच्ची	५०	१०	१९
४	महायुद्ध	३०	३	८
५	दुरनाथ	२८	५	२५
६	जीवनराज	४५	२	५
७	रुद्रसेन	४७	४	२८
८	आरीलक	५२	१०	८
९	राजपाल	३६	०	०

राजा राजपालको सामंत महानपालने मारकरराज्यकिया पुरुष १ वर्ष १४ मास ० दिन ० इनका विस्तार नहीं है—

राजा महानपालके राज्यपर राजा विक्रमादित्यने (अवंतिका) (उज्जैन) से चढाकरके राजा महानपालको मारके राज्य किया पुरुष १ वर्ष ९३ मास ० दिन ० इनका विस्तार नहीं है।

राजा विक्रमादित्यको शालिवाहनका उमराव समुद्रपाल योगी पैठणकेने राजा (विक्रमको मारकर राज्यकिया पुरुष १६ वर्ष ३७२ मास ८ दिन २६ इनका विस्तार—

	राजा	वर्ष	मास	दिन
१	समुद्रपाल	५४	२	२०
२	चन्द्रपाल	३६	५	४
३	साहायपाल	११	४	११
४	देवपाल	२७	१	२८
५	नरसिंहपाल	१८	०	२०
६	सामपाल	२७	१	१७
७	रघुपाल	२२	३	२५
८	गोविंदपाल	२७	१	१७
९	अमृतपाल	३६	१०	१३
१०	बलीपाल	१२	५	२७
११	महीपाल	१३	८	४
१२	हरीपाल	१४	८	४
१३	सीसपाल	११	१०	१३
१४	मदनपाल	१७	१०	१९
१५	कर्मपाल	१६	२	२
१६	विक्रमपाल	२४	११	१३

राजा विक्रम विक्रमपालने पश्चिमदिशाका राज्य (मलुखचन्द बोहराथा) इनपरचढाईकरके मैदानमें लडाईकी, इसलडाईमें मलुखचंदने विक्रमपालको मारकर इंद्रप्रस्थका राज्य किया पुस्त १० वर्ष १९० मास १ दिन १६ इनका विस्तार :—

	राजा.	वर्ष	मास	दिन
१	मलुखचंद	५४	२	१०
२	विक्रमचन्द	१२	७	१२
३	अमीनचन्द	१०	०	५
४	रामचंद	१३		

न इसकानामकहींमानकचंदभीलिखाहै

	रा०	व०	मा०	दि०
५	हरीचंद	१४	९	२४
६	कल्याणचन्द	१०	५	४
७	भीमचन्द	१६	२	९
८	लोवचन्द	२६	३	२२
९	गोविंदचन्द	३१	७	१२

रानीपद्मावती गोविंदचन्द की स्त्री ने राज्य किया।

१०	रानीपद्मावती	१	०	०

रानीपद्मावती मरगई इसके पुत्र भी कोई नहीं था इसलिये सब मुत्सद्दियों ने सलाह करके हरिप्रेम वैरागी को गद्दी पर बैठा के मुत्सद्दी राज्य करने लगे सो हरिप्रेम का विस्तार—पुस्त १ वर्ष ५० मास ० दिन १२।

	रा०	व०	मा०	दि०
१	हरिप्रेम	७	५	१६
२	गोविंदप्रेम	२०	२	८
३	गोपालप्रेम	१५	७	२८
४	महाबाहु	६	८	२९

राजा महाबाहु राज छोड़के बन में तपश्चर्या करने गये यह बंगाल के राजा आधीसेन ने सुनके इन्द्रप्रस्थ में आके आप राज्य करने लगे पुस्त १२ वर्ष १५१ मास ११ दिन २ इनका विस्तार—

	राजा०	वर्ष	मास	दिन
१	राजा आधीसेन	१८	५	२१
२	विलावलसेन	१२	४	२
३	केशवसेन	१५	७	१२
४	माधसेन	१२	४	२
५	मयूरसेन	२०	११	२७
६	भीमसेन	५	१०	९

७	कल्याणसेन	४	८	२१
८	हरीसेन	१२	०	२५
९	क्षेमसेन	८	११	१५
१०	नारायणसेन	२	२	२९
११	लक्ष्मीसेन	२६	१०	०
१२	दामोदरसेन	११	५	१९

राजा दामोदरसेनने अपने उमरावको बहुत दुःख दिया इसलिये राजाके उमराव दीपसिंहने फौज मिलाके राजाके साथ लड़ाई की उस लड़ाईमें राजाको मारकर दीपसिंह आप राज्य करने लगे पुस्त ६ वर्ष १०७ मास ६ दिन २२ इनका विस्तार:—

	राजा	वर्ष	मास	दिन
१	दीपसिंह	१७	१	२६
२	राजसिंह	१४	५	०
३	रणसिंह	९	८	११
४	नरसिंह	४५	०	१५
५	हरिसिंह	१३	२	२९
६	जीवनसिंह	८	०	१

राजा जीवनसिंहने कुछ कारणके लिये अपनी सब फौज उत्तर दिशा को भेज दी यह खबर पृथ्वीराज चहुआण वैराट के राजा ने सुनकर जीवनसिंह के ऊपर चढ़ाई करके आये और लड़ाई में जीवनसिंह को मारकर इन्द्रप्रस्थ का राज्य किया पुस्त ५ वर्ष ८६ मास ० दिन २० इनका विस्तार—

	राजा	वर्ष	मास	दिन
१	पृथ्वीराज	१२	२	१९
२	अभयपाल	१४	५	१७
३	दुर्जनपाल	११	४	१४

राजा	वर्ष	मास	दिन
४ उदयपाल	११	७	३
५ यशपाल	३६	४	२७

राजा यशपाल के ऊपर सुलतान साहबुद्दीन गोरी गढ़गजनी से चढ़ाई करके आया और राजा यशपाल को प्राग (प्रयाग) के किले में संवत् १२४९ साल में पकड़कर कैद किया पश्चात् (इन्द्रप्रस्थ) अर्थात् दिल्ली का राज्य आप (सुलतान साहबुद्दीन) करने लगा पुस्त ५३ वर्ष ७४५ मास १ दिन १७ इनका विस्तार बहुत इतिहास पुस्तकों में लिखा है इसलिये यहां नहीं लिखा॥

इसके आगे बौद्ध जैन मत विषय में लिखा जायगा॥

इति श्रीमत्स्वामीदयानन्दसरस्वतीकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचित एकादशः समुल्लासः सम्पूर्णः॥११॥

अनुभूमिका

जब आर्य्यावर्त्तस्थ मनुष्यों में सत्याऽसत्य का यथावत् निर्णयकारक वेदविद्या छूटक
र अविद्या फैल के मतमतांतर खड़े हुए यही जैनादि के विद्याविरुद्ध मतप्रचार का नि
मित्त हुआ क्योंकि वाल्मीकि और महाभारतादि में जैनियों का नाममात्र भी नहीं
लिखा और जैनियों के ग्रंथों में वाल्मीकि और भारत में कथित (राम कृष्णादि) की
गाथा बड़े विस्तारपूर्वक लिखी हैं इससे यह सिद्ध होता है कि यह मत इनके पीछे
चला क्योंकि जैसा अपने मत को बहुत प्राचीन जैनी लोग लिखते हैं वैसा होता तो
वाल्मीकि आदि ग्रंथों में उनकी कथा अवश्य होती इसलिये जैनमत इन ग्रंथों के पी
छे चला है कोई कहे कि जैनियों के ग्रंथों में से कथाओं को लेकर वाल्मीकि आदि आ
दि ग्रंथ बने होंगे तो उनसे पूछना चाहिये कि वाल्मीकि आदि में तुम्हारे ग्रंथों का
नाम लेख भी क्यों नहीं और तुम्हारे ग्रंथों में क्यों है क्या पिता के जन्म का दर्शन पुत्र क
र सकता है कभी नहीं इससे यही सिद्ध होता है कि जैन बौद्धमत शैव शाक्तादि मतों के
पीछे चला है अब इस १२ बारहवें समुल्लास में जो २ जैनियों के मत विषयक लिखा
गया है सो २ उनके ग्रंथों के पते पूर्वक लिखा है इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना
चाहिये क्योंकि जो २ हमने इनके मत विषय में लिखा है वह केवल सत्याऽसत्य के नि
र्णयार्थ है न कि विरोध वा हानि करने के अर्थ इस लेख को जब जैनी बौद्ध वा अ-
न्य लोग देखेंगे तब सबको सत्याऽसत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का
और बोध भी होगा जब तक वादी प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद वा लेख न किया जा
य तब तक सत्याऽसत्य का निर्णय नहीं हो सकता जब विद्वान् लोगों में सत्याऽसत्य का
निश्चय नहीं होता तभी अविद्वानों को महा अंधकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़
ता है इसलिये सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ सुहृदता से वाद वा लेख कर
ना हम मनुष्यजाति का मुख्य काम है यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो के।
और यह बौद्ध जैन मत का विषय सिवाय इनके अन्यमत वालों को अपूर्व लाभ औ
र बोध करने वाला होगा क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्यमत वाले को
देखने पढ़ने वा लिखने को भी नहीं देते बड़े परिश्रम से मेरे और विशेष आर्य्यस
माज मुम्बई के मंत्री (सेठ सेवकलाल कृष्णदास के) पुरुषार्थ से ग्रंथ प्राप्त हुए हैं त
था काशीस्थ जैन प्रभाकर छापेखाने में छपने और मुम्बई में (प्रकरण रत्नाकर)
ग्रंथ के छपने से भी सब लोगों को जैनियों का मत देखना सहज हुआ है भला यह
किन विद्वानों की बात है कि अपने मत के पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न
दिखलाना इसी से विदित होता है कि इन ग्रंथों के बनाने वालों को प्रथम ही शंका
थी कि इन ग्रंथों में असंभव बातें हैं जो दूसरे मत वाले देखेंगे तो खण्डन करेंगे
और हमारे मत वाले दूसरों के ग्रंथ देखेंगे तो इस मत में श्रद्धा न रहेगी अस्तु
जो हो परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं कि जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते कि
न्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्युक्त रहते हैं यह न्याय की बात नहीं क्योंकि
प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दूसरे के दोषों में दृष्टि देके निकालें ॥

इन बौद्ध जैनियों के मत का विषय सब सज्जनों के सम्मुख धरता हूं विचारें जैसा है वैसा ॥ किमधिकलेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु ॥

अथ द्वादशसमुल्लासारम्भः

अथ नास्तिकमतान्तर्गत चारवाक बौद्ध जैन मत खण्डन मण्डन विषयान् व्याख्यास्यामः — कोई एक बृहस्पति नामा पुरुष हुआ था जो वेद ईश्वर और यज्ञादि उत्तम कर्मों को भी नहीं मानता था। देखिये उनका मत - यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ १ ॥ अर्थ - कोई मनुष्यादि प्राणी मृत्यु के अगोचर नहीं है अर्थात् सब को मरना है इसलिये जबतक शरीर में जीव रहे तबतक सुख से रहै जो कोई कहे कि धर्माचरण से कष्ट होता है जो धर्म को छोड़ें तो पुनर्जन्म में बड़ा दुःख पावें। उसको चारवाक उत्तर देता है कि अरे भोले भाई! जो मरे के पश्चात् शरीर भस्म हो जाता है कि जिसने खाया पिया है वह पुनः संसार में न आवेगा इसलिये जैसे हो सके वैसे आनन्द में रहो लोक में नीति से चलो ऐश्वर्य को बढ़ाओ और उससे इच्छित भोग करो यही लोक समझो परलोक कुछ नहीं। देखो पृथिवी जल अग्नि वायु इन चार भूतों के परिणाम से यह शरीर बना है इसमें इनके योग से चैतन्य उत्पन्न होता है जैसे मादक द्रव्य खाने पीने से नशा उत्पन्न होता है इसी प्रकार जीव शरीर के साथ उत्पन्न होकर शरीर के नाश के साथ आप भी नष्ट हो जाता है फिर किसको पाप पुण्य का फल होगा ॥ तच्चैतन्य विशिष्ट देह एव आत्मा देहातिरिक्त आत्मनि प्रमाणाभावात् ॥ जो इस शरीर में चारों भूतों के संयोग से जीवात्मा उत्पन्न होकर उन्हीं के वियोग के साथ ही नष्ट हो जाता है क्योंकि मरे पीछे कोई भी जीव प्रत्यक्ष नहीं होता। हम एक प्रत्यक्ष ही को मानते हैं क्योंकि प्रत्यक्ष के विना अनुमानादि होते ही नहीं इसलिये मुख्य प्रत्यक्ष के सामने अनुमानादि गौण होने से उनका ग्रहण नहीं करते सुन्दर स्त्री के आलिंगन से आनन्द का करना पुरुषार्थ का फल है। (उत्तर) ये पृथिव्यादि भूत जड़ हैं उनसे चेतन की उत्पत्ति कभी नहीं हो सकती जैसे अब माता पिता के संयोग से देह की उत्पत्ति होती है वैसे ही आदि सृष्टि में मनुष्यादि शरीरों की आकृति परमेश्वर कर्त्ता के विना कभी नहीं हो सकती। नशा के समान चेतन की उत्पत्ति और विनाश नहीं होता क्योंकि नशा चेतन को होता है जड़ को नहीं, जो पदार्थ नष्ट अर्थात् अदृष्ट होते हैं परन्तु अभाव किसी का नहीं होता इसी प्रकार अदृश्य होने से जीव का भी अभाव न मानना चाहिये जब जीवात्मा सदेह होता है तभी उसकी प्रकटता होती है जब शरीर को छोड़ देता है तब यह शरीर जो मृत्यु को प्राप्त हुआ है वह जैसा चेतन युक्त पूर्व था वैसा नहीं हो सकता। यही बात बृहदारण्यक में कही है: (नाहं मोहं ब्रवीमि अनुच्छित्ति धर्माय मात्मेति) याज्ञवल्क्य कहते हैं कि हे मैत्रेयि मैं मोह से बात नहीं करता किन्तु आत्मा अविनाशी है. जिसके योग से शरीर चेष्टा करता है जब जीव शरीर से पृथक् हो जाता है तब शरीर में ज्ञान कुछ भी नहीं रहता जो देह से पृथक् आत्मा न होतो जिसके संयोग

से चेतनता और वियोग से जड़ता होती है वह देह से पृथक् है जैसे आंख सबको
देखती है परन्तु अपने को नहीं इसी प्रकार प्रत्यक्ष का करने वाला अपने ऐन्द्रिय
प्रत्यक्ष नहीं कर सकता जैसे अपनी आंख से सब घट पटादि पदार्थ देखता है
वैसे आंख को अपने ज्ञान से देखता है । जो द्रष्टा है वह द्रष्टा ही रहता है दृश्य कभी
नहीं होता जैसे बिना आधार आधेय कारण के बिना कार्य्य अवयवी के बिना अव
यव और कर्त्ता के बिना कर्म नहीं रह सकते वैसे कर्त्ता के बिना प्रत्यक्ष कैसे हो
सकता है । जो सुन्दर स्त्री के साथ समागम करने ही को पुरुषार्थ का फल मानो—
तो क्षणिक सुख और उससे दुःख भी होता है वह भी पुरुषार्थ ही का फल होगा ।
जब ऐसा है तो स्वर्ग की हानि होने से दुःख भोगना पड़ेगा जो कहो दुःख के छुड़ा
ने और सुख के बढ़ाने में यत्न करना चाहिये तो [illegible] सुख की हानि हो जाती है
इसलिये वह पुरुषार्थ का फल नहीं (चारवाक) जो दुःख संयुक्त सुख का त्याग क
रते हैं वे मूर्ख हैं जैसे धान्यार्थी धान्य का ग्रहण और बुस का त्याग करता है
वैसे इस संसार में बुद्धिमान् सुख का ग्रहण और दुःख का त्याग करें क्योंकि इस
लोक के उपस्थित सुख को छोड़ के अनुपस्थित स्वर्ग के सुख की इच्छा कर धूर्त
कथित वेदोक्त अग्निहोत्रादि कर्म उपासना और ज्ञान काण्ड का अनुष्ठान पर
लोक के लिये करते हैं वे अज्ञानी हैं । जो परलोक है ही नहीं तो उसकी आशा
करना मूर्खता का काम है क्योंकि — अग्निहोत्रं त्रयो वेदास्त्रिदण्डं भस्मगुण्ठन
म् । बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः ॥ चारवाक मत प्रचारक बृहस्प
ति कहता है कि अग्निहोत्र, तीन वेद, तीन दण्ड, और भस्म का लगाना बुद्धि और पुरु
षार्थ रहित पुरुषों ने जीविका बना ली है किन्तु कांटे लगने आदि से उत्पन्न हुए दुः
ख का नाम नरक । लोकसिद्ध राजा परमेश्वर और देह का नाश होना मोक्ष अन्य
कुछ भी नहीं है (उत्तर) विषय रूपी सुख मात्र को पुरुषार्थ का फल मानकर विषय
दुःख निवारण मात्र में कृतकृत्यता और स्वर्ग मानना मूर्खता है अग्निहोत्रादि
यज्ञों से वायु वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा आरोग्यता का होना उससे धर्म, अर्थ,
काम, और मोक्ष की सिद्धि होती है उसको न जानकर वेद ईश्वर और वेदोक्त ध
र्म की निन्दा करना धूर्तों का काम है । जो त्रिदण्ड और भस्मधारण का खंडन है
सो ठीक है यदि कंटकादि [illegible] ही दुःख का नाम [illegible] नरक हो तो उससे अधिक मह
रोगादि नरक क्यों नहीं । यद्यपि राजा को ऐश्वर्य्यवान् और प्रजापालन में समर्थ
होने से श्रेष्ठ मानें तो जो अन्यायकारी पापी राजा हो उसको भी परमेश्वरवत् मा
नते हो तो तुम्हारे जैसा कोई भी मूर्ख नहीं । शरीर का छेद होना मात्र मोक्ष है तो ग
दहे कुत्ते आदि और तुम में क्या भेद रहा किन्तु आकृति ही मात्र भिन्न रही ।
(चारवाक) अग्निरुष्णो जलं शीतं शीतस्पर्शस्तथाऽनिलः । केनेदं चित्रितं
तस्मात्स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः ॥ १ ॥ न स्वर्गो नाऽपवर्गो वा नैवात्मा पारलौ
किकः । नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायिकाः ॥ २ ॥ पशुश्चेन्निहतः

स्वर्गं ज्योतिष्टोमेन गमिष्यति । स्वपिता यजमानेन तत्र कस्मान्न हिंस्यते ॥ ३ ॥
मृतानामपि जन्तूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम् । गच्छतामिह जन्तूनां व्यर्थं पाथेयक
ल्पनम् ॥ ४ ॥ स्वर्गस्थिता यदा तृप्तिं गच्छेयुस्तत्र दानतः । प्रासादस्योपरिस्था
नामत्र कस्मान्न दीयते ॥ ५ ॥ यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥ ६ ॥ यदि गच्छेत्परं लोकं देहादेष वि
निर्गतः । कस्माद्भूयो न चायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः ॥ ७ ॥ ततश्च जीवनोपा
यो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह । मृतानां प्रेतकार्याणि न त्वन्यद्विद्यते क्वचित् ॥ ८ ॥
त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भण्डधूर्त्तनिशाचराः । जर्फरीतुर्फरीत्यादि पण्डितानां वचः
स्मृतम् ॥ ९ ॥ अश्वस्यात्र हि शिश्नन्तु पत्नीग्राह्यं प्रकीर्त्तितम् । भण्डैस्तद्वत्परं
चैव ग्राह्यजातं प्रकीर्त्तितम् ॥ १० ॥ मांसानां खादनं तद्वन्निशाचरसमीरितम्
॥ ११ ॥ चारवाक, आभाणक, बौद्ध, और जैन भी जगत्की उत्पत्ति स्वभाव से मान
ते हैं । जो स्वाभाविक गुण हैं उन २ से द्रव्य संयुक्त होकर सब पदार्थ बनते हैं को
ई जगत्का कर्त्ता नहीं ॥ १ ॥ न कोई स्वर्ग न कोई नरक और न कोई परलोक में जाने
वाला आत्मा है और न वर्णाश्रम की क्रिया फलदायक है ॥ २ ॥ जो यज्ञ में पशु को
मार होम करने से वह स्वर्ग को जाता हो तो यजमान अपने पिता आदि को मार होम क
र के स्वर्ग को क्यों नहीं भेजता ॥ ३ ॥ जो मरे हुए जीवों का श्राद्ध और तर्पण तृप्तिकार
क होता है तो परदेश में जाने वाले मार्ग में निर्वाहार्थ अन्न वस्त्र और धनादि को
क्यों ले जाते हैं क्योंकि जैसे मृतक के नाम से अर्पण किया हुआ पदार्थ स्वर्ग में प
हुंचता है तो परदेश में जाने वालों के लिये उन के सम्बन्धी भी घर में उसके नाम
से अर्पण करके देशान्तर में पहुंचा देवें जो यह नहीं पहुंचता तो स्वर्ग में वह क्यों
कर पहुंच सकता है ॥ ४ ॥ जो मर्त्यलोक में दान करने से स्वर्गवासी तृप्त
होते हैं तो नीचे देने से घर के ऊपर स्थित पुरुष तृप्त क्यों नहीं होता ॥ ५ ॥ इसलिये
जब तक जीवे तब तक सुख से जीवे जो घर में पदार्थ न हों तो ऋण ले के आनन्द
करे ऋण देना नहीं पड़ेगा क्योंकि जिस शरीर में जीव ने खाया पिया है उन दोनों
का पुनरागमन न होगा फिर किससे कौन मांगेगा और कौन देवेगा ॥ ६ ॥
जो लोग कहते हैं कि मृत्यु समय जीव निकल के परलोक को जाता है यह बात
मिथ्या है क्योंकि जो ऐसा होता तो कुटुम्ब के मोह से बद्ध होकर पुनः घर में क्यों न
हीं आ जाता ॥ ७ ॥ इसलिये यह सब ब्राह्मणों ने अपनी जीविका का उपाय कि
या है जो दशगात्रादि मृतक क्रिया करते हैं यह सब उनकी जीविका की लीला है ॥
८ ॥ वेद के बनाने हारे भांड, धूर्त्त और निशाचर अर्थात् राक्षस ये तीन हैं जर्फ
री तुर्फरी इत्यादि पंडितों के धूर्त्तता युक्त वचन हैं ॥ ९ ॥ देखो धूर्त्तों की रचना
घोड़े के लिङ्ग को स्त्री ग्रहण करे उसके साथ समागम यजमान की कन्या से ठट्ठा
आदि लिखना धूर्त्तों के विना नहीं हो सकता ॥ १० ॥ और जो मांस का खाना लिखा है वह
राक्षस का बनाया है ॥ ११ ॥ (उत्तर) विना चेतन परमेश्वर के निर्माण किये

जड़ पदार्थ स्वयं आपस में स्वभाव से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सक
ते । जो स्वभाव से ही होते हों तो द्वितीय सूर्य्य चन्द्र पृथिवी और नक्षत्रादि लोक आ
पसे आप क्यों नहीं बन जाते हैं ॥१॥ स्वर्ग सुखभोग और नरक दुःखभोग का ना
म है । जो जीवात्मा न होता तो सुख दुःख का भोक्ता कौन हो सके जैसे इस समय
सुख दुःख का भोक्ता जीव है वैसे परजन्म में भी होता है क्या सत्यभाषण और परो
पकारादि क्रिया भी वर्णाश्रमियों की निष्फल होंगी, कभी नहीं ॥ २ ॥ पशु मार
के होम करना वेदादि सत्य शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा और मृतकों का श्राद्ध तर्पण करा- नहीं
है क्यों कि यह करना कपोलकल्पित है वेदादि सत्य शास्त्रों के विरुद्ध होने से भागवतादि पुराण
मत वालों का मत है इसलिये इस बात का खंडन अखंडनीय है ॥ ३ ॥ जो वस्तु है
उसका अभाव कभी नहीं होता विद्यमान जीव का अभाव नहीं हो सकता देह भ
स्म हो जाता है जीव नहीं जीव तो दूसरे शरीर में जाता है इसलिये जो कोई ऋणा
दि कर बिराने पदार्थों से इस लोक में भोग कर नहीं देते हैं वे निश्चय पापी होकर दूसरे
जन्म में दुःखरूपी नरक भोगते हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ॥ ४ ॥ देह से निकलकर
जीव स्थानान्तर और शरीरान्तर को प्राप्त होता है और उसको पूर्वजन्म तथा कुटुम्बादि
का ज्ञान कुछ भी नहीं रहता इसलिये पुनः कुटुम्ब में नहीं आ सकता ॥ ५ ॥ हां ब्राह्मणों
ने प्रेतकर्म अपनी जीविकार्थ बना लिया है परन्तु वेदोक्त न होने से खंडनीय है ॥ ६ ॥
अब कहिये जो चार्वाक आदि ने वेदादि सत्य शास्त्र देखे सुने वा पढ़े होते तो वेदों
की निन्दा कभी न करते कि वेद भांड धूर्त्त और निशाचरवत् पुरुषों ने बनाये हैं ऐसा
वचन कभी न निकालते हां भांड धूर्त्त और निशाचरवत् महीधरादि टीकाका
र हुए हैं उनकी धूर्त्तता है वेदों की नहीं परन्तु शोक है चार्वाक, आभाणक, बौद्ध
और जैनियों पर कि इन्होंने मूल चार वेदों की संहिताओं को न सुना न देखा और
न किसी विद्वान् से पढ़ा इसी लिये नष्ट भ्रष्ट बुद्धि होकर ऊटपटांग वेदों की नि
न्दा करने लगे दुष्ट वाममार्गियों की प्रमाणशून्य कपोलकल्पित भ्रष्ट टीका
ओं को देखकर वेदों से विरोधी होकर अविद्यारूपी अगाध समुद्र में जा गिरे
॥ ७ ॥ भला विचारना चाहिये कि स्त्री से अश्व के लिंग का ग्रहण कराके उससे समागम लो
करना और यजमान की कन्या से हांसी ठट्ठा आदि करना सिवाय वाममार्गी लोगों से अन्य मनुष्यों का काम
नहीं है विना इन महापापी वाममार्गियों के अत्यंत शोक तो इन चार्वाक आ
भ्रष्ट वेदार्थ से विपरीत अशुद्ध व्याख्यान को न करता दि पर है जो कि बिना विचारे वेदों की निन्दा करने पर तत्पर हुए न निक तो अप
नी बुद्धि से काम लेते क्या करें बिचारे उनमें इतनी विद्या ही नहीं थी जो स
त्यासत्य का विचार कर सत्य का मंडन और असत्य का खंडन करते ॥ ८ ॥
और जो मांस खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों की लीला है इसलि
ये उनको राक्षस कहना उचित है परन्तु वेदों में कहीं मांस खाना नहीं लिखा
मिथ्या इसलिये इत्यादि मिथ्या बातों का पाप उन टीकाकारों को और जिन्होंने वेदों के
नि:संदेह जाने सुने बिना मनमानी निन्दा की है निःसंदेह उनको लगेगा ~~सर्व्वेकुछ मन्देह नहीं~~

सच तो यह है कि जिन्होंने वेदों से विरोध किया और करते हैं और करेंगे वे अवश्य अविद्या रूपी अंधकार में पड़ के सुख के बदले दारुण दुःख जितना पावें उतना ही न्यून है इसलिये मनुष्य मात्र को वेदानुकूल चलना समुचित है ॥ ९ ॥

जो वाममार्गियों ने मिथ्या कपोल कल्पना करके वेदों के नाम से अपना प्रयोजन सिद्ध करना अर्थात् यथेष्ट मद्यपान मांसखाना और परस्त्रीगमन करने आदि दुष्टकामों की प्रवृत्ति होने के अर्थ वेदों को कलङ्क लगाया इन्हीं बातों को देखकर चारवाक बौद्ध तथा जैन लोग वेदों की निन्दा करने लगे और पृथक् एक वेदविरुद्ध अनीश्वरवादी अर्थात् नास्तिक मत चला लिया जो चारवाकादि वेदों का मूलार्थ विचारते तो झूठी टीकाओं को देखकर सत्य वेदोक्त मत से क्यों हाथ धो बैठते क्या करें बिचारे (विनाशकाले विपरीतबुद्धिः) जब नष्ट भ्रष्ट होने का समय आता है तब मनुष्य की उलटी बुद्धि हो जाती है। अब जो चारवाकादिकों में भेद है सो लिखते हैं— ये चारवाकादि बहुत सी बातों में एक हैं परन्तु चारवाक देह की उत्पत्ति के साथ जीवोत्पत्ति और उसके नाश के साथ ही जीव का भी नाश मानता है पुनर्जन्म और परलोक को नहीं मानता एक प्रत्यक्ष प्रमाण के विना अनुमानादि प्रमाणों को भी नहीं मानता चारवाक शब्द का अर्थ यह है कि जो बोलने में प्रगल्भ और विशेषार्थ वैतण्डिक होता है। और बौद्ध जैन प्रत्यक्षादि चारों प्रमाण अनादि जीव पुनर्जन्म परलोक और मुक्ति को भी मानते हैं इतना ही चारवाक से बौद्ध और जैनियों का भेद है परन्तु नास्तिकता वेद ईश्वर की निन्दा, परमत द्वेष और छः यतना जगत् का कर्त्ता कोई नहीं इत्यादि बातों में सब एक ही हैं। यह चारवाक का मत संक्षेप से दर्शा दिया है ॥

स्वभावाद्वा

अब बौद्ध मत के विषय में संक्षेप से लिखते हैं— कार्य्यकारणभावाद्वा स्वभावाद्वा नियामकात्। अविनाभाव नियमो दर्शनान्तर दर्शनात् ॥ १ ॥ कार्य्यकारणभाव अर्थात् कार्य्य के दर्शन से कारण और कारण के दर्शन से कार्यादि का साक्षात्कार प्रत्यक्ष से शेष में अनुमान होता है इसके विना प्राणियों के सम्पूर्ण व्यवहार पूर्ण नहीं हो सकते इत्यादि लक्षणों से अनुमान को अधिक मान कर चारवाक से भिन्न शाखा बौद्धों की हुई है बौद्ध चार प्रकार के हैं एक माध्यमिक, दूसरा योगाचार, तीसरा सौत्रांतिक, और चौथा वैभाषिक (बुद्ध्या निर्वर्त्तते स बौद्धः) जो बुद्धि से सिद्ध हो अर्थात् जो २ बात अपनी बुद्धि में आवे उस २ को माने और जो २ बुद्धि में न आवे उसको नहीं माने।

इनमें से

माध्यमिक— सर्व शून्य मानता है अर्थात् जितने पदार्थ हैं वे सब शून्य अर्थात् आदि में नहीं होते अन्त में नहीं रहते मध्य में जो प्रतीत होते हैं वह भी प्रतीत समय में है पश्चात् शून्य हो जाता है जैसे उत्पत्ति के पूर्व घट नहीं था प्रध्वंश के पश्चात् नहीं रहता और घट ज्ञान समय में भासता और पदार्थान्तर में ज्ञान जाने से घटज्ञान नहीं रहता इसवास्ते शून्य ही एक तत्त्व है, दूसरा योगाचार जो बाह्य शून्य मानता है अर्थात् पदार्थ भीतर ज्ञान में भासते हैं बाहर नहीं जैसे घटज्ञान आत्मा में है तभी मनुष्य कहता है कि यह घट है जो भीतर ज्ञान न हो तो नहीं कह सकता, तीसरा सौत्रांतिक जो बाहर अर्थ का

मानता है यथा ऐसा मानता है ऐसा मानता है

क्योंकि अनुमान मानता है कोई पदार्थ सांगोपाङ्ग प्रत्यक्ष नहीं होता किन्तु एकदेश प्रत्य
बाहर क्ष होने से शेष में अनुमान किया जाता है। चौथा वैभाषिक है उस का मत बाहर पदार्थ प्रत्यक्ष होते हैं इसका ऐसा
भीतर नहीं जैसे (अयंनीलो घटः) इस प्रतीति में नील युक्त घटाकृति बाहर प्रतीत होती है मानता है
है ऐसा इनका आचार्य बुद्ध एक है उसके शिष्यों की बुद्धि भेद से चार प्रकार की शाखा हो गई है ~~जैसे सूर्यास्त होने वाले पुरुषों के अपने~~
मानता ~~मानते हैं~~ जैसे सूर्य्यास्त होने में जार पुरुष परस्त्रीगमन और विद्वान् सत्यभाषणा
है। यद्य दि श्रेष्ठ कर्म करते हैं समय एक परन्तु अपनी २ बुद्धि के अनुसार भिन्न २ चेष्टा करते हैं अ
पि ब इन पूर्वोक्त चारों में (माध्यमिक) सबको क्षणिक मानता है अर्थात् क्षण २ में बुद्धि के परि
णाम होने से जो पूर्व क्षण में ज्ञात वस्तु था वैसा ही दूसरे क्षण में नहीं रहता इसलिये सबको क्ष
चाहिये णिक मानना चाहिये। दूसरा योगाचार जो प्रवृत्ति है सो सब दुःखरूप है क्योंकि प्राप्ति में सन्तुष्ट
ऐसे को कोई भी नहीं रहता एक की प्राप्ति में दूसरे की इच्छा बनी ही रहती है। तीसरा सौत्रान्तिक-सब प इस प्रकार मा
मानता है॥ दार्थ अपने २ लक्षणों से लक्षित होते हैं जैसे गाय के चिन्हों से गाय और घोड़े के चिन्हों से घोड़ा ताहै
ज्ञात होता है वैसे लक्षण लक्ष्य में सदा रहते हैं ऐसा कहता है। चौथा वैभाषिक-शून्य ही को एक पदार्थ
मानता है। प्रथम माध्यमिक-सबको शून्य मानता था उसी का पक्ष वैभाषिक का भी है इत्यादि
बौद्धों में बहुत से विवाद पक्ष हैं इस प्रकार चार प्रकार की भावना मानते हैं (उत्तर) जो स
ब शून्य हो तो शून्य का जानने वाला शून्य नहीं हो सकता और जो सब शून्य होवे तो शून्य को शू
न्य नहीं जान सके इसलिये शून्य का ज्ञाता और ज्ञेय दो पदार्थ सिद्ध होते हैं और जो योगाचार
बाह्य शून्य मानता है तो पर्वत इसके भीतर होना चाहिये जो कहै कि पर्वत भीतर है तो उसके हृदय में
पर्वत के समान अवकाश कहां है इसलिये बाहर पर्वत है और पर्वतज्ञान आत्मा में रहता है
सौत्रान्तिक किसी पदार्थ को प्रत्यक्ष नहीं मानता तो वह आप स्वयं और उसका वचन भी अ
नुमेय होना चाहिये प्रत्यक्ष नहीं जो प्रत्यक्ष न हो तो (अयं घटः) यह प्रयोग भी न होना चाहिये किन्तु
(अयं घटैकदेशः) यह घट का एक देश है ~~और~~ और एक देश का नाम घट नहीं किन्तु समुदा
य का नाम घट है। यह घट है यह प्रत्यक्ष है अनुमेय नहीं क्योंकि सब अवयवों में अवय
वी एक है उसके प्रत्यक्ष होने से सब घट के अवयव भी प्रत्यक्ष होते हैं अर्थात् सावयव घट
प्रत्यक्ष होता है। चौथा वैभाषिक-बाह्य पदार्थों को प्रत्यक्ष मानता है वह भी ठीक नहीं क्योंकि जहां
ज्ञाता और ज्ञान होता है वहीं प्रत्यक्ष होता है यद्यपि प्रत्यक्ष का विषय बाहर होता है तदाकार
ज्ञान आत्मा को होता है वैसे जो क्षणिक पदार्थ और उसका ज्ञान क्षणिक हो तो (प्रत्यभिज्ञा)
अर्थात् मैंने वह बात की थी स्मरण न होना चाहिये परन्तु पूर्व दृष्ट श्रुत का स्मरण होता है इस
लिये क्षणिकवाद भी ठीक नहीं जो सब दुःख ही हो और सुख कुछ भी न हो तो सुख की अपेक्षा के
बिना दुःख सिद्ध नहीं हो सकता जैसे रात्रि की अपेक्षा से दिन और दिन की अपेक्षा से रात्रि हो
ती है इसलिये सब दुःख मानना ठीक नहीं जो स्वलक्षण ही मानें तो नेत्र रूप का लक्षण है
और रूप लक्ष्य है जैसे घट का रूप घट के रूप का लक्षण चक्षु लक्ष्य से भिन्न है और गन्ध
पृथिवी से अभिन्न है इसी प्रकार भिन्नाऽभिन्न लक्ष्य लक्षण मानना चाहिये। शून्य का जो उ
त्तर पूर्व दिया है वही अर्थात् शून्य का जानने वाला शून्य से भिन्न होता है। (सर्वस्य संसार
स्य दुःखात्मकत्वं सर्वतीर्थंकरसम्मतम्) जिन को बौद्ध तीर्थंकर मानते हैं उन्हीं को

जैनभी मानते हैं इसीलिये ये दोनों एक हैं और पूर्वोक्त भावना चतुष्टय अर्थात् चार भावना
ओं से सकल वासनाओं की निवृत्ति से शून्यरूप निर्वाण अर्थात् मुक्ति मानते हैं अप
ने शिष्यों को योग आचार का उपदेश करते हैं गुरु के वचन का प्रमाण करना अनादि बुद्धि में
वासना होने से बुद्धि ही अनेकाकार भासती है (रूप विज्ञान वेदना संज्ञा संस्कार संज्ञकः) उनमें से प्रथम
जो इन्द्रियों से रूपादि विषय ग्रहण किया जाता है वह रूपस्कंध (दूसरा) आलय स्कंध
विज्ञान प्रवृत्ति का जानना रूप व्यवहार को विज्ञान स्कंध (तीसरा) रूपस्कंध और विज्ञानस्कं
ध से उत्पन्न हुआ सुख दुःखादि प्रतीति रूप व्यवहार को वेदनास्कंध । चौथा गो आदि संज्ञा का
सम्बंध नामी के साथ मानने रूप को संज्ञा स्कंध । पांचवां वेदना स्कंध से राग द्वेषादि
क्लेश और क्षुधा तृषादि उपक्लेश मद प्रमाद अभिमान धर्म और अधर्म रूप व्यवहार को सं-
स्कार स्कंध मानते हैं । सब संसार में दुःखरूप दुःख का घर दुःख का साधन रूप भावना क-
र के संसार से छूटना चारवाकों से अधिक मुक्ति और अनुमान तथा जीव को न मानना
बौद्ध मानते हैं । देशना लोकनाथानां सत्त्वाशयवशानुगाः । भिद्यन्ते बहुधा लोके
उपायैर्बहुभिः किल ॥ १ ॥ गंभीरोत्तानभेदेन क्वचिच्चोभयलक्षणाः । भिन्ना हि देश
नाभिन्नाः शून्यताद्वयलक्षणा ॥ २ ॥ द्वादशायतनपूजा श्रेयस्करीति बौद्धा मन्यन्ते
। अर्थाननुपाद्य बहुशो द्वादशायतनानि वै परितः पूजनीयानि किमन्यैरिह पूजितैः ॥
३ ॥ ज्ञानेन्द्रियाणि पंचैव तथा कर्मेन्द्रियाणि च । मनो बुद्धिरिति प्रोक्तं द्वादशायत
नं बुधैः ॥ ४ ॥ अर्थ— जो ज्ञानी विरक्त जीवन्मुक्त लोकों के नाथ बुद्ध आदि तीर्थंकरों की
पदार्थों के स्वरूप जनाने वाला उपदेशक जो कि भिन्न २ पदार्थों का है जिसके बहुत से भेद
और बहुत से उपायों से कहा है उसको मानना ॥ १ ॥ बड़े गंभीर और प्रसिद्ध भेद से कहीं २
गुप्त और प्रकटता से भिन्न २ गुरुओं के उपदेश जो कि शून्य लक्षण युक्त पूर्व कह आये उनको
मानना ॥ २ ॥ जो द्वादशायतन पूजा है वही मोक्ष करने वाली है उस पूजा के लिये
बहुत से द्रव्यादि पदार्थों को प्राप्त होके द्वादशायतन अर्थात् बारह प्रकार के स्थान विशेष
बनाके सब प्रकार से पूजा करनी चाहिये अन्य की पूजा करने से क्या प्रयोजन ॥ ३ ॥
इनकी द्वादशायतन पूजा यह है— पांच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, और नासि
का पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् वाक्, हस्त, पाद, गुह्य और उपस्थ ये १० इन्द्रियां और मन, बुद्धि इन्हीं
का सत्कार अर्थात् इनको आनन्द में प्रवृत्त रखना इत्यादि बौद्ध का मत है ॥ ४ ॥
(उत्तर) जो सब संसार दुःखरूप होता तो किसी जीव की प्रवृत्ति न होनी चाहिये संसार में जी
वों की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष दीखती है इसलिये सब संसार दुःखरूप नहीं हो सकता किन्तु इसमें सुख
दुःख दोनों हैं और जो बौद्ध लोग ऐसा ही सिद्धान्त मानते हैं तो खान पानादि करना
और पथ्य तथा औषधादि सेवन कर के शरीर रक्षण करने में प्रवृत्त होकर सुख ही मान
ते हैं क्यों मानते जो कहें कि हम प्रवृत्त तो होते हैं परन्तु इसको दुःख ही मानते हैं तो यह कथन
संसार में दुःख जानके निवृत्त होते ही सम्भव नहीं क्योंकि जीव सुख जानकर प्रवृत्त होता है । संसार में धर्म क्रिया विद्या
सत्संगादि श्रेष्ठ व्यवहार सब सुखकारक हैं इनको कोई भी विद्वान् दुःख का लिंग
नहीं मान सकता विना बौद्धों के । जो पांच स्कंध हैं वे भी पूर्ण अपूर्ण हैं क्योंकि जो

ऐसे २ एकपक्षविचारने लगें तो एक २ के अनेक भेद हो सकते हैं। जिन तीर्थंकरों को उपदेशक और लोकनाथ मानते हैं और अनादि जो नाथों का भी नाथ परमात्मा है उसको नहीं मानते तो उन तीर्थंकरों ने उपदेश किससे पाया जो कहैं कि स्वयं प्राप्त हुआ तो ऐसा कथन सम्भव नहीं क्योंकि कारण के विना कार्य्य नहीं हो सकता अथवा उनके कथनानुसार ऐसा ही होता तो अब भी उनमें विना पढ़े पढ़ाये सुने सुनाये और ज्ञानियों के सत्संग किये विना ज्ञानी क्यों नहीं हो जाते जब नहीं होते तो ऐसा कथन सर्वथा निर्मूल और युक्तिशून्य सन्निपात रोगग्रसित मनुष्य के बड़ाने के समान है॥ जो शून्यरूप ही अद्वैत उपदेश बौद्धों का है तो विद्यमान वस्तु शून्यरूप कभी नहीं हो सकती हां सूक्ष्म कारणरूप तो हो जाती है इसलिये यह भी कथन भ्रमरूपी है॥ जो द्रव्यों के उपार्जन से ही पूर्वोक्त द्वादशायतन पूजा मोक्ष का साधन मानते हैं तो दश प्राण और ग्यारहवें जीवात्मा की पूजा क्यों नहीं करते जब इन्द्रिय और अन्तःकरण की पूजा ही मोक्षप्रद है तो इन बौद्धों और विषयी जनों में क्या भेद रहा जो उनसे ये बौद्ध नहीं बच सकें मुक्ति भी कहां रही जहां ऐसी बातें हैं वहां मुक्ति का क्या काम क्या ही इन्होंने अपनी अविद्या की उन्नति की जिसकी सादृश्यता इनके विना दूसरों से नहीं घट सकती निश्चय तो यही होता है कि इन्ने वेदेश्वर से विरोध करने का यही फल मिला॥ पूर्व तो सब संसार को दुःखरूपी भावना की फिर बीच में द्वादशायतन पूजा लगा दी क्या द्वादशायतन पूजा इनकी संसार के पदार्थों से बाहर की है जो मुक्ति की देनेहारी हो सके तो भला आंख मीच के कोई रत्न ढूंढा चाहैं वा ढूंढें कभी प्राप्त हो सकता है। ऐसी ही इनकी लीला वेदेश्वर को न मानने से हुई अब भी सुख चाहैं तो वेदेश्वर का आश्रय लेकर अपना जन्म सफल करें॥ विवेकविलास ग्रंथ में बौद्धों का इस प्रकार का मत लिखा है — बौद्धानां सुगतो देवो विश्वं च क्षणभंगुरम्। आर्य्यसत्त्वाख्यया तत्त्वचतुष्टयमिदं क्रमात्॥ १॥ दुःखमायतनं चैव ततः समुदयो मतः। मार्गश्चेत्यस्य च व्याख्या क्रमेण श्रूयतामतः॥ २॥ दुःखसंसारिणः स्कंधास्ते च पंच प्रकीर्तिताः। विज्ञानं वेदना संज्ञा संस्कारो रूपमेव च॥ ३॥ पंचेन्द्रियाणि शब्दाद्या विषयाः पंच मानसम्। धर्मायतनमेतानि द्वादशायतनानि तु॥ ४॥ रागादीनां गणो यः स्यात्समुदेति नृणां हृदि। आत्मात्मीयस्वभावाख्यः स स्यात्समुदयः पुनः॥ ५॥ क्षणिकाः सर्वसंस्कारा इति या वासना स्थिरा। स मार्ग इति विज्ञेयः स च मोक्षोऽभिधीयते॥ ६॥ प्रत्यक्षमनुमानं च प्रमाणं द्वितयं तथा। चतुःप्रस्थानिका बौद्धाः ख्याता वैभाषिकादयः॥ ७॥ अर्थो ज्ञानान्वितो वैभाषिकेण बहु मन्यते। सौत्रान्तिकेन प्रत्यक्षग्राह्योऽर्थो न बहिर्मतः॥ ८॥ आकारसहिता बुद्धिर्योगाचारस्य संमता। केवलां संविदं स्वस्थां मन्यन्ते मध्यमाः पुनः॥ ९॥ रागादिज्ञानसन्तानवासनाच्छेदसंभवा। चतुर्णामपि बौद्धानां मुक्तिरेषा प्रकीर्तिता॥ १०॥ कृत्तिः कमण्डलुर्मौण्ड्यं चीरं पूर्वाह्णभोजनम्। संघो रक्ताम्बरत्वं च शिश्रिये

अर्थ—बौद्धों का सुगत देव बुद्ध भगवान् पूजनीय देव और जगत् क्षणभङ्गुर, आर्य्य पुरुष और आर्य्या स्त्री तथा तत्त्वों की आख्या संज्ञादि प्रसिद्धि ये चार तत्त्व बौद्धों में मन्तव्य पदार्थ हैं ॥१॥ इस विश्व को दुःख का घर जाने तदनन्तर समुदय अर्थात् उन्नति होती है और इनकी व्याख्या क्रम से सुनो ॥२॥ संसार में दुःख ही है जो पंच स्कन्ध पूर्व कह आये हैं ~~[illegible]~~ उनको जानना ॥३॥ पंचज्ञानेन्द्रिय उनके शब्दादि विषय पांच और मन बुद्धि अन्तःकरण धर्म का स्थान ये द्वादश हैं ॥४॥ जो मनुष्यों के हृदय में रागद्वेषादि समूह की उत्पत्ति होती है वह समुदय और जो आत्मा आत्मा के सम्बन्धी और स्वभाव है वह आख्या इन्हीं से फिर समुदय होता है ॥५॥ सब संस्कार क्षणिक हैं जो यह वासना स्थिर होना वह बौद्धों का मार्ग है और वही शून्य तत्त्व शून्यरूप हो जाना मोक्ष है ॥६॥ बौद्ध लोग प्रत्यक्ष और अनुमान दो ही प्रमाण मानते हैं चार प्रकार के इनमें भेद हैं—वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार और माध्यमिक ॥७॥ इनमें वैभाषिक ज्ञान में जो अर्थ है उसको विद्यमान मानता है क्योंकि जो ज्ञान में नहीं है उसका होना ~~[illegible]~~ सिद्ध पुरुष नहीं मान सकता। और सौत्रान्तिक—भीतर को ~~[illegible]~~ पदार्थ प्रत्यक्ष मानता है बाहर नहीं ॥८॥ योगाचार—आकारसहित विज्ञानयुक्त बुद्धि को मानता है और माध्यमिक—केवल अपने में पदार्थों का ज्ञान मात्र मानता है पदार्थों को नहीं मानता ॥९॥ और जो रागादि ज्ञान के प्रवाह की वासना के नाश से उत्पन्न हुई मुक्ति चारों बौद्धों की है ॥१०॥ मृगादि का चमड़ा, कमंडलु, मूंड मुड़ाये, वल्कल वस्त्र, पूर्वाह्न अर्थात् ९ बजे से पूर्व भोजन, अकेला न रहै, रक्त वस्त्र का धारण यह बौद्धों के साधुओं का वेश है ॥११॥ (उत्तर)—

जो बौद्धों का सुगत बुद्ध ही देव है तो उसका गुरु कौन था और जो विश्व क्षणभंग हो तो चिरदृष्ट पदार्थ का ~~[illegible]~~ यह वही है ऐसा स्मरण न होना चाहिये जो क्षणभंग होता तो वह पदार्थ ही नहीं रहता पुनः स्मरण किसका होवे ॥१॥ जो क्षणिकवाद ही बौद्धों का मार्ग है तो इनका मोक्ष भी क्षणभंग होगा जो ज्ञान से युक्त अर्थ द्रव्य हो तो जड़ द्रव्य में भी ज्ञान होना चाहिये और वह चालनादि क्रिया किस पर करता है भला जो बाहर दीखता है वह मिथ्या कैसे हो सकता है जो आकार से सहित बुद्धि होवे तो दृश्य होना चाहिये जो केवल ज्ञान ही हृदय में आत्मस्थ होवे बाह्य पदार्थों के केवल ज्ञान ही माना जाय तो ज्ञेय पदार्थ के विना ज्ञान ही नहीं हो सकता जो वासनाच्छेद ही मुक्ति है तो सुषुप्ति में भी मुक्ति माननी चाहिये ऐसा मानना विद्या से विरुद्ध होने के कारण तिरस्करणीय है। इत्यादि बातें संक्षेपतः बौद्धमतस्थों की प्रदर्शित कर दी हैं अब बुद्धिमान् विचारशील पुरुष अवलोकन करके जान लेंगे कि इनकी कैसी विद्या और कैसा मत है ॥ प्रकरणरत्नाकर १ भाग, नयचक्रसार में निम्न लिखित बातें लिखी हैं—बौद्ध लोग समय समय में नवीन पन से १ आकाश, २ काल, ३ जीव, ४ पुद्गल ये चार द्रव्य मानते हैं और जैनी लोग धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल ये छः द्रव्यों

इसको जैन लोग मानते हैं

इससे आगे जैन मत का वर्णन है॥

को मानते हैं । इनमें काल को अस्तिकाय नहीं मानते किन्तु ऐसा कहते हैं कि काल उ
पचार से द्रव्य है वस्तुतः नहीं उनमें से (धर्मास्तिकाय) जो गतिपरिणामीपन से परि
णाम को प्राप्त हुआ जीव और पुद्गल इसकी गति के समीप से स्तम्भन करने का हेतु
है वह धर्मास्तिकाय । और वह असंख्य प्रदेश परिमाण और लोक में व्यापक है ।
दूसरा (अधर्मास्तिकाय) यह है कि जो स्थिरता से परिणामी हुए जीव तथा पुद्गल
की स्थिति के आश्रय का जो हेतु है । तीसरा (आकाशास्तिकाय) उसको कहते हैं कि जो
सब द्रव्यों का आधार जिसमें अवगाहन प्रवेश निर्गम आदि क्रिया करने वाले जीव
तथा पुद्गलों को अवगाहन का हेतु और सर्वव्यापी है । चौथा (पुद्गलास्तिकाय)
यह है कि जो कारण रूप सूक्ष्म नित्य एकरस वर्ण गंध स्पर्श कार्य का लिंग पूरने
और गलने के स्वभाव वाला होता है । पांचवां (जीवास्तिकाय) जो चेतना लक्षण ज्ञा
न दर्शन में उपयुक्त अनन्त पर्यायों से परिणामी होने वाला कर्त्ता भोक्ता है । और
छठा (काल) यह है कि जो पूर्वोक्त पंचास्तिकायों का परत्व अपरत्व नवीन प्राचीनता का
रूप चिन्ह रूप प्रसिद्ध वर्त्तमान रूप पर्य्यायों से युक्त है वह काल कहाता है (समीक्षक—
जो बौद्धों ने चार द्रव्य प्रति समय में नवीन २ माना है वह झूठा है क्योंकि आकाश का
ल जीव और परमाणु ये नये वा पुराने कभी नहीं हो सकते क्योंकि ये अना
दि और कारण रूप से अविनाशी हैं पुनः नया और पुराना पन कैसे घट सकता
है । और जैनियों का मानना भी ठीक नहीं क्योंकि धर्माऽधर्म द्रव्य नहीं किन्तु
गुण हैं ये दोनों जीवास्तिकाय में आ जाते हैं इसलिये आकाश, परमाणु, जीव और
काल मानते तो ठीक था और जो नव द्रव्य वैशेषिक में माने हैं वे ही ठीक हैं क्यों
कि पृथिव्यादि पांच तत्त्व काल दिशा आत्मा और मन ये नव पृथक् २ पदार्थ निश्चि जैन
त हैं एक जीव को चेतन मान कर ईश्वर को न मानना यह बौद्धों की मिथ्या पक्ष
पात की बात है ।

अब जो बौद्ध और जैनी लोग सप्तभंगी और स्याद्वाद मानते हैं सो यह है कि—
इसको (सन्घटः) प्रथम भंग कहते हैं क्योंकि घट अपने वर्त्तमानता से युक्त अर्थात् घड़ा है
इसने अभाव का विरोध किया है । दूसरा भंग (असन्घटः) घड़ा नहीं है प्रथ
म घट के भाव से यह घड़ा के असद्भाव से दूसरा भंग है । तीसरा भंग यह है ग
कि (सन्नसन्घटः) अर्थात् यह घड़ा तो है परन्तु पट नहीं क्योंकि उन दोनों से पृ
थक् हो गया । चौथा भंग (घटोऽघटः) ~~यह चौथा भंग कहाता है~~ जैसे (अघटः
पटः) दूसरे पट के अभाव की अपेक्षा अपने में होने से घट अघट कहाता है यु
गपत् उसकी दो संज्ञा अर्थात् घट और अघट भी है । पांचवां भंग यह है कि
घट को पट कहने अयोग्य अर्थात् उसमें घटपन वक्तव्य है और पटपन अवक्त
व्य है । छठा भंग यह है कि जो कुछ नहीं है वह कहने योग्य भी नहीं और जो है
वह है और कहने योग्य भी है । और सातवां भंग यह है कि जो कहने को इष्ट है
परन्तु वह नहीं है और कहने के योग्य भी घट नहीं यह सप्तम भंग कहाता है

इसीप्रकार :- स्यादस्ति जीवोऽयं प्रथमो भंग ॥ १ ॥ स्यान्नास्ति जीवो द्वितीयो भंगः ॥ २ ॥ स्यादवक्तव्यो जीवस्तृतीयो भंगः ॥ ३ ॥ स्यादस्ति नास्ति रूपो जीवश्चतुर्थो भंगः ॥ ४ ॥ स्यादस्ति अवक्तव्यो जीवः पंचमो भंगः ॥ ५ ॥ स्यान्नास्ति अवक्तव्यो जीवः षष्ठो भंगः ॥ ६ ॥ स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्यो जीव इति सप्तमो भंगः ॥ ७ ॥

अर्थ- है जीव, ऐसा कथन होवे तो जीव के विरोधी जड़ पदार्थों का जीव में अभाव रूप भंग प्रथम कहाता है ॥ दूसरा भंग यह है कि नहीं है जीव जड़ में ऐसा कथन भी होता है इससे यह दूसरा भंग कहाता है ॥ जीव है परन्तु कहने योग्य नहीं यह तीसरा भंग ॥ जब जीव शरीर धारण कर्त्ता है तब प्रसिद्ध और जब शरीर से पृथक् होता है तब अप्रसिद्ध रहता है ऐसा कथन होवे उसको चतुर्थ भंग कहते हैं ॥ जीव है परन्तु कहने योग्य नहीं जो ऐसा कथन है उसको पंचम भंग कहते हैं ॥ जीव प्रत्यक्ष प्रमाण से कहने में नहीं आता इसलिये चक्षु प्रत्यक्ष नहीं है ऐसा व्यवहार है उ

ष:ठा सको [illegible] भंग कहते हैं ॥ एक काल में जीव का अनुमान से होना और अदृश्यपन में न होना और एक सा न रहना किन्तु क्षण क्षण में परिणाम को प्राप्त होना अस्ति नास्ति न होवे और नास्ति अस्ति व्यवहार भी न होवे यह सातवां भंग कहाता है ॥

इसीप्रकार नित्यत्व सप्तभंगी और अनित्यत्व सप्तभंगी तथा सामान्य धर्म विशेष धर्म गुण और पर्यायों की प्रत्येक वस्तु में सप्तभंगी होती है वैसे द्रव्य गुण, स्वभाव और पर्यायों के अनन्त होने से सप्तभंगी भी अनन्त होती है, ऐ

तथा सा बौद्धों और जैनियों का स्याद्वाद और सप्तभंगी न्याय कहाता है ॥

समीक्षक - यह कथन एक अन्योन्याभाव में साधर्म्य और वैधर्म्य में चरितार्थ हो सकता है। इस सरल प्रकरण को छोड़कर कठिन जाल रचना केवल अज्ञानियों के फसाने के लिये होता है। देखो जीव का अजीव में और अजीव का जीव में अभाव रहता ही है जैसे जीव और जड़ के वर्त्तमान होने से साधर्म्य और चेतन तथा जड़ होने से वैधर्म्य अर्थात् जीव में चेतनत्व (अस्ति) है और जड़त्व (नास्ति) नहीं है। इसीप्रकार जड़ में जड़त्व है और चेतनत्व नहीं है इससे गुण कर्म स्वभाव के समान धर्म और विरुद्ध धर्म के विचार से सब इनका सप्तभंगी और स्याद्वाद सहजता से समझ में आता है फिर इतना प्रपंच बढ़ाना किस काम का है?॥ इसमें बौद्ध और जैनों का एक मत है। थोड़ा सा ही पृथक् २ होने से भिन्न भाव भी हो जाता है

अब जैन मत विषय में लिखा जाता है —

इसके आगे के वल

[illegible]

[illegible] चिदचिद्द्वे परे तत्त्वे विवेकस्तद्विवेचनम्।
उपादेयमुपादेयं हेयं हेयं च कुर्वतः ॥१॥ हेयं हि कर्तृरागादि तत्कार्यमविवेकिनः।
उपादेयं परं ज्योतिरुपयोगैकलक्षणम् ॥२॥

जैन लोग (चित्) और (अचित्) अर्थात् चेतन और जड़ दो ही पर तत्त्व मानते हैं उन दोनों का विवेचन का नाम विवेक जो २ ग्रहण के योग्य है उसका ग्रहण और जो २ त्याग करने योग्य है उसका त्याग करनेवाले को विवेकी कहते हैं ॥१॥ जगत् का कर्त्ता और रागादि तथा ईश्वर ने जगत् किया है इस अविवेकी मत का त्याग और योग से लक्षित परम ज्योतिस्वरूप जो जीव है उसका ग्रहण करना उत्तम है ॥२॥ अर्थात् जीव के बिना दूसरा चेतन तत्त्व ईश्वर को नहीं मानते कोई भी अनादि सिद्ध ईश्वर नहीं इनके दो नाम हैं एक जैन, और दूसरा बौद्ध ये पर्यायवाची शब्द हैं परन्तु बौद्धों में वाममार्गी मद्य मांसाहारी बौद्ध हैं उनके साथ जैनियों का विरोध परन्तु जो महावीर और गौतम गणधर हैं उनका नाम बौद्धों ने बुद्ध रक्खा है और जैनियों ने गणधर और जिनवर इसमें जिनकी परम्परा जैन मत है उन राजा शिवप्रसाद जी ने अपने (इतिहासतिमिरनाशक) ग्रंथ के तीसरे खंड में लिखा है कि (स्वामी शंकराचार्य से पहिले जिनको हुए कुल हजार वर्ष [illegible] के लगभग गुजरे हैं सारे भारतवर्ष में बौद्ध अथवा जैन धर्म फैला हुआ था) इस पर नोट (बौद्ध कहने से हमारा आशय उस मत से है जो महावीर के गणधर गौतम स्वामी के समय से शंकर स्वामी के समय तक वेद विरुद्ध सारे भारतवर्ष में फैला रहा और जिसको अशोक और संप्रति महाराज ने माना उससे जैन बाहर किसी तरह नहीं निकल सकते। जिन जिससे जैन निकला और बुद्ध जिससे बौद्ध निकला दोनों पर्याय शब्द हैं कोश में दोनों का अर्थ एक ही लिखा है और गौतम को दोनों मानते हैं वरन दीपवंस इत्यादि पुराने बौद्ध ग्रंथों में शाक्यमुनि गौतम बुद्ध को अक्सर महावीर ही के नाम से लिखा है पस उसके समय में एक ही उनका मत रहा होगा हम ने जो जैन न लिखकर गौतम के मतवालों को बौद्ध लिखा इसका प्रयोजन केवल इतना ही है कि उनको दूसरे देशवालों ने बौद्ध ही के नाम से लिखा है ॥ ऐसा ही अमरकोश में भी लिखा है – सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः। समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥१॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः। मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥२॥ स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः [illegible] शौद्धोदनिश्च सः। गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥३॥ अमरकोश – कां० १ वर्ग० १ श्लोक ८ – से १० तक अब देखो बुद्ध जिन और बौद्ध तथा जैन एक के नाम हैं वा नहीं क्या (अमरसिंह) भी बुद्ध जिन के एक लिखने में भूल गया है जो अविद्वान् जैन हैं वे तो न अपना जानते और न दूसरे का केवल हठमात्र से बर्ड़ाया करते हैं परन्तु जो

ऐसा बौद्ध जैन लोग मानते हैं। इ[illegible]में राजा शिवप्रसाद जी इतिहासतिमिरनाशक ग्रंथ में लिखते हैं कि

त्रि[illegible]नाथ

जैनों में विद्वान् हैं वे सब जानते हैं कि बुद्ध और जिन तथा बौद्ध और जैन पर्य्या
यवाची हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं। जैन लोग कहते हैं कि जीव ही परमेश्वर हो जा
ता है वे जो अपने तीर्थंकरों ही को केवली मुक्ति प्राप्त और परमेश्वर मानते हैं अना
दि परमेश्वर कोई नहीं ॥ आदि देव का स्वरूप चन्द्रसूरि ने आप्त निश्चयालंकार ग्रंथ
में लिखा है (सर्वज्ञो वीतरागादिदोषस्त्रैलोक्यपूजितः। यथास्थितार्थवादी च देवोऽर्हन्परमेश्वरः
॥१॥ वैसे ही (तौतातितों) ने भी लिखा है कि। (सर्वज्ञो दृश्यते तावन्नेदानीमस्मदादिभिः।
दृष्टो न चैकदेशोऽस्ति लिङ्गं वा योऽनुमापयेत् ॥२॥ न चागमविधिः कश्चिन्नित्य
सर्वज्ञबोधकः। न च तत्रार्थवादानां तात्पर्य्यमपि कल्प्यते ॥३॥ न चान्यार्थप्रधानै
स्तैस्तदस्तित्वं विधीयते। न चानुवदितुं शक्यः पूर्वमन्यैरबोधितः ॥४॥ अर्थ वो
जो रागादि दोषों से रहित त्रैलोक्य में पूजनीय यथावत् पदार्थों का वक्ता सर्वज्ञ अर्ह
न् देव है वही परमेश्वर है ॥१॥ जिस लिये हम इस समय परमेश्वर को नहीं देख
ते इस लिये कोई सर्वज्ञ अनादि परमेश्वर प्रत्यक्ष नहीं जब ईश्वर में प्रत्यक्ष प्रमाण
नहीं तो अनुमान भी नहीं घट सकता क्योंकि एकदेश प्रत्यक्ष के विना अनुमान नहीं
हो सकता ॥२॥ जब प्रत्यक्ष अनुमान नहीं तो आगम अर्थात् नित्य अनादि सर्वज्ञ
परमात्मा का बोधक शब्द प्रमाण भी नहीं हो सकता जब तीनों प्रमाण नहीं तो अर्थ
वाद अर्थात् स्तुति निन्दा परकृति अर्थात् पराये चरित्र का वर्णन और पुराकल्प अ
र्थात् इतिहास का तात्पर्य्य भी नहीं घट सकता ॥३॥ और अन्यार्थप्रधान अर्थात् बहु
व्रीहि समास के तुल्य परोक्ष परमात्मा की सिद्धि का विधान भी नहीं हो सकता पुनः
ईश्वर के उपदेष्टाओं से सुने विना अनुवाद भी कैसे हो सकता है ॥४॥ इसका प्रत्याख्यान अर्थात् खंडन।
जो अनादि ईश्वर न होता तो (अर्हन्) देव के माता पिता आदि का शरीर का सांचा कौन बनाता वि
ना संयोग कर्त्ता के यथायोग्य सर्वाऽवयव सम्पन्न यथोचित कार्य्य करने में उप
युक्त शरीर बन ही नहीं सकता और जिन पदार्थों से शरीर बना है उनके जड़ होने
से स्वयं इस प्रकार की उत्तम रचना युक्त शरीर रूप नहीं बन सकते क्योंकि उनमें यथा
योग्य बनने का ज्ञान ही नहीं और जो रागादि दोषों से सहित होकर पश्चात् दोष रहित
होता है वह ईश्वर कभी नहीं हो सकता क्योंकि जिस निमित्त से वह रागादि से मुक्त हो
ता है वह मुक्ति उस निमित्त के छूटने से उसका कार्य्य मुक्ति भी अनित्य होगी जो अल्प
और अल्पज्ञ है वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ कभी नहीं हो सकता क्योंकि जीव का स्वरूप
एकदेशी और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाला होता है वह सब विद्याओं में सब प्रका
र यथार्थ वक्ता नहीं हो सकता इसवास्ते तुम्हारे तीर्थंकर परमेश्वर कभी नहीं हो सकते ॥१॥
क्या तुम जो प्रत्यक्ष पदार्थ हैं उन्हीं को मानते हो अप्रत्यक्ष को नहीं जैसे कान से रूप और
चक्षु से शब्द का ग्रहण नहीं हो सकता वैसे अनादि परमात्मा को देखने का साधन
शुद्धान्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है
जैसे विना पढ़े विद्या के प्रयोजनों की प्राप्ति नहीं होती वैसे ही योगाभ्यास और विज्ञा
न के विना परमात्मा भी नहीं दीखता पड़ता जैसे भूमि को रूपादि गुण ही को दे

सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हन्, केवली, तीर्थंकर, जिन, यह छः नास्तिकों के देवताओं के नाम हैं।

अज्ञान के गुणों से अव्यवहित सम्बन्ध से पृथिवी प्रत्यक्ष होती है वैसे इस सृष्टि में परमा
त्मा के रचना विशेष लिंग देखके परमात्मा प्रत्यक्ष होता है और जो पापाचरणे-
च्छा समय में भय शंका लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्तर्यामी परमात्मा की ओर से है
इससे भी परमात्मा प्रत्यक्ष होता है । अनुमान के होने में क्या सन्देह हो सकता है और
प्रत्यक्ष तथा अनुमान के होने से ॥२॥ आगम प्रमाण भी नित्य अनादि सर्वज्ञ ईश्वर का
बोधक होता है इसवास्ते शब्द प्रमाण भी ईश्वर में है जब तीनों प्रमाणों से ईश्वर को
जीव जान सकता है तब अर्थवाद अर्थात् परमेश्वर के गुणों की प्रशंसा करना भी यथा
र्थ घटता है क्योंकि जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण कर्म स्वभाव भी नित्य होते हैं उ
नकी प्रशंसा करने में कोई भी प्रतिबंधक नहीं ॥३॥ जैसे मनुष्यों में कर्त्ता के बिना कोई
भी कार्य नहीं होता वैसे ही इस महत्कार्य का कर्त्ता के बिना होना सर्वथा असंभव है
जब ऐसा है तो ईश्वर के होने में मूढ़ को भी सन्देह नहीं हो सकता जब परमात्मा के उ
पदेश करने वालों से सुनेंगे पश्चात् उसका अनुवाद करना भी सरल है । इससे
जैनों के प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ईश्वर का खंडन करना आदि व्यवहार अनुचित है

अनादेरागमस्यार्थो न च सर्वज्ञ आदिमान् । कृत्रिमेण त्वसत्येन स कथं प्रतिपा
द्यते ॥१॥ अथ तद्वचनेनैव सर्वज्ञोऽन्यैः प्रतीयते । प्रकल्प्येत कथं सिद्धिरन्यो
ऽन्याश्रययोस्तयोः ॥२॥ सर्वज्ञोक्ततया वाक्यं सत्यं तेन तदस्तिता । कथं तदुभयं सिध्येत् सिद्धमूलान्तरादृते ॥३॥

अर्थ- बीच में सर्वज्ञ हुआ अनादि शास्त्र का अर्थ नहीं हो सकता क्योंकि किये हुए असत्य वचन से
उसका प्रतिपादन किस प्रकार से हो सके ॥१॥ और जो परमेश्वर ही के वचन से परमेश्वर सि
द्ध होती है तो अनादि ईश्वर से अनादि शास्त्र की सिद्धि अनादि शास्त्र से अनादि ईश्वर की सि
द्धि अन्योऽन्याश्रय दोष आता है ॥२॥ क्योंकि सर्वज्ञ के कथन से वह वेदवाक्य सत्य और
उसी वेदवचन से ईश्वर की सिद्धि करते हो यह कैसे सिद्ध हो सकता है उस शास्त्र और
परमेश्वर की सिद्धि के लिये तीसरा कोई प्रमाण चाहिये जो ऐसा मानोगे तो अनव
स्था दोष आवेगा ॥३॥ (उत्तर) हम लोग परमेश्वर और परमेश्वर के गुण कर्म स्व
भाव को अनादि मानते हैं अनादि नित्य पदार्थों में अन्योऽन्याश्रय दोष नहीं आ सकता
जैसे कार्य से कारण का ज्ञान और कारण से कार्य का बोध होता है कार्य में का
रण का स्वभाव और कारण में कार्य का स्वभाव नित्य है वैसे परमेश्वर और प [ईश्वर]
नित्य रमेश्वर के अनन्त विद्यादि गुणों के होने से अनवस्था दोष नहीं आता ॥१॥२॥३॥ [प्रणीत]
और तुम तीर्थंकरों को परमेश्वर मानते हो यह कभी नहीं घट सकता क्योंकि बिना मा [वेद में]
के ता पिता उनका शरीर ही नहीं होता तो वे तपश्चर्या ज्ञान और मुक्ति को कैसे पा सकते हैं
वैसे ही संयोग का आदि अवश्य होता है क्योंकि बिना वियोग के संयोग हो ही नहीं सकता
इसवास्ते अनादि सृष्टिकर्त्ता परमात्मा को मानो देखो चाहे कितना ही कोई सिद्ध
हो तो भी शरीर आदि की रचना को पूर्णता से नहीं जान सकता जब सिद्ध जीव सु
षुप्ति दशा में जाता है तब उसको कुछ भी भान नहीं रहता जब जीव दुःख को प्रा

प्त होता है तब उसका ज्ञान भी न्यून हो जाता है ऐसे अल्पज्ञ परिच्छिन्न सामर्थ्यवाले एक दे युक्त
श में रहने वाले को ईश्वर मानना बिना भ्रान्ति बुद्धियुक्त जैनियों के अन्य कोई भी नहीं मा
न सकता जो तुम कहो कि वे तीर्थंकर अपने माता पिताओं से हुए तो वे किनसे और उत्प
उनके माता पिता किनसे फिर उनके भी माता पिता किनसे उत्पन्न हुए इत्यादि अनवस्था आ
इसके आगे वेगी ॥ प्रकरणरत्नाकर के दूसरे भाग आस्तिक नास्तिक के संवाद के प्रश्नोत्तर य और
हां लिखते हैं जिसको बड़े २ जैनियों ने अपनी सम्मति के साथ माना है (नास्तिक) ईश्वर बड़े
की इच्छा से कुछ नहीं होता जो कुछ होता है वह कर्म से (आस्तिक) जो सब कर्म से होता है अपव
तो कर्म किससे होता है जो कहो कि जीव आदि से होता है तो जिन श्रोत्रादि साधनों से कर्म है
जीव करता है वे किनसे हुए जो कहो कि अनादि काल और स्वभाव से होते हैं तो अनादि का छू
टना असंभव होकर तुम्हारे मत में मुक्ति का अभाव होगा जो कहो कि प्रागभाववत् अनादि
सान्त हैं तो बिना यत्न के सबके कर्म निवृत्त हो जायेंगे । यदि ईश्वर फलप्रदाता न होता तो पा
प का फल दुःख को जीव अपनी इच्छा से कभी नहीं भोगता जैसे चोर आदि चोरी का फल दं
ड अपनी इच्छा से नहीं भोगते किन्तु राज्यव्यवस्था से भोगते हैं वैसे ही परमेश्वर के भु
गाने से जीव पाप और पुण्य के फलों को भोगते हैं अन्यथा कर्म संकर हो जायेंगे
अन्य का कर्म अन्य को भोगना पड़ेगे (नास्तिक) ईश्वर अक्रिय है क्योंकि जो कर्म करता होता
तो कर्म का फल भी भोगना पड़ता इसलिये जैसे हम केवली प्राप्त मुक्तों को अक्रिय मा
नते हैं वैसे तुम भी मानो (आस्तिक) ईश्वर अक्रिय नहीं किन्तु सक्रिय है जब चेतन है
तो कर्ता क्यों नहीं और जो कर्ता है तो वह क्रिया से पृथक् कभी नहीं हो सकता जैसा
तुम्हारा कृत्रिम बनावट का ईश्वर तीर्थंकर को जीव से बने हु
ए मानते हो ऐसे ईश्वर को कोई भी विद्वान् नहीं मान सकता क्योंकि जो निमित्त से ईश्व किसी निमित्त से
र बने तो अनित्य और पराधीन हो जाय क्योंकि ईश्वर बनने के प्रथम जीव था पश्चात् ईश्वर
बना तो फिर भी जीव हो जायगा अपने जीवत्व स्वभाव को कभी नहीं छोड़ सकता क्योंकि इस अनादि
अनन्त काल से जीव है और अनन्त काल तक रहेगा इसलिये इस अनादि स्वतःसिद्ध ईश्वर
को मानना योग्य है देखो जैसे वर्त्तमान समय में जीव पाप पुण्य करता सुख दुःख भो
गता है वैसे ईश्वर कभी नहीं होता जो ईश्वर क्रियावान् न होता तो इस जगत् को कैसे बना
प्रागभाव सकता जैसा कर्मों को अनादि सान्त मानते हो तो कर्म समवाय सम्ब के अनित्य
वत् न्ध से नहीं रहेगा जो समवाय सम्बन्ध से नहीं वह संयोगज होके अनित्य होता है जो मुक्ति में क्रिया हो
हीन मानते हो तो वे मुक्त जीव ज्ञानवाले होते हैं वा नहीं जो कहो होते हैं तो अन्तःक्रिया
वाले हुए, क्या मुक्ति में पाषाणवत् जड़ हो जाते एक ठिकाने पड़े रहते और कुछ भी चेष्टा नहीं
करते तो मुक्ति क्या हुई किन्तु अन्धकार और बन्धन में पड़ गये (नास्तिक) ईश्वर व्यापक
नहीं है जो व्यापक होता तो सब वस्तु चेतन क्यों नहीं होतीं और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र
आदि उत्तम मध्यम निकृष्ट अवस्था क्यों हुई क्योंकि सब में ईश्वर एकसा व्याप्त है तो छु
टाई बड़ाई न होनी चाहिये (आस्तिक) व्याप्य और व्यापक एक नहीं होते किन्तु व्याप्य
एकदेशी और व्यापक सर्वदेशी होता है जैसे आकाश सब में व्यापक है और भूगोल

और घटपटादि सब व्याप्य एकदेशी हैं जैसे पृथिवी आकाश एक नहीं वैसे ईश्व
र और जगत् एक नहीं जैसे सब घटपटादि में आकाश व्यापक है और घटपटादि
आकाश नहीं वैसे परमेश्वर चेतन सब में है और सब चेतन नहीं होता जैसे वि
द्वान् अविद्वान् और धर्मात्मा अधर्मात्मा बराबर नहीं होते वैसे विद्यादि सद्गुण और सत्यभाष
णादि कर्म सुशीलतादि स्वभाव के न्यूनाधिक होने से ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और

वर्णों की व्याख्या

अन्त्यज बड़े छोटे माने जाते हैं जैसी चतुर्थ समुल्लास में लिख आये हैं वहां देख लो (नास्तिक) जो ई
श्वर की रचना से सृष्टि होती तो माता पितादि का क्या काम (आस्तिक) ऐश्वरी सृष्टि का ईश्वर
कर्त्ता है जैवी सृष्टि का नहीं जो जीवों के कर्त्तव्य कर्म हैं उनको ईश्वर नहीं करता किन्तु जीव ही कर
ता है जैसे वृक्ष फल ओषधी अन्नादि ईश्वर ने उत्पन्न किया है उसको लेकर मनुष्य न पीसें न
कूटें न रोटी आदि पदार्थ बनावें और न खावें तो क्या ईश्वर उसके बदले इन कामों को कभी क
रेगा और न करें तो जीव का जीवन भी न हो सके इस लिये आदि सृष्टि में जीव के शरीरों और
सांचों को बनाना ईश्वराधीन पश्चात् उन से पुत्रादि की उत्पत्ति करना जीव का कर्त्तव्य काम है (नास्ति
क) जब परमात्मा शाश्वत अनादि चिदानन्द ज्ञानस्वरूप है तो जगत् के प्रपंच और दुःख में
क्यों पड़ा ऐसा काम कोई साधारण मनुष्य भी आनन्द छोड़ दुःख को ग्रहण नहीं करता ईश्वर ने
क्यों किया (आस्तिक) परमात्मा किसी प्रपंच और दुःख में नहीं गिरता न अपने आनन्द
को छोड़ता है क्योंकि प्रपंच और दुःख में गिरना जो एकदेशी हो उसका हो सकता है स
र्वदेशी का नहीं जो अनादि चिदानन्द ज्ञानस्वरूप परमात्मा जगत् को न बनावे तो अन्य
कौन बना सके जगत् बनाने का जीव में सामर्थ्य नहीं और जड़ में स्वयं बनने का भी सामर्थ्य नहीं

इससे यह सिद्ध हुआ कि

परमात्मा ही जगत् को बनाता और सदा आनन्द में रहता है जैसे परमात्मा पर
माणुओं से सृष्टि कर्त्ता है वैसे माता पितारूप निमित्त कारण से भी उत्पत्ति का प्रबंध नियम
उसी ने किया है (नास्तिक) ईश्वर मुक्तिरूप सुख को छोड़ जगत् की सृष्टि करण धारण और

करने

प्रलय करने के बखेड़े में क्यों पड़ा (आस्तिक) ईश्वर सदा मुक्त होने से तुम्हारे साधनों
से सिद्ध हुए तीर्थंकरों के समान एकदेश में रहने हारे बन्धपूर्वक मुक्ति
से युक्त सनातन परमात्मा नहीं है जो अनन्त स्वरूप गुण कर्म स्वभाव युक्त पर
मात्मा है वह इस किंचित् मात्र जगत् को बनाता धर्त्ता और प्रलय कर्त्ता हुआ भी बंध में
नहीं पड़ता क्योंकि बन्ध और मोक्ष सापेक्षता से है जैसे मुक्ति की अपेक्षा से बंध
और बंध की अपेक्षा से मुक्ति होती है जो कभी बद्ध नहीं था वह मुक्त क्योंकर कहा जा

और जो एकदेशी जीव हैं वे ही बद्ध और मुक्त सदा रहा करते हैं अनन्त सर्वदेशी सर्वव्यापक ईश्वर बंधन वा नैमित्तिक मुक्ति के चक्र में जैसे कि तुम्हारे तीर्थंकर हैं कभी नहीं पड़ता।

सकता है इस लिये वह परमात्मा सदैव मुक्त कहाता है (नास्तिक) जीव कर्मों के फल ऐसे ही
भोग सकते हैं जैसे भांग पीने के नशा को स्वयमेव भोगता है इसमें ईश्वर का काम नहीं (आस्तिक)
जैसे बिना राजा के डाकू दुष्ट चोरादि दुष्ट मनुष्य स्वयं फांसी वा कारागृह में नहीं जाते न वे
जाना चाहते हैं किन्तु राज की न्याय व्यवस्थानुसार बलात्कार से पकड़ाकर यथोचित
राजा दंड देता है इसी प्रकार जीव को भी ईश्वर अपनी न्याय व्यवस्था से स्वकर्मानुसार
यथायोग्य दंड देता है क्योंकि कोई भी जीव अपने दुष्ट कर्मों के फल भोगना नहीं
चाहता इस लिये अवश्य परमात्मा न्यायाधीश होना चाहिये। (नास्तिक)

जगत्में एक ईश्वर नहीं किन्तु जितने मुक्त जीव हैं वे सब ईश्वर हैं। (आस्तिक) यह कथन सर्वथा व्यर्थ है क्योंकि जो प्रथम बद्ध होकर मुक्त हो तो पुनः बंधमें अवश्य पड़े क्योंकि वे स्वाभाविक सदैव मुक्त नहीं जैसे तुम्हारे चौबीस तीर्थंकर पहिले बद्ध थे पुनः मुक्त हुए फिर भी बंधमें अवश्य गिरेंगे और जब बहुत से ईश्वर हैं तो जैसे जीव अनेक होनेसे लड़ते भिड़ते फिरते हैं वैसे ईश्वर भी लड़ा भिड़ा करेंगे (नास्तिक) हे मूढ़ जगत्का कर्त्ता कोई नहीं किन्तु जगत् स्वयंसिद्ध है (आस्तिक) यह जैनियोंकी कितनी बड़ी मूर्खता है भला विना कर्त्ता के कोई कर्म कर्मके विना कोई कार्य्य जगत्में होता दीखता है यह ऐसी बात है कि जैसे गेहूं के खेतमें स्वयंसिद्ध पिसान रोटी बनके जैनियोंके पेटमें चली जाती हो कपास सूत कपड़ा, अंगरखी दुपट्टा धोती पगड़ी आदि बनके कभी ~~नहीं~~ बन के नहीं आते जब ऐसा नहीं तो ईश्वर कर्त्ताके विना यह विविध जगत् और नाना प्रकारकी रचना विशेष कैसे बन सकती जो हठधर्मसे स्वयंसिद्ध जगत्को मानो तो स्वयंसिद्ध उपरोक्त वस्त्रादिकोंको कर्त्ताके विना प्रत्यक्ष कर दिखलाओ जब ऐसा सिद्ध नहीं कर सकते पुनः तुम्हारे प्रमाणशून्य कथनको कौन बुद्धिमान् मान सकता है ॥ (नास्तिक-) ईश्वर विरक्त है वा मोहित जो विरक्त है तो जगत्के प्रपंच में क्यों पड़ा जो मोहित है तो जगत्के बनाने को समर्थ ही नहीं हो सकेगा। (आस्तिक) परमेश्वर में वैराग्य वा मोह कभी नहीं घट सकता क्योंकि जो सर्वव्यापक है ~~उसको~~ वह किसको छोड़े और किसको ग्रहण करे ईश्वरसे उत्तम वा उसको अप्राप्त कोई पदार्थ नहीं है इसलिये किसीमें मोह भी नहीं होता वैराग्य और मोहका होना जीवमें घटता है ईश्वर में नहीं। (नास्तिक) जो ईश्वरको जगत्का कर्त्ता और जीवोंके कर्मोंके फलोंका दाता मानोगे तो ईश्वर प्रपंची होकर दुःखी हो जायगा। (आस्तिक) भला अनेक विध कर्मोंका कर्त्ता और प्राणियोंको फलोंका दाता धार्मिक न्यायाधीश विद्वान् कर्मोंमें नहीं फसता न प्रपंची होता है तो परमेश्वर अनन्त सामर्थ्य वाला प्रपंची और दुःखी क्योंकर होगा हां तुम अपने और अपने तीर्थंकरोंके समान परमेश्वरको भी अपने अज्ञान से समझते हो सो तुम्हारी अविद्याकी लीला है जो अविद्यादि दोषोंसे छूटना चाहो तो वेदादि सत्यशास्त्रोंका आश्रय लेओ क्यों भ्रमजालमें पड़े २ ठोकरें खाते हो ॥   अब जैन लोग जगत्को जैसा मानते हैं वैसा इनके सूत्रोंके अनुसार दिखलाते हैं।

मूल०— सामिअ णाइ अणन्ते चउगइ संसार घोर कान्तारे। मोहाइ कम्म गुरुठिइ विवाग वसउ भमइ जीवो ॥ (प्रकरणरत्नाकर भाग दूसरा २ षष्ठीशतक ६० सूत्र २) यह रत्नसारभाग नामक ग्रंथके सम्यक्त्वप्रकाश प्रकरणमें गौतम और महावीरका सम्वाद है॥

अर्थ— इसका संक्षेपसे उपयोगी यह अर्थ है कि यह संसार अनादि अनन्त है न कभी इसकी उत्पत्ति हुई न कभी विनाश होता है अर्थात् किसीका बनाया जगत् नहीं सो ही आस्तिक नास्तिकके संवादमें हे मूढ़ जगत्का कर्त्ता कोई नहीं न कभी बना और न कभी नाश होता ~~(आस्तिक)~~ जो संयोगसे उत्पन्न होता है वह अनादि और अनन्त कभी नहीं हो सकता॥

समीक्षक०— ~~समीक्षक~~

और उत्पत्ति तथा विनाश कुछ विनाकर्म नहीं मानते हैं भला जगत्में जितने पदार्थ उत्प
न्न होते हैं वे सब संयोगज उत्पत्ति विनाश वाले देखे जाते हैं पुनः जगत् उत्पन्न औ
र विनाश वाला क्यों नहीं इसलिये तुम्हारे तीर्थंकरों को सम्यग्बोध नहीं था जो
उनको सम्यग्ज्ञान होता तो ऐसी असंभव बातें क्यों लिखते ॥ २ ॥ जैसे तुम्हारे गुरु
थे हैं वैसे तुम शिष्य भी हो तुम्हारी बातें सुनने वाले को पदार्थज्ञान कभी नहीं
हो सकता भला जो प्रत्यक्ष संयुक्त पदार्थ दीखता है उसकी उत्पत्ति और विनाश क्यों कर न
मानते हैं अर्थात् इनके आचार्य वा जैनियों को भूगोल खगोल विद्या भी नहीं आती थी और
यह विद्या न अब इनमें है नहीं तो ऐसी असंभव बातें क्यों कर मानते और कहते देखो इस सृष्टि में
पृथिवीकाय अर्थात् पृथिवी भी जीव का शरीर है और जलकायादि जीव भी मानते हैं इस
को कोई भी नहीं मान सकता । और भी देखो इनकी मिथ्या बातें जिन तीर्थंकरों को जैन लोग स
म्यग्ज्ञानी और परमेश्वर मानते हैं उनकी मिथ्या बातों के ये नमूने हैं । (रत्नसार भाग)
के पृष्ठ १४५ इस ग्रंथ को जैन लोग मानते हैं और यह (ईसवी सन् १८७९ अप्रैल ता॰ २८)
में बनारस जैन प्रभाकर प्रेस में नानकचंद जती ने छपवाकर प्रसिद्ध किया है उसके पूर्वो
क्त पृष्ठ में काल की इस प्रकार व्याख्या की है अर्थात् समय का नाम सूक्ष्म काल है और असंख्या
त समयों को (आवलि) कहते हैं । एक क्रोड़ सड़सठ लाख सत्तर हजार दो सौ सोलह आ
वलियों का एक मुहूर्त होता है वैसे तीस मुहूर्तों का एक दिवस वैसे पन्द्रह दिवसों का
एक पक्ष वैसे दो पक्षों का एक मास वैसे बारह महीनों का एक वर्ष होता है । वैसे स
त्तर लाख क्रोड़ छप्पन हजार क्रोड़ वर्षों का एक पूर्व होता है ऐसे असंख्यात पूर्वों का ए
क (पल्योपम) काल कहते हैं । असंख्यात इसको कहते हैं कि एक चार कोश का चौ
रस और उतना ही गहिरा कुआ खोद कर उसमें जुगुलिये मनुष्य के शरीर के निम्न
लिखित टुकड़ों से भरना अर्थात् वर्त्तमान मनुष्य के बाल से जुगलिये मनुष्य के बाल चार हजार छानवे हिस्से सू
क्ष्म होता है जब जुगुलिये मनुष्यों के चार हजार छानवे बालों को इकट्ठा करें तो इस सम
य के मनुष्यों का एक बाल होता है ऐसे जुगुलिये मनुष्यों के एक बाल का एक अंगुल
बाल का सात वार आठ २ टुकड़े करने से २०९७१५२ अर्थात् बीस लाख सत्तानवे
हजार एक सौ बावन टुकड़े होते हैं ऐसे टुकड़ों से पूर्वोक्त कुआ को भरना उसमें से सौ
वर्ष के अन्तरे एक २ टुकड़ा निकालना जब सब टुकड़े निकल जावें और कुआ खा
ली हो जाय तो भी वह संख्यात काल है और जब उनमें से एक २ टुकड़े के असंख्यात
टुकड़े करके उन टुकड़ों से उसी कुएं को ठसाठस भरना कि उसके ऊपर से चक्र
वर्त्ती राजा की सेना चली जाय तो भी न दबे उन टुकड़ों में से सौ वर्ष के अन्तरे एक टु
कड़ा निकाले जब वह कुआ रीता हो जाय तब उसमें असंख्यात पूर्व पड़ें तब ए
क एक पल्योपम काल होता है । वह पल्योपम काल कुआ के दृष्टान्त से जानना जब
दश क्रोड़ान् क्रोड़ पल्योपम काल बीतें तब एक सागरोपम काल होता है जब
दश क्रोड़ान् क्रोड़ सागरोपम काल बीत जाय तब एक उत्सर्पिणी काल होता है ।
और जब एक उत्सर्पिणी और एक अवसर्पिणी काल बीत जाय तब एक काल

चक्र होता है. जब अनन्त काल चक्र बीत जावें तब एक पुद्गल परावर्त्त होता है। अब
अनन्त काल किसको कहते हैं जो सिद्धान्त पुस्तकों में नव दृष्टान्तों से काल की
संख्या की है उससे उपरान्त अनन्त काल कहाता है वैसे अनन्त पुद्गल परावर्त्त काल
जीव को भ्रमते हुए बीते हैं इत्यादि । सुनो भाई गणित विद्या वाले लोगो! जैनि
यों के ग्रन्थों की काल संख्या कर सकोगे और तुम इसको सच भी मान सकोगे? देखो इन के तीर्थंकरों ने ऐसी गणित विद्या पढ़ी थी ऐसे २ तो इनके मत
में गुरु और शिष्य हैं जिनकी अविद्या का कुछ पारावार नहीं [illegible] और भी इनका अंधेर सुनो । रत्नसार
भाग पृ० १३३ से लेके जो कुछ बोल अर्थात् जैनियों के सिद्धान्त ग्रन्थ जो कि उनके ती
र्थंकर अर्थात् ऋषभ देव से लेके महावीर पर्यन्त चौवीस हुए हैं उनके बचनों का
सारसंग्रह है ऐसा रत्नसार भाग पृ० १४८ में लिखा है कि पृथिवी काय के जीव मट्टी
पाषाणादि पृथिवी के भेद जानना उनमें रहने वाले जीवों के शरीर का परिमाण
एक अंगुल का असंख्यातवां भाग समझना अर्थात् अतीव सूक्ष्म होते हैं उनका आ
युमान अर्थात् वे अधिक से अधिक २२ हजार वर्ष पर्यन्त जीते हैं । रत्न० पृ० १४९
वनस्पति के एक शरीर में अनन्त जीव होते हैं वे साधारण वनस्पति कहाती
हैं जो कि कंदमूल प्रमुख और अनन्तकाय प्रमुख होते हैं उनको साधारण वनस्पति
के जीव कहने चाहिये उनका आयुमान अन्तर्मुहूर्त होता है परन्तु यहां पूर्वोक्त इनका मु
हूर्त समझना चाहिये और एक शरीर में जो एक जीव रहता है उसको प्रत्येक वनस्पति
कहते हैं उसका देहमान एक हजार [illegible] योजन [illegible] अर्थात् पुराणी
यों का योजन ४ कोश का परन्तु जैनियों का योजन १०००० कोशों का होता है ऐसे चार हजार कोश का शरीर होता है उसका आयुमान अधिक से अधिक दश हजार वर्ष
का होता है अब दो इन्द्रिय वाले जीव अर्थात् एक उनका शरीर और एक मुख जो शंख
कौड़ी और जूं आदि होते हैं उनका देहमान अधिक से अधिक अड़तालीस कोश का स्थू
ल शरीर होता है और उनका आयुमान अधिक से अधिक बारह वर्ष का होता है यहां बहु
त ही भूल गया क्योंकि इतने बड़े शरीर का आयु अधिक लिखता और अड़तालीस को
श की स्थूल जूं जैनियों के शरीर में पड़ती होगी और उन्होंने देखी भी होगी और का भा
ग्य ऐसा कहां जो इतनी बड़ी जूं को देखे । रत्नसार भा० पृ० १५० और देखो इनका अं
धाधुंध बीछू बगाई कसारी और मक्खी आयुमान अधिक से अधिक छः महीने
का है । देखो भाई चार २ कोश का बीछू अन्य किसी ने देखा होगा जो आठ मील तक
का शरीर वाला बीछू और मक्खी भी जैनियों के मत में होती है ऐसे बीछू और म
क्खी उन्हीं के घर में रहते होंगे और उन्होंने देखे होंगे । अन्य किसी ने संसार में नहीं दे
खा होगा । जलचर मच्छी आदि के शरीर का मान एक हजार जोजन अर्थात् १००००
कोश के जोजन के हिसाब से १००००००० एक करोड़ कोश का शरीर होता है और
एक करोड़ पूर्व वर्षों का आयु होता है वैसे स्थूल जलचर सिवाय जैनियों के अन्य किसी ने न देखा होगा । चतुष्पात् हाथी आदि

[Left margin: वा नहीं; बूटा; एकेन्द्रि अर्थात् स्पर्श इन्द्रि इनमें है और इसमें; एक योजन के शरीर वाले होते हैं इनका; इनका]
[Right margin: दश हजार; कभी ऐसे बीछू किसी जैनी को काटे तो उसका क्या होता होगा!]

का ~~[illegible]~~ देहमान दो कोश से नव कोश पर्यन्त और आयुमान चौरासी हजार वर्षों का इत्यादि ऐसे जीव भी जैनी लोगों ने देखे होंगे और मानते हैं और कोई बुद्धिमान् न मान सकता (रत्नसार भा० पृ० १५१) जलचर गर्भज जीवों का देहमान उत्कृष्ट एक हजार योजन अर्थात् १०००००० एक करोड़ कोशों का और आयुमान एक क्रोड़ पूर्व वर्षों का होता है इतने बड़े शरीर और आयुवाले जीवों को भी इन्हीं के आचार्यों ने स्वप्न में देखे होंगे। क्या यह महाझूठ बात नहीं कि जिसका कदापि सम्भव न हो सके॥ अब सुनो (रत्नसार भा० पृ० १५२) इस तिरछे लोक में असंख्यात द्वीप और असंख्यात समुद्र हैं इन असंख्यात का प्रमाण अर्थात् जो अढ़ाई सागरोपम काल में जितना समय हो उतने द्वीप तथा समुद्र जानना अब इस पृथिवी में एक जंबूद्वीप प्रथम सब द्वीपों के बीच में है इसका प्रमाण एक लाख योजन अर्थात् चार लाख कोश का है और इसके चारों ओर लवण समुद्र है उसका प्रमाण दो लाख योजन कोश का है अर्थात् आठ लाख कोश का। इस जंबूद्वीप के चारों ओर जो धातकीखण्ड नाम द्वीप है उसका ~~[illegible]~~ चार लाख योजन अर्थात् सोलह लाख कोश का प्रमाण है और उसके पीछे कालोदधि समुद्र है उसका आठ लाख अर्थात् बत्तीस लाख कोश का प्रमाण है उसके पीछे पुष्करावर्त्त द्वीप है उसका प्रमाण सोलह कोश का है उस द्वीप के भीतर की कोरें हैं उस द्वीप के आधे में मनुष्य बसते हैं और उसके उपरान्त असंख्यात द्वीप समुद्र हैं उनमें तिर्यग् योनी के जीव रहते हैं। (रत्नसार भा० पृ० १५३) जम्बूद्वीप में एक हिमवन्त एक ऐरण्यवन्त एक हरिवर्ष एक रम्यक् देवकुरु एक उत्तरकुरु ये छः क्षेत्र हैं॥ समीक्षक-

(सुनो भाई भूगोल विद्या के जानने वाले लोगो भूगोल के परिमाण करने में तुम भूले वा जैन जो जैन भूल गये हों तो तुम उनको समझाओ और जो तुम भूले हो तो उनसे समझ लेओ थोड़ा सा विचार कर देखो तो यही निश्चय होता है कि जैनियों के आचार्य और शिष्यों ने भूगोल खगोल और गणित विद्या कुछ भी नहीं पढ़ी थी जो पढ़े होते तो महा असंभव गपोड़ा क्यों मारते भला ऐसे अविद्वान् पुरुष जगत् को अकर्तृक और ईश्वर को न माने इसमें क्या आश्चर्य है इसलिये जैनी लोग अपने पुस्तकों को किसी विद्वान् अन्य मतस्थों को नहीं देते क्योंकि ~~[illegible]~~ जिनको ये लोग प्रामाणिक तीर्थंकरों के बनाये हुए सिद्धान्त ग्रंथ मानते हैं उनमें इसी प्रकार की अविद्यायुक्त बातें भरी पड़ी हैं इसलिये न ~~[illegible]~~ देखने देते जो देवें तो पोल खुल जाय इनके बिना जो कोई मनुष्य कुछ भी बुद्धि रखता होगा वह कदापि इन गपोड़ाध्याय को सत्य नहीं मान सकेगा॥ हां जगत् का कारण अनादि है क्योंकि वह परमाणु आदि तत्त्वस्वरूप अकर्तृक हैं परन्तु ~~[illegible]~~ उनमें नियमपूर्वक बनने वा बिगड़ने का सामर्थ्य कुछ भी नहीं क्योंकि जब एक परमाणु द्रव्य किसी का नाम है और स्वभाव से पृथक् २ रूप और जड़ हैं वे अपने आप यथायोग्य नहीं बन सकते इसलिये इनका बनाने वाला चेतन अवश्य है ~~[illegible]~~ और वह बनाने वाला ज्ञानस्वरूप है। देखो पृथिवी सूर्य्यादि सब लोकों को नियम में रखना अनन्त अनादि चेतन परमात्मा का काम है जिसमें संयोग रचना विशे

[left margin: बड़े २ शरीरवाले]

[left margin: यह सब प्रपंच जैनियों ने जगत को अनादि मानने के लिये खड़ा किया है परन्तु यह निरा झूठ है]

दीखती है वह स्थूल जगत् अनादि कभी नहीं हो सकता जो कार्य्य जगत् को नित्य मानोगे तो
उसका कारण कोई न होगा किन्तु वही कार्य्य कारण रूप हो जायगा जो ऐसा कहोगे तो अप
ना कार्य्य और कारण आपही होने से अन्योन्याश्रय और आत्माश्रय दोष आवेगा जैसे अपने कं
धे पर आप चढ़ना और अपना पिता पुत्र आप नहीं हो सकता इसवास्ते जगत् का कर्त्ता अ
वश्य ही मानना है (प्रश्न) जो ईश्वर को जगत् का कर्त्ता मानते हो तो ईश्वर का कर्त्ता कौन है। (उत्तर)
कर्त्ता का कर्त्ता और कारण का कारण कोई भी नहीं हो सकता क्योंकि प्रथम कर्त्ता और कार
ण के होने से ही कार्य्य होता है जिसमें संयोग वियोग नहीं होता जो प्रथम संयोग वियोग
का कारण है उसका कर्त्ता वा कारण किसी प्रकार नहीं हो सकता इसकी
विशेष व्याख्या आठवें समुल्लास सृष्टि की व्याख्या में लिखा है देख लेना। इन जैन लोगों को स्थू
ल बात की भी यथावत् खबर नहीं तो परम सूक्ष्म सृष्टिविद्या का बोध कैसे हो सक
ता है इसलिये जो जैनी लोग सृष्टि को अनादि अनन्त मानते और द्रव्य पर्यायों को भी अना
दि अनन्त मानते हैं और प्रति गुण प्रति देश में पर्यायों और प्रति वस्तु में भी अनन्त
पर्याय मानते हैं यह प्रकरण रत्नाकर के प्रथम भाग में लिखा है यह भी बात कभी
नहीं घट सकती क्योंकि जिनका अन्त अर्थात् मर्यादा होती है उनके सब सम्बन्धी
अन्त वाले ही होते हैं यदि अनन्त को असंख्य कहते तो भी नहीं घट सकता किन्तु जीवा
पेक्षा में यह बात घट सकती है परमेश्वर के सामने नहीं क्योंकि एक २ द्रव्य में अपने २
एक २ कार्य्य कारण सामर्थ्य को अविभाग पर्यायों से अनन्त सामर्थ्य मानना के
वल अविद्या की बात है जब एक परमाणु द्रव्य की सीमा है तो उसमें अनन्त विभाग
रूप पर्याय कैसे रह सकते हैं ऐसे ही एक २ द्रव्य में अनन्त गुण और एक गुण प्रदेश
में अविभाग रूप अनन्त पर्यायों को भी अनन्त मानना केवल बालकपन की बात है
क्योंकि जिसके अधिकरण का अन्त है तो उसमें रहने वालों का अन्त क्यों नहीं ऐसी ही लं
बी चौड़ी मिथ्या बातें लिखी हैं अब जीव और अजीव इन दो पदार्थों के विषय में जैनियों का
निश्चय ऐसा है ~~चेतनालक्षणो जीवः स्या~~ (चेतनालक्षणो जीवः स्यादजीवस्तदन्यकः। सत्
कर्म पुद्गलाः पुण्यं पापं तस्य विपर्ययः) यह जिनदत्तसूरि का वचन है — और य
ही प्रकरणरत्नाकर भाग पहिले में नयचक्रसार में भी लिखा है कि चेतनालक्षण
जीव और चेतनारहित अजीव अर्थात् जड़ है सत्कर्म रूप पुद्गल पुण्य और पाप कर्म
रूप पुद्गल पाप कहाते हैं (समीक्षक) जीव और जड़ का लक्षण तो ठीक है परन्तु
जो जड़रूप पुद्गल हैं वे पाप पुण्य युक्त कभी नहीं हो सकते क्योंकि पाप पुण्य करने का
स्वभाव चेतन में होता है देखो ये जितने जड़ पदार्थ हैं वे सब पाप पुण्य से रहित हैं
जो जीवों को अनादि मानते हैं यह तो ठीक है परन्तु उसी अल्प और अल्पज्ञ जीव को मु
क्तिदशा में सर्वज्ञ मानना झूठ है क्योंकि जो अल्प और अल्पज्ञ है उसका सामर्थ्य भी
सर्वदा ससीम रहेगा। जैनी लोग जगत्, जीव, जीव के कर्म, और बंध अनादि मानते हैं
यहां भी जैनियों के तीर्थंकर भूल गये हैं क्योंकि संयुक्त जगत् का कार्य कारण, प्रवाह से कार्य्य, और जीव के कर्म, बंध भी अनादि नहीं हो
सकता जब ऐसा मानते हो तो कर्म और बंध का छूटना क्यों मानते हो, क्योंकि

जो अनादि पदार्थ हैं वह कभी नहीं छूट सकता जो अनादिका भी नाश मानोगे तो तुम्हा
रे सब अनादि पदार्थों के नाशका प्रसंग होगा और जब अनादि को नित्य मानोगे तो कर्म
और बंध भी नित्य होगा और जब सब कर्मों के नाशका प्रसंग होगा और जब अनादिको
नित्य मानोगे तो कर्म और बंध भी नित्य होगा और जब सब कर्मों के छूटने से मुक्तिमानते
हो तो सब कर्मों का छूटना रूप मुक्तिका निमित्त हुआ तब नैमित्तिकी मुक्ति होगी तो सदा न
हीं रह सकेगी पुनः जब तुमने अपनी मुक्ति और तीर्थंकरों की मुक्ति नित्य मानी है सो
नहीं बन सकेगी (प्रश्न) जैसे धान्यका छिकला उतारने वा अग्निके संयोग होने से वह
बीज पुनः नहीं उगता इसी प्रकार मुक्ति में गया हुआ जीव पुनः जन्म मरण रूप संसार में फिर
नहीं आता (उत्तर) जीव और कर्म का सम्बन्ध छिकले और बीजके समान नहीं है
किन्तु इनका समवाय सम्बन्ध है इससे अनादिकाल से जीव और उसमें कर्म और कर्तृत्व
शक्तिका सम्बन्ध है जो उसमें कर्म करने की शक्तिका भी अभाव मानोगे तो सब जीव
पाषाणवत् हो जायेंगे और मुक्तिके भोगने का भी सामर्थ्य नहीं रहेगा जैसे अना
दि कालका कर्मबंधन छूटकर जीव मुक्त होता है तो मुक्तिसे भी छूटकर बंधन में पड़ेगा
क्योंकि साधनों से भी छूटकर बंधन में पड़ेगा साधनों से सिद्ध हुआ पदार्थ नि
त्य नहीं हो सकता और जो साधन सिद्ध के बिना मुक्ति मानोगे तो बन्ध प्राप्त हो स
केगा जैसे वस्त्रों में मैल लगता और धोने से छूट जाता है वैसे मिथ्यात्वादि हेतुओं
से रागद्वेषादि के आश्रयसे जीवको कर्म रूप फल लगता है और जो सम्यग्ज्ञान दर्श
न चारित्र से निर्मल होता है और मल लगने के कारणों से मलों का लगना
मानते हो तो मुक्त जीव संसारी और संसारी जीवका मुक्त होना अवश्य मानना पड़े
गा क्योंकि जैसे निमित्तों से मलिनता छूटती है वैसे निमित्तों से मलि
नता लग भी जायगी इसवास्ते जीवको बंध और मुक्ति प्रवाह रूप से अनादि मा
नो (प्रश्न) जीव निर्मल कभी न होगा किन्तु मल सहित है (उत्तर) जो कभी निर्मल न
हीं था तो निर्मल भी कभी नहीं हो सकेगा जैसे शुद्ध वस्त्र में पीछे से लगे हुए मैल को धोने
से छुड़ा देते हैं उसके स्वाभाविक श्वेतवर्ण को नहीं छुड़ा सकते मैल फिर भी वस्त्र में
लग जाता है इसी प्रकार मुक्ति में भी लगेगा (प्रश्न) जीव पूर्वोपार्जित कर्म से ही श
रीर धारण कर लेता है (उत्तर) जो केवल कर्म ही शरीर धारण में निमित्त हो ईश्वर का
रण न हो तो वह जीव बुरा जन्म कि जहां बहुत दुःख हो उसको धारण कभी न करे कि
न्तु सदा अच्छे २ जन्म धारण किया करे जो कहो कि कर्म प्रति बन्धक है तो भी जैसे चोर
आपसे आके बंदीगृह में नहीं जाता और स्वयं फांसी भी नहीं खाता किन्तु राजा देता है
इसी प्रकार जीवको शरीर धारण कराना और उसके कर्मानुसार फल देनेवाले परमे
श्वर को तुम भी मानो (प्रश्न) नशाके समान कर्म स्वयं प्राप्त होता है फल देने में दूसरे की
आवश्यकता नहीं (उत्तर) जो ऐसा हो तो जैसे नशा करनेवालों को न्यून नशा चढ़ता अ
भ्यासी को बहुत चढ़ता है वैसे नित्य बहुत पाप पुण्य करनेवालों को न्यून और कभी
कभी २ थोड़ा २ पाप पुण्य करनेवालों को अधिक फल होना चाहिये और छोटे कर्मवालों

और कर्म कर्ता का नित्य संबंध है जैसे कभी नहीं छूटेगा

जैसे कर्म रूप मुक्ति के

कुमारी नित्य

पुनः मैं लगजाता है

अनादि अनन्ता से न ही

ईश्वर का और मानना चाहिये

ही

को अधिक फल होवे ॥ (प्रश्न) जिसका जैसा स्वभाव होता है उसको वैसा ही फल हुआ करता है (उत्तर) जो स्वभाव से है तो उसका छूटना वा मिलना नहीं हो सकता हां जैसे शुद्ध वस्त्र में निमित्तों से मल लगता है उसके छुड़ाने के निमित्तों से छूट भी जाता है ऐसा मानना भी कहै। (प्रश्न) संयोग के विना कर्म परिणाम को प्राप्त नहीं होता जैसे दूध और खटाई के संयोग बिना दही नहीं होता इसी प्रकार जीव और कर्म के संयोग से कर्म का परिणाम होता है (उत्तर) जैसे दही और खटाई का मिलाने वाला तीसरा होता है वैसे ही जीवों के कर्मों के फल के साथ मिलाने वाला तीसरा ईश्वर होना चाहिये क्योंकि जड़ पदार्थ स्वयं नियम से संयुक्त नहीं होते और जीव भी अल्पज्ञ होने से स्वयं अपने कर्मफल को प्राप्त नहीं हो सकते इससे यह सिद्ध हुआ कि बिना ईश्वरस्थापित सृष्टिक्रम के कर्मफल व्यवस्था नहीं हो सकती। (प्रश्न) जो कर्म से मुक्त होता है वही ईश्वर कहाता है (उत्तर) जब अनादिकाल से जीव के साथ कर्म लगे हैं उनसे जीव मुक्त कभी न हो सकेंगे (प्रश्न) कर्म का बंध सादि है (उत्तर) जो सादि है तो कर्म का योग अनादि नहीं और संयोग की आदि में जीव निष्कर्म होगा और जो निष्कर्म को कर्म लग गया तो मुक्तों को भी लग जायगा और कर्म कर्त्ता का समवाय अर्थात् नित्य सम्बंध होता है यह कभी नहीं छूटता इसलिये जैसा ९ समुल्लास में लिख आये हैं वैसा ही मानना ठीक है जीव चाहें जैसा अपना ज्ञान और सामर्थ्य बढ़ावे तो भी उसमें परिमित ज्ञान और ससीम सामर्थ्य रहेगा ईश्वर के समान कभी नहीं हो सकता हां जितना सामर्थ्य बढ़ना उचित है उतना योग से बढ़ा सकता है और जो जैनियों में आर्हत लोग देह के परिमाण से जीव का भी परिमाण मानते हैं उनसे पूछना चाहिये कि जो ऐसा हो तो हाथी का जीव कीड़ी में और कीड़ी का जीव हाथी में कैसे समा सकेगा यह भी एक मूर्खता की बात है क्योंकि जीव एक सूक्ष्म पदार्थ है जो कि एक परमाणु में भी रह सकता है परन्तु उसकी शक्तियां शरीर में प्राण बिजुली और नाड़ी आदि के साथ संयुक्त हो रहती हैं उनसे सब शरीर का वर्त्तमान जानता है अच्छे संग से अच्छा और बुरे संग से बुरा हो जाता है। अब जैन लोग धर्म इस प्रकार का मानते हैं ॥ मूल—

रे जीव भवदुहाइं इक्कं चिय हरइ जिणमयं धम्मं। इयराणं परमंतो सुहकय्ये मूढ मुसिओसि ॥ प्रकरणरत्नाकर-भाग २-षष्ठीशतक ६० सूत्रांक ३ ॥

संक्षेप से० अर्थ—हे जीव एक ही जिनमत श्री वीतराग भाषित धर्म संसार सम्बंधी जन्म जरा मरणादि दुःखों का हरणकर्त्ता है इसी प्रकार सुदेव और सुगुरु भी जैनमत वाले को जानना इतर जो वीतराग ऋषभदेव से लेके महावीर पर्यन्त वीतरागदेवों से भिन्न अन्य हरिहर ब्रह्मादि कुदेव हैं उनकी अपने कल्याणार्थ जो जीव पूजा करते हैं वे सब मनुष्य ठगाये गये हैं इसका यह भावार्थ है कि जो जैनमत के सुदेव सुगुरु तथा सुधर्म को छोड़ के अन्य कुदेव कुगुरु तथा कुधर्म को सेवने से कुछ भी कल्याण नहीं होता ॥ ३ ॥ (समीक्षा)—अब विद्वानों को विचारना चाहिये कि कैसी निंदायुक्त इनके धर्म के पुस्तक हैं ॥ मूल—

अरिहं देवो सुगुरू सुद्धं धम्मंच पंचनवकारो। धन्नाणं कयच्छाणं निरंतरं वसइ हियथम्मि ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० ६० सू० १ ॥

सं० अर्थ—जो अरिहन्त देवेन्द्रकृत

पूजादिकन के योग्य दूसरा पदार्थ उत्तम कोई नहीं ऐसा जो देवों का देव सोभायमा
न अर्हंत देव ज्ञान क्रियावान् शास्त्रों का उपदेश शुद्ध कषाय मल रहित सम्यक्त्व
विनय दयामूल श्री जिन भाषित जो धर्म है वही दुर्गति में पड़ने वाले प्राणियों का उ
द्धार करने वाला है और अन्य हरिहरादि का धर्म संसार से उद्धार करने वाला नहीं और
पंच अरिहन्तादिक परमेष्ठी तत्सम्बन्धी उनको नमस्कार ये चार पदार्थ धन्य हैं
अर्थात् श्रेष्ठ हैं अर्थात् दया, क्षमा, सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, और चारित्र यह जैनों का
धर्म है ॥ १ ॥ समीक्षक — जब मनुष्य मात्र पर दया नहीं वह दया न क्षमा ज्ञान के बद
ले अज्ञान दर्शन अंधेर और चारित्र के बदले भूखे मरना कौनसी अच्छी बात है ?॥
जैनमत के धर्म की प्रशंसा। मूल — जइन कुणसि तवचरणं न पढसि न गुणेसि देसि नो
दाणम्। ता इत्तियं न सक्कसि जं देवो इक्क अरिहन्तो ॥ प्रकरण० भा० २ षष्टी०
सू० २ ॥ हे मनुष्य जो तू तप चारित्र नहीं कर सकता न सूत्र पढ़ सकता न प्रकरणादि
का विचार कर सकता और सुपात्रादिको दान नहीं दे सकता तो भी जो तू देवता एक अरिहन्त
ही हमारे आराधना के योग्य सुगुरु सुधर्म जैनमत में श्रद्धा रखना सर्वोत्तम बात और उद्धार
का कारण है ॥ २ ॥ समीक्ष० यद्यपि दया और क्षमा अच्छी वस्तु है तथापि पक्षपात में
फसने से दया अदया और क्षमा अक्षमा हो जाती है इसका प्रयोजन यह है कि किसी जीव
को दुःख न देना यह बात सर्वथा संभव नहीं हो सकती क्योंकि दुष्टों को दण्ड देना भी दया
में गणनीय है जो एक दुष्ट को दंड न दिया जाय तो हज़ारों मनुष्यों को दुःख प्राप्त हो इस
लिये वह दया अदया और क्षमा अक्षमा हो जाय यह तो ठीक है कि सब प्राणियों के दुः
ख नाश और सुख की प्राप्ति का उपाय करना दया कहाती है केवल जल छान के पीना क्षुद्रज
न्तुओं को बचाना ही केवल दया नहीं कहाती किन्तु इस प्रकार की दया जैनियों के कथन
मात्र ही है क्योंकि वैसा वर्त्तते नहीं। क्या मनुष्यादि पर चाहें किसी मत में क्यों न हो दया कर
के उसको अन्नपानादि से सत्कार करना और दूसरे मत के विद्वानों का मान्य और सेवा कर
नी दया नहीं है। जो इनकी सच्ची दया होती तो विवेकसार के पृष्ठ २२१ में देखो क्या लि
खा है (परमती की स्तुति) अर्थात् उनका गुणकीर्तन कभी न करना। दूसरा (उनको नम-
स्कार) अर्थात् वंदना भी न करनी। तीसरा (आलापन) अर्थात् अन्य मत वालों के सा-
थ थोड़ा बोलना। चौथा (संलपन) अर्थात् उनसे बार २ न बोलना। पांचवां (उनको अन्न
वस्त्रादि दान) अर्थात् उनको खाने पीने की वस्तु भी न देनी। छठा (गंध पुष्पादि दान) अ
न्य मत की प्रतिमा पूजन के लिये गंध पुष्पादि भी न देना ॥ ये छः यतना अर्थात् इन छः प्र
कार के कर्मों को जैन लोग कभी न करें)। समीक्षक — अब बुद्धिमानों को विचारना चाहि
ये कि इन जैनी लोगों की अन्य मत वाले मनुष्यों पर कितनी अदया, कुदृष्टि, और द्वेष है।
जब अन्य मतस्थ मनुष्यों पर इतनी अदया है तो फिर जैनियों को दयाहीन कहना सं
भव है क्योंकि अपने घर वालों ही की सेवा करना विशेष धर्म नहीं कहाता उनके मत के म
नुष्य उनके घर के समान हैं इसलिये उनकी सेवा करते अन्यमतस्थों की नहीं फिर उ
नको दयावान् कौन बुद्धिमान् कह सकता है ? ॥ विवेक० पृष्ठ १०८ में लिखा है

कि मथुरा के राजा का नमुची नामक दिवान को जैन मतियों ने अपना विरोधी समझ कर मार डाला और आलोयणा करके शुद्ध होगया क्या यह भी दया और क्षमा का नाशक कर्म नहीं है जब अन्य मतवालों पर प्राण लेने पर्यंत वैर बुद्धि रखते हैं तो इन को दया के स्थान पर हिंसक कहना ही सार्थक है। अब सम्यक्त्व दर्शनादि के लक्षण आर्हत प्रवचन संग्रह परमागम सार में कथित हैं सम्यक् श्रद्धान, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, और चारित्र ये चार मोक्ष मार्ग के साधन हैं इनकी व्याख्या योगदेव ने की है जिस रूप से जीवादि द्रव्य अभिनिवेशादि रहित जो श्रद्धा अर्थात् जिनमत में प्रीति है सो सम्यक् श्रद्धान, और सम्यग्दर्शन है (रुचिर्जिनोक्ततत्त्वेषु सम्यक् श्रद्धानमुच्यते) जिनोक्ततत्त्वों में सम्यक् श्रद्धा करनी चाहिये अर्थात् अन्यत्र कहीं नहीं (यथावस्थिततत्त्वानां संक्षेपाद्विस्तरेण वा। योबोधस्तमत्राहुः सम्यग्ज्ञानं मनीषिणः) जिस प्रकार के जीवादि तत्त्व हैं उन का संक्षेप वा विस्तार से जो बोध होता है उसी को सम्यग्ज्ञान बुद्धिमान् कहते हैं॥ (सर्वथाऽनवद्ययोगानां त्याग श्चारित्रमुच्यते। कीर्त्तितं तदहिंसादि व्रतभेदेन पंचधा) (अहिंसासूनृतास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः) अर्थ— सब प्रकार से निंदनीय अन्यमत सम्बंध का त्याग चारित्र कहाता है और अहिंसादि भेद से पांच प्रकार का व्रत है॥ एक (अहिंसा) अर्थात् किसी प्राणी मात्र को न मारना। दूसरा (सूनृता) प्रिय वाणी बोलना तीसरा (अस्तेय) अर्थात् चोरी न करना। चौथा (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थ इन्द्रिय का संयम और पांचवां (अपरिग्रह) सब वस्तुओं का त्याग करना। इनमें बहुत सी बातें अच्छी हैं अर्थात् अहिंसा और चोरी आदि निंदनीय कर्मों का त्याग अच्छी बातें हैं परन्तु ये सब अन्यमत की निन्दा करनी आदि दोषों से सब अच्छी बातें भी दोषयुक्त होगई हैं जैसे प्रथम सूत्र में लिखा है अन्य हरिहरादि का धर्म संसार से उद्धार करनेवाला नहीं क्या यह छोटी निन्दा है कि जिनके ग्रंथ देखने से ही पूर्ण विद्या और धार्मिकता पाई जाती है उसको बुरा कहना और अपने महा असंभव जैसा कि पूर्व लिख आये वैसी बातों के कहने वाले अपने तीर्थंकरों की स्तुति करना केवल हठ और मूर्खता की बातें हैं भला जो जैनी कुछ चारित्र न कर सके न पढ़ सके न दान देने का सामर्थ्य होता भी जैनमत सच्चा है इतना कहने ही से वह उत्तम हो जाय और अन्य मतवाले श्रेष्ठ भी अश्रेष्ठ होजायें ऐसे कथन करने वाले मनुष्यों को भ्रान्त और बालबुद्धि न कहा जाय तो क्या कहें इसमें यही विदित होता है कि इनके आचार्य स्वार्थी थे पूर्ण विद्वान् नहीं क्योंकि जो सबकी निन्दा न करते तो ऐसी झूठी बातों में कोई न फसता न उनका मतलब सिद्ध होता देखो यह तो सिद्ध होता है कि जैनियों का मत डुबाने वाला और वेदमत सबका उद्धार करने हारा हरिहरादि देव सुदेव और इनके ऋषभदेवादि सब कुदेव दूसरे लोग कहें तो क्या वैसा ही उनको बुरा न लगेगा। और भी इनके आचार्य और मानने वालों की मूर्खता देखो।

मूल— जिणवरआणाभंगं उमग्गउस्सुत्तलेसदेसणाउ। आणाभंगेपावं ताजिणमयदुक्करंधम्मम्॥ प्रकर० भाग २ षष्ठी० ६० सू० ११॥

अर्थ— उन्मार्ग उत्सूत्र के लेश दिखाने से जो जिनवर अर्थात् वीतराग तीर्थंकरों की आ

अब लिखते हैं [illegible]

ज्ञा का भंग होता है वह दुःख का हेतु पाप है जिनेश्वर के कहे सम्यक्त्वादि धर्म ग्रहण
करना बड़ा कठिन है इसलिये जिस प्रकार जिन आज्ञा का भंग न हो वैसा करना चाहिये ॥ ११ ॥
समीक्षक — जो अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा और अपने ही धर्म को बड़ा कहना और दूस
रे की निन्दा करनी है वह मूर्खता की बातें हैं क्योंकि प्रशंसा उसी की ठीक है जिसकी दूसरे वि
द्वान् करें अपने मुख से अपनी प्रशंसा तो चोर भी करते हैं तो क्या वे प्रशंसनीय हो सक
ते हैं इसी प्रकार की इनकी बातें हैं ॥ मूल — बहुगुणविज्जानिलओ उस्सुत्तभासी
तहा विमुत्तव्वो। जह वरमणिजुत्तो विहु विग्घकरो विसहरो लोए ॥ प्रकर॰ भा॰ २ षष्टी॰
सू॰ १८ ॥ अर्थ — जैसे विषधर सर्प में मणि त्यागने योग्य है वैसे जो जैनमत में नहीं
वह चाहे कितना बड़ा धार्मिक पंडित हो उसको त्याग देना ही जैनियों को उचित है ॥ १८ ॥
समीक्षक — देखिये कितनी मूढ़ता की बात है जो इनके चेले और आचार्य विद्वान् होते
तो विद्वानों से प्रेम करते जब इनके तीर्थंकर सहित अविद्वान् हैं तो विद्वानों का मान्य क्यों क
रें क्या सुवर्ण को मल वा धूड़ में पड़े को कोई त्यागता है इससे यह सिद्ध हुआ कि विना जैनियों
के वैसे दूसरे कौन पक्षपाती हठी दुराग्रही विद्याहीन होंगे ॥ मूल — अइसयपाविय
पावा धम्मिअपव्वेसु तोवि पावरया। न चलंति सुद्धधम्मा धन्ना किवि पावपव्वेसु ॥
प्रकर॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ २९ ॥ अर्थ — अन्य दर्शनी कुलिंगी अर्थात् जैन मत विरो
धी उनका दर्शन भी जैनी लोग न करें ॥ २९ ॥ समीक्षक — बुद्धिमान् लोग विचार लेंगे
कि यह कितनी पामरपन की बात है सच तो यह है कि जिसका मत सत्य है उसको किसी से
डर नहीं होता इनके आचार्य जानते थे कि हमारा मत पोलपाल है जो दूसरे को सुनावेंगे
तो खंडन हो जायगा इसलिये सबकी निन्दा करो और मूर्ख जनों को फसाओ ॥ मूल॰ —
नामं पि तस्स असुहं जेण निदिट्ठाइ मिच्छपव्वाइ। जेसिं अणुसंगाउ धम्मी
ण वि होइ पावमई ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ २७ अर्थ॰ — जो जैन धर्म से विरुद्ध
धर्म हैं वे सब मनुष्यों को पापी करने वाले हैं इसलिये किसी के अन्य धर्म को
न मानकर जैन धर्म ही को मानना श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥ समीक्षा — इससे यह सिद्ध होता
है कि सबसे वैर विरोध निन्दा ईर्ष्या आदि दुष्टकर्मरूप सागर में डुबाने वाला जैन मार्ग है जै
से जैनी लोग सबके निन्दक हैं वैसा कोई भी दूसरा मतवाला महानिन्दक और अधर्मी न होगा
क्या एक ओर से सबकी निन्दा और अपनी अति प्रशंसा करना शठ मनुष्यों की बा
तें हैं विवेकी लोग तो चाहें किसी के मत के हों उनमें अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहते हैं।
मूल — हाहा गुरुअअकज्जं सामी न हु अत्थि कस्स पुक्करिमो। कह जिणवय
ण कह सुगुरु सावया कह इय अकज्जं ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ ३५ ॥ अर्थ —
सर्वज्ञभाषित जिन वचन, जैन के सुगुरु, और जैन धर्म कहां और उनसे विरुद्ध कुगुरु अन्य
मार्गी के उपदेशक कहां अर्थात् हमारे सुगुरु सुदेव सुधर्म और अन्य के कुदेव कुगुरु कुधर्म
हैं ॥ ३५ ॥ समीक्षा — यह बात बेर बेंचने हारी कूंजड़ी के समान है जैसे वह अपने खट्टे
बेरों को मीठा और दूसरी के मीठों को भी खट्टा और निकम्मे बतलाती है। इसी प्रका
र की जैनियों की बातें हैं ये लोग अपने मत से भिन्न मत वालों की सेवा में बड़ा अकार्य अर्थात्

पापगिनतेहैं ॥ मूल— सप्पो इक्कं मरणं कुगुरु अणंताइ देइ मरणाइ । तोवरि सप्पं गहियुं मा कुगुरु सेवणं भद्दम् ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ ३७ ॥ अर्थ— जैसे प्रथम लिख आये कि सर्प्पमें मणिका भी त्याग करना उचित है वैसे अन्य मार्गियोंमें श्रेष्ठ धार्मिक पुरुषोंका भी त्याग कर देना अब उससे भी विशेष निन्दा अन्य मतवालोंकी करते हैं जैन मतसे भिन्न सब कुगुरु अर्थात् वे सर्प्पसे भी बुरे हैं उनका दर्शन, सेवा, संग कभी न करना चाहिये क्योंकि सर्प्पके संगसे एक वार मरण होता है और अन्यमार्गी कुगुरुओंके संगसे अनेक वार जन्म मरणमें गिरना पड़ता है इसलिये हे भद्र अन्य मार्गियोंके गुरुओंके पास भी मत खड़ा रह क्योंकि जो तू अन्य मार्गियोंकी कुछ भी सेवा करेगा तो दुःखमें पड़ेगा ॥ ३७ ॥ समीक्षा— देखिये जैनियोंके समान कठोर भ्रान्त

निन्दक

द्वेषी दूसरे मतवाले कोई भी न होंगे इन्होंने मनसे यह विचारा है कि जो हम अन्यकी निन्दा और अपनी प्रशंसा न करेंगे तो हमारी सेवा और प्रतिष्ठा न होगी परन्तु यह बात उनके दौर्भाग्यकी है क्योंकि जबतक उत्तम विद्वानोंका संग सेवा न करेंगे तबतक इनको यथार्थ ज्ञान और सत्य धर्मकी प्राप्ति कभी न होगी इसवास्ते जैनियोंको उचित है कि अपनी मिथ्या विरुद्ध मिथ्या बातें छोड़ वेदोक्त सत्य बातोंका ग्रहण करें तो उनके लिये बड़े कल्याणकी बात है ॥ मूल— किं भणिमो किं करिमो ताण हयासाण धिट्ठ दुट्ठाणं । जे दंसिऊण लिंगं खिवंति नरयम्मि मुद्धजणं ॥ प्रक॰ भा॰ षष्टी॰ सू॰ ४० ॥ अर्थ— जिसकी कल्याणकी आशा नष्ट होगई धीठ बुरे काम करनेमें अति चतुर दुष्ट दोषवालेसे क्या कहना और क्या करना क्योंकि जो उसका उपकार करो तो उलटा उसका नाश करे जैसे कोई दया करके अंधे सिंहकी आंख खोलनेको जाय तो वह उसीको खा लेवे वैसे ही कुगुरु अर्थात् अन्य मार्गियोंका उपकार करना अर्थात् उनसे सदा अलग ही रहना ॥ ४० ॥ समीक्षा— जैसे जैन लोग विचारते हैं वैसे दूसरे मतवाले भी विचारें तो जैनियोंकी कितनी दुर्दशा हो और उनका कोई किसी प्रकार का उपकार न करें तो उनके बहुत से काम नष्ट होकर कितना दुःख प्राप्त हो वैसा अन्य

काम

के लिये जैनी क्यों नहीं विचारते ॥ मूल— जह जह तुट्टइ धम्मो जह जह दुट्ठाण होइ अइउदउ । समदिट्ठि जियाणं तह तह उल्लसइ सम्मत्तं ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ ४२ ॥ अर्थ— जैसे २ दर्शन भ्रष्ट निन्हव, पाखण्डी, उसन्ना, तथा कुसीलियादिक और अन्य दर्शनी त्रिदण्डी परिव्राजक तथा विप्रादिक दुष्ट लोगोंका अतिशय बल सत्कार पूजादिक होवे वैसे २ सम्यग्दृष्टी जीवोंका सम्यक्त्व विशेष प्रकाशित होवे यह बड़ा आश्चर्य है ॥ ४२ ॥ समीक्षा— अब देखो क्या इन जैनोंसे अधिक ईर्ष्या द्वेष वैर बुद्धियुक्त दूसरा कोई होगा हां दूसरे मतमें भी ईर्ष्या द्वेष है परन्तु जितनी इन जैनियोंमें है उतनी किसीमें नहीं ॥

मूल— संगो विजाणं अहितो सिंपम्माइ जे पकुव्वन्ति । मुत्तूण चोर संगं करन्ति ते चोरियं पावा ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्टी॰ सू॰ ७५ ॥ अर्थ॰— इसका मुख्य प्रयोजन इतना ही है कि जैसे मूढ जन चोरके संगसे नासिकाछेदादि दंडसे भय नहीं करते वैसे जैनमतसे भिन्न चोर धर्मोंमें स्थित जन अपने अकल्याणसे भय नहीं करते ॥ ७५ ॥ समीक्षा— जो जैसा मनुष्य होता है वह प्रायः अपने ही सदृश दूसरोंको समझता है क्या यह बात सत्य

हो सकती है कि अन्य सब अयोग मत और जैन का साहूकार मत है जब तक मनुष्य में अति अज्ञान और कुसंग से भ्रष्ट बुद्धि होती है तब तक दूसरों के साथ अति ईर्ष्या द्वेषादि दुष्टता नहीं छोड़ता जैसा जैन मत पाखण्डी है ऐसा अन्य कोई नहीं ॥ मूल— जच्चपसुमहिसलरकापव्बंहोमंतिपावनवमीए । पूअंतितंपि सड्ढा हा हीलावीयरागस्स ॥ प्रक० भा० २ षष्टी० सू० ७६ ॥ अर्थ— पूर्व सूत्र में जो मिथ्यात्वी अर्थात् जैन मार्ग भिन्न सब मिथ्यात्वी और आप सम्यक्त्वी अर्थात् अन्य सब पापी, जैन लोग सब पुण्यात्मा इसलिये जो कोई मिथ्यात्वी के धर्म का स्थापन करे वह पापी है ॥ ७६ ॥ समीक्षा— जैसे अन्य के स्थानों में चामुण्डा, कालिका, ज्वाला प्रमुख के आगे पापनौमी अर्थात् दुर्गा नौमी तिथि आदि सब बुरे हैं यहां वाममार्गियों की लीला का खण्डन तो ठीक है परन्तु जो शासन देवी और मरुत देवी आदि को मानते हैं उनका भी खण्डन करते तो अच्छा था जो कहें कि हमारी देवी हिंसक नहीं तो इनका कहना मिथ्या है क्योंकि शासन देवी ने एक पुरुष और दूसरा बकरा की आंखें निकाल लीथी पुनः वह राक्षसी और दुर्गा कालिका की सगी बहिन नहीं क्योंकि और अपने पच्चखाण आदि व्रतों को अति श्रेष्ठ और नवमी आदि को दुष्ट कहना मूढ़ता की बात है क्योंकि दूसरे के उपवासों की तो निन्दा और अपने उपवासों की स्तुति करना मूर्खता की बात है हां जो सत्यभाषणादि व्रत धारण करने हैं वे तो सब के लिये उत्तम हैं जैनियों और अन्य किसी का उपवास सत्य नहीं है ॥ मूल— वेसाणबंदियाणयमाहणडुंबाणजक्खसिक्खाणं । भत्ताभरकठाणं वियाणं जन्तिदूरेणं ॥ प्रक० भा० २ षष्टी० सूत्र० ८२ ॥ अर्थ— इसका मुख्य प्रयोजन यह है कि वेश्या, चारण, भाटादि लोगों ब्राह्मण, जक्ष, गणेशादिक मिथ्यादृष्टि देवी आदि देवताओं का भक्त है जो इनके मानने वाले हैं वे सब डूबने और डुबाने वाले हैं उन्हीं के पास वे सब चीजें मानते हैं और वीतराग पुरुषों से दूर रहते हैं ॥ ८२ ॥ समीक्षा— अन्य मार्गियों के देवताओं को झूठ कहना और अपने देवतों को सच कहना केवल पक्षपात की बात है और अन्य वाममार्गियों की देवी आदि का निषेध करते हैं परन्तु जो श्राद्धदिनकृत्य का पृष्ठ० ४६ में लिखा है कि शासन देवी ने रात्रि में भोजन करने के कारण एक पुरुष के थप्पड़ मारा उसकी आंख निकाल डाली उसके बदले बकरे की आंख निकाल कर उस मनुष्य के लिये लगा दी इस देवी को हिंसक क्यों नहीं मानते । मरुत देवी पथिकों को पत्थर की मूर्ति होकर सहाय करती थी इसको भी वैसी क्यों नहीं मानते । मूल— किं सोपि जणणि जाओ जाणो जणणी इकिं अगो बिद्धि । जइ मिच्छरओ जाओ गुणेसु तह मच्छरं वहइ ॥ प्रक० भा० २ षष्टी० सू० ८१ ॥ अर्थ— जो जैन मत विरोधी वह मिथ्यात्वी अर्थात् मिथ्या धर्म वाले हैं वे क्यों जन्मे जो जन्मे तो बढ़े क्यों अर्थात् शीघ्र ही नष्ट हो जाते तो अच्छा होता ॥ ८१ ॥ समीक्षा— देखो इनके वीतराग भाषित दयाधर्म दूसरे मत वालों का जीवन भी नहीं चाहते केवल इनका दयाधर्म कथनमात्र है और जो है सो क्षुद्र जीवों और पशुओं के लिये है जैन भिन्न मनुष्यों के लिये नहीं ॥ मूल— सुद्धेमग्गेजाया सुहेणगच्छन्ति सुद्धिमग्गंमि । जे पुण अमग्गजाया मग्गे गच्छन्ति तं चुच्चं ॥ प्रक० भा० २ षष्टी० सू० ८३ ॥

सं० अर्थ— इसका मुख्य प्रयोजन यह है कि जो जैन कुल में जन्म लेकर मुक्ति को जाय तो कुछ आश्चर्य नहीं परन्तु जैन भिन्न कुल में जन्मे हुए मिथ्यात्वी अन्य मार्गी मुक्ति को प्राप्त होंइ इसमें बड़ा आश्चर्य है इसका फलितार्थ यह है कि जैन मत वाले ही मुक्ति को जाते हैं अन्य कोई नहीं जो जैन मत का ग्रहण नहीं करते वे नरकगामी हैं । समीक्षा— क्या जैन मत में कोई दुष्ट वा नरकगामी नहीं होता सब ही मुक्ति में जाते हैं और अन्य कोई नहीं क्या यह उन्मत्तपन की बात नहीं है विना महामूढ़ मनुष्यों के ऐसी बात को न मान सकता है ॥ मूल— तित्थ यराणां पूआ सम्मत्त गुणाण कारिणी भणिया । सा विय मिच्छत्तयरी जिणसमये देसिया पूआ ॥ प्रक० भाग० २ षष्ठी० सू० ९० ॥ सं० अर्थ— एक जिन मूर्त्तियों की पूजा सार और इससे भिन्न मार्गियों की मूर्त्ति पूजा असार है जो जिन मार्ग की आज्ञा पालता है वह तत्त्वज्ञानी जो नहीं पालता है वह तत्त्वज्ञानी नहीं (समीक्षा) वाह जी क्या कहना क्या तुम्हारी मूर्त्ति पाषाणादि जड़ पदार्थों की नहीं जैसी की वैष्णवादिकों की हैं जैसी तुम्हारी मूर्त्ति पूजा मिथ्या है वैसी ही मूर्त्ति पूजा वैष्णवादिकों की है जैसे तुम तत्त्वज्ञानी बनते हो और अन्यों को अतत्त्वज्ञानी बनाते हो इससे विदित होता है कि तुम्हारे मत में तत्त्वज्ञान नहीं ॥

मूल— जिण आणाए धम्मो आणा रहिआण फुडं अहम्मुत्ति । इयमुणिऊणय तत्तं जिण आणाए कुणह धम्मं ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० ९२ ॥ सं० अर्थ— जो जिन देव की आज्ञा दया क्षमादिरूप धर्म है उससे अन्य सब आज्ञा अधर्म है (समीक्षक) यह कितने बड़े अन्याय की बात है क्या जैन मत से भिन्न कोई भी पुरुष सत्यवादी धर्मात्मा नहीं है उस धार्मिक जन को न मानना चाहिये हां जो जैन मतस्थ मनुष्यों के मुख जिह्वा चमड़े की न होती और अन्य की चमड़े की होती तो यह बात घट सकती थी इससे अपने ही मत के ग्रन्थ वचन साधु आदि की ऐसी बड़ाई की है कि जानो भाटों के बड़े भाई हीं जैन लोग बन रहे हैं ॥ १४ १८

मूल— वत्थमिनारया उविजसिं दुरकाइ संभरंताणम् । भव्वाणजणाइ हरिहर रिद्धि समिद्धी विउद्घोसं ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० ९५ ॥ सं० अर्थ— इसका मुख्य तात्पर्य है कि जो हरिहरादि देवों की विभूति है वह नरक का हेतु है उसको देख के जैनियों के रोमांच खड़े हो जाते हैं जैसे राजाज्ञा भंग करने से मनुष्य मरण तक दुःख पाता है वैसे जिनेन्द्र आज्ञा भंग से क्यों न जन्म मरण दुःख पावेगा ॥ समीक्षक— देखिये जैनियों के आचार्य आदि की मानसी वृत्ति अर्थात् ऊपर के कपट और ढोंग की लीला अब तो इनके भीतर की भी खुल गई हरिहरादि और उनके उपासकों के ऐश्वर्य्य और बढ़ती को देख भी नहीं सकते उनके रोमांच इसलिये खड़े होते हैं कि दूसरे की बढ़ती क्यों हुई बहुधा वैसे चाहते होंगे कि इनका सब ऐश्वर्य्य हमको मिल जाय और ये दरिद्र हो जायें तो अच्छा और राजाज्ञा का दृष्टान्त इसलिये देते हैं कि ये राज्य के बड़े खुशामदी भूठे और डरपुकने हैं क्या भूठी बात भी राजा की मान लेनी चाहिये जो ईर्ष्या द्वेषी हों तो जैनियों से बढ़ के दूसरा कोई भी न होगा ॥ मूल— जो देइ सुद्धधम्मं सो परमप्पा जयम्मि नहु अन्नो । किं कप्पद्रुम्म सरिसो इयर तरू होइ कइयावि ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० १०१ ॥ सं० अर्थ— वे मूर्ख लोग हैं जो जैन धर्म से विरुद्ध हैं और जो जिनेन्द्र भाषित धर्मोपदेष्टा साधु वा गृहस्थ २१ २५ २८ ३२

अथवा ग्रंथकर्त्ता हैं वे तीर्थंकरों के तुल्य हैं उनके तुल्य कोई भी नहीं (समीक्षक) क्यों नहीं जो जैनी लोग छोकर बुद्धि न होते तो ऐसी बातें क्यों मान बैठते जैसे वेश्या बिना अपने के दूसरी की स्तुति नहीं करती वैसे ही यह बात भी दीखती है ॥ मूल — जे अमुणिअ गुणदोसा ते कह अबुहाण हुंति मज्झत्था। अह ते वि हु मज्झत्था ता विस अमिआण तुल्लत्तं ॥ प्रक० भा० षष्ठी० सू० १०२ ॥ सं० अर्थ — जिनेन्द्रदेव तदुक्त सिद्धान्त और जिन मत का उपदेष्टाओं का त्याग करना जैनियों को उचित नहीं है ॥१०२॥ समीक्षक — यह जैनियों का हठ पक्षपात और अविद्या का फल नहीं तो क्या है किन्तु जैनियों की थोड़ी सी ~~बुद्धि~~ बातें छोड़ के अन्य सब त्यक्तव्य हैं जिसकी कुछ थोड़ी सी भी बुद्धि होगी वह जैनियों के देव सिद्धान्त ग्रंथ और उपदेष्टाओं को देखें सुनें विचारें तो उसी समय निःसंदेह छोड़ देगा ॥ मूल — वयरोगा विसुगुरु जिणवल्लहस्स केसिं न उल्लसइ सम्मं। अह कह दिणमणि तेयं उल्लुआणं हरइ अंधत्तं ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० १०८ ॥ सं० अर्थ — जो जिनवचन के अनुकूल ~~चलते~~ चलते हैं वे पूजनीय और जो विरुद्ध चलते हैं वे अपूज्य हैं जैन गुरुओं को मानना अर्थात् अन्यमार्गियों को न मानना ॥१०८॥ (समीक्षक) भला जो जैन लोग अन्य अज्ञानियों को पशुवत् चेले करके न बांधते तो उनके जाल में से छूटकर अपनी मुक्ति के साधन कर जन्म सफल कर लेते भला जो कोई तुमको कुमार्गी कुगुरु मिथ्यात्वी और कूपदेष्टा कहे तो तुमको कितना दुःख लगे वैसे ही जो तुम दूसरों को दुःखदायक हो इसीलिये तुम्हारे मत में असार बातें बहुत सी भरी हैं ॥ मूल — तिहुअणजणं मरंतं दठूण निअंति जेन अप्पाणं। विरमंति न पावाउ धिद्धी धिट्ठत्तणं ताणं ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० १०९ ॥ सं० अर्थ — जो मृत्यु पर्यन्त दुःख हो तो भी कृषी व्यापारादि कर्म जैनी लोग न करें क्योंकि ये कर्म नरक में लेजाने वाले हैं ॥१०९॥ समीक्षक — अब कोई जैनियों से पूछे कि तुम व्यापारादि कर्म क्यों करते हो इन कर्मों को क्यों नहीं छोड़ देते और जो छोड़ देओ तो तुम्हारे शरीर का पालन पोषण भी न हो सके और जो तुम्हारे कहने से सब लोग छोड़ दें तो तुम क्या पदार्थ खाके जीओगे ऐसा अत्याचार का उपदेश करना सर्वथा व्यर्थ है क्या करें बिचारे विद्या सत्संग के विना जो मन में आया सो बक दिया ॥ मूल — तइया हमाण अहमा कारण रहिया अनाणगब्वेण। जे जंपंति उस्सुत्तं तेसिं दिद्धि च पंडिच्चं ॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० ॥१२१॥ सं० अर्थ — जो जैनागम से विरुद्ध शास्त्रों के मानने वाले हैं वे अधमाऽधम हैं चाहें कोई प्रयोजन सिद्ध होता हो तो भी जैन मत से विरुद्ध न बोले न माने चाहें कोई प्रयोजन सिद्ध होता है तो भी अन्य मत का त्याग कर दे ॥१२१॥ समीक्षक — तुम्हारे मूल पुरुषा से लेके आज तक जितने हो गये और होंगे वे विना दूसरे मत को गालिप्रदान के अन्य कुछ भी दूसरी बात न की और न करेंगे भला जहां जहां जैनी लोग अपना प्रयोजन सिद्ध होना देखते हैं वहां चेलों के भी चेले बन जाते हैं तो ऐसी मिथ्या लम्बी चौड़ी बातों के हांकने में तनिक भी लज्जा नहीं आती यह बड़े शोक की बात है ॥ मूल — जं वीरजिणस्स जिओ मिरई उस्सुत्तलेसदेसणओ। सागरकोड़ा कोड़िं हिंमइ अइ

॥ प्रक० भा० २ षष्ठी० सू० १२२ ॥

सं॰ अर्थ— जो कोई ऐसा कहे कि जैन साधुओं में धर्म है हमारे और अन्य में भी धर्म है तो वह
मनुष्य क्रोड़ान क्रोड़ वर्षतक नरक में रहकर फिर भी नीच जन्म पाता है ॥ १२२ ॥ समीक्ष
क— वाह रे वाह तुमने यही विचारा होगा कि हमारे मिथ्या वचनों का को
ई खंडन न करे इसीलिये यह भयंकर वचन लिखा है सो असंभव है अब कहां तक तुम को समझा
वें तुमने तो झूठ निंदा और अन्य मतों से वैर विरोध करने पर ही कमर बांध अपना मतल
ब सिद्ध करना मोहनभोग के समान समझ लिया है ॥ मूल— दूरे करणं दूरम्मि साहूणं
तह पभावणा दूरे। जिणधम्म सद्दहाणं पि तिरकदुक्खाइ निठवइ ॥ प्रक॰ भा॰
२ षष्ठी॰ सू॰ १२७ ॥ सं॰ अर्थ— जिस मनुष्य से जैन धर्म का कुछ भी अनुष्ठान न हो स
के तो भी जो जैन धर्म सच्चा है अन्य कोई नहीं इतनी श्रद्धा मात्र ही से दुःखों से तर जाता है ॥ १२
समीक्षक— भला इससे अधिक मूर्खों को अपने मतजाल में फसाने की दूसरी कौन सी बात
होगी क्योंकि कुछ कर्म करना न पड़े और मुक्ति हो ही जाय ऐसा भूंदू मत कौन सा होगा। मूल—
कइया होही दिवसो जइया सुगुरूण पायमूलम्मि। उस्सुत्तलेस विसलवर
हिओ निसुणेसु जिणधम्मं ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्ठी॰ सू॰ १२८ ॥ सं॰ अर्थ— जो मनुष्य जि
नागम अर्थात् जैनों के शास्त्रों को सुनूंगा उत्सूत्र अर्थात् अन्य ग्रंथों को कभी न सुनूंगा इतनी
इच्छा मात्र ही से दुःखसागर से वह मनुष्य तर जाता है ॥ १२८ ॥ समीक्षक— यह भी बात मू
र्खों को फसाने के लिये है क्योंकि पूर्वोक्त इच्छा से यहां के दुःखसागर से भी नहीं तरता [illegible] पूर्व
जन्म के भी संचित पापों के दुःखरूपी फल भोगे विना नहीं छूट सकता जो ऐसी झूठ
अर्थात् विद्याविरुद्ध बात न लिखते तो इनके अविद्यारूप ग्रंथों को वेदादि शास्त्र देख सुन स
त्याऽसत्य जान कर इनके पोकल ग्रंथों को छोड़ देते परन्तु ऐसा जकड़ कर इन अविद्वानों
को बांधा है कि इस जाल से कोई एक बुद्धिमान सत्संगी चाहे छूट सके तो संभव है परन्तु
अन्य जड़बुद्धियों का छूटना तो अति कठिन है ॥ मूल— जं साजेणेहिं भणियं सुयव
वहारं विसोहियं तस्स। जायइ विसुद्ध बोही जिण आणा राहगत्ताओ ॥ प्रक॰
भा॰ २ षष्ठी॰ सू॰ १३८ ॥ सं॰ अर्थ— जो जिनाचार्यों ने कहे सूत्र निरुक्ति वृत्ति भाष्य चू
र्णि मानते हैं वे ही शुभ व्यवहार और दुःसह व्यवहार के करने से चारित्रयुक्त होकर सुखों
को प्राप्त होता है अन्यमत के ग्रंथ देखने से नहीं [illegible] अत्यन्त भूखे मरने आदि कष्ट सहने
को चारित्र कहते हैं जो भूखा प्यासा मरना आदि ही चारित्र है तो बहुत से मनुष्य अकाल
वा जिनको अन्न आदि नहीं मिलते भूखे मरते हैं वे शुद्ध होकर शुभ फलों को प्राप्त होने चाहि
ये सो न ये शुद्ध होवें और न [illegible] किन्तु पित्तादि के प्रकोप से रोगी होकर सुख के बदले
दुःख को प्राप्त होते हैं धर्म तो सत्यभाषणादि न्यायाचरण ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि है
और असत्यभाषण अन्याया [illegible] पाप है और सब से प्रीतिपूर्वक परोपका
रार्थ वर्तना शुभ चरित्र कहाता [illegible] भूखा प्यासा रहना आदि धर्म नहीं
इन सूत्रादि को मानने से थोड़ा सा [illegible] एक झूठ को प्राप्त होकर दुःखसागर में
डूबते हैं ॥ मूल— जइ जाणसि जिणनाहो लोयायारो विपरकओ भूओ। ता तं तं म
न्नंतो कह मन्नसि लोअआयारं ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्ठी॰ सू॰ १४८ ॥ सं॰ अर्थ—

जो उत्तम प्रारब्धवान् मनुष्य होते हैं वेही जिनधर्म का ग्रहण करते हैं अर्थात् जो जिनधर्म का ग्रहण नहीं करते उनका प्रारब्ध नष्ट है ॥ १४८ ॥ समीक्षक — क्या यह बात मूर्खता की और झूठ नहीं है क्या अन्य मत में श्रेष्ठ प्रारब्धी और जैनमत में नष्ट प्रारब्धी कोई भी नहीं है और जो यह कहा कि साधर्मी अर्थात् जैनधर्म वाले आपस में क्लेश न करें किन्तु प्रीति पूर्वक वर्तें इससे यह बात सिद्ध होती है कि दूसरे के साथ कलह करने में बुराई जैन लोग नहीं मानते यह भी इनकी बात अयुक्त है क्योंकि सज्जन पुरुष सज्जनों के साथ प्रेम और दुष्टों को शिक्षा देकर सुशिक्षित करते हैं और जो यह लिखा कि ब्राह्मण त्रिदण्डी परिव्राजकाचार्य अर्थात् संन्यासी और तापसादि अर्थात् वैरागी आदि सब जैनमत के शत्रु हैं अब देखिये कि सब को शत्रु भाव से देखते और निन्दा करते हैं तो जैनियों की दया और क्षमारूप धर्म कहां रहा क्योंकि जब दूसरे पर द्वेष रखना दया क्षमा का नाश और इसके समान कोई दूसरा हिंसारूप दोष नहीं, वैसे दूसरे थोड़े ही होंगे ॥ मूल॰ ऋषभदेव से लेके महावीर पर्यन्त २४ तीर्थंकरों को रागी द्वेषी मिथ्यात्वी कहें और जैनमत मानने वालों को सन्निपात ज्वर से फसे हुए मानें और उनका धर्म नरक और विष के समान समझें तो जैनियों को कितना बुरा लगेगा इसलिये जैनी लोग निन्दा और परमत द्वेषरूप नरक में डूबकर महाक्लेश भोग रहे हैं ॥ मूल — एगोअ गुरु एगोवि सावगो चेइआणि विवहाणि । तत्थयजं जिणदव्वं परुप्परं तं न विच्चन्ति ॥ प्रक॰ भा॰ २ षष्ठी॰ सू॰ १५० ॥ सं॰ अर्थ — सब श्रावकों के देव गुरु धर्म एक है चैत्यवंदन अर्थात् जिन प्रतिबिंब मूर्ति देवल और जिनद्रव्य की रक्षा और मूर्ति की पूजा करना धर्म है । समीक्षक — अब देखो जितना मूर्ति पूजा का झगड़ा चला है वह सब जैनियों के घर से और पाखंडों का मूल भी जैन मत है ॥ श्राद्ध दिन कृत्य पृष्ठ १ में मूर्ति पूजा के प्रमाण ॥ नवकारेण विबोहो ॥ १ ॥ जोगो ॥ ४ ॥ चियवंदणागो ॥ ५ ॥ पच्चक्खाणं तु विहिपुव्वं ॥ ६ ॥ इत्यादि श्रावकों को पहिले द्वार में नवकार का जप कर जागना । १ दूसरा नवकार जपे पीछे मैं श्रावक हूं याद करना । २ । तीसरे अणुव्रतादिक हमारे कितने हैं । ३ । चौथे द्वार चार वर्ग में अग्रगामी मोक्ष है उसका कारण ज्ञानादिक है सो योग उसका सब अतीचार निर्मल करने से छः आवश्यक कारण सो भी उपचार से योग कहाता है सो योग कहेंगे । ४ । पांचवें चैत्यवन्दन अर्थात् मूर्ति को नमस्कार द्रव्य भाव पूजा करेंगे । ५ । छठा प्रत्याख्यान द्वार नवकारसी प्रमुख विधिपूर्वक करना इत्यादि ६ ॥ और इसी ग्रंथ में आगे २ बहुत सी विधि लिखी है अर्थात् संध्या के भोजन समय में जिन बिंब अर्थात् तीर्थंकरों की मूर्ति पूजना और द्वार पूजा में बड़े २ बखेड़े हैं मंदिर बनाने के नियम पुराने मंदिरों को बनवाने और सुधारने से मुक्ति होजाती है मंदिर में इस प्रकार जाकर बैठे बड़े भाव प्रीति से पूजा करे (नमो जिनेंद्रेभ्यः) इत्यादि मंत्रों से स्नानादि कराना, और (जल चंदन पुष्प धूप दीप नैः) इत्यादि से गंधादिक चढ़ावें । रत्नसार भाग के १२ वें पृष्ठ में मूर्ति पूजा का फल यह लिखा है कि पुजारी को राजा वा प्रजा कोई भी न रोक सके । समीक्षक — ये बातें सब कपोल कल्पित हैं क्योंकि बहुत से जैन पुजारियों को राजादि रोकते हैं । रत्नसार॰ पृष्ठ १३ में लिखा है मूर्ति पूजा से रोग पीड़ा और महादोष

होंगे

है

जैसे द्वेष मूर्तियां जैनियों ने लगाई हैं

इस बात को छोड़ देते तो बहुत अच्छा होता

ॐ णमो आयरियाणं ॥ ४ ॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ५ ॥

छूट जाते हैं एक किसी ने ५ कौड़ी का फूल चढ़ाया उसने देश का राज पाया, इत्यादि (उसका नाम कुमारपाल था।)
सब बातें झूठी और मूर्खों को लुभाने की हैं क्योंकि अनेक जैनी लोग पूजा करते २ रोगी रह
ते हैं और एक बीघा का भी राज पाया नहीं मूर्त्ति पूजा से नहीं मिलता और जो पांच कौड़ी
का फूल चढ़ाने से राज मिले तो पांच २ कौड़ी के फूल चढ़ा के सब भूगोल का राज क्यों न
हीं कर लेते और राजदंड क्यों भोगते हैं और जो मूर्त्ति पूजा करके भवसागर से तर जाते
हों तो ज्ञान सम्यग्दर्शन और चारित्र क्यों करते हो रत्नसार भाग पृष्ठ १३ में लिखा है कि गो
तम के अंगूठे में अमृत और उसके स्मरण से मनवांछित फल पाता है। समीक्षक —
जो ऐसा हो तो सब जैनी लोग अमर हो जाने चाहिये सो नहीं होते इससे यह इनकी केवल
मूर्खों के बहकाने की बातें हैं दूसरा इसमें कुछ भी तत्त्व नहीं इनकी पूजा करने का श्लोक —
रत्नसार भा० पृष्ठ ५२ में। जलचंदनधूपनैरथ दीपाक्षतकैर्निवेद्यवस्त्रैः। उ
पचारवरैर्जिनेन्द्रान् रुचिरैरद्य यजामहे॥ अर्थ — हम जल चंदन चावल पुष्प
धूप दीप नैवेद्य वस्त्र और अतिश्रेष्ठ उपचारों से जिनेन्द्र अर्थात् तीर्थंकरों की पूजा
करें। इसी से हम कहते हैं कि मूर्त्ति पूजा जैनियों से चली है। विवेकसार पृष्ठ २१ जिन
मंदिर में मोह नहीं आता और भवसागर के पार उतारने वाला है। विवेकसार पृष्ठ ५१ —
पर मूर्त्ति पूजा से मुक्ति होती है और जिन मंदिर में जाने से सद्गुण आते हैं जो जल चंदना
दि से तीर्थंकरों की पूजा करे वह नरक से छूट स्वर्ग को जाय। विवेकसा० पृष्ठ० ५५ जिनमं
दिर में ऋषभदेवादि की मूर्त्तियों के पूजने से धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि होती है।
विवेकसा० पृष्ठ ०६१ जिनमूर्त्तियों की पूजा करें तो सब जगत् के क्लेश छूट जायें। समीक्षक —
अब देखो इनकी अविद्यायुक्त असंभव बातें जो इस प्रकार से पापादि बुरे कर्म छूट जायें
मोह न आवे भवसागर से पार उतर जायें सद्गुण आ जायें नरक को छोड़ स्वर्ग में जायें,
धर्मार्थ काम मोक्ष को प्राप्त होवें और सब क्लेश छूट जायें तो सब जैनी लोग सुखी और सब
पदार्थों की सिद्धि को प्राप्त क्यों नहीं होते। इसी विवेकसार के ३ पृष्ठ में लिखा है कि जिन्होंने
जिन मूर्त्ति का स्थापन किया है उन्होंने अपनी और अपने कुटुम्ब की जीविका खड़ी की है।
विवेकसा० पृष्ठ० २२५ शिव विष्णु आदि की मूर्त्तियों की पूजा करनी बहुत बुरी है अर्थात्
नरक का साधन है। समीक्षक — भला जब शिवादि की मूर्त्तियां नरक के साधन हैं तो जै
नियों की मूर्त्तियां क्या वैसी नहीं जो कहें कि हमारी मूर्त्तियां त्यागी ~~शान्त~~
शान्त और शुभमुद्रायुक्त हैं इसलिये अच्छी और शिवादि की मूर्त्ति वैसी नहीं इसलि
ये बुरी हैं इनसे कहना चाहिये कि तुम्हारी मूर्त्तियां तो लाखों रुपयों के मंदिर में रह
ती हैं और चन्दन केशरादि चढ़ता है पुनः त्यागी कैसी और शिवादि की मूर्त्तियां तो वि
ना छाया के भी रहती हैं वे त्यागी क्यों नहीं और जो शान्त कहो तो जड़ पदार्थ सब नि
श्चल होने से शान्त हैं। (प्रश्न) हमारी मूर्त्तियें वस्त्र आभूषणादि धारण नहीं करतीं
इसलिये ~~[illegible]~~ अच्छी हैं (उत्तर) सबके सामने नंगी मूर्त्तियों का रहना और
रखना पशुवत् लीला है (प्रश्न) जैसे स्त्री का चित्र वा मूर्त्ति देखने से कामोत्पत्ति होती है
वैसे साधु और योगियों की मूर्त्तियों को देखने से शुभगुण प्राप्त होते हैं। (उत्तर) —

(सब मतों की मूर्ति पूजा व्यर्थ है)

जो पाषाणमूर्त्तियों के देखने से शुभ परिणाम मानते हो तो उसके जड़त्वादि गुण भी तुम्हारे में आ जायेंगे जब जड़ बुद्धि होंगे तो सर्वथा नष्ट हो जाओगे दूसरा उत्तम जो विद्वान् उनके संग सेवा छूटने से मूढ़ता भी अधिक होगी और जो २ दोष ग्यारहवें समुल्लास में लिखे हैं वे सब पाषाणादि मूर्त्ति पूजा करने वालों को लगते हैं इसलिये जैसा जैनियों ने मूर्त्ति पूजा में झूठा कोलाहल चलाया है वैसे इनके मन्त्रों में भी बहुत सी असंभव बातें लिखी हैं यह इनका मन्त्र है। रत्नसार भाग पृ० १ में (नमो अरिहन्ताणं नमो लोए सव्वसाहूणं एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवै मंगलम् ॥ १ ॥ इस मन्त्र का बड़ा महात्म्य लिखा है और सब जैनियों का यह गुरुमन्त्र है ॥ इसका ऐसा महात्म्य धरा है कि तन्त्र पुराण भाटों की कथा को भी पराजय कर दिया है ॥ श्राद्धदिनकृत्य पृष्ठ ३ नमुक्कार तउ पढे ॥ ९ ॥ जउ कव्वं मंताण मन्तो परमो इमुत्ति। धेयाण धेयं परमं इमुत्ति। तत्ताण तत्तं परमं पवित्तं। संसार सत्ताण दुहाहयाणं ॥ १० ॥ ताणं अन्नं तु नो अत्थि। जीवाणं भवसायरे ॥ बुडुंताणं इमं मुत्तुं। नमुक्कारं सुपोययम् ॥ ११ ॥ कव्वं अणेग जम्मंतर संचिआणं दुहाणं सारीरिअ माणुसाणं कत्तोय भव्वाण भविज्ज नासो न जाव पत्तो नवकार मंतो ॥ १२ ॥ अर्थ जो यह मन्त्र है वह पवित्र और परम मन्त्र है ध्यान के योग्य में परम ध्येय है तत्त्वों में परम तत्त्व है दुःखों से पीड़ित संसारी जीवों को नवकार मन्त्र ऐसा है ॥ १० ॥ जो यह नवकार मन्त्र है वह नौका के समान है जो इसको छोड़ देते हैं वे भव सागर में डूबते हैं और जो इसका ग्रहण करते हैं वे दुःखों से तर जाते हैं जीवों को दुःखों से पृथक् रखने वाला, सब पापों का नाशक, मुक्ति कारक, इस मन्त्र के बिना दूसरा कोई नहीं ॥ ११ ॥ अनेक भवान्तर में उत्पन्न हुआ शरीर सम्बन्धी दुःख भव्य जीवों के भव सागर से तारने वाला यही है जब तक नवकार मन्त्र नहीं पाया तब तक भवसागर से जीव न हीं तर सकता यह अर्थ सूत्र में कहा है और जो अग्नि प्रमुख अष्ट महाभयों में एक नवकार मन्त्र को छोड़कर कोई नहीं जैसे महारत्न वैडूर्य नामक मणि ग्रहण करने में आवे अथवा शत्रुभय में अमोघ शस्त्र के ग्रहण करने में आवे वैसे श्रुत केवली का ग्रहण करे और सब द्वादशांगी का नवकार मन्त्र रहस्य है। (तत्त्वविवेक पृष्ठ १६८ जो मनुष्य लकड़ी पत्थर को देव बुद्धि कर पूजता है वह अच्छे फलों को प्राप्त होता है। समीक्षक— जो ऐसा हो तो सब कोई दर्शन करके सुखरूप फलों को प्राप्त क्यों नहीं होते। (रत्नसार भाग० पृष्ठ १०) पार्श्वनाथ की मूर्त्ति के दर्शन से पाप नष्ट हो जाते हैं। (कल्प भाष्य पृष्ठ ५१) में लिखा है कि सवा लाख मन्दिरों का जीर्णोद्धार किया इत्यादि मूर्त्ति पूजा विषय में इनका बहुत सा लेख है इसी से समझा जाता है कि मूर्त्ति पूजा का मूल कारण जैन मत है। अब इन जैनियों के साधुओं की लीला देखिये (विवेकसार० पृष्ठ २२८ एक जैन मत का साधु कोशा वेश्या से भोग करके पश्चात् त्यागी होकर स्वर्गलोक को गया। (विवेकसार पृष्ठ १०) अर्णक मुनि चारित्र से चूक कर कई वर्ष पर्यन्त दत्त सेठ के घर में विषय भोग करके पश्चात् देवलोक को गया। श्रीकृष्ण के

नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं

कि जैसी समुद्र के पार उतारने की नौका होती है

दूसरा

(नमो अरिहन्ताणं) सब अरिहन्तों को नमस्कार (नमो सिद्धाणं) जैनमत के सब सिद्धों को नमस्कार (नमो आयरियाणं) जैनमत के सब आचार्यों को नमस्कार। (नमो उवज्झायाणं) जैनमत के सब उपाध्यायों को नमस्कार। (नमो लोए सव्वसाहूणं) जितने

पुत्र ढंढणा मुनिको स्यालियाने खाया पश्चात् देवता हुआ। (विवेकसार पृष्ठ १५६- जैनमत का साधु लिंगधारी अर्थात् वेशधारी मात्र हो तो भी उनका सत्कार श्रावक लोग करें चाहें साधु शुद्धचरित्र हो चाहें अशुद्धचरित्र सब पूजनीय हैं। (विवेकसार पृष्ठ १६८- जैनमत का साधु चरित्रहीन हो तो भी अन्यमत के साधुओं से श्रेष्ठ है (विवेकसार पृष्ठ १७१) श्रावक लोग जैन के साधुओं को चरित्ररहित भ्रष्टाचारी देखें तो भी उनकी सेवा करनी चाहिये (विवेकसार पृष्ठ २१६) एक चोर ने पांच मूठी लोंच कर चारित्र्य ग्रहण किया बड़ा कष्ट और पश्चात्ताप किया छः महीने में केवलज्ञान पाके सिद्ध होगया। समीक्षक- अब देखिये इनके साधु और गृहस्थों की लीला इनके मत में बहुत कुकर्म करनेवाला साधु भी सद्गति को गये और (विवेकसार पृष्ठ १०६) में लिखा है कि श्रीकृष्ण तीसरे नरक में गया (विवेकसार पृष्ठ १४५) में लिखा है कि धन्वन्तरी नरक में गया (विवेकसार पृष्ठ ४८) में जोगी, जंगम, काजी, मुल्ला, कितने ही अज्ञान से तप कष्ट कर के भी कुगति को पाते हैं (रत्नसार भा० पृष्ठ १७१) में लिखा है कि नव वासुदेव अर्थात् त्रिपृष्ठ वासुदेव, द्विपृष्ठ वासुदेव, स्वयंभू वासुदेव, पुरुषोत्तम वासुदेव, सिंहपुरुष वासुदेव, पुरुषपुंडरीक वासुदेव, दत्त वासुदेव, और लक्ष्मण वासुदेव ९ श्रीकृष्ण वासुदेव ये ग्यारहवें बारहवें चौदहवें पंद्रहवें अठारहवें वीसवें और बाईसवें तीर्थंकरों के समय में नरक को गये और नव प्रतिवासुदेव अर्थात् अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव, तारक प्रतिवासुदेव, मोदक प्रति वासुदेव, मधु प्रतिवासुदेव, निशुंभ प्रतिवासुदेव, बली प्रतिवासुदेव, प्रहलाद प्रतिवासुदेव, रावण प्रतिवासुदेव और जरासिंधु प्रतिवासुदेव, ये भी सब नरक को गये और कल्पभाष्य में लिखा है कि ऋषभदेव से लेके महावीर पर्यन्त २४ तीर्थंकर सब मोक्ष को प्राप्त हुए (समीक्षक) भला कोई बुद्धिमान् पुरुष विचारे कि इनके साधु गृहस्थ और तीर्थंकर जिनमें बहुत से वेश्यागामी परस्त्रीगामी चोर आदि सब जैनमतस्थ स्वर्ग और मुक्ति को गये और श्रीकृष्णादि महाधर्मात्मा महात्मा सब नरक को गये यह कितनी बड़ी बुरी बात है प्रत्युत विचार के देखें तो अच्छे पुरुष को जैनियों का संग करना वा उनको देखना भी बुरा है क्योंकि जो इनका संग करें तो ऐसी ही झूठी २ बातें उसके भी हृदय में स्थित हो जायेंगी[1] हां जो जैनियों में उत्तम जन हैं उनसे सत्संगादि करने में कुछ भी दोष नहीं। (विवेकसार पृष्ठ ५५) में लिखा है कि गंगादि तीर्थ और काशी आदि क्षेत्रों के सेवने से कुछ भी परमार्थ सिद्ध नहीं होता और अपने गिरनार पालीटाणा और आबू आदि तीर्थ और क्षेत्र मुक्तिपर्यन्त के देनेवाले लिखे हैं। समीक्षक- यहां विचारना चाहिये कि जैसे शैव वैष्णवादि के तीर्थ और क्षेत्र जल स्थल जड़स्वरूप हैं वैसे जैनियों के भी हैं इनमें से एक की निन्दा और दूसरे की स्तुति करना मूर्खता का काम है ॥ अब इनकी मुक्ति का थोड़ा सा वर्णन करते हैं रत्नसार भा० पृष्ठ २३ महावीर तीर्थंकर गोतम जी से कहते हैं कि ऊर्ध्वलोक में एक सिद्धशिला स्थान है स्वर्गपुरी के ऊपर पैंतालीस लाख योजन लंबी और

[1] जो उत्तम जन न होगा वह इस प्रकार जैनमत में कभी न रहेगा।

क्योंकि इन का हाहीं बुरा यही कवों के संग से सिवाय बुराइयों के अन्य कुछ भी पल्ले न पड़ेगा।

उतनीही पोली है तथा ८ योजन मोटी है, जैसे मोती का स्वेत हार वा गोदुग्ध है उससे भी
उजली है सोने के समान प्रकाशमान और स्फटिक से भी निर्मल है और उस शिलासिला
के ऊपर शिवपुर धाम उसमें भी मुक्तपुरुष अधर रहते हैं वहां जन्म मरणादि कोई दोष
नहीं और आनन्द करते रहते हैं पुनःजन्म मरण में नहीं आते सब कर्मों से छूट जाते हैं यह
जैनियों की मुक्ति है। (समीक्षक) – विचारना चाहिये कि जैसे अन्य मत में वैकुण्ठ, कैलाश,
गोलोक, श्रीपुर आदि पुराणी। चौथे आसमान में ईसाई। सातवें आसमान में मुसलमा
नों के मत में मुक्ति के स्थान लिखे हैं वैसी ही जैनियों की सिद्धशिला और शिवपुर भी है।
क्योंकि जिसको जैनी लोग ऊंचा मानते हैं वही नीचे वाले जो कि हमसे भूगोल के नीचे रहते हैं
उनकी अपेक्षा से नीचा है ऊंचा नीचा व्यवस्थित पदार्थ नहीं है जो आर्य्यावर्त्त वासी जैनी लोग
ऊंचा मानते हैं उसी को अमेरिका वाले नीचा मानते हैं और आर्य्यावर्त्तवासी जिसको
नीचा मानते हैं उसी को अमेरिका वाले ऊंचा मानते हैं चाहें वह शिला पैंतालीस लाख से
दूनी बीस लाख कोश की होती तो भी वे मुक्त बंधन में हैं क्योंकि उस शिला वा शिवपुर के
बाहर निकलने से उनकी मुक्ति छूट जाती होगी। और सदा उसमें रहने की प्रीति और उस
से बाहर जाने में अप्रीति भी रहती होगी जहां अटकाव प्रीति और अप्रीति है उसको मु
क्ति क्योंकर कह सकते हैं मुक्ति तो जैसी नवमे समुल्लास में वर्णन कर आये हैं वैसी
माननी ठीक है। और यह जैनियों की मुक्ति भी एक प्रकार का बंधन है। अब और थोड़ी
सी असंभव बातें इनकी सुनो – विवेकसार पृष्ठ ७८ एक करोड़ साठ लाख कल
शों से महावीर को जन्म समय में स्नान कराया। विवेक० पृष्ठ० १३६ दशार्ण राजा
महावीर के दर्शन को गया वहां कुछ अभिमान किया उसके निवारण के लिये –
१६,७७,७२,१६,००० इतने इन्द्र के स्वरूप और १३,३७०,५७,२८००००००००० इतनी इन्द्रा
णी वहां आई थीं देखकर राजा आश्चर्य हो गया। (समीक्षक) – अब विचारना चाहि
ये कि इन्द्र और इन्द्राणियों के खड़े रहने के लिये ऐसे २ कितने ही भूगोल चाहिये। श्राद्धदिनकृत्य
आत्मनिंदा भावना पृष्ठ ३१ में लिखा है कि बावड़ी कुआ और तलाव न बनवाना।
(समीक्षक) – भला जो सब मनुष्य जैन मत में हो जायें और कुआ तलाव बावड़ी आ
दि कोई भी न बनवावें तो सब लोग जल कहां से पियें। (प्रश्न) तलाव आदि बनवाने
से जीव पड़ते हैं उससे बनवाने वाले को पाप लगता है इसलिये हम जैनी लोग इस
काम को नहीं करते। (उत्तर) तुम्हारी बुद्धि नष्ट क्यों हो गई क्योंकि जैसे क्षुद्र २ जीवों
के मरने से पाप गिनते हो तो बड़े २ गाय आदि पशु और मनुष्य आदि प्राणियों के जल
पीने आदि से महापुण्य होगा उसको क्यों नहीं गिनते। तत्त्वविवेक पृष्ठ १९६ इस
नगरी में एक नन्दमणिकार सेठ ने बावड़ी बनवाई उससे धर्मभ्रष्ट होकर सोलह
महारोग हुए, मरके उसी बावड़ी में मेंडुका हुआ, महावीर के दर्शन से उसको जाति
स्मरण हो गया, महावीर कहते हैं कि मेरा आना सुनकर वह पूर्व जन्म के धर्माचा
र्य जान वंदना को आने लगा, मार्ग में श्रेणिक के घोड़े की टाप से मरकर शुभ ध्यान
के योग से दर्दुरांक नाम महर्द्धिक देवता हुआ अवधि ज्ञान से मुझको यहां आया

[Margin notes: है वह सिद्धशिला १४ चौदह वें लोक की शिखा पर है। — यह जैनी भी मुक्ति विषय में भ्रम से फंसे हैं। यह सच है कि विना वेदों के यथार्थ अर्थ बोध के मुक्ति के स्वरूप को कोई भी नहीं जान सकते। — खड़े रहने के — बापे]

न वंदना पूर्वक आंकुदि लगाके गया। समीक्षक — इत्यादि विद्याविरुद्ध असंभव मिथ्या
त के कहनेवाले महावीर को सर्वोत्तम मानना महाभ्रान्तिकी बात है। श्राद्धदिनकृत्य० पृष्ठ ३
३६ "मृतक वस्त्र साधू लेलेवें। समीक्ष० — देखिये इनके साधु भी महा आग्रहीके समा
भ होगये वस्त्र तो साधू लेवें परन्तु मृतकके आभूषण कोन लेवे बहुमूल्य होनेसे घरमें
रखलेते होंगे"। रत्नसार० पृष्ठ १०५ भूंजना कूटना पीसना अन्न पकाने आदिमें पापहो ५
ताहै। समीक्षक — अब देखिये इनकी विद्याहीनता भला ये कर्म न किये जायें तो मनुष्या
दि प्राणी कैसे जीसकें और जैनीलोग भी पीड़ित होकर मरजायें। रत्नसार० पृष्ठ १०४
बागीचा लगानेसे एक लक्ष पाप माली को लगता है। समीक्षक — जो माली को लक्ष पा
प लगता है तो अनेकजीव पुष्प फल फूल और छाया से आनंदित होते हैं तो करोड़ों गुणा
पुण्य भी होता ही है इसपर कुछ ध्यान भी न दिया यह कितना अंधेर है। तत्त्वविवेक
पृष्ठ २०२ एकदिन लब्धि साधू भूलसे वेश्या के घरमें चलागया और धर्मसे भिक्षा मांगी
वेश्या बोली कि यहां धर्मका काम नहीं किन्तु अर्थका काम है तो उस लब्धिसाधूने साढ़े
बारह लाख असर्फी वर्षा उसके घरमें करदी। समीक्षक — इसबातको सत्यविनाना
ष्ट बुद्धि पुरुषके कौन मानेगा। रत्नसार भाग पृष्ठ ६७ में लिखाहै कि एक पाषाण
की मूर्ति घोड़े पर चढ़ी हुई उसका जहां स्मरण करें वहां उपस्थित होके रक्षा करती
है। समीक्षक — कहो जैनीजी आजकल तुम्हारे यहां चोरी डांका आदि और शत्रुसे
भय होता ही है तो तुम उसका स्मरण करके अपनी रक्षा क्यों नहीं करालेते हो क्यों जहां
तहां पुलिसमें मारे २ फिरते हो। अब इनके साधुओंके लक्षण — सरजोहरणभै
क्ष्यभुजो लुंचितमूर्द्धजाः। श्वेताम्बराः क्षमाशीला निःसंगा जैनसाधवः॥ १॥ लुंचि
ताः पिच्छिकाहस्ताः पाणिपात्रा दिगंबराः। ऊर्ध्वाशिनो गृहे दातुर्द्वितीयाः स्युर्जिनर्षयः॥
२॥ भुंक्ते न केवलं न स्त्री मोक्षमेति दिगंबरः। प्राहुरेषामयं भेदो महान् श्वेताम्बरैः सह॥
३॥ जैनके साधुओंके लक्षणार्थ जिनदत्तसूरिने इन श्लोकों से कहे हैं —
सरजोहरण चमरी रखना और भिक्षा मांगके खाना शिरके बाल लुंचितकर देना श्वे
त वस्त्र धारण करना क्षमायुक्त किसीका संग न करना ऐसे लक्षणयुक्त जैनियों के श्वेतांबर
जिनको जती कहते हैं दूसरे दिगंबर अर्थात् वस्त्रधारण न करना शिरके बाल उखाड़डा
लना पिच्छिका एक ऊन के सूतोंका झाड़ू लगाने का साधन बगलमें रखना जो कोई भि
क्षा देतो हाथमें लेकर खालेना ये दिगंबर दूसरे प्रकारके साधू होते हैं और भिक्षा देने
वाले गृहस्थ जब भोजन कर चुके उसके पश्चात् भोजन करें वे जिनर्षि अर्थात् तीसरे
प्रकारके साधू होते हैं दिगंबरोंका श्वेतांबरोंके साथ इतना ही भेद है कि दिगंबर लो
ग स्त्रीका संसर्ग नहीं करते और श्वेतांबर करते हैं इत्यादि बातोंसे मोक्षको प्राप्त हो
ते हैं यह इनके साधुओंका भेद है। इससे जैन लोगोंका केशलुंचन सर्वत्र प्रसिद्ध है
और पांच मुष्टि लुंचन करना इत्यादि भी लिखा है। विवेकसार भा० पृष्ठ २१६ में
लिखा है कि पांचमुष्टि लुंचन कर चारित्र ग्रहण किया अर्थात् पांच मूठी शिर के बा
ल उखाड़के साधु हुआ। कल्पसूत्रभाष्य पृष्ठ १०८ केशलुंचन करें गौ के बालोंके

तुल्यार करें (सभी) सक० अब कहिये जैनलोगो तुम्हारा दया धर्म कहां रहा क्या यह हिंसा अथवा
न चाहें अपने हाथ से लुंचन करे चाहें उसका गुरु करे वा अन्य कोई परन्तु कितना बड़ा कष्ट उ
स जीव को होता होगा जीव को कष्ट देना ही हिंसा कहाती है । विवेकसा० पृष्ठ सम्वत् १५
३३ के साल में श्वेताम्बरों में में से ढूंढिया और ढूंढियों में से तेरहपंथी आदि ढोंगी निकले हैं ४
ढूंढिये लोग पाषाणादि मूर्त्ति को नहीं मानते और वे भोजन स्नान को छोड़ सर्वदा मुख पर
पट्टी बांधे रहते हैं और जती आदि भी जब पुस्तक बांचते हैं तभी मुख पर पट्टी बांधते
हैं अन्य समय नहीं । (प्रश्न) मुख पर पट्टी अवश्य बांधना चाहिये क्योंकि (वायुकाय) अर्था
त् जो वायु में सूक्ष्म शरीर वाले जीव रहते हैं वे मुख के बाफ की गर्मी से मरते हैं और उसका ८
पाप मुख पर पट्टी न बांधने वाले पर होता है इसीलिये हम लोग मुख पर पट्टी बांधना अ
च्छा समझते हैं । (उत्तर) यह बात विद्या और प्रत्यक्षादि प्रमाणादि की रीति से अयुक्त
है क्योंकि जीव अजर अमर हैं फिर वे मुख की बाफ से कभी नहीं मर सकते इनको तुम भी ॥
अजर अमर मानते हो । (प्रश्न) जीव तो नहीं मरता परन्तु जो मुख के उष्ण वायु से उनको
पीड़ा पहुंचती है उस पीड़ा पहुंचाने वाले को पाप होता है इसीलिये मुख पर पट्टी बांधना
अच्छा है । (उत्तर) यह भी तुम्हारी बात सर्वथा असंभव है क्योंकि पीड़ा दिये विना किसी जी
व का किंचित् भी निर्वाह नहीं हो सकता जब मुख के वायु से तुम्हारे मत में जीवों को पीड़ा पहुंचती है तो चल
ने फिरने बैठने हाथ उठाने और नेत्रादि के चलाने में भी पीड़ा अवश्य पहुंचती होगी इस
लिये तुम भी जीवों को पीड़ा पहुंचाने से पृथक् नहीं रह सकते । (प्रश्न) हां जब तक बन स
के वहां तक जीवों की रक्षा करनी चाहिये और जहां हम नहीं बचा सकते वहां अशक्त हैं क्यों
कि सब वायु आदि पदार्थों में जीव भरे हुए हैं जो हम मुख पर कपड़ा न बांधें तो बहुत
जीव मरें कपड़ा बांधने से कम मरते हैं । (उत्तर) यह भी तुम्हारा कथन युक्ति शून्य है
क्योंकि कपड़ा बांधने से जीवों को अधिक दुःख पहुंचता है जब कोई मुख पर कपड़ा
बांधे तो उसका मुख का वायु रुक के नीचे वा बगल और मौन समय में नासिका द्वारा इक
ट्ठा होकर वेग से निकलता है उससे उष्णता अधिक होकर जीवों को विशेष पीड़ा तुम्हा
रे मतानुसार पहुंचती होगी देखो जैसे घर वा कोठरी के सब दरवाजे बंध किये वा पड़
दे डाले जायें तो उसमें उष्णता विशेष होती है खुला रखने से उतनी नहीं होती वैसे
मुख पर कपड़ा बांधने से गर्मी अधिक होती है और खुला रखने से कम वैसे तुम अपने
मतानुसार जीवों को अधिक दुःखदायक हो और जब मुख बंध किया जाता है तब नासि
का के छिद्रों से वायु रुक इकट्ठा होकर वेग से निकलता हुआ जीवों को अधिक धक्का और पीड़ा
करता होगा । देखो जैसे कोई मनुष्य अग्नि को मुख से फूंकता और कोई नली से तो मुख का
वायु फैलने से कम बल और नली का वायु अधिक बल से अग्नि में लगता है वैसे ही मु
ख पर पट्टी बांध कर वायु को रोकने से नासिका द्वारा अति वेग से निकल कर जी
वों को अधिक दुःख देता है इससे मुख पट्टी बांधने वालों से नहीं बांधने वाले धर्मात्मा हैं
और मुख पर पट्टी बांधने से अक्षरों का यथायोग्य स्थान प्रयत्न के साथ उ
च्चारण भी नहीं होता निरनुनासिक अक्षरों को सानुनासिक बोलने से तुमको दोष

लगता है तथा मुखपट्टी बांधने से दुर्गंध भी अधिक बढ़ता है क्योंकि शरीर के भीतर दुर्गं-
ध अधिक भरा है शरीर से जितना वायु निकलता है वह दुर्गंधयुक्त प्रत्यक्ष है जो वह
रोका जाय तो दुर्गंध भी अधिक बढ़ जाय जैसा कि बंध (जाजरूर) अधिक दुर्गंधयुक्त
और खुला हुआ न्यून दुर्गंधयुक्त होता है वैसे ही मुखपट्टी बांधने दंतधावन मुखप्र-
क्षालन स्नान अच्छे प्रकार वस्त्र न धोने से तुम्हारे शरीरों से अधिक दुर्गंध उत्पन्न हो
कर संसार में बहुत रोग करके जीवों को जितनी पीड़ा पहुंचाते हैं उतना पाप तुमको अ-
धिक होता है जैसे मेला आदि में अधिक दुर्गंध होने से (विसूचिका) अर्थात् हैजा आदि बहुत प्र-
कार के रोग उत्पन्न होकर जीवों को दुःखदायक होते हैं और न्यून दुर्गंध होने से रोग भी न्यून होकर जीवों को
बहुत दुःख नहीं पहुंचता इससे तुम अधिक दुर्गंध बढ़ाने में अधिक अपराधी और जो मुखपट्टी नहीं बां-
धते दंतधावन मुखप्रक्षालन स्नान करके स्थान वस्त्रों को शुद्ध रखते हैं वे तुमसे बहुत अच्छे हैं जैसे
अन्त्यजों की दुर्गंध के सहवास से बहुत अच्छे हैं जैसे अन्त्यजों की दुर्गंध के सहवास से निर्मल बुद्धि न
हीं होती वैसे तुम और तुम्हारे संगियों की भी बुद्धि नहीं बढ़ती जैसे रोग और बुद्धि स्वल्प होने से धर्मानु-
ष्ठान की बाधा होती है वैसे ही दुर्गन्धयुक्त तुम्हारा और तुम्हारे संगियों का भी वर्त्तमान होता है।
(प्रश्न) जैसे बन्द मकान में जलाये हुए अग्नि की ज्वाला बाहर निकल के बाहर के जीवों को दुःख नहीं प-
हुंचा सकती वैसे हम मुखपट्टी बांध के वायु को रोक कर बाहर के जीवों को न्यून दुःख पहुंचाने
वाले हैं मुखपट्टी बांधने से बाहर के वायु के जीवों को पीड़ा नहीं पहुंचती और जैसे सामने
अग्नि जलता है उसको आड़ा हाथ देने से कम लगती है और वायु के जीव शरीर वाले होने से
उनको पीड़ा अवश्य पहुंचती है (उत्तर) यह तुम्हारी बात लड़कपन की है प्रथम तो देखो जहां छि-
द्र भी और भीतर के वायु का योग बाहर के वायु के साथ न हो तो वहां अग्नि जल ही नहीं स-
कता जो इसको प्रत्यक्ष देखना चाहो तो किसी फानूस में दीप जलाकर सब छिद्र बंध करके
देखो तो दीप उसी समय बुझ जायगा जैसे पृथिवी पर रहने वाले मनुष्यादि प्राणी बाहर के वा-
यु के योग के विना नहीं जी सकते वैसे अग्नि भी नहीं जल सकता जब एक ओर से अग्नि का वे-
ग रोका जाय तो दूसरी ओर अधिक वेग से निकलेगा और हाथ की आड़ करने से मुख पर आं-
च कम लगती है परन्तु वह आंच हाथ पर अधिक लग रही है इसलिये तुम्हारी बात ठीक नहीं (प्रश्न)
इसको सब कोई जानता है कि जब किसी बड़े आदमी से छोटा मनुष्य कान में वा निकट हो-
कर बात कहता है तब मुख पर पल्ला वा हाथ लगाता है इसलिये कि मुख से थूक उड़कर वा
दुर्गंध उसको न लगे और जब पुस्तक बांचता है तब अवश्य थूक उड़कर उस पर गिरने से उ-
च्छिष्ट होकर वह बिगड़ जाता है इसलिये मुखपट्टी बांधना अच्छा है (उत्तर) इससे यह
सिद्ध हुआ कि जीवरक्षार्थ मुखपट्टी बांधना व्यर्थ है और जब कोई बड़े आदमी से बात कर-
ता है तब मुख पर हाथ वा पल्ला इसलिये रखते हैं कि उस गुप्त बात को दूसरा को-
ई न सुन लेवे क्योंकि जब कोई प्रसिद्ध बात करता है तब कोई भी मुख पर हाथ वा पल्ला नहीं ध-
रता इससे क्या विदित होता है कि गुप्त बात के लिये यह बात है दंतधावनादि न करने से तुम्हा-
रे मुखादि अवयवों से अत्यन्त दुर्गंध निकलता है और जब तुम किसी के पास वा कोई तुम्हारे
पास बैठता होगा तो विना दुर्गंध के अन्य क्या आता होगा इत्यादि मुख के आड़ा हाथ वा

~~मनुष्यों के~~ पल्ला देने के प्रयोजन अन्य बहुत हैं जैसे बहुत मनुष्यों के सामने गुप्त बात करने
में जो हाथ वा पल्ला न लगाया जाय तो दूसरों की ओर वायु के फैलने से बात भी फैल जाय जब
वे दोनों एकान्त में बात करते हैं तब मुख पर हाथ वा पल्ला ~~लगाना~~ इसलिये नहीं लगाते कि यहां
तीसरा कोई सुनने वाला नहीं जो बड़ों ही के ऊपर थूक न गिरे इससे क्या छोटों के पर थूक गिरना
चाहिये और उस थूक से बच भी नहीं सकता क्योंकि हम दूरस्थ बात करें और वायु हमारी ओर से
दूसरे की ओर जाता हो तो सूक्ष्म होकर उसके शरीर पर वायु के साथ अवश्य गिरेंगे उसका दो
ष गिनना अविद्या की बात है क्योंकि जो मुख की गर्मी से जीव मरते वा उनको पीड़ा पहुंचती हो
तो वैशाख वा ज्येष्ठ महीने में सूर्य की महा गर्मी से वायुकाय के जीवों में से मरे
बिना एक भी न बचने सो उस गर्मी से भी वे जीव नहीं मर सकते इसलिये यह तुम्हारा
सिद्धान्त झूठा है क्योंकि जो तुम्हारे तीर्थंकर भी पूर्ण विद्वान् होते तो ऐसी व्यर्थ बातें क्यों
करते देखो पीड़ा उसी जीव को पहुंचती है जिसकी वृत्ति सब अवयवों के साथ विद्यमान
हो इसमें (पंचावयवात्सुख संवित्तिः) यह सांख्यशास्त्र का सूत्र ~~है~~ है – जब पांचों इन्द्रियों का
पांच विषयों के साथ सम्बन्ध होता है तभी सुख वा दुःख की प्राप्ति जीव को होती है जैसे
बधिर को गाली प्रदान अंधे को रूप वा आगे से सर्प व्याघ्रादि भयदायक जीवों का च
ला जाना शून्य बहिरी वाले को स्पर्श पिन्नस रोग वाले को गंध और शून्य जिह्वा वाले
को रस प्राप्त नहीं हो सकता इसी प्रकार उन जीवों की भी व्यवस्था है देखो जब मनुष्य
का जीव सुषुप्ति दशा में रहता है तब उसको सुख वा दुःख की प्राप्ति कुछ भी नहीं होती
क्योंकि वह शरीर के भीतर तो है परन्तु उसका बाहर के अवयवों के साथ उस समय
सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख की प्राप्ति नहीं कर सकता और जैसे वैद्य वा आजकाल
के डाक्तर लोग नशा की वस्तु खिला वा सुंघा के रोगी पुरुष के शरीर के अवयवों को
काटते वा चीरते हैं उसको उस समय कुछ भी दुःख विदित नहीं होता वैसे वायुकाय अ
थवा अन्य स्थावर शरीर वाले जीवों को दुःख वा सुख प्राप्त कभी नहीं हो सकता जैसे मूर्छि
त प्राणी सुख दुःख को प्राप्त नहीं हो सकता वैसे वे वायुकायादि के जीव भी अत्यन्त मूर्छि
त होने से सुख दुःख को प्राप्त नहीं हो सकते फिर इनको पीड़ा से बचाने की बात सिद्ध कैसे
हो सकती है जब उनको सुख दुःख की प्राप्ति ही प्रत्यक्ष नहीं होती तो अनुमानादि यहां
कैसे युक्त हो सकते हैं (प्रश्न) जब वे जीव हैं तो उनको सुख दुःख क्यों नहीं होता होगा
(उत्तर) सुनो भोले भाइयो जब तुम सुषुप्ति में होते हो तब तुमको सुख दुःख प्राप्त क्यों न
हीं होते सुख दुःख की प्राप्ति के हेतु प्रसिद्ध सम्बन्ध है अभी हम इसका उत्तर दे आये हैं कि
नशा सुंघा के डाक्तर लोग अंगों को चीरते फाड़ते और काटते हैं जैसे उनको दुःख मालूम
नहीं देता इसी प्रकार अति मूर्छित जीवों को सुख दुःख क्योंकर प्राप्त होवें क्योंकि वहां
प्राप्ति होने का साधन कोई भी नहीं (प्रश्न) देखो निलोति अर्थात् जितने हरे शाक पात
और कंद मूल को हम लोग नहीं खाते क्योंकि निलोति में बहुत और कंदमूल में अन
न्त जीव हैं जो हम उनको खावें तो उन जीवों को मारने और पीड़ा पहुंचाने से हम लोग
पापी हो जावें (उत्तर) यह तुम्हारी बड़ी अविद्या की बात है क्योंकि हरित शाक के खाने में

जीव का मरना उन को पीड़ा पहुंचनी क्योंकर मानते हो भला जब तुम को प्रत्यक्ष नहीं दीखती
और जो दीखती है तो हम को भी दिखलाओ तुम कभी न प्रत्यक्ष देख वा हम को दिखा सको
गे जब प्रत्यक्ष नहीं तो अनुमान, उपमान, और शब्दप्रमाण भी कभी नहीं घट सकता फि
र जो हम ऊपर उत्तर दे आये हैं वह इस बात का भी उत्तर है क्योंकि जो अत्यन्त अंधकार
महासुषुप्ति और महानशा में जीव हैं इन को सुख दुःख की प्राप्ति मानना तुम्हारे तीर्थं
करों की भी भूल विदित होती है जिन्हों ने तुम को ऐसी युक्ति और विद्या विरुद्ध उपदेश किया
है भला जब घर का अन्त है तो उस में रहने वाले अनन्त क्योंकर हो सकते हैं जब कंद का
अंत हम देखते हैं तो उस में रहने वाले जीवों का अन्त क्यों नहीं इस से यह तुम्हारी बात बड़ी भू
ल की है। (प्रश्न) देखो तुम लोग बिना उष्ण किये कच्चा पानी पीते हो वह बड़ा पाप करते
हो जैसे हम उष्ण पानी पीते हैं वैसे तुम लोग भी पिया करो। (उत्तर) यह भी तुम्हारी
बात भ्रमजाल की है क्योंकि जब तुम पानी को उष्ण करते हो तब पानी के जीव सब मर
ते होंगे और उन का शरीर भी जल में रंधकर वह पानी सोंफ के अर्क के तुल्य होने से जा
नो तुम उनके शरीरों का तेजाब पीते हो इस में तुम बड़े पापी हो। और ठंढा जल पीते हैं वे
नहीं क्योंकि जब ठंढा पानी पियेंगे तब उदर में जाने से किंचित् उष्णता पाकर श्वास के
साथ वे जीव बाहर निकल जायेंगे जलकाय जीवों को सुख दुःख प्राप्त पूर्वोक्त रीति
से नहीं हो सकता पुनः इस में पाप किसी को नहीं होगा। (प्रश्न) जैसे जाठराग्नि से उष्णता पा के
जल से बाहर जीव क्यों न निकल जायेंगे (उत्तर) हां निकल तो जाते परन्तु जब तुम मुख के वायु की
गर्मी से जीव का मरना मानते हो तो जल गर्म करने से तुम्हारे मताऽनुसार जीव मर जावेंगे वा
अधिक पीड़ा पाकर निकलेंगे और उनके शरीर उस जल में रंध जायेंगे इस से तुम अधिक
होंगे वा नहीं (प्रश्न) हम अपने हाथ से गर्म जल नहीं करते और न किसी गृहस्थ को गर्म
जल करने की आज्ञा देते हैं इसलिये हम को पाप नहीं (उत्तर) जो तुम गर्म जल न लेते न
पीते तो गृहस्थ गर्म क्यों करते इस लिये उस पाप के भागी तुम ही हो वरन् अधिक पापी
हो क्योंकि जो तुम किसी एक गृहस्थ को गर्म करने को कहते तो एक ही ठिकाने गर्म होता
जब वे इस गृहस्थ भ्रम में रहते हैं कि न जाने साधु जी किस के घर को आवेंगे इसलिये
हर एक गृहस्थ अपने २ घरों में गर्म जल कर रखते हैं इस के पाप के भागी मुख्य तुम
ही हो। दूसरा अधिक काष्ठ और अग्नि के जलने जलाने से भी ऊपर लिखे प्रमाणे रसो
ई खेती और व्यापारादि में अधिक पापी और नरकगामी होते हो फिर जब तुम गर्म ज
ल कराने के मुख्य निमित्त और तुम गर्म जल के पीने और ठंढे के न पीने के उपदेश कर
ने से तुम ही मुख्य पाप के भागी हो और जो तुम्हारा उपदेश मान कर ऐसी बातें करते हैं
वे भी पापी हैं, अब देखो कि तुम बड़ी अविद्या में होने हो वा नहीं कि छोटे २ जीवों पर दया
करनी और अन्य मतवालों की निन्दा, अनुपकार करना क्या थोड़ा पाप है, जो तुम्हारे तीर्थं
करों का मत सच्चा होता तो सृष्टि में इतनी वर्षा नदियों का चलना और इतना जल क्यों उत्प
न्न ईश्वर ने किया और सूर्य को भी उत्पन्न न करता क्योंकि इन में क्रोडानक्रोड़ जी
व तुम्हारे मताऽनुसार मरते ही हैं जब वे विद्यमान थे और तुम जिन को ईश्वर मानते थे

उन्होंने दयाकर सूर्य्य का ताप और मेघको बंध क्यों न किया और पूर्वोक्त प्रकार से विना वि[?]मान प्राणियों के दुःख सुख की प्राप्ति कन्दमूलादि पदार्थों में रहने वाले जीवों को नहीं होती सर्वथा सब जीवों पर दया करना भी दुःख का कारण होती है क्योंकि जो तुम्हारे मतानुसार सब मनुष्य हो जावें चोर डाकुओं को कोई भी दण्ड न देवे तो कितना बड़ा पाप खड़ा हो जाय इसलिये दुष्टों को यथावत् दण्ड देने और श्रेष्ठों के पालन करने में दया और इससे विपरीत करने में दया क्षमा रूप धर्म का नाश है। कितने के जैनी लोग दुकान करते [?]व्यवहारों में झूठ बोलते पराया धन मारते और गरीबों को छलने आदि कुकर्म करते [?] उन के निवारण में विशेष उपदेश क्यों नहीं करते और मुखपट्टी बांधने आदि ढोंग में क्यों रहते हो जब तुम चेला चेली करते हो तब केशलुंचन और बहुत दिवस भूखे रहने में पराये वा अपने आत्मा को पीड़ा दे और पीड़ा को प्राप्त होके दूसरों को दुःख देते और आत्म हत्या अर्थात् आत्मा को दुःख देने वाले होकर हिंसक क्यों बनते हो जब हाथी घोड़े बैल ऊंट पर चढ़ने

कोमजूरी करानें

मनुष्यों में पाप जैनी लोग क्यों नहीं गिनते जब तुम्हारे चेले ऊट पटांग बातों को सत्य नहीं कर सकते तो तुम्हारे तीर्थंकर भी सत्य नहीं कर सकते जब तुम कथा बांचते हो तब मार्ग में श्रोताओं के और तुम्हारे मतानुसार जीव मरते ही होंगे इसलिये तुम इस पाप के मुख्य कारण क्यों होते हो इस थोड़े कथन से बहुत समझ लेना कि उन जल स्थल वायु के स्थावर शरीर वाले अत्यन्त मूर्छित जीवों को दुःख वा सुख कभी नहीं पहुंच[?] सकता॥ अब जैनियों की और भी थोड़ी सी असं[?] कथा लिखते हैं सुनना चाहिये और यह भी ध्यान में रखना कि अपने हाथ से साढ़े तीन हाथ का धनुष होता है और काल की संख्या जैसी पूर्व लिख आये हैं वैसी ही समझना॥

१ ऋषभदेव का शरीर ५०० (पांच सौ) धनुष लंबा और ८४[?] चौरासी लाख पूर्व का आयु। २ अजितनाथ का ४५० धनुष परिमाण का शरीर और ७२[?] बहत्तर लाख पूर्व वर्ष का आयु। ३ संभवनाथ का ४०० चार सौ धनुष परिमाण शरीर और ६०[?] साठ लाख पूर्व वर्ष का आयु। ४ अभिनन्दन का [?] ३५० साढ़े तीन सौ धनुष का शरीर और ५०[?] पचास लाख पूर्व वर्ष का आयु। ५ सुमतिनाथ का ३०० धनुष परिमाण का शरीर और ४०[?] (चालीस लाख) पूर्व वर्ष का आयु। ६ पद्मप्रभ का [?] धनुष का शरीर और ३०[?] (तीस लाख) पूर्व वर्ष का आयु। ७ पार्श्वनाथ का २०० धनुष का शरीर और २०[?] बीस लाख पूर्व वर्ष का आयु। ८ चन्द्रप्रभ का १५० धनुष परिमाण का शरीर और १०[?] (दश लाख) पूर्व वर्ष का आयु। ९ सुविधिनाथ का १०० सौ धनुष का शरीर और २[?] (दो लाख) वर्ष पूर्व का आयु। १० शीतलनाथ का ९० नब्बे धनुष का शरीर और १[?] (एक लाख) वर्ष पूर्व का आयु। ११ श्रेयांसनाथ का ८० धनुष का शरीर और ८४[?] (चौरासी लाख) वर्ष का आयु। १२ वासुपूज्य स्वामि का ७० धनुष का शरीर और ७२[?] (बहत्तर लाख) वर्ष का आयु। १३ विमलनाथ का ६० धनुष का शरीर और ६०[?] (साठ लाख) वर्षों का आयु। १४ अनन्तनाथ का ५० धनुष का शरीर और ३०[?] लाख वर्षों का आयु।—

१६०

(१५ धर्मनाथ का ४५ धनुषोंका शरीर और १०००००० (दशलाख) वर्षोंका आयु ॥ १६ शान्ति
निनाथ का ४० धनुषोंका शरीर और १०००००० (एकलाख) वर्षका आयु । १७ कुंथुना
थ का ३५ धनुषका शरीर और ९५००० हजार वर्षोंका आयु । १८ अमरनाथ का ३० धनु
षोंका शरीर और ८४००० (चौरासी हजार) वर्षोंका आयु । १९ मल्लीनाथ का २५ धनु
षोंका शरीर और ५५००० (पचपन हजार) वर्षोंका आयु । २० मुनिसुव्रत का २० धनु
षोंका शरीर और ३०००० (तीस हजार) वर्षोंका आयु । २१ नमिनाथ का १५ धनुषों
का शरीर और १०००० दश हजार वर्षोंका आयु । २२ नेमिनाथ का १० दश धनु
षोंका शरीर और १००० (एक हजार) वर्षका आयु । २३ पार्श्वनाथ का ९ हाथ
का शरीर और १०० सौ वर्षोंका आयु । २४ महावीर स्वामी का ७ हाथका शरीर और
७२ वर्षोंकी आयु ॥ ये चौवीस तीर्थंकर जैनियोंके मत चलानेवाले आचार्य और
गुरु हैं इन्हीको जैनीलोग परमेश्वर मानते हैं और ये सब मोक्षको गये हैं इसमें बुद्धि
मान लोग विचार लेवें कि इतने बडे शरीर और इतना आयु मनुष्य देहका होना कभी
संभव है. इस भूगोलमें बहुत ही थोडे मनुष्य बस सकते हैं । इन्हीं जैनियोंके ग
पोडे लेकर जो पुराणियोंने एक लाख दश हजार और एक हजार वर्षकी आयु लिखी सो भी संभ
व नहीं हो सकता तो जैनियोंका कथन संभव कैसे हो सकता है । अब और भी सुनो
कल्पभाष्य पृष्ठ ४ नागकेतने ग्रामकी बराबर एक शिला अंगुली पर धरली । कल्पभा०
पृष्ठ ३५ महावीरने अंगूठेसे पृथिवीको दबाई उससे शेषनाग कंप गया । कल्पभा०
पृष्ठ ४६ महावीरको सर्पने काटा रुधिरके बदले दूध निकला और वह सर्प ८ वें स्वर्गको
गया । कल्पभा० पृष्ठ ४७ महावीरके पग पर खीर पकाई और पग न जले । कल्पभा० पृष्ठ १६ छोटेसे
पात्रमें ऊंट बुलाया । रत्नसार भाग १ प्रथम पृष्ठ १४ शरीरके मैलको न उतारे और न
खुजलावे । विवेकसार भा० १ पृष्ठ १५ जैनियोंके एक दमसार साधुने क्रोधित होकर
उद्वेगजनक सूत्र पढकर एक सहर में आग लगादी और महावीर तीर्थंकरका अति
प्रिय था । विवेक० भा० १ पृ० १२७ राजाकी आज्ञा अवश्य माननी चाहिये । विवेक० भा० १
पृष्ठ २२७ एक कोशा वेश्याने थाली में सरसोंकी ढेरी लगा उसके ऊपर फूलोंसे ढकी हु
ई सुई खडी कर उस पर अच्छे प्रकार नाच किया परन्तु सुई पगमें गडने न पाई तथापि
और सरसोंकी ढेरी बिखरी नहीं । पृष्ठ २२८ इसी कोशा वेश्याके साथ एक मुनिने १२ वर्ष तक भोग किया और पश्चात् दीक्षा लेकर सद्गति को ग
या और कोशा वेश्या भी जैनधर्मको पालती हुई सद्गतिको गई । विवेक० भा० १
पृष्ठ १८५ एक सिद्धकी कंथा जो गलेमें पहिनी जाती है वह ५०० असर्फी एक वैश्य
को नित्य देती रही । विवेक० भा० १ पृष्ठ २२८ बलवान् पुरुषकी आज्ञा देवकी
आज्ञा. घोर वनमें कष्टसे निर्वाह. गुरु के रोकने माता पिता कलाचार्य ज्ञातीयलो
ग, और धर्मोपदेष्टा इन छः के रोकनेसे धर्ममें न्यूनता होनेसे धर्मकी हानि नहीं होती
(समी०) अब देखिये इनकी मिथ्या बातें एक मनुष्य ग्रामके बराबर पाषाणकी शि
लाको अंगुली पर कभी धर सकता है और पृथिवीके ऊपर अंगूठेसे दबनेसे पृ

थिवी कभी दब सकती है और जब शेषनाग ही नहीं तो कंपेगा कौन ॥३॥ भला शरीर के काटने से दूध निकलना किसी ने नहीं देखा सिवाय इन्द्रजाल के दूसरी बात नहीं उस को काटने वाला सर्प तो स्वर्ग में गया और महात्मा श्रीकृष्ण आदि तीसरे नरक को गये यह कितनी मिथ्या बात है ॥४॥ जब महावीर के पग पर खीर पकाई तब उसके पग जल क्यों न गये ॥५॥ भला छोटे से पात्र में कभी ऊंट आ सकता है। जो शरीर का मैल नहीं उतारते और न खुजलाते होंगे वे दुर्गंधरूप महानरक भोगते होंगे ॥६॥ जिस साधु ने नगर जलाया उसकी दया और क्षमा कहां गई जब महावीर के संग से भी उसका पवित्रात्मा न हुआ तो अब महावीर के मरे पीछे उसके आश्रय से जैन लोग कभी पवित्र न होंगे ॥८॥ राजा की आज्ञा माननी चाहिये परन्तु जैन लोग बनिये हैं इसलिये राजा से डर कर यह बात लिख दी होगी ॥९॥ कोशा वेश्या चाहे उसका शरीर कितना ही हलका हो तो भी सरसों की ढेरी पर सुई खड़ी कर उसके ऊपर नाचना सुई का न छिदना और सरसों का न बिखरना अतीव झूठ नहीं तो क्या है ॥१०॥ धर्म किसी को किसी अवस्था में भी न छोड़ना चाहिये चाहे कुछ भी हो जाय ॥११॥ भला कंथा वस्त्र का होता है वह नित्य प्रति ५०० अशर्फी किस प्रकार दे सकता है ॥१२॥ अब ऐसी २ असंभव कहानी इनकी लिखें अर्थात् थोड़ी सी इन जैनियों की बातें छोड़ के बाकी सब मिथ्याजाल भरा है ~~[illegible]~~ देखिये। दोससि दोरविपढमे। दुगुणा लवणंमि धायईसंडे। बारस ससिबारसरवि। तप्पभिइ निदिट्ठ ससिरविणो ॥ प्रकरण० भा० ४ संग्रहणीसूत्र ७७ ॥ अर्थ—जो जंबूद्वीप लाख योजन अर्थात् चार लाख कोश का लिखा है उनमें यह पहिला द्वीप कहाता है इस में दो चंद्र और दो सूर्य हैं और वैसे ही लवण समुद्र में उससे दुगुणे अर्थात् ४ चन्द्रमा और ४ सूर्य हैं तथा धातकीखण्ड में बारह चंद्रमा और बारह सूर्य हैं ॥७७॥ और इन को तिगुणा करने से छत्तीस होते हैं उनके साथ दो जंबूद्वीप के और चार लवण समुद्र के मिल कर बयालीस चन्द्रमा और बयालीस सूर्य कालोदधि समुद्र में हैं इसी प्रकार अगले २ द्वीप और समुद्रों में पूर्वोक्त बयालीस को तिगुणा करें तो एक सौ छब्बीस होते हैं उनमें धातकीखंड के बारह लवण समुद्र के चार और जंबूद्वीप के जो २ दो इसी रीति से मिला कर १४४ चंद्र और १४४ सूर्य पुष्कर द्वीप में हैं यह भी आधे मनुष्य क्षेत्र की गणना है परन्तु जहां तक मनुष्य नहीं रहते हैं वहां बहुत से सूर्य और बहुत से चंद्र हैं और जो पिछले अर्ध पुष्कर द्वीप में बहुत चन्द्र और सूर्य हैं वे स्थिर हैं पूर्वोक्त एक सौ चवालीस को तिगुणा करने से ४३२ और उनमें पूर्वोक्त जंबूद्वीप के दो चंद्रमा दो सूर्य चार २ लवण समुद्र के और बारह २ धातकीखंड के और बयालीस कालोदधि के मिलाने से ४९२ चंद्र तथा ४९२ सूर्य पुष्कर समुद्र में हैं ये सब बातें श्री जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने बड़ी (संघयणी में) तथा (योतीसकरंडक) पयन्ना मध्ये और (जम्बूद्वीप पन्नति) तथा (सूरपन्नति) प्रमुख सिद्धान्त ग्रंथों में इसी प्रकार

तो जितने जैनियों के पोथे पोथों के सदृश [illegible] बहुत बढ़ जाय इसलिये अधिक नहीं लिखते।

एक सौ छत्तीस होते हैं

एक सौ [illegible] वाली सा

(समी०— अब सुनिये भूगोल खगोल के जानने वालो इस एक भूगोल में एक प्रकार ४९२
~~समी०—~~ चार सौ छानवे और दूसरी प्रकार असंख्य चंद्र और सूर्य्य जैनी लोग मानते हैं। आप लोगों
का बड़ा भाग्य है कि वेद मतानुयायी सूर्य्यसिद्धान्तादि ज्योतिष ग्रंथों के अध्ययन से ठीक २ भू
गोल खगोल विदित हुए जो कहीं जैन के महा अंधेर में होते तो जन्म भर अंधेर में रहते
जैसे कि जैनी लोग आज कल हैं इन अविद्वानों को यह शंका हुई की जंबूद्वीप में एक सूर्य्य और
एक चंद्र से काम नहीं चलता क्योंकि इतनी बड़ी पृथिवी को तीस घडी में चन्द्र सूर्य्य कैसे आ
वें क्योंकि पृथिवी को ये लोग सूर्य्यादि से भी बड़ी मानते हैं यही इनकी बड़ी भूल है ॥ दो ससि
दो रवि पंती एगंतरिया छसठि संखाया। मेरुं पयाहि णंता। माणुस खित्ते परी अडं
ति ॥ प्रकरणरत्नाकर० भा० ४ संग्रहणी० सू० ७९॥ अर्थ— मनुष्यलोक में चंद्रमा और सूर्य्य
की पंक्ति की संख्या कहते हैं दो चन्द्रमा और दो सूर्य्य की पंक्ती श्रेणी हैं वे एक २ लाख यो
जन अर्थात् चार लाख कोश के अंतरे चलते हैं जैसे सूर्य्य की पंक्ती के अंतरे एक
पंक्ती चंद्र की है इसी प्रकार चंद्रमा की पंक्ती के अंतरे सूर्य्य की पंक्ती है इसी रीति से चार
पंक्ती हैं वे एक २ चंद्र पंक्ती में ६६ चंद्रमा और एक २ सूर्य्य पंक्ती में ६६ सूर्य्य हैं वे चा
रों पंक्ती जंबूद्वीप के मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करती हुई मनुष्यक्षेत्र में परिभ्रमण क
रती हैं अर्थात् जिस समय जंबूद्वीप के मेरु से एक सूर्य्य दक्षिण दिशा में विहरता उस
समय दूसरा सूर्य्य उत्तर दिशा में फिरता है वैसे ही लवण समुद्र की एक २ दिशा में
दो २ चलते फिरते धातकी खंड के ६ कालोदधि के २१ पुष्करार्ध के ३६ इस प्रकार स
ब मिलकर ६६ सूर्य्य दक्षिण दिशा और ६६ सूर्य्य उत्तर दिशा में अपने २ क्रम से फि
रते हैं और जब इन दोनों दिशाओं के सब सूर्य्य मिला जायें तो १३२ सूर्य्य और ऐसे
ही छासठ २ चन्द्रमा की दोनों दिशाओं की पंक्तियां मिलाई जायें तो १३२ चंद्रमा म
नुष्यलोक में चाल चलते हैं इसी प्रकार चंद्रमा के साथ नक्षत्रादि की भी पंक्तियां बहुत
सी जाननी ॥ समी०— अब देखो भाई इस भूगोल में १३२ सूर्य्य और १३२ चंद्रमा जैनि
यों के घर पर तपते होंगे भला जो तपते होंगे तो वे जीते कैसे हैं और रात्रि में भी शीत के मा
रे जैनी लोग जकड़ जाते होंगे ऐसी असंभव बात में भूगोल खगोल के न जानने वाले फ
सते हैं अन्य नहीं जब एक सूर्य्य इस भूगोल के सदृश अन्य अनेक भूगोलों को प्रकाशता है
तब इस छोटे से भूगोल की क्या कथा कहनी और जो पृथिवी न घूमे और सूर्य्य पृथिवी
के चारों ओर घूमे तो कै एक वर्षों का दिन और रात होवे और सुमेरु बिना हिमालय के
दूसरा कोई नहीं यह सूर्य्य के सामने ऐसा है कि जैसे घड़े के सामने राई का दाना भी न हो इन बा
तों को जैनी लोग जब तक उसी मत में रहेंगे तब तक नहीं जान सकते किंतु सदा अंधे
र में रहेंगे ॥ सम्मत्त चरण सहिया सव्वं लोगं फुसे निरवसेसं। सत्त य चउदस भा
ए। पंच य सुय देस विरईए ॥ प्रकरणरत्ना० भा० ४ संग्रह० सू० १३५ ॥ अर्थ—
सम्यक् चारित्र सहित जो केवली वे केवल समुद्घात अवस्था से सर्व चौदह राज्य लो
क अपने आत्म प्रदेश कर के फिरेंगे ॥ समी०— जैनी लोग १४ राज्य मानते हैं
उनमें से चौदहवें की शिखा पर सर्वार्थसिद्धि विमान की ध्वजा से ऊपर थोड़े दूर पर

सिद्धसिला तथा दिव्य आकाश को शिवपुर कहते हैं उसमें केवली अर्थात् जिनको केवलज्ञान सर्वज्ञता और पूर्ण पवित्रता प्राप्त हुई है वे उस लोक में जाते हैं और अपने आत्मप्रदेश से सर्वज्ञ रहते हैं, जिसका प्रदेश होता है वह विभु नहीं जो विभु नहीं वह सर्वज्ञ केवलज्ञानी कभी नहीं हो सकता क्योंकि जिसका आत्मा एकदेशी है वही जाता आता और बद्ध मुक्त ज्ञानी अज्ञानी होता है सर्वव्यापी सर्वज्ञ वैसा कभी नहीं हो सकता, जो जैनियों के तीर्थंकर जीवरूप अल्प अल्पज्ञ होकर स्थित थे वे सर्वव्यापक सर्वज्ञ कभी नहीं हो सकते किन्तु जो परमात्मा अनादि अनन्त सर्वव्यापक सर्वज्ञ पवित्र ज्ञानस्वरूप है उसको जैनी लोग मानते नहीं कि जिसमें सर्वज्ञादि गुण यथावत् घटते हैं। गब्भनरतिपलियाऊ। तिगाउ उक्कोस ते जहन्नेणं। मुच्छिमं दुहावि अंतमुहू। अंगुल असंख भागतणू ॥ २४१ ॥ अर्थ— यहां मनुष्य दो प्रकार के हैं एक गर्भज दूसरे जो गर्भ के बिना उत्पन्न हुए उनमें गर्भज मनुष्य का उत्कृष्ट तीन पल्योपम का आयु जानना और तीन कोश का शरीर ॥ समी०— भला तीन पल्योपम का आयु और तीन कोश के शरीर वाले मनुष्य इस भूगोल में बहुत थोड़े समा सकें और फिर तीन पल्योपम की आयु जैसी कि पूर्व लिख आये हैं उतने समय तक जीवें तो वैसे ही उनके सन्तान भी तीन कोश के शरीर वाले होने चाहियें जैसे मुम्बई से शहर में दो और कलकत्ता ऐसे शहर में तीन वा चार मनुष्य निवास कर सकते हैं जो ऐसा है तो जैनियों ने एक नगर में लाखों मनुष्य लिखे हैं तो उनके रहने का नगर भी लाखों कोशों का चाहिये तो सब भूगोल में वैसा एक नगर भी न बस सके ॥ पणयाललक्खजोयण। विक्खंभा सिद्धसिल फलिहविमला। तदुवरिगजोयणंते। लोगन्तो तत्थ सिद्धठिई ॥ २५८ ॥ अर्थ— जो सर्वार्थसिद्धि विमान की ध्वजा से ऊपर १२ योजन सिद्धसिला है वह वाटला और लंबा चौड़ापन और पोलपन में ४५ लाख योजन प्रमाण है वह सब धवला अर्जुन सुवर्णमय स्फटिक के समान निर्मल सिद्धसिला की सिद्धभूमि है इसको कोई (ईषत्) (प्राग्भरा) ऐसा नाम कहते हैं यह सर्वार्थसिद्ध सिला विमान से १२ योजन अलोक भी है यह परमार्थ केवली श्रुत जानता है यह सिद्धसिला सर्वार्थ मध्यभाग में ८ योजन स्थूल है वहां से ४ दिशा और ४ उपदिशा में घटती २ मक्खी के पांख के सदृश पतली उत्तान छत्र और आकार करके सिद्धसिला की स्थापना है उस सिला से ऊपर १ एक योजन के अन्तरे लोकान्त है वहां सिद्धों की स्थिति है ॥ २५८ ॥ समी०— अब विचारना चाहिये कि जैनियों के मुक्ति का स्थान सर्वार्थसिद्धि विमान की ध्वजा के ऊपर ४५ पैंतालीस लाख योजन की सिला अर्थात् चाहें ऐसी अच्छी और निर्मल हो तथापि उसमें रहने वाले मुक्त जीव एक प्रकार के बद्ध हैं क्योंकि उस सिला से बाहर निकलने में मुक्ति के सुख से छूट जाते होंगे तो उनको वायु भी न लगता होगा यह केवल कल्पनामात्र अविद्वानों को फंसाने के लिये भ्रमजाल है ॥ बितिचउरिंदिसरीरं। बारसजोयण तिकोसचउकोसं। जोयणसहस्स पणिंदिय। उहे वुच्छंति विसेसं तु ॥ प्रकरण० भा० ४ संग्रह० सू० २६७ ॥

अर्थ—सामान्यपनसे एकेंद्रियका शरीर १ हजार योजनकेशरीरवाला उत्कृष्ट जानना और दोइंद्रिय वाले जो शंखादि उनका शरीर १२ योजनका जानना और चतुरिंद्रिय भ्रमरादिका शरीर ४ कोशका और पंचेंद्रिय एक हजार योजन अर्थात् ४ हजार कोशके शरीरवाले जानना ॥२४॥

समी०—चार २ हजार कोशके प्रमाणवाले शरीर भूगोलमें तो बहुत थोड़े मनुष्य अर्थात् में कड़ें ह मनुष्योंसे भूगोल ठसभर जाय किसीको चलनेकी जगह भी न रहे फिर वे जैनियोंसे रहने का ठिकाना और मार्ग पूछें और जो इन्होंने लिखा है तो अपने घरमें रखलें परन्तु चार हजार कोशके शरीर वाले को निवास थे कोई एकके लिये ३२ बत्तीस हजार कोश का घर तो चाहिये ऐसे एक घरके बनाने में जैनियोंका सब धन चुक जाय तो भी घर न बन सके इतने बड़े आठ हजार कोशकी छत्त बनाने के लिये लट्ठे कहांसे लावेंगे और जो उसमें खंभा लगावें तो वह भीतर प्रवेश भी नहीं कर सकता इसलिये ऐसी बातें मिथ्या हुआ करती हैं ॥ तेथूला पल्ले विहुसंखिज्जा चेव हुंति सव्वे वि। तेइक्कि कअसंखे। सुहुमे पल्ले पहह ॥ प्रकरण० भा० ४ लघुक्षेत्र समास प्रकरण सूत्र ४॥

अर्थ—पूर्वोक्त एक अंगुल लोमके खंडोंसे ४ कोशका चोरस और उतना ही गहिरा कुआ हो अंगुल प्रमाण लोमका खंड सब मिलके वीस लाख सत्तावन हजार एकसो बावन होते हैं और अधिकसे अधिक (३३०७६२१०४'' २४६५६२५'' ४२१९९६०'' ९७५३६००'' ००००००० तेतीस क्रोड़ सात लाख बासठ हजार एकसो ४ कोड़ाकोड़ी,, चौवीलाख पैंसठ हजार छःसे पच्चीस इतने कोड़ाकोड़ी,, तथा बयालीस लाख उन्नीस हजार नौ से साठ इतनी कोड़ाकोड़ी,, तथा सत्तानवें लाख त्रेपन हजार और छःसे कौड़ा कोड़ी इतनी वार लघन जोजन पल्योपम में सर्व स्थूल रोम खंडकी संख्या होवे यह भी संख्यात काल होता है पूर्वोक्त एक लोम खंडके असंख्यात खंड मनसे कल्पे तब असंख्यात सूक्ष्म रोमाणु होवे।

समी०—अब देखिये इनकी गिनती की रीति एक अंगुल प्रमाण लोमके ~~~~ कितने खंड किये यह कभी किसी की गिनतीमें आ सकते हैं और उसके उपरान्त मनसे असंख्य खंड कल्पते हैं इससे यह भी सिद्ध होता है कि पूर्वोक्त खंड हाथसे किये होंगे जब हाथसे न हो सके तब मनसे किये भला यह बात कभी संभव हो सकती है कि एक अंगुल रोमके असंख्य खंड हो सकें ॥ जंबूद्दीप पमाणंगुल जोयण लक्ख वट्ट विक्खंभो। लवणाईया सेसा। वलयाभा दुगुण दुगुणाय ॥ प्रकरण र० भा० ४ लघुक्षेत्रसमा० सू० १२

अर्थ०—प्रथम जंबूद्वीपका लाख योजनका प्रमाण और पोला है और बाकी लवणादि सात समुद्र सात द्वीप जंबूद्वीपके प्रमाणसे दुगुणे २ हैं इस एक पृथिवीमें जंबूद्वीपादि सात द्वीप और सात समुद्र हैं जैसे कि पूर्व लिख आये हैं ॥१२॥

समी०—अब जम्बूद्वीपसे दूसरा द्वीप दो लाख योजन तीसरा चार लाख योजन चौथा आठ लाख योजन पांचवां सोलह लाख योजन छठा बत्तीस लाख योजन और सातवां चौसठ लाख योजन और उतने प्रमाणवा उनसे अधिक समुद्रके प्रमाणसे इस पन्द्रह हजार परिधिवाले भूगोलमें क्योंकर समा सकते हैं इससे यह बात

कुरुखित्तम्मि चुलसी सहस्सा । छच्चेवंतरनईउ पइविजयं । दोदो महानईउ । चउदस सहस्साउपत्तेयं । प्रकरण रत्ना० भा० ४ लघुक्षेत्र समा० सू० ६३ ॥

हजार अर्थ— कुरुक्षेत्र में ८४ चौरासी नदी हैं ॥ ६३ ॥ समी०—भला कुरुक्षेत्र बहुत छोटा देश है उसको न देखकर एक मिथ्या बात लिखने में इनको लज्जा भी न आई ॥

जामुत्तराउताउ । इगेगसिंहासणाउ अइ पुव्वं । चउसुवि तासुनियासण दिसिभव जिणमज्जणं होइ ॥ प्रकरण रत्नाकर भा० ४ लघुक्षेत्रसमा० सू० ११९ ॥ अर्थ-उस शिला के बीच में दक्षिण और उत्तर दिशा में एक एक सिंहासन जानना चाहिये । उन शिलाओं के नाम दक्षिण दिशा में अतिपाण्डुकंबला, उत्तर दिशा में अतिरक्तकंबला शिला है उन सिंहासनों पर तीर्थंकरों को [illegible] कर बैठते हैं ॥ ११९ ॥ शेष

समी०—देखिये इनके तीर्थंकरों के जन्मोत्सवादि करने की शिला को ऐसी ही मुक्ति की सिद्धशिला है ऐसी इनकी बहुत सी बातें गोलमाल हैं कहां तक लिखें किन्तु जल छान के पीना, और सूक्ष्म जीवों पर नाममात्र दया करना रात्रि को भोजन न करना ये तीन बातें अच्छी हैं बाकी जितना इनका कथन है सब असंभव ग्रस्त है इतने ही लेख से बुद्धिमान् लोग बहुत सा जान लेंगे थोड़ा सा यह दृष्टान्त मात्र लिखा है जो इनकी असंभव बातें सब लिखें तो इतने पुस्तक हो जायें कि एक पुरुष आयु भर में पढ़ भी न सके इसलिये एक हांडे में चढ़ते चावलों में से एक चावल की परीक्षा करने से कच्चे वा पक्के हैं सब चावल विदित हो जाते हैं ऐसे ही इस थोड़े से लेख से सज्जन लोग बहुत सी बातें समझ लेंगे बुद्धिमानों के सामने बहुत लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे ईसाइयों के मत के विषय में लिखा जायगा ॥

क्योंकि दिग्दर्शनवत् संपूर्ण आशय को बुद्धिमान् लोग जान लेते हैं।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वति स्वामि कृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते द्वादशः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १२ ॥

अनुभूमिका

जो यह बायबिल का मत है वह केवल ईसाइयों का है सो नहीं किन्तु इससे यहूदी आदि
भी गृहीत होते हैं जो यहां १३ तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत के विषय में लिखा है
इसका यही अभिप्राय है कि आजकाल ईसाई मुख्य हो रहे हैं और यहूदी आदि
गौण हैं मुख्य के ग्रहण से गौण का ग्रहण हो जाता है इससे यहूदियों का भी ग्रहण
समझ लीजिये इनका जो विषय यहां लिखा है सो केवल बायबिल में से कि जिस
को ईसाई और यहूदी आदि सब मानते हैं और इसी पुस्तक को अपने धर्म का मूल
कारण समझते हैं। इस पुस्तक के भाषान्तर बहुत से हुए हैं जो कि इनके मत में
बड़े २ पादरी हैं उन्हीं ने किये हैं। उनमें से देवनागरी वा संस्कृत भाषान्तर देखकर
मुझको बहुत सी शंका ~~इस पुस्तक में~~ हुई हैं उनमें से कुछ थोड़ी सी इस १३ वें स
मुल्लास में सबके विचारार्थ लिखी हैं यह लेख केवल सत्य की वृद्धि और असत्य
के ह्रास होने के लिये है न कि किसी को दुःख देने वा हानि करने अथवा मिथ्या दोष ल-
गाने के अर्थ हो इसका अभिप्राय उत्तर लेख में सब कोई समझ लेंगे कि यह पु
स्तक कैसा है और इनका मत भी कैसा है इस लेख से यही प्रयोजन है कि सब मनुष्य
मात्र को देखना सुनना लिखना आदि करना सहज होगा और पक्षी प्रतिपक्षी हो
के विचार कर ईसाई मत का आन्दोलन सब कोई कर सकेंगे इससे एक यह
प्रयोजन सिद्ध होगा कि मनुष्यों को धर्म विषयक ज्ञान बढ़कर यथायोग्य सत्याऽसत्य मत।
और कर्त्तव्याकर्त्तव्य कर्म सम्बन्धी विषय विदित होकर सत्य और कर्त्तव्य क
र्म का स्वीकार असत्य और अकर्त्तव्य कर्म का परित्याग करना सहजता से हो
सकेगा। सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषयक पुस्तकों को देख स
मझकर कुछ सम्मति वा असम्मति देवें वा लिखें नहीं तो सुना करें क्योंकि
जैसे पढ़ने से पंडित होता है वैसे सुनने से बहुश्रुत होता है यदि श्रोता दूसरे
को नहीं समझा सके तथापि आप स्वयं तो समझ ही जाता है ~~[illegible]~~ जो कोई पक्ष
पातरूप यानारूढ़ होके देखते हैं उनको न अपने और न पराये गुण दोष विदित
हो सकते हैं। मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्याऽसत्य के निर्णय करने का सा
मर्थ्य रखता है जितना अपना पठित वा श्रुत है उतना निश्चय कर सकता है
यदि एक मत वाले दूसरे मत वाले के विषयों को जानें और अन्य न जानें तो य
थावत् संवाद नहीं हो सकता किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाड़े में गिर जाते
हैं ऐसा न हो इसलिये इस ग्रंथ में प्रचरित सब मतों का विषय थोड़ा २
लिखा है इतने ही से शेष विषयों में अनुमान कर सकता है कि वे सच्चे हैं वा
झूठे जो २ सर्वमान्य सत्य विषय हैं वे तो सब में एक से हैं झगड़ा झूठे विष
यों में होता है अथवा एक सच्चा और दूसरा झूठा हो तो भी कुछ थोड़ा सा
विवाद चलता है यदि वादी प्रतिवादी सत्याऽसत्य निश्चय के लिये वाद
प्रतिवाद करें तो अवश्य निश्चय हो जाय। अब मैं इस १३ वें समुल्लास में

बायबिल के मत में

बायबिल में

धर्म विषयक

देखते हैं उ

[illegible] अलग मत लिखने का प्रयोजन [illegible]

॥ अथत्रयोदशसमुल्लासारंभः ॥

अथ कृश्चीनमतविषयं व्याख्यास्यामः — अब इसके आगे ईसाइयोंके मत
विषयमें लिखते हैं जिससे सबको विदित होजाय कि इनका मत निर्दोष और इन
की बायबिल पुस्तक ईश्वरकृत है वा नहीं. प्रथम बाइबिलके तौरेत का विषय लि
खाजाता है।

१ आरंभमें ईश्वरने आकाश और पृथिवीको सृजा॥ और पृथिवी बेडौल और सूनी थी।
और गहिरावपर अंधियारा था और ईश्वरका आत्मा जलके ऊपर डोलता था। पर्व १
आय० १।२ समीक्षक- आरंभ किसको कहते हो (ईसाई- सृष्टिके प्रथमोत्पत्तिको
(समीक्षक- क्या यही सृष्टि प्रथम हुई इसके पूर्व कभी नहीं हुई थी (ईसाई) हम नहीं जानते हुई थी
वा नहीं ईश्वर जाने (समी०- जब नहीं जानते तो इस पुस्तकपर विश्वास क्यों किया क्योंकि
जिससे सन्देहका निवारण नहीं हो सकता और इसीके भरोसे लोगोंको उपदेशकर
इस संदेहके भरे हुए मतमें क्यों फसाते हो और जो निःसन्देह सर्वशंका निवारक वेद
मतका स्वीकार क्यों नहीं करते जब तुम ईश्वरकी सृष्टिका हाल नहीं जानते तो ईश्वरको कै
से जानते होंगे आकाश किसको मानते हो (ईसाई- पोल और ऊपरको। (समी०- पोल
की उत्पत्ति किस प्रकार हुई क्योंकि यह विभु पदार्थ और अति सूक्ष्म है और ऊपर नीचे
एकसा है जब आकाश नहीं सृजा था तब पोल और अवकाश था वा नहीं जो नहीं था तो ई
श्वर जगत्का कारण और जीव कहां रहते थे बिना अवकाशके कोई पदार्थ स्थित नहीं हो
सकता इसलिये तुम्हारी बायबिलका कथन युक्त नहीं। ईश्वर बेडौल उसका ज्ञान कर्म
कार्य बेडौल होता है वा सब डौलवाला (ईसाई- डौलवाला होता है (समी०-
ईश्वर की बनाई तो यहां पृथिवी बेडौल थी ऐसा क्यों लिखा (ईसाई- बेडौलका अर्थ यह है कि ऊंची नीची
थी बराबर नहीं थी (समी०- फिर बराबर किसने की और क्या अब भी ऊंची नीची नहीं
है इसलिये ईश्वरका काम बेडौल नहीं हो सकता क्योंकि वह सर्वज्ञ है उसके काम में न भूल न
चूक कभी हो सकती है और बायबिलमें ईश्वरकी सृष्टि बेडौल लिखी इसलिये यह पु
स्तक ईश्वरकृत नहीं हो सकता॥ समी०- प्रथम ईश्वरका आत्मा क्या पदार्थ है (ईसा०- चेतन
समी०- वह साकार है वा निराकार तथा व्यापक है वा एकदेशी (ईसा०- निराकार चेत
न और व्यापक है परन्तु किसी एक सनाई पर्वत चौथा आसमान आदि स्थानोंमें विशे
ष करके रहता है (समी०- जो निराकार है तो उसको किसने देखा और व्यापकका ज
लपर डोलना कभी नहीं हो सकता भला जब ईश्वरका आत्मा जलपर डोलता था तब
ईश्वर कहां था। इससे यही सिद्ध होता है कि ईश्वरका शरीर कहीं अन्यत्र स्थित होगा अ
थवा अपने कुछ आत्माके एक टुकड़ेको जलपर डुलाया होगा जो ऐसा है तो विभु
और सर्वज्ञ कभी नहीं हो सकता जो विभु नहीं तो जगत्की रचना धारण पालन और
जीवोंके कर्मोंकी व्यवस्था वा प्रलय कभी नहीं कर सकता क्योंकि जिस पदार्थका स्वरू
प एकदेशी है उसके गुण कर्म स्वभाव भी एकदेशी होते हैं जो ऐसा है वह ईश्वर नहीं हो सकता
क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक अनन्त गुण कर्म स्वभावयुक्त सच्चिदानन्दस्वरूप नित्य

शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव अनादि अनंतादि लक्षण युक्त वेदों में कहा है उसी को मानो
तभी तुम्हारा कल्याण होगा अन्यथा नहीं ॥ १ ॥

२—और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला होगया और ईश्वर ने उंजियाले को दे
खा कि अच्छा है । पर्व १ आ० ३।४

समी०—क्या ईश्वर की बात जड़ रूप उंजियाले ने सुन ली जो सुनी हो तो इस समय
भी सूर्य्य और दीप अग्नि का प्रकाश हमारी तुम्हारी बात क्यों नहीं सुनता प्रका
श जड़ होता है वह कभी किसी की बात नहीं सुन सकता क्या जब ईश्वर ने उंजिया
ले को देखा तभी जाना कि उंजियाला अच्छा है पहिले नहीं जानता था जो जानता होता तो
देखकर अच्छा क्यों कहता जो नहीं जानता था तो वह ईश्वर ही नहीं इसी लिये तुम्हारी बा
यबिल ईश्वरोक्त और उसमें कहा हुआ ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है ॥ २ ॥

३—और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे और पानियों को पानियों से
विभाग करे तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के ऊपर के पानियों से
विभाग किया और ऐसा होगया । और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ
और विहान दूसरा दिन हुआ ॥ पर्व १ आ० ६।७।८

समी०—क्या आकाश और जल ने भी ईश्वर की बात सुन ली और जो जल के बीच में
आकाश न होता तो जल रहता ही कहां प्रथम आयत में आकाश को सृजा था पुनः
आकाश का बनाना व्यर्थ हुआ जो आकाश को स्वर्ग कहा तो वह सर्वव्यापक है इस-
लिये सर्वत्र स्वर्ग हुआ फिर ऊपर को स्वर्ग है यह कहना व्यर्थ है जब सूर्य्य उत्पन्न ही न
हीं हुआ था तो पुनः दिन और रात कहां से होगई ऐसी ही असंभव बातें आगे की आय
तों में भरी हैं ॥ ३ ॥

४ तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें । तब ईश्वर ने आदम को अ
पने स्वरूप में उत्पन्न किया उसने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उसने उन्हें
नर और नारी बनाया । और ईश्वर ने उन्हें आशीष दिया ॥ पर्व १ आ० २६।२७।२८

समी०—यदि आदम को ईश्वर ने अपने स्वरूप में बनाया तो ईश्वर का स्वरूप पवित्र ज्ञान स्वरूप आनन्द मय आदि लक्षण युक्त
है उसके सदृश आदम क्यों नहीं हुआ जो नहीं हुआ तो उसके स्वरूप में नहीं बना और आदम
को उत्पन्न किया तो ईश्वर ने अपने स्वरूप ही को उत्पत्ति वाला किया पुनः वह अनित्य
क्यों नहीं और आदम को उत्पन्न कहां से किया । (ईसाई—मट्टी से बनाया (समी०—मट्टी को
मट्टी कहां से बनाई । (ईसाई—अपनी कुदरत अर्थात् सामर्थ्य से । (समी०—ईश्वर का
सामर्थ्य अनादि है वा नवीन । (ईसाई—अनादि है । (समी०—जब अनादि है तो जग
त् का कारण सनातन हुआ फिर अभाव से भाव क्यों मानते हो । (ईसाई) सृष्टि के पूर्व ईश्वर
के बिना कोई वस्तु नहीं था । (समी०—जो नहीं था तो यह जगत् कहां से बना और ईश्वर का सा
मर्थ्य द्रव्य है वा गुण जो द्रव्य है तो ईश्वर से भिन्न दूसरा पदार्थ था और जो गुण है तो
गुण से द्रव्य कभी नहीं बन सकता जैसे रूप से अग्नि और रस से जल नहीं बन सक
ता और जो ईश्वर से जगत् बना होता तो ईश्वर के सदृश गुण कर्म स्वभाव वाला होता

उसके गुणकर्मस्वभावके सदृश न होनेसे यही निश्चय है कि ईश्वरसे नहीं बना कि
न्तु जगत्के कारण अर्थात् परमाणु आदि नाम वाले जड़ बना है जैसी कि जग
की उत्पत्ति वेदादि शास्त्रोंमें लिखी है वैसी ही मान लो जिससे ईश्वर जगत्का व
नाता है जो आदमके भीतरका स्वरूप जीव और बाहरका मनुष्यके सदृश है
तो वैसा ईश्वरका स्वरूप क्यों नहीं क्योंकि जब आदम ईश्वरके सदृश बना तो ई
श्वर आदमके सदृश अवश्य होना चाहिये ॥ ४ ॥

५ — तब परमेश्वर ईश्वरने भूमिकी धूलसे आदमको बनाया और उ
सके नथुनोंमें जीवनका श्वास फूंका और आदम जीवता प्राण हुआ॥
और परमेश्वर ईश्वरने अदनमें पूर्वकी ओर एक बाड़ी लगाई और उस आदमको जिसे उ ५
सने बनाया था उसमें रक्खा और उस बाड़ीके मध्यमें जीवनका पेड़ और
भले बुरेके ज्ञानका पेड़ भूमिसे उगाया । पर्व॰ २ आ॰ ७।८।९। ॥

समीक्षक — जब ईश्वरने अदनमें बाड़ी बनाकर उसमें आदमको रक्खा तब
ईश्वर नहीं जानता था कि इसको पुनः यहांसे निकालना पड़ेगा और जब ईश्व
रने आदमको धूलीसे बनाया तो ईश्वरका स्वरूप नहीं हुआ और जो है तो ई
श्वर भी धूलीसे बना होगा जब उसके नथुनोंमें ईश्वरने श्वास फूंका तो वह श्वा
स ईश्वरका स्वरूप था वा भिन्न जो भिन्न था तो आदम ईश्वरके स्वरूपमें नहीं
बना जो एक है तो आदम और ईश्वर एकसे हुए और जो एकसे हैं तो आदम
के सदृश जन्म मरण वृद्धि क्षय क्षुधा तृषा आदि दोष ईश्वरमें आये फिर
वह ईश्वर क्योंकर हो सकता है इसलिये यह तौरेत्की बात ठीक नहीं विदि १८
त होती और यह पुस्तक भी ईश्वरकृत नहीं है ॥ ५ ॥

६ — और परमेश्वर ईश्वरने आदमको बड़ी नींदमें डाला और वह सोगया त
ब उसने उसकी पसलियोंमेंसे एक निकाली और उसकी संती मांस भर दिया ॥
आदमकी और परमेश्वर ईश्वरने उस पसलीसे एक नारी बनाई और उसे आदमपास लाया ॥
पर्व॰ २ आ॰ २१।२२। ॥

समीक्षक — जो ईश्वरने आदमको धूलीसे बनाया तो उसकी स्त्रीको धूलीसे क्यों नहीं २५
बनाया और जो नारीको हड्डीसे बनाया तो आदमको हड्डीसे क्यों नहीं बनाया औ
र जैसे नरसे निकलनेसे नारी नाम हुआ तो नारीसे निकलनेसे नर नाम भी
होना चाहिये और उनमें परस्पर प्रेम भी रहे जैसे स्त्रीके साथ पुरुष प्रेम करै वै २८
से पुरुषके साथ स्त्री भी प्रेम करे देखो विद्वान् लोगो ईश्वरकी कैसी पदार्थविद्या
अर्थात् फिलासफी चलकती है जो आदमकी एक पसली निकालकर नारी ब
नाई तो सब मनुष्योंकी एक पसली कम क्यों नहीं होती और स्त्रीके शरीरमें ए ११
क पसली होनी चाहिये क्योंकि वह एक पसलीसे बनी है क्या जिस सामिग्रीसे
सब जगत् बनाया उस सामिग्रीसे स्त्रीका शरीर नहीं बन सकता था इसलि
ये यह बायबिलका सृष्टिक्रम सृष्टिविद्यासे विरुद्ध है ॥ ६ ॥

७—अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया था धूर्त्त
था और उसने स्त्री से कहा, क्या निश्चय ईश्वर ने कहा है कि तुम इस बाड़ी के हर एक पेड़ से न खाना। और स्त्री ने
सर्प्प से कहा कि हम तो इस बाड़ी के पेड़ों का फल खाते हैं। परन्तु उस पेड़ का
फल जो बाड़ी के बीच में है ईश्वर ने कहा कि तुम उससे न खाना और न छूना न ४
हो कि मर जाओ। तब सर्प्प ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न मरोगे। क्योंकि ई-
श्वर जानता है कि जिस दिन तुम उससे खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और
तुम भले और बुरे की पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे। और जब स्त्री ने ८
देखा कि वुह पेड़ खाने में सुस्वाद और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के योग्य है तो उस
के फल में से लिया और खाया और अपने पती को भी दिया और उसने खाया। त-
ब उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान गये कि हम नंगे हैं सो उन्होंने गू- १०
लर के पत्तों को मिला के सिया और अपने लिये ओढ़ना बनाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण
तू सारे ढोर और हर एक बन के पशु से अधिक स्रापित होगा तू अपने पेट
के बल चलेगा और अपने जीवन भर धूल खाया करेगा। और मैं तुझ में
और स्त्री में और तेरे वंश और उसके वंश में बैर डालूंगा वुह तेरे शिर को कुच- १४
लेगा और तू उसकी एड़ी को काटेगा। और उसने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा
और गर्भधारण को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा
तेरे पती पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता करेगा। और उसने आदम से कहा कि १८
तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और जिस पेड़ का मैंने तुझे खाने से वर्जा था
तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन भर तू उससे
पीड़ा के साथ खायगा। और वुह कांटे और ऊंटकटारे तेरे लिये उगायेगी और तू २०
खेत का सागपात खायगा॥ तौरेत उत्पत्ति॰ पर्व ३ आ॰ १।२।३।
४।५।६।७।१४।१५।१६।१७।१८।॥

समीक्षक—जो ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो इस धूर्त्त सर्प्प अर्थात्
शैतान को क्यों बनाता और जो बनाया तो वही ईश्वर अपराध का भागी है
क्योंकि जो वह उसको दुष्ट न बनाता तो वह दुष्टता क्यों करता और वह पूर्वजन्म
नहीं मानता तो विना अपराध उसको पापी क्यों बनाया और सच पूछो तो वह स- २१
र्प्प नहीं था किन्तु मनुष्य था क्योंकि जो मनुष्य न होता तो मनुष्य की भाषा क्यों
कर बोल सकता और जो आप झूठा और दूसरे को झूठ में चलावे उसको शैता-
न कहना चाहिये सो यहां शैतान सत्यवादी और इससे उसने उस स्त्री को न २४
हीं बहकाया किन्तु सच कहा और ईश्वर ने आदम और हव्वा से झूठ कहा कि
इसके खाने से तुम मर जाओगे जब वह पेड़ ज्ञानदाता और अमर करने वाला
था तो उसके फल खाने से क्यों वर्जा और जो वर्जा तो वह ईश्वर झूठा और बहकाने २८
वाला ठहरा। क्योंकि उस वृक्ष के फल मनुष्यों को ज्ञान और सुखकारक थे अज्ञान
और मृत्युकारक नहीं, जब ईश्वर ने फल खाने से वर्जा तो उस वृक्ष की उत्पत्ति

किस लिये की थी जो अपने लिये की तो क्या आप अज्ञानी और मृत्युधर्मवाला था? और जो दूसरों के लिये बनाया तो फल खाने में अपराध कुछ भी न हुआ और आज कल कोई भी वृक्ष ज्ञानकारक और मृत्युनिवारक देखने में नहीं आता क्या ईश्वर ने उस का बीज भी नष्ट कर दिया। ऐसी बातों से मनुष्य छली कपटी होता है तो ईश्वर वैसा क्यों नहीं हुआ क्योंकि जो कोई दूसरे से छल कपट करेगा वह छली कपटी क्यों न होगा और जो इन तीनों को स्राप दिया वह बिना अपराध से है पुनः वह ईश्वर अन्यायकारी भी हुआ और यह स्राप ईश्वर को होना चाहिये क्योंकि वह झूठ बोला और उन को बहकाया यह फिलासफी देखो क्या बिना पीड़ा के गर्भधारण और बालक का जन्म हो सकता था और बिना श्रम के कोई अपनी जीविका कर सकता है क्या प्रथम कांटे आदि के वृक्ष न थे और जब शाकपात खाना सब मनुष्यों को ईश्वर के कहने से उचित हुआ तो जो उत्तर में मांस खाना बाइबिल में लिखा वह झूठा क्यों नहीं और जो वह सच्चा हो तो यह झूठा है जब आदम का कुछ भी अपराध सिद्ध नहीं होता तो ईसाई लोग सब मनुष्यों को आदम के अपराध से सन्तान होने पर अपराधी क्यों कहते हैं भला ऐसा पुस्तक और ऐसा ईश्वर कभी बुद्धिमानों के मानने योग्य हो सकता है ॥ ७ ॥

८— और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो आदम भले बुरे के जानने में हम में से एक की नाई हुआ और अब ऐसा न होवे कि वह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़ में से भी लेके खावे और अमर हो जाय। सो उसने आदम को निकाल दिया और अदन की बारी की पूर्व ओर करोबीम ठहराये और चमकते हुए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसते जीवन के पेड़ के मार्ग को रखवाली करें ॥ पर्व॰ ३ आ॰ २२। २३। २४

समीक्षक॰ — भला ईश्वर को ऐसी ईर्ष्या और भ्रम क्यों हुआ कि ज्ञान में हमारे तुल्य क्या यह हुआ? बुरी बात हुई यह शंका ही क्यों पड़ी क्योंकि ईश्वर के तुल्य कभी कोई नहीं हो सकता परन्तु इस लेख से यह भी सिद्ध हो सकता है कि वह ईश्वर नहीं था किन्तु मनुष्यविशेष था। बाइबिल में जहां कहीं ईश्वर की बात आती है वहां मनुष्य ही के तुल्य लिखी आती है अब देखो आदम को ज्ञान की बढ़ती में ईश्वर कितना दुःखी हुआ और फिर अमर वृक्ष के फल खाने में कितनी ईर्ष्या की और प्रथम जब उसको बारी में रक्खा तब उसको भविष्यत् का ज्ञान नहीं था कि इसको पुनः निकालना पड़ेगा इसलिये ये ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं था और चमकते खड्ग का पहिरा रक्खा यह भी मनुष्य का काम है ईश्वर का नहीं ॥ ८ ॥

९— और कितने दिनों के पीछे यों हुआ कि काइन भूमि के फलों में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया। और हाबील भी अपनी झुंड में से पहिलौठी और मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील का और उसकी भेंट का आदर किया। परन्तु

काईनका और उसकी भेंटका आदर न किया इसलिये काईन अति कुपित हुआ और अपना मुंह फुलया तब परमेश्वरने काइनसे कहा कि तूं क्यों क्रुद्ध है और तेरा मुंह क्यों फूलगया ॥ तौरे० पर्व ४ आ० ३।४।५।६।७ ॥

समी० । यदि ईश्वर मांसाहारी न होता तो भेड़की भेंट और हाबिलका सत्कार और काइन का तथा उसकी भेंटका तिरस्कार क्यों करता और ऐसा झगड़ा लगाने और हाबिलके मृत्यु का कारण भी ईश्वर ही हुआ और जैसे आपसमें मनुष्यलोग एक दूसरे से बातें करते हैं वैसीही ईसाइयोंके ईश्वरकी बातें हैं। बगीचेमें आना जाना उसका बनाना भी मनुष्योंका कर्म है इससे विदित होता है कि यह बायबिल मनुष्योंकी बनाई है ईश्वरकी नहीं ॥ १०॥

११— जब परमेश्वरने काइन से कहा तेरा भाई हाबिल कहां है और वुह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाईका रखवाला हूं तब उसने कहा तूने क्या किया तेरे भाईके लोहू का शब्द भूमिसे मुझे पुकारता है और अब तू पृथिवीसे स्रापित है ॥ तौ० पर्व ४ आ० ९।१०।११॥

समीक्ष० — क्या ईश्वर काइनसे पूछे विना हाबिल का हाल नहीं जानता था और लोहू का शब्द भूमिसे कभी किसीको पुकार सकता है, ये सब बातें अविद्वानों की हैं इसीलिये यह पुस्तक न ईश्वर और न विद्वान् का बनाया हो सकता है ॥ ११॥

१२ और हनूक मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ वर्षलों ईश्वर के साथ चलता था ॥ तौ० पर्व० ५ आ० २२ ॥

समीक्ष० — भला ईसाइयोंका ईश्वर मनुष्य न होता तो हनूक के साथ २ क्यों चलता इससे जो वेदोक्त निराकार ईश्वर है उसी को ईसाई लोग मानें तो उनका कल्याण होवे ॥ १२॥

१३ और उनसे बेटियां उत्पन्न हुईं तो ईश्वर के पुत्रोंने आदमकी पुत्रियोंको देखा कि वे सुन्दरी हैं और उनमें से जिन्हें उन्होंने चाहा उन्हें ब्याहा और उन दिनोंमें पृथिवीपर दानव थे और उसके पीछे भी जब ईश्वर के पुत्र आदमकी पुत्रियोंसे मिले तो उनसे बालक उत्पन्न हुए जो बलवान् हुए जो आगे से नामी थे॥ और ईश्वरने देखा कि आदमकी दुष्टता पृथिवी पर बहुत हुई और उनके मनकी चिन्ता और भावना प्रतिदिन केवल बुरी होती है। तब आदमीको पृथिवीपर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अती शोक हुआ तब परमेश्वरने कहा कि आदमीको जिसे मैंने उत्पन्न किया, उन्हें बनानेसे मैं पछताता हूं ॥ तौ० पर्व ६ आ० १।२

समी० — ईसाइयों से पूछना चाहिये कि ईश्वरके बेटे कौन हैं, और ईश्वरकी स्त्री सास, श्वसुर, शाला और सम्बन्धी कौन हैं क्योंकि अब तो आदमकी बेटियों के साथ विवाह होनेसे ईश्वर इनका सम्बन्धी हुआ और जो उनसे उत्पन्न होते हैं वे पुत्र और प्रपौत्र हुए क्या ऐसी बात ईश्वर और ईश्वरके पुस्तक की हो सकती है। किन्तु यह सिद्ध होता है कि उन जंगली मनुष्योंने यह पुस्तक बनाया है वह ईश्वरही नहीं जो सर्वज्ञ न हो न भविष्यत्की बात जाने

वहजीव है क्या जब सृष्टि की थी तब आगे मनुष्य दुष्ट होंगे ऐसा नहीं जानता था और पछताना अति शोकादि होना भूल से काम करके पीछे पश्चात्ताप करना आदि ईसाइयों के ईश्वर में घट सकता है कि ईसाइयों का ईश्वर पूर्ण विद्वान् योगी भी नहीं था नहीं तो शान्ति और विज्ञान से अति शोकादि से पृथक् हो सकता था। जैसे वेदोक्त परमेश्वर सब पाप क्लेश दुःख शोकादि से रहित (सच्चिदानन्दस्वरूप) है उसको ईसाई लोग मानते वा अब भी मानें तो अपने मनुष्य जन्म को सफल कर सकें ॥ १३॥

| भला पशु पक्षी भी दुष्ट हो गये यदि वह ईश्वर सर्वज्ञ होता तो ऐसा विषादी क्यों होता! इसलिये न यह ईश्वर और न यह ईश्वरकृत पुस्तक हो सकता है

१४ — उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ और सारे शरीरों में से जीवता जन्तु दो २ अपने साथ नाव में लेना जिसतें तेरे साथ जीते रहें वे नर और नारी होवें। पंछी में से उसके भांति २ के और ढोर में से उसके भांति २ के और पृथिवी के हर एक रेंगवैये में से भांति २ के हर एक में से दो २ तुझ पास आवें जिसतें जीते रहें। और तू अपने [खाने को] लिये सब सामग्री अपने पास इकट्ठा कर वह तुम्हारे और उनके लिये भोजन होगा। सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह ने किया। तौ० पर्व० ६। आ० १५। १९।

समीक्षक — भला कोई भी विद्वान् ऐसी विद्या से विरुद्ध असंभव बात के वक्ता को ईश्वर मान सकता है क्योंकि इतनी बड़ी चौड़ी ऊंची नाव में हाथी हथनी ऊंट ऊंटनी आदि क्रोड़ह जन्तु और उनके खाने पीने की चीजें वे सब कुटुम्ब के भी समा सकते हैं? यह इसी लिये मनुष्यकृत पुस्तक है जिसने यह लेख किया है वह विद्वान् भी नहीं था ॥ १४॥

१५ और नूह ने परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई और सारे पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम की भेंट उस वेदी पर चढ़ाई और परमेश्वर ने [सुगंध सूंघा और परमेश्वर ने] अपने मन में कहा कि आदमी के लिये मैं पृथिवी को फिर कभी स्राप न देऊंगा इस कारण कि आदमी के मन की भावना उसकी लड़काई से बुरी है और जिस रीति से मैंने सारे जीवधारियों को मारा फिर कभी न मारूंगा ॥ तौ० पर्व० ८। आ० २०। २१। से। २२।

समीक्षक — वेदी के बनाने होम करने के लेख से यही सिद्ध होता है कि ये बातें वेदों से बाइबिल में गई हैं। क्या परमेश्वर के नाक भी है कि जिससे सुगंध सूंघा? क्या यह ईसाइयों का ईश्वर मनुष्यवत् अल्पज्ञ नहीं है कि कभी [स्राप] स्राप देता है और कभी पछताता है कभी कहता है [स्राप] न दूंगा पहिले दिया था और फिर भी देगा प्रथम सब को मार डाला और अब कहता है कि कभी न मारूंगा ये बातें सब लड़केपन की हैं ईश्वर की नहीं और न किसी विद्वान् की क्योंकि विद्वान् की भी बात और प्रतिज्ञा स्थिर होती है ॥ १५॥

१६ और ईश्वर ने नूह को और उसके बेटों को आशीष दिया और उन्हें कहा कि हर एक जीता चलता जन्तु तुम्हारे भोजन के लिये होगा मैंने हरी तरकारी के समान सारी वस्तु तुम्हें दीं केवल मांस उसके जीव अर्थात् उसके लोहू समेत मत खाना।

समीक्षक॰ ~~अब~~ क्या एकको प्राणकष्ट देकर दूसरों ~~को खिलाने से महापापी नहीं होवें~~ को
आनंद कराने से दयाहीन ईसाइयों का ईश्वर नहीं है जो माता पिता एक लड़के को मर
वाकर दूसरे को खिलावें तो महापापी नहीं हों इसी प्रकार यह बात है क्योंकि ईश्व
र के लिये सब प्राणी पुत्रवत् हैं ऐसा न होने से इनका ईश्वर कसाईवत् काम कर
ता है और सब मनुष्यों को हिंसक भी इसी ने बनाये हैं इसलिये ईसाइयों का ईश्वर
निर्दयी होने से पापी क्यों नहीं ॥ १६ ॥

१७ — और सारी पृथिवी पर एक ही बोली और एक ही भाषा थी फिर उन्होंने
कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिसकी चोटी स्वर्गलों पहुंचे अप
ने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न
हो जावें, तब ईश्वर उस नगर और उस गुम्मट को जिसे आदम के सन्तान ब
नाते थे देखने को उतरा तब परमेश्वर ने कहा कि देखो ये लोग एक ही हैं और
उन सबकी एक ही बोली है अब ऐसा रकछ करने लगे सो वे जिस पर मन ल
गावेंगे उससे अलग न किये जायेंगे आओ हम उतरें और वहां उनकी भाषा को
गड़बड़ावें जिसमें वे एक दूसरे की बोली न समझें तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से
सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से अलग रहे ॥
तौ० पर्व ११ आ० १।४।५।६।७।८।९ ॥

समीक्षक०- जब सारी पृथिवी पर एक भाषा बोली होगी उस समय सब मनुष्यों
को परस्पर अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ होगा परन्तु क्या किया जाय यह ईसाइ
के ईर्ष्यक ईश्वर ने सबकी भाषा गड़बड़ा के सबका सत्यानाश किया उसने यह
बड़ा अपराध किया। क्या यह शैतान के काम से भी बुरा काम नहीं है और इससे
यह भी विदित होता है कि ईसाइयों का ईश्वर सनाई आदि पहाड़ पर रहता था और
जीवों की उन्नति भी नहीं चाहता था यह बिना एक अविद्वान् के ईश्वर की बात औ
र और यह ईश्वरोक्त पुस्तक क्योंकर हो सकती है ॥ १७ ॥

१८ तब उसने अपनी पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता हूं तू देखने में सु
न्दर स्त्री है इसलिये यों होगा कि जब मिस्री तुझे देखें तब वे कहेंगे कि यह
उसकी पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु तुझे जीती रक्खेंगे तू कहियो कि मैं
उसकी बहिन हूं जिसतें तेरे कारण मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जी
ता रहे ॥ तौ० पर्व १२ आ० ११।१२।१३ ॥

समीक्षक० अब देखिये जो अविरहाम बड़ा पैगंबर ईसाई और मुसलमानों
का बजता है और उसके कर्म मिथ्याभाषणादि बुरे हैं और अपनी स्त्री का पा
तिव्रत्य धर्म भंग करा के व्यभिचारिणी बनाता है भला जिनके ऐसे पैगंबर हों
उनको विद्या वा कल्याण का मार्ग कैसे मिल सके ॥ १८ ॥

१९ — और ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा वंश उनकी पीढ़ी

योंमें तेरे नियमको मानें तुम मेरा नियम जो मुझसे और तुमसे और तेरे पीछे
तेरे वंशसे है जिसे तुम मानोगे सो यह है कि तुममें से हरएक पुरुषका खतनः
कियाजाय ॥ और तुम अपने शरीरकी खलड़ी काटो और वह पीढ़ियोंमें रहे
क आठ दिनके पुरुषका खतनः कियाजाय जो घरमें उत्पन्न होय अथवा जो
किसी परदेशीसे जो तेरे वंशका न हो रूपेसे मोल लियाजाय जो तेरे घरमें
उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे रूपेसे मोल लियागया हो अवश्य उसका खतनः
कियाजाय और मेरा नियम तुम्हारे मांसमें सर्वदा नियमके लिये होगा ॥
और जो अखतनः बालक जिसकी खलड़ीका खतनः न हुआ हो सो प्राणी अ
पने लोगसे कटजाय कि उसने मेरा नियम तोड़ा है ॥ तौ० पर्व० १७ आ०
९।१०।११।१२।१३।१४ ॥

समीक्षक — अब देखिये ईश्वरकी अन्यथा आज्ञा कि जो यह खतनः करना ईश्व
रको इष्ट होता तो उस चमड़ेको आदि सृष्टिमें बनाताही नहीं और जो यह बना
यागया है वह रक्षार्थ है जैसा आंखके ऊपरका चमड़ा क्योंकि वह गुप्तस्थान
अति कोमल है जो उसपर चमड़ा न हो तो एक कीड़ीके भी काटने और थोड़ी
सी चोट लगनेसे बहुत सा दुःख होवे और लघुशंकाके पश्चात् कुछ मूत्रां
श कपड़ोंमें न लगे इत्यादि बातोंके लिये इसका काटना बुरा है ॥ १९ ॥

२० तब उससे बात करनेसे रह गया और अबिरहामके पाससे ईश्वर ऊ
पर जाता रहा ॥ तौ० पर्व १७ आ० २२।२३

समीक्षक — इससे यह सिद्ध होता है कि ईश्वर मनुष्य वा पक्षिवत् था जो ऊपर
से नीचे और नीचेसे ऊपर आता जाता रहता था यह कोई इन्द्रजाली पुरुषवत्
विदित होता है ॥ २० ॥

२१ फिर ईश्वर उसे ममरेके बलूतोंमें दिखाई दिया और वुह दिनको घामके स
मयमें अपने तम्बूके द्वारपर बैठा था और उसने अपनी आंखें उठाईं और देखा औ
र देखो कि तीन मनुष्य उसके पास खड़े हैं और उन्हें देखके वुह तम्बूके द्वारपरसे उन
की भेंटको दौड़ा और भूमिलों दण्डवत् किई ॥ और कहा हे मेरे स्वामी यदि मैंने अब आ
पकी दृष्टिमें अनुग्रह पाया है तो मैं आपकी बिनती करताहूं कि अपने दासके पास
से चले न जाइये ॥ इच्छा हो य तो थोड़ा जल लायाजाय और अपने चरण धोइ
ये और पेड़तले विश्राम कीजिये ॥ और मैं एक कौर रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये
उसके पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसीलिये अपने दासके पास आये
हैं तब वे बोले कि जैसा तूने कहा तैसा कर ॥ और अबिरहाम तंबूमें सरः पास उता
वलीसे गया और उसे कहा कि फुरती कर और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूं
ध और उसके फुलके पका ॥ और अबिरहाम झुंडकी ओर दौड़ा गया और एक अच्छा

मेरे और तुम्हारे मध्यमें नियमका चिन्ह होगा और तुम्हारी

और अब ईसाई लोग इस आज्ञा को क्यों नहीं करते यह आज्ञा सदाके लिये है इसके न करनेसे ईसाकी गवाही जो कि व्यवस्थाके पुस्तकार के बिन्दु भी झूठा नहीं है मिथ्या होगई इसका सोचविचार ईसाई कुछ भी नहीं करते ॥

को मल बछड़ा दास को दिया उसने भी उसे सिद्ध करने में चटक किया। और उसने मक्खन और दूध और वह बछड़ा जो पकाया था लिया और उनके आगे धरा और आप उनके पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्होंने खाया॥ तौ० पर्व १८ आ० १।२।३।४।५।६।७।८॥

समीक्षक— अब देखिये सज्जन लोगो! जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खावे उसके उपासक गाय बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़ें जिसको कुछ दया नहीं और मांस के खाने में आतुर रहे वह बिना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है और ईश्वर के साथ दो मनुष्य न जाने कौन थे इससे विदित होता है कि जंगली मनुष्यों की एक मंडली थी उनका जो प्रधान मनुष्य था उसका नाम बाइबिल में ईश्वर रक्खा होगा इन्हीं बातों से बुद्धिमान् लोग इनके पुस्तक को ईश्वरकृत नहीं मान सकते और ऐसे को ईश्वर समझते हैं ॥ २१ ॥

२२— और परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सरः क्यों यह कहके मुस्कुराई कि जो मैं बुढ़िया हूं सचमुच बालक जनूंगी क्या परमेश्वर के लिये कोई बात असाध्य है ॥ तौ० पर्व० १८ आ० १३।१४ ॥

समीक्षक० अब देखिये कि ईसाइयों के ईश्वर की लीला कि जो लड़के वा स्त्रियों के समान चिढ़ता और ताना मारता है ॥ २२ ॥

२३— तब परमेश्वर ने समूद और अमूरः पर गंधक और आग परमेश्वर की ओर से बर्षाया। और उन नगरों को और सारे चौगान को और नगरों के सारे निवासियों को और जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया ॥ तौ० उत्प० पर्व १९ आ० २४।२५॥

समीक्षक० अब यह भी लीला बाइबिल के ईश्वर की देखिये कि जिसको बालक आदि पर भी कुछ दया न आई क्या वे सब ही अपराधी थे जो सब को भूमि उलटा के दबा मारा यह बात न्याय दया और विवेक से विरुद्ध है जिनका ईश्वर ऐसा काम करे उनके उपासक क्यों न करें ॥ २३ ॥

२४· आओ हम अपने पिता को दाखरस पिलावें और हम उसके साथ शयन करें कि हम अपने पिता से वंश जुगावें तब उन्होंने उस रात अपने पिता को दाखरस पिलाया और पहिलौठी गई और अपने पिता के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाखरस पिलावें तू जाके शयन कर सो लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुई ॥ तौ० उत्प० पर्व १९ आ० ३२।३३।३४।३६ ॥

समीक्षक० देखिये पिता पुत्री भी जिस मद्यपान के नशे में कुकर्म करने से न बच सके ऐसे दुष्ट मद्य को जो ईसाई आदि पीते हैं उनकी बुराई का क्या पारावार है इसलिये सज्जन लोगों को मद्य के पीने का नाम भी न लेना चाहिये ॥ २४ ॥

२५— और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सरः से भेंट किया और अपने वचन के

समान परमेश्वर ने सरः के विषय में किया और सरः गर्भिणी हुई ॥ तौ० उत्प० पर्व २१

समीक्ष०— अब विचारिये कि सरः से भेंट करा गर्भवती कि ईयह काम कैसे हुआ क्या बिना परमेश्वर और सरः के तीसरा कोई गर्भस्थापन का कारण दीखता ? ऐसा विदित होता है कि सरः परमेश्वर की कृपा से गर्भवती हुई ॥ २५ ॥

२६ तब अबिरहाम ने बड़े तड़के उठ के रोटी और एक कुपखाल में जल लिया और हाजिरः के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप के उसे बिदा किया उसने उस लड़के को एक झाड़ी के तले डाल दिया और वह उसके सन्मुख बैठ के चिल्ला २ के रोई तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुना ॥ तौ० उत्प० पर्व २१ आ० १४।१५।१६।१७ ८

समीक्ष० अब देखिये ईसाइयों के ईश्वर की लीला कि प्रथम तो सरः का पक्षपात करके हाजिरः को वहां से निकलवा दी और चिल्ला २ रोई हाजिरः और शब्द सुना लड़के का यह कैसी अद्भुत बात है यह ऐसा हुआ होगा कि ईश्वर को भ्रम हुआ होगा कि यह बालक ही रोता है भला यह ईश्वर और ईश्वर की पुस्तक की बात कभी हो सकती है बिना साधारण मनुष्य के वचन के इस पुस्तक में थोड़ी सी बात सत्य के सब असार भरा है ॥ २६ ॥

२७ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा लिई हे अबिरहाम तू अपने बेटे को अपने इकलौते इजहाक को जिसे तू प्यार करता है ले उसे होमकी भेंट के लिये चढ़ा और अपने बेटे इजहाक को बांध के उसे बेदी में लकड़ियों पर धरा ॥ १५

और अबिरहाम ने छुरी ले के अपने बेटे को घात करने के लिये हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा कि तू ईश्वर से डरता है ॥ ॥ तौ० उत्प० पर्व २२ आ० ११२।९।१०।११।१२ ॥

समीक्ष०— अब स्पष्ट हो गया कि यह बायबिल का ईश्वर अल्पज्ञ है सर्वज्ञ नहीं और अबिरहाम भी एक भोला मनुष्य था नहीं तो ऐसी चेष्टा क्यों करता और जो बायबिल का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो उसकी भविष्यत् श्रद्धा को भी सर्वज्ञता से जान लेता इससे निश्चित होता है कि ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं ॥ २७ ॥ २२

२८ सो आप हमारी समाधिन में से चुन के एक में अपने मृतक को गाड़िये जिसतें आप अपने मृतक को गाड़े ॥ तौ० उत्प० पर्व २३ आ० ६ २१

समीक्ष०— मुर्दों के गाड़ने से संसार की बड़ी हानि होती है क्योंकि वह सड़ के वायु को दुर्गन्धमय कर रोग फैला देता है (प्रश्न) देखो जिससे प्रीति हो उसको जलाना अच्छी बात नहीं और गाड़ना जैसा कि उसको सुला देना है इसलिये गाड़ना अच्छा है। (उत्तर) २२

जो मृतक से प्रीति करते हो तो अपने घर में क्यों नहीं रखते और गाड़ते भी क्यों हो जिस जीवात्मा से प्रीति थी वह निकल गया अब दुर्गन्धमय मट्टी से क्या प्रीति और जो प्रीति करते हो ८

तो उसको पृथिवी में क्यों गाड़ते हो क्योंकि किसी से कोई कहे कि तुझको भूमि में गाड़ देवें तो वह सुनकर प्रसन्न कभी नहीं होता उसके मुख आंख और शरीर पर धूल पत्थर ईंट

डालना छाती पर पत्थर रखना कौन सा प्रीति का काम है और सन्दूक में डाल के गाड़-
ने से बहुत दुर्गन्ध होकर पृथिवी से निकल वायु को बिगाड़ कर दारुण रोगोत्पत्ति करता है।
दूसरा एक मुर्दे के लिये कम से कम ६ हाथ लम्बी और ४ हाथ चौड़ी भूमि चाहिये इसी
हिसाब से सौ, हजार वा लाख अथवा क्रोडों मनुष्यों के लिये कितनी भूमि व्यर्थ रुक
जाती है न वह खेत न बगीचा और न बसने के काम की रहती है इस लिये सब से बुरा
गाड़ना है उससे कुछ थोड़ा बुरा जल में डालना क्योंकि उसको जलजन्तु उसी समय चीर
फाड़ के खा लेते हैं परन्तु जो कुछ हाड़ वा मल जल में रहेगा वह सड़ कर जगत् को दुःख-
दायक होगा उससे कुछ एक थोड़ा बुरा जंगल में छोड़ना है क्योंकि उसको मांसाहारी प-
शु पक्षी लूंच खायेंगे तथापि जो उसके हाड़ की मज्जा और मल सड़ कर जितना दुर्गन्ध
करेगा उतना जगत् का अनुपकार होगा और जो जलाना है वह सर्वोत्तम है क्योंकि उ-
सके सब पदार्थ अणु होकर वायु में उड़ जायेंगे। (प्रश्न) जलाने से भी दुर्गन्ध होता है ॥ (उत्तर) जो अविधि से जलावे तो थो-
ड़ा सा होता है परन्तु गाड़ने आदि से बहुत कम होता है और जो विधिपूर्वक जैसा कि वेद
में लिखा है वेदी मुर्दे के तीन हाथ गहिरी साढ़े तीन हाथ चौड़ी पांच हाथ लंबी तले में डे-
ढ़ बीता अर्थात् चढ़ा उतार खोद कर शरीर के बराबर घी उसमें एक सेर में रत्तीभर
कस्तूरी माशाभर केशर डाल कम से कम आध मन चंदन अधिक चाहे जितना ले
अगर तगर कपूर आदि और पलाश आदि की लकड़ियों को वेदी में जमा उस पर मुर्दा रख के पुनः चारों ओर
ऊपर वेदी के मुख से एक एक बीता तक भर के उस घी की आहुति देकर जलाना लि-
खा है उस प्रकार से दाह करें तो कुछ भी दुर्गन्ध न हो किन्तु इसी का नाम अन्त्येष्टि नरमेध पु-
रुषमेध यज्ञ है और जो दरिद्र हो तो बीस सेर से कम घी चिता में न डाले चाहे वह भी-
ख मांग के वा जाति वाले के देने अथवा राज से मिलने से प्राप्त हो परन्तु उसी प्रकार दा-
ह करे और जो घृतादि किसी प्रकार न मिल सके तथापि गाड़ने आदि से केवल लकड़ी से
भी मुर्दे का जलाना उत्तम है क्योंकि एक विश्वा भर भूमि में अथवा एक वेदी में लाखों
करोड़ों मुर्दे जल सकते हैं भूमि भी गाड़ने के समान अधिक नहीं बिगड़ती और कबर के
देखने से भय भी होता है इससे गाड़ना आदि सर्वथा निषिद्ध है ॥ २८ ॥

२९- परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर धन्य है जिसने मेरे स्वामी को अपनी
दया और अपनी सच्चाई बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर
की ओर मेरी अगुआई किई ॥ तौ० उत्प० पर्व २४ आ० २७

समीक्षक- क्या वह अबिरहाम ही का ईश्वर था और जैसे आजकल बिगारी वा अगवे लोग अ-
गुआई अर्थात् आगे २ चल कर मार्ग दिखलाते हैं तथा ईश्वर ने भी किया तो आजकल
क्यों नहीं दिखलाता और मनुष्यों से बातें क्यों नहीं करता इसलिये ऐसी बातें ईश्वर वा ई-
श्वर के पुस्तक की कभी नहीं हो सकतीं किन्तु जंगली मनुष्य की हैं ॥ २९ ॥

३०- इसमअईल के बेटों के नाम ये हैं इसमअईल का पहिलौठा नबीत, और

कीदर, और अदबिएल, और मिबसाम, और मिसमाअ, और दूमः और म
स्सा, हदर और तैमा, इतूर, नफीस, और किदमः ॥ तौ० उत्प० पर्व २५ आ० १३
समीक्षक– यह इसमअईल अबिरहाम से उसकी हाजिरः दासी का पुत्र हुआ था ~~इसी का~~
~~वंश मुसलमान हुए हैं~~ ~~[illegible]~~ तभी दासीपुत्र होने से मुसलमान लोग बहुत
से खुशामदी होते हैं ॥ २० ॥
३१ मैं तेरे पिता की रुचि के समान स्वादित भोजन बनाऊंगी और तू अपने पिता
के पास ले जाइयो जिसतें वह खाय और अपने मरने से आगे तुझे आशीष देवे ॥
और रिबकः ने अपने घर में से अपने जेठे बेटे एसौ का अच्छा पहिरावा लिया और
र बकरी के मेमनों का चमड़ा उसके हाथों और गले की चिकनाई पर लपेटा तब
यअकूब अपने पिता से बोला कि मैं आपका पहिलौठा एसौ हूं आपके कहने
के समान मैंने किया है उठ बैठिये और मेरे अहेर के मांस में से खाइये जिसतें
आपका प्राण मुझे आशीष दे ॥ तौ० उत्प० पर्व २७ आ० ९ । १६ । १७ । १९
समीक्षक० देखिये ऐसे झूठ कपट से आशीर्वाद लेके पश्चात् सिद्ध और पैगंबर ब
नते हैं क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है और ऐसे ईसाइयों के अगुआ हुए हैं
पुनः इनके मत की गड़बड़ में क्या न्यूनता हो ॥ ३१ ॥
३२ और यअकूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे उसने अप
ना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और उसपर तेल डाला और उस स्थान का
नाम बैतएल रक्खा और यह पत्थर जो मैंने खंभा खड़ा किया ईश्वर का घर
होगा ॥ तौ० उत्प० पर्व २८ आ० १८ । १९ । २२ ॥
समीक्षक० – अब देखिये जंगलियों के काम इन्हीं ने पत्थर पूजे और पुजवाये
और इसको मुसलमान लोग (बैतएल मुकद्दस) कहते हैं क्या यही पत्थर
ईश्वर का घर और उसी पत्थर मात्र में ईश्वर रहता था वाह २ जी क्या कहना
है महाराज आप ही तो बुतपरस्त हो ॥ ३२ ॥
३३ और ईश्वर ने ~~[illegible]~~ राखिल को स्मरण किया और ईश्वर ने उसकी सु
नी और उसकी कोख को खोला और वह गर्भिणी हुई और ~~[illegible]~~ बेटा जनी
और बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई ॥ तौ० उत्प० पर्व ३० आ० २२ । २३
समीक्षक० – वाह ईसाइयों के ईश्वर क्या बड़ा डाक्टर है स्त्रियों की कोख खोलने को कौन से शस्त्र
वा औषध थे जिनसे खोली ये सब बातें अन्धाधुंध की हैं ॥ ३३ ॥
३४ परन्तु ईश्वर आरामी लाबन पास स्वप्न में रात को आया और उसे कहा कि
चौकस रह तू यअकूब को भला वा बुरा मत कहना क्योंकि तू अपने पिता के घर
का निपट अभिलाषी है तूने किसलिये मेरे देवों को चुराया है ॥ तौ० उत्प० पर्व ३१
आ० २४ । २९ । ३०
समीक्षक० – यह हम नमूना लिखते हैं हजारह मनुष्यों को स्वप्न में आया बातें किई

जाग्रत साक्षात् मिला खाया पिया आया गया आदि बायबिल में लिखा है परन्तु अ
ब न जाने वह है वा नहीं क्योंकि अब किसी को स्वप्न वा जाग्रत में भी ईश्वर नहीं मि
लता और यह भी विदित हुआ कि ये जंगली लोग पाषाणादि मूर्त्तियों को देव मान
कर पूजते थे नहीं तो देवों का चुराना कैसे घटे ॥ ३४ ॥

परन्तु ईसाई इन्हीं को ईश्वर सौ पत्थर ही को देव मानती है

~~३५ और यह अकूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की~~

३५ और यअकूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे आ मिले और
यअकूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की सेना है ॥ तौ० उत्प० पर्व ३२ आ० १। २॥
समीक्षक — अब ईसाइयों का ईश्वर मनुष्य होने में कुछ भी संदिग्ध नहीं रहा क्योंकि
सेना भी रखता है जब सेना हुई तो शस्त्र भी होंगे और जहां तहां चढ़ाई करके ल
ड़ाई भी करता होगा नहीं तो सेना रखने का क्या प्रयोजन है ॥ ३५ ॥

३६ और यअकूब अकेला रह गया और वहां पौ फटे लों एक जन उससे युद्ध करता
रहा। और जब उसने देखा कि वुह उस पर प्रबल न हुआ तो उसकी जांघ को भीतर से छूआ
तब यअकूब के जांघ की नस उसके संग मल्लयुद्ध करने में चढ़ गई। तब वुह
बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है और वुह बोला मैं तुझे जाने न दूंगा जब
लों तू मुझे आशीष न देवे। तब उसने उसे कहा कि तेरा नाम क्या और वुह बोला
कि यअकूब। तब उसने कहा कि तेरा नाम आगे को यअकूब न होगा परन्तु इस
राएल क्योंकि तूने ईश्वर के आगे और मनुष्यों के आगे राजा की नाईं मल्लयुद्ध कि
या और जीता। तब यअकूब ने यह कहि के उससे पूछा कि अपना नाम बताइये और वुह बो
ला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है और उसने उसे वहां आशीष दिया। और यअ
कूब ने उस स्थान का नाम फनूएल रक्खा क्योंकि मैंने ईश्वर को प्रत्यक्ष दे
खा और मेरा प्राण बचा है। और जब वुह फनूएल से पार चला तो सूर्य की ज्योति
उस पर पड़ी और वह अपनी जांघ से लंगड़ाता था। इसलिये इसराएल के वंश उस
जांघ की नस को जो चढ़ गई थी आज लों नहीं खाते क्योंकि उसने यअकूब के जांघ की न
स को जो चढ़ गई थी छूआ था ॥ तौ० उत्प० पर्व ३२ आ० २४। २५। २६। २७
। २८। २९। ३०। ३१। ३२ ॥

समीक्षक — जब ईसाइयों का ईश्वर अखाड़मल्ल है तभी तो सरः और राखल पर पु
त्र होने की कृपा की भला यह कभी ईश्वर हो सकता है और देखो लीला कि एक जना
नाम पूछे तो दूसरा अपना नाम ही न बतलावे और ईश्वर ने उसकी नाड़ी को
चढ़ा तो दी और जीत गया परन्तु जो डाक्टर होता तो जांघ को अच्छी भी कर सकता
था और ऐसे ईश्वर की भक्ति से जैसा कि यअकूब लंगड़ाता रहा तो अन्य भक्त
भी लंगड़ाते होंगे जब ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मल्लयुद्ध किया यह बात वि
ना शरीर वाले के कैसे हो सकती है यह केवल लड़कपन की लीला है ॥ ३६ ॥

३७ — और यहूदाह का पहिलौंठा एर परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर

३६ उसे मार डाला तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास जा और उससे ब्याह कर अपने भाई के लिये वंश चला और ओनान ने जाना कि यह वंश मेरा न होगा और यों हुआ कि जब वुह अपनी भाई की पत्नी पास गया तो वीर्य्य को भूमि पर गिरा दिया और उसका वुह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इसलिये उसने उसे भी मार डाला ॥ तौ० उत्प० प० ३८ आ० ७।८।९।१०।११ ॥

समी०— अब देखलीजिये ये मनुष्यों के काम हैं कि ईश्वर के जब उसके साथ नियोग हुआ तो उसको क्यों मार डाला उसकी बुद्धि शुद्ध क्यों न कर दी और वेदोक्त नियोग भी प्रथम सर्वत्र चलता था यह निश्चय हुआ कि नियोग की बातें सब देशों में चलती थीं ॥ ३७ ॥

३८— ॥ तौरेत यात्रा की पुस्तक ॥

३९— और फसह मेम्ना मारो और एक मूठी जूफा ले ओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोर के ऊपर की चोखट के और द्वार की दोनों ओर उससे छापो और तुम में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से बाहर न जावे क्योंकि परमेश्वर मिस्र के मारने के लिये आर पार जायगा और जब वुह ऊपर की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में न जाने देगा कि मारे ॥ तौ० या० पर्व १२ आ० २२।२३।२४ ॥

समी०— भला यह जो टोने टामन करने वाले के समान है वह ईश्वर सर्वज्ञ कभी हो सकता है जब लोहू का छापा देखे तभी इसराइल कुल का घर जाने अन्यथा नहीं यह काम क्षुद्र बुद्धि वाले मनुष्य के सदृश है इससे यह विदित होता है कि ये बातें किसी जंगली मनुष्य की लिखी हैं ॥ ३८ ॥

४०— और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिस्र देश में सारे पहिलौंठे को फिरऊन के पहिलौंठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ के पहिलौंठे लों जो बंदीगृह में था पशुन के पहिलौंठे समेत नाश किये और रात को फिर ऊन उठा वुह और उसके सब सेवक और सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा विलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिसमें एक न मरा ॥ तौ० या० प० १२ आ० २९।३० ॥

समीक्षक— वाह अच्छा आधी रात को डाकू के समान निर्दयी होकर ईसाइयों के ईश्वर ने लड़के बाले बृद्ध और पशुन तक भी बिना अपराध मार दिये

जब मूसा बड़ा हुआ तो ... और अपने भाइयों में से एक इब्रानी को देखा कि मिस्री उसे मार रहा है तब उसने इधर उधर दृष्टि किई देखा कि कोई नहीं तब उसने उस मिस्री को मार डाला और बालू में उसे छिपा दिया जब वुह दूसरे दिन बाहर गया तो देखो दो इब्रानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उसने उस अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को क्यों मारता है तब उसने कहा कि किसने तुझे हम पर अध्यक्ष वा न्यायी ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति तूने मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और भाग निकला तौ० या० पर्व २ आ० ११। १२।१३।१४।१५

और कुछ भी दया न आई और मिस्र में बड़ा विलाप होता रहा तो भी ईसाइयों के ईश्वर के चित्त से निठुरता नष्ट न हुई ऐसा काम ईश्वर का तो क्या किन्तु किसी साधारण मनुष्य के भी करने का नहीं है। यह आश्चर्य नहीं क्योंकि लिखा है (मांसाहारिणः कुतो दया) जब ईसाइयों का ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया करने से क्या काम है ॥४०॥

४१— परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा॥ इस्रायेल के सन्तान से कह कि वे आगे बढ़ें परन्तु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उस से दो भाग कर और इस्रायेल के सन्तान समुद्र के बीचों बीच से सूखी भूमि में होकर चले जायेंगे॥ तौ० या० प० १४ आ० १४।१५।१६

समी०— क्यों जी आगे तो ईश्वर भेड़ों के पीछे गड़रिये के समान इस्रायेल कुल के पीछे २ डोला करता था अब न जाने कहां अन्तर्धान हो गया नहीं तो समुद्र के बीच में से चारों ओर की रेलगाड़ियों की सड़क बनवाते जिससे सब संसार का उपकार होता [और नाव आदि बनाने का श्रम छूट जाता।] परन्तु क्या किया जाय ईसाइयों का ईश्वर न जाने कहां छिप रहा है इत्यादि बहुत सी मूसा के साथ असंभव लीला बायबिल के ईश्वर ने की हैं परन्तु यह विदित हुआ कि जैसा ईसाइयों का ईश्वर है वैसे ही उसके सेवक और ऐसी ही उसकी बनाई पुस्तक है ऐसी पुस्तक और ऐसा ईश्वर हम लोगों से दूर रहे तभी अच्छा है ॥ ४१॥

४२— क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित सर्वशक्तिमान् हूं पितरों के अपराध का दंड उनके पुत्रों को जो मेरा वैर रखते हैं उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ी लों देवैया हूं ॥ तौ० या० प० २० आ० ५।६॥

समी०— भला यह किस घर का न्याय है कि जो पिता के अपराध से चार पीढ़ी तक दंड देना अच्छा समझना क्या अच्छे पिता के दुष्ट और दुष्ट के अच्छे [सन्तान] नहीं होते जो ऐसा है तो चौथी पीढ़ी तक दंड कैसे दे सकेगा और जो पांचवीं पीढ़ी से आगे दुष्ट होगा उसको दंड न दे सकेगा बिना अपराध किसी को दंड देना अन्यायकारी की बात है ॥ ४२ ॥

४३— विश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने के लिये स्मरण कर। छः दिन लों तू परिश्रम कर और सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का विश्राम है॥ परमेश्वर ने विश्राम दिन को आशीष दी ॥ तौ० या० प० २० आ० ८।९।१०॥

समीक्ष०— क्या रविवार एक ही पवित्र और छः दिन अपवित्र हैं और क्या परमेश्वर ने छः दिन तक बड़ा परिश्रम किया था कि जिससे थक के सातवें दिन सो गया और जो रविवार को आशीर्वाद दिया तो सोमवार आदि

छः दिनों को क्या दिया अर्थात् स्राप दिया होगा ऐसा काम ~~ईश्वर और~~ विद्वान् का भी नहीं तो ईश्वर का क्योंकर हो सकता है भला र विवार में क्या गुण औ र सोमवार आदि ने क्या दोष किया था कि जिससे एक को पवित्र तथा वर दिया ~~और~~ और अन्यों को ऐसे ही अपवित्र कर दिये ॥ ४३ ॥

४४ — अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे अपने परोसी की स्त्री और उस के दास उसकी दासी और उसके बैल और उसके गदहे और किसी वस्तु का जो तेरे परोसी की है लालच मत कर ॥ तौ० या० प० २० आ० १६।१७ ॥

समी० — वाह तभी तो ईसाई लोग परदेशियों के माल पर ऐसे झुकते हैं कि जानों प्यासा जल पर भूखा अन्न पर जैसी यह केवल मतलब सिंधु और पक्ष पात की बात है ऐसा ही ईसाइयों का ईश्वर अवश्य होगा। यदि कोई कहे कि हम सब मनुष्य मात्र को परोसी मानते हैं तो सिवाय मनुष्यों के अन्य कौन स्त्री और दासी वाले हैं कि जिनको अपरोसी गिनें, इसलिये ये बातें स्वार्थी मनुष्यों की हैं ईश्वर की नहीं ॥ ४४ ॥

४५ — सो अब लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो प्राण से मारो परन्तु वे बेटियां जो पुरुष से संयुक्त नहीं हुई हैं उन्हें अपने लिये जीती रक्खो ॥ तौ० गिनती० प० ३१ आ० १७।१८।१९ ॥

समी० — वाह जी मूसा पैगंबर और तुम्हारा ईश्वर धन्य है कि जिन्होंने स्त्री बालक वृद्ध और पशु आदि की हत्या करने से भी अलग न रहे और इससे स्पष्ट निश्चित होता है कि मूसा विषयी था क्योंकि जो विषयी न होता तो अक्षत योनि अर्थात् पुरुषों से समागम न की हुई कन्याओं को अपने लिये मंगाता वा उनको ऐसी निर्दय वा विषयीपन की आज्ञा क्यों देता ॥ ४५ ॥

~~४६ — यह थोड़ा सा तौरेत के विषय में लिखा इसके आगे थोड़ा सा मत्ती रचित इंजील के विषय में लिखा जाता है कि जिसको ईसाई लोग बहुत प्रमाणभूत मानते हैं जिसका नाम इंजील रक्खा है उसकी परीक्षा थोड़ी सी लिखते हैं कि यह कैसी है ॥ ४६ ॥~~

४६ — जो कोई किसी मनुष्य को मारे और वह मर जाय वह निश्चय घात किया जाय। और वह मनुष्य घात में न लगा हो परन्तु ईश्वर ने उसके हाथ में सौंप दिया हो तब मैं तुझे भागने का स्थान बता दूंगा। तौ० या० प० २१ आ० १२। १३

समी० जो यह ईश्वर का न्याय सच्चा है तो मूसा ने एक आदमी को मार गाड़ कर भाग गया था उसको यह दंड क्यों न हुआ जो कहो ईश्वर ने मूसा को मारने के निमित्त सौंपा था तो ईश्वर पक्षपाती हुआ क्योंकि उस मूसा का राजा से न्याय क्यों न होने दिया॥ ४६॥

४७ — और कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर के लिये चढ़ाया॥ और मूसा ने आधा लोहू ले के पात्रों में

रक्खा और आधा लोहू बेदी पर छिड़का॥ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियां और व्यवस्था और आज्ञा जो मैंने लिखी हैं दूंगा। तौ० या० प० २४ आ० ५-६। ८। १२

और मूसा ने उस लोहू को ले के लोगों पर छिड़का और कहा कि यह लोहू उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने इन बातों के कारण तुम्हारे साथ किया है॥

समी० अब देखिये ये सब जंगली लोगों की बातें हैं वा नहीं और परमेश्वर बैलों का बलिदान लेता और बेदी पर लोहू छिड़कना यह कैसी जंगलीपन और असभ्यता की बात है जब ईसाइयों का खुदा भी बैलों का बलिदान लेवे तो उसके भक्त बैल गाय के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यों-

३५८

और न मरें जगत की हानि न करें ऐसी २ बुरी बातें बायबि-
लमें भरी हैं इसी के कुसंस्कारों से वेदों में दोष लगाना / तो ऐसा
चाहते हैं परन्तु वेदों में ऐसी बातों का नाम भी नहीं । झूठा
और यह भी निश्चय हुआ कि ईसाइयों का ईश्वर एक प-
हाड़ी मनुष्य था पहाड़ पर रहता था जब वह खुदा स्याही
लेखनी कागज नहीं बना जानता था और न उसको प्राप्त
था इसी लिये पत्थर की पटियों पर लिख २ देता था
और इन्हीं जंगलियों के सामने ईश्वर भी बन बैठा ॥४८॥ [illegible]
और बोला कि तू मेरा
रूप नहीं देख सकता क्योंकि मुझे देख के कोई मनुष्य
नहीं जियेगा। और परमेश्वर ने कहा कि देख एक
स्थान मेरे पास है और तू उस टीले पर खड़ा रह । औ-
र यों होगा कि जब मेरा विभव चल के निकलेगा तो मैं
तुझे पहाड़ के दरार में रक्खूंगा और जब लों जा नि-
कलूं तुझे अपने हाथ से ढांपूंगा। और अपना हाथ उठा लूंगा
और तू मेरा पीछा देखेगा परन्तु मेरा रूप दिखाई न दे-
गा। तौ॰ या॰ प॰ ३३ आ॰ २०।२१।२२।२३
समीक्षक॰ अब देखिये ईसाइयों का ईश्वर केवल मनु-
ष्यवत शरीरधारी और मूसा से कैसा प्रपंच रचके आप
स्वयं ईश्वर बन गया जो पीछा देखेगा रूप न देखेगा तो

हाथसे उस को ढांपा दिया भी न होगा जब खुदा ने अपने हाथ से मूसा को ढांपा होगा तब क्या उसके हाथ का
११४ रूप उसने न देखा होगा॥ (लैव्य वस्था की पुस्तक तौ॰)

४८ — और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया, और मंडली के तम्बू में से उसे यह वचन कहा कि इसराएल के सन्तान में से बोल और उन्हें कह यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम ढोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ - तौ॰ लैव्य॰ व्यवस्था की पुस्तक॰ १०२ आ॰ १।२

समीक्षक — अब विचारिये ईसाइयों का परमेश्वर गाय बैल आदि की भेंट लेनेवाला जो कि अपने लिये बलिदान कराने के लिये उपदेश करता है वह बैल गाय आदि पशुओं के लोहू मांस का प्यासा भूखा है वा नहीं इसी से वह अहिंसक और ईश्वर कोटी में गिना कभी नहीं जा सकता किन्तु मांसाहारी प्रपंची मनुष्य के सदृश है॥

४९ — और वह उस बैल को परमेश्वर के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को निकट लावें और लोहू को यज्ञ बेदी के चारों ओर जो मंडली के तम्बू के द्वार पर है छिड़कें तब वह उस भेंट की बलिदान की खाल निकाले और उसे टुकड़ा २ करे। और हारून के बेटे याजक यज्ञ बेदी पर आग रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें और हारून के बेटे याजक उसके टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो यज्ञ बेदी की आग पर हैं विधि से धरें जिसतें बलिदान की भेंट होवे जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया - तौ॰ लैव्य वस्था की पुस्तक॰ प॰ १ आ॰ ५-६-७-८-९

समी॰ — तनिक विचारिये कि बैल को परमेश्वर के आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे और लो-

हू को चारूं ओर छिड़कें अग्नि में होम करें ईश्वर सुगन्ध लेवें भला यह कसाई के घर से कुछ कम लीला है? ईसाई से न बाइबल का ईश्वर कुन और न वह जंगली मनुष्य के सदृश लीलाधारी ईश्वर हो सकता है ॥ ४८ ॥

५० फिर परमेश्वर मूसा से यह कह के बोला यदि वह अभिषेक किया हुआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वह अपने पाप के कारण जो उसने किया है अपने पाप की भेंट के लिये निसखोट एक बछिया परमेश्वर के लिये लावे और बछिया के सिर पर अपना हाथ रक्खे और परमेश्वर के आगे बली करे। लै० तौ० प० ४। आ० १। २। ३। ४

समीक्षक— अब देखिये पापों के छुड़ाने के प्रायश्चित्त स्वयं पाप करें गाय आदि उत्तम पशुओं की हत्या करें और परमेश्वर करवावें धन्य हैं ईसाई लोग कि ऐसी बातों के करने कराने हारे को भी ईश्वर मानकर अपनी मुक्ति आदि की आशा करते हैं ॥ ५० ॥

५१ जब कोई अध्यक्ष पाप करे तब वह बकरी का निसखोट नर मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे और उसे परमेश्वर के आगे बलि करे। तौ० लै० प० ४ आ० २२। २३। २४ यह पाप की भेंट है।

समी०— वाह जी वाह यदि ऐसा है तो इनके अध्यक्ष अर्थात् न्यायाधीश तथा सेनापति आदि पाप करने से क्यों डरते होंगे आप तो यथेष्ट पाप करें और प्रायश्चित्त के बदले में गाय बछड़े या बकरे आदि के प्राण लेवें तभी तो ईसाई लोग किसी पशु वा पक्षी के प्राण लेने में शंकित नहीं होते सुनो ईसाई लोगो अब तो इस जंगली मत को छोड़ के सुसभ्य धर्ममय वेदमत को स्वीकार करो कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो। ५१ ॥

५२ और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वह अपने किये हुए अपराध के लिये दो पिंडुकियां और कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावे और उसका शिर उसके गले के पास से मरोड़ डाले परन्तु अलग न करे उसके लिये हुए पाप का प्रायश्चित्त करे और उसके लिये क्षमा किया जायगा॥ पर यदि उसे दो पिंडुकियां और कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये वे उस पर तेल न डाले और वह क्षमा किया जायगा॥ तौ॰ लै॰ प॰ ५ आ॰ ७।८।१०।११।१३॥

समी॰ अब सुनिये ईसाईयों में पाप करने से कोई धनाढ्य न डरता होगा और न गरीब क्योंकि इनके ईश्वर ने पापों का प्रायश्चित्त करना सहज कर रक्खा है एक यह बात ईसाइयों की बायबिल में बड़ी अद्भुत है कि बिना कष्ट किये पाप से पाप छूट जाय क्योंकि एक तो पाप किया और दूसरे जीवों की हिंसा की और खूब आनन्द से मांस खाया और पाप भी छूट गया भला कपोत के बच्चे का गला मरोड़ने से वह बहुत देर तक तड़फता होगा तब भी ईसाइयों को दया नहीं आती दया क्योंकर आवे इनके ईश्वर का उपदेश ही हिंसा करने का है और जब सब पापों का ऐसा प्रायश्चित्त है तो ईसा के विश्वास से पाप छूट जाता है यह बड़ा आडम्बर क्यों करते हैं॥

५३ सो उसी बलिदान की खाल उसी याजक की होगी जिसने उसे चढ़ाया और समस्त भोजन की भेंट जो तन्दूर में पकाई जावे और जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी॥ तौ॰ लै॰ प॰ ७ आ॰ ८।९॥

समी॰ हम जानते थे कि यहां देवी के भोपे और मन्दिरों के पुजारियों की पोपलीला विचित्र है परन्तु ईसाइयों के ईश्वर और उनके पुजारियों की पोपलीला इससे सहस्रगुणी बढ़कर है क्योंकि चाम के दाम

और भोजन के पदार्थ खाने को आवें फिर ईसाइयों ने
खूब मौज उड़ाई होगी और अब भी उड़ाते होंगे भला
कोई मनुष्य एक लड़के को मरवावे और दूसरे लड़के
को उसका मांस खिलावे ऐसा कभी हो सकता है वैसे ही
ईश्वर के सब मनुष्य और पशु पक्षी आदि सब जीव पुत्र
वत् हैं परमेश्वर ऐसा काम कभी नहीं कर सकता इसी
से यह बायबिल ईश्वरकृत और इसमें लिखा ईश्वर
और इसके मानने वाले ~~[illegible]~~ धर्मज्ञ कभी नहीं हो सकते
ऐसी ही सब बातें लैव्यव्यवस्था आदि पुस्तकों में भरी हैं क-
हां तक गिनावें ॥ ~~[illegible]~~ ॥५३॥ (गिनती की पुस्तक)

~~[illegible]~~ ५४—सो गदही ने परमेश्वर के दूत को अ-
पने हाथ में तलवार खेंचे हुए मार्ग में (खड़ा) देखा तब गदही
मार्ग से अलग खेत में फिर गई उसे मार्ग में फिरने के
लिये बलआम ने ~~[illegible]~~ गदही को (लाठ) ने मारा तब परमेश्वर ने गद-
ही का मुंह खोला और उसने बलआम से कहा कि मैंने
तेरा क्या किया है कि तूने मुझे अब तीन बार मारा। तौ०
गि० प० २२ आ० २३-२८॥

समी० प्रथम तो गदहे तक ईश्वर के दूतों को देखते थे
और आजकल बिसप पादरी आदि ~~[illegible]~~ श्रेष्ठ वा
खुदा वा उसके दूत
अश्रेष्ठ मनुष्यों को भी न (ही) दीखते हैं क्या आजकल पर-
मेश्वर (और उस) के दूत हैं वा नहीं यदि हैं तो क्या बड़ी नींद में सोते हैं
वा रोगी अथवा अन्य भूगोल में चले गये वा किसी अ-
न्य धन्धे में लग गये वा अब ईसाइयों से रुष्ट हो गये
अथवा मर गये विदित न(हीं) ~~[illegible]~~ होता कि क्या हुआ अ-
नुमान तो ऐसा होता है कि जो अब नहीं हैं नहीं दीख-
ते ~~[illegible]~~ तो तब भी नहीं थे और न ~~[illegible]~~ दीखते होंगे किन्तु ये
केवल मनमाने गपोड़े उड़ाये हैं ॥ ~~[illegible]~~ ॥५४॥ (समुएल की पुस्तक)

~~[illegible]~~ ॥५५॥ और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का वचन
यह कह के नातन (को पहुंचा) ~~[illegible]~~ कि जा और मेरे सेवक दाऊद से

[illegible]

कहा कि परमेश्वर यों कहता है मेरे निवास के लिये तू एक घर बनावेगा क्योंकि जब से इस्राएल के सन्तान को मिस्र से निकाल लाया मैंने आज के दिन लों घर में निवास न किया परन्तु तम्बू में और डेरे में फिरा किया हों - समुएल दूसरी पु० १ आ० ७।५।६ -

समी० अब कुछ सन्देह न रहा कि ईसाइयों का ईश्वर मनुष्य वत देहधारी नहीं है और उलहना देता है कि मैंने बहुत परिश्रम किया इधर उधर डोलता फिरा अब दाऊद घर बना दे तो उसमें आराम करूं क्यों ईसाइयों को [illegible] ऐसे ईश्वर और ऐसे पुस्तक को मानने में लज्जा नहीं आती परन्तु क्या करें विचारे [illegible] फस रही गये अब निकलने के लिये बड़ा पुरुषार्थ करना उचित है ॥ ५५ ॥ और [illegible] की पुस्तक,

॥५६॥ और बाबुल के राजा नबूकदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसरअदान जो निज सेना का प्रधान था यरूसलम में आया और उसने परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन और यरूसलम के सारे घर और हर एक बड़े घर को जला दिया और कसदियों की सारी सेना ने जो उस निज सेना के प्रधान के साथ थी यरूसलम की भीतों को चारों ओर से ढा दिया। तौ० रा० पु० २५ आ० ८।९।१०

समी० — [illegible] किय जाय ईसाइयों के ईश्वर ने तो अपने आराम के लिये दाऊद आदि से घर बनवाया था उसमें आराम करता होगा, परन्तु नबूसरअदान ने ईश्वर के घर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया और ईश्वर वा उसके दूतों की सेना कुछ भी न कर सकी प्रथम तो इनका ईश्वर बड़ी लड़ाइयां मारता था और विजयी होता था परन्तु अब अपना घर जला तुड़वा बैठा न जाने चुपचाप क्यों बैठा रहा और न जाने उसके दूत किधर भाग गये

ऐसे समय पर कोई भी काम न आया और ईश्वर का पराक्रम भी न जाने कहां उड़ गया यदि यह बात सच्ची हो तो जो २ विजय की बातें प्रथम लिखी सो २ सब व्यर्थ हो गईं क्या मिस्र के लड़का लड़कियों के मारने में ही शूर बीर बना था अब शूर बीरों के सामने चुप चाप हो बैठा यह तो ईसाइयों के ईश्वर ने अपनी निन्दा और अप्रतिष्ठा करा ली ऐसी हि हजार हैं ॥ (५६)

(जबूर दूसरा भाग) (काल के समाचार की पहली पुस्तक)

५७ — सो परमेश्वर मेरे ईश्वर ने इसराएल पर मरी भेजी और इसराएल में से सत्तर सहस्र पुरुष गिर गये

काल० प० २१ आ० १४

समी० अब देखिये इसराएल के ईसाइयों के ईश्वर की लीला जिस इसराएल कुल को बहुत से बर दिये थे और रात दिन जिनके पालन में डोलता था अब झट क्रोधित होकर मरी डालके सत्तर हजार आदमियों को मार डाला जो यह किसी कवि ने लिखा है सत्य है कि — क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टो रुष्टः तुष्टः क्षणे क्षणे। अव्यवस्थित चित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः॥

(ऐयूब की पुस्तक)

५८ — और एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आ खड़े हुए और शैतान भी उनके मध्य में परमेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ और परमेश्वर ने शैतान से कहा कि तू कहां से आता है तब शैतान ने उत्तर दे के परमेश्वर से कहा कि पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरता चला आता हूं तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तूने मेरे दास ऐयूब को जांचा है कि उसके समान पृथिवी में कोई नहीं है वह सिद्ध और खरा जन ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता है और अब लों अपनी सच्चाई को धर रक्खा है और तूने मुझे उसे अकारण नाश करने को उभारा है तब शैतान ने उत्तर देके परमेश्वर से कहा कि चाम के लिये चाम हां जो मनुष्य का है सो अपने प्राण के।

मरी

इस पुस्तक में निकम्मी कहानियां

मनुष्य के प्रमाण से प्रमाण ... प्रमाणों से ... अथवा ईश्वरकृत सिद्ध करे

और कोई अपनी इच्छा से ... कैसी अच्छी ... ईसाइयों के ईश्वर की है ॥५७॥

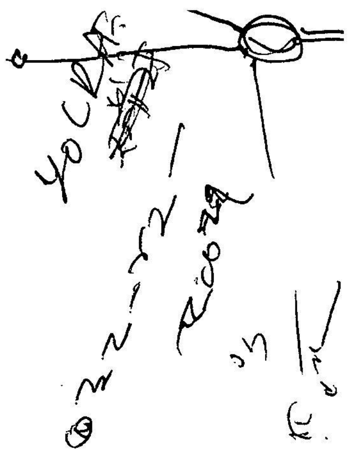

ऽ ऽ । । । । । ।
चेतः किल मुदयति

ऽ ऽ । । । । । । । । । । ।
रम्यं गुरुकुलमुपगिरिनदि

ऽ ऽ । । । । । । । । । । । । ।
शश्वच्छुभजनलघुतरसुतवरकृ

ऽ ऽ । । । । । । । । । । । । । ।
वेदाभ्यसनमननियमयमजप

लिये देगा। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ा और उसके हा-
ड़ मांस को छू तब वह निःसन्देह तुझे तेरे सामने त्यागे-
गा। तब परमेश्वर ने शैतान से कहा कि देख वह तेरे
हाथ में है केवल उसके प्राण को बचा। तब शैतान ने परमेश्व-
र के आगे से चला गया और ऐयूब को शिर से तलवे लों बुरे
फोड़ों से मारा। ऐयू॰ प॰ २ आ॰ १।२।३।४।५।६।७

समी॰ अब देखिये ईसाईयों के ईश्वर की
सामर्थ्य कि शैतान उसके सामने उसके भक्तों को
दुःख देता है न शैतान को दण्ड न अपने भक्तों को बचा
सकता है और न दूतों में से कोई उसका सामना कर सकता है एक शैतान ने सब को भय
भीत कर रक्खा है और ईसाइयों का ईश्वर भी सर्वज्ञ
नहीं है सर्वज्ञ होता तो ऐयूब की परीक्षा शैतान से
क्यों कराता। ॥५८॥ (उपदेश की पुस्तक)

५९ हां मेरे अन्तःकरण ने बुद्धि और
ज्ञान बहुत देखा है और मैंने बुद्धि और बौड़हपन और मू-
ढ़ जानने को मन लगाया मैंने जान लिया कि यह भी मन का
झंझट है क्योंकि अधिक बुद्धि में बड़ा शोक है और जो ज्ञा-
न में बढ़ता है सो दुःख में बढ़ता है। उप॰ प॰ १ आ॰ १६।१७।
१८॥

समी॰ अब देखिये जो बुद्धि और ज्ञान पर्यायवाची हैं उ-
न को दो मानते हैं और बुद्धि वृद्धि में शोक और दुःख
मानना बिना अविद्वानों के ऐसा लेख कौन कर सकता
है इस लिये यह बाइबिल ईश्वर की बनाई तो क्या।
किसी विद्वान की भी बनाई नहीं है। ॥५९॥

यह थोड़ासा तौरेत के विषयमें जरूर लिखा, इसके आगे थोड़ासा मत्तीरचित आदि अंजील के विषयमें लिखा जाता है कि जिसको ईसाई लोग बहुत प्रमाणभूत मानते हैं जिसका नाम इंजील रक्खा है उसकी परीक्षा थोड़ीसी लिखते हैं कि यह कैसी है।

((मत्तीरचित इंजील)) ~~(सत्या० समु० १३ । २५५)~~

६० यीशुखीष्टका जन्म इस रीति से हुआ उसकी माता मरियम की यूसफ से मंगनी हुई थी परन्तु उनके इकट्ठे होने के पहिले ही वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मा से गर्भवती है देखो परमेश्वर के एक दूतने स्वप्न में उसे दर्शन दे कहा हे दाऊद के सन्तान यूसफ तू अपनी स्त्री मरियम को यहां लाने से मत डर क्योंकि उसको जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मा से है ॥ इं० प० १ आ० १८ । २० ॥

समी०— इन बातोंको कोई विद्वान् नहीं मान सकता कि जो प्रत्यक्षादि प्रमाण और सृष्टिक्रम से विरुद्ध हैं इन बातोंका मानना मूर्खमनुष्य जंगलियों का काम है सभ्य विद्वानोंका नहीं भला जो परमेश्वर का नियम है उसको कोई नहीं तोड़ सकता और जो परमेश्वर भी अपने नियम को उलटा पलटा करे तो उसकी आज्ञा को कोई न माने और वह भी सर्वज्ञ और निर्भ्रम है ऐसे तो जिस २ कुमारिका के गर्भ रह जाय तब सब कोई ऐसे कह सकते हैं कि इसमें गर्भका रहना ईश्वर की ओर से और झूठमूठ कह दे कि परमेश्वर के दूतने मुझको स्वप्न में कह दिया है कि यह गर्भ परमात्मा की ओर से है जैसा यह असंभव प्रपंच रचा है वैसा ही सूर्य से कुंतिका गर्भवती होना भी पुराणों में असंभव लिखा है ऐसी २ बातोंको आंखके अंधे गांठके पूरे लोग मानकर भ्रमजाल में गिरते हैं यह ऐसी बात हुई होगी किसी पुरुष के साथ समागम होने से गर्भवती मरियम हुई होगी, उसने वा किसी दूसरेने ऐसी असंभव बात उड़ा दी होगी कि इसमें गर्भ ईश्वर की ओर से है ॥ ६० ॥

सेवाकी और दूसरेको भी माता पिताकी सेवासे छुड़ाये इसी अपराधसे चिरंजीवी न रहा और यह भी विदित हुआ कि ईसाने मनुष्योंके फसानेके लिये एक मत चलाया है कि जालमें मच्छीके समान मनुष्योंको स्वमतमें फसाकर अपना प्रयोजन साधें जब ईसा ही ऐसा था तो आजकालके पादरी लोग अपने जालमें मनुष्योंको फसावें तो क्या आश्चर्य है। क्योंकि जैसे बड़ी २ और बहुत मच्छियोंका जालमें फसानेवालेकी प्रतिष्ठा और जीविका अच्छी होती है ऐसे ही जो बहुतोंको अपने मतमें फसाले उसकी अधिक प्रतिष्ठा और जीविका होती है इसीसे ए लोग जिन्होंने वेद और शास्त्रोंको न पढ़ा न सुना उन बिचारे भोले मनुष्योंको अपने जालमें फसाके उसके मा बाप कुटुम्ब आदिसे पृथक् कर देते हैं इससे सब विद्वान् आर्योंको उचित है कि स्वयं इनके भ्रमजालसे बचकर अन्य अपने भोले भाइयोंके बचानेमें तत्पर रहैं ॥ ६२ ॥

६३—तब यीशु सारे गालील देशमें उनकी सभाओंमें उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया सब रोगियोंको जो नाना प्रकारके रोगों और पीड़ाओंसे दुःखी थे और भूतग्रस्तों और मृगीवाले और अर्धाङ्गियोंको उसपास लाये और उसने उन्हें चंगा किया ॥ इं० मत्ती प० ४ आ० २३।२४।२५ ॥

समी०—जैसे आजकल पोपलीला निकालने मंत्र पुरश्चरण आशीर्वाद बीज और भस्मकी चुटकी देनेसे भूतोंको निकालना रोगोंको छुड़ाना सच्चा हो तो वह अंजीलकी बात भी सच्ची होवे इसवास्ते भोले मनुष्योंको भ्रममें फसानेके लिये ए बातें हैं जो ईसाई लोग ईसाकी बातोंको मानते हैं तो यहांके देवी भोपोंकी बातें क्यों नहीं मानते क्योंकि वे बातें इन्हींके सदृश हैं ॥ ॥ ६३ ॥

६४—धन्य वे जो मनमें दीन हैं क्योंकि स्वर्गका राज उन्हीका है ॥ इं० मत्ती० प० ५ आ० ३।४ ॥ क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों आकाश और पृथिवी टल न जावें तबलों व्यवस्थासे एक मात्रा अथवा एक बिंदु बिना पूरे हुए न ही टलेगा। इसलिये इन अति छोटी आज्ञाओंमेंसे एकको लोपकर और लोगोंको वैसे ही सिखावे वह स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा कहावेगा। इं० मत्ती० प० ५ आ० ३।४। १८।१९

समीक्षक— जो स्वर्ग एक है तो राजा भी एक होना चाहिये इसलिये जितने दीन हैं वे सब स्वर्ग को जावेंगे तो स्वर्ग में राज्य का अधिकार किस को होगा अर्थात परस्पर लड़ाई भिड़ाई करेंगे और राज्य व्यवस्था खंड बंड हो जायगी और दीन के कहने से जो कंगले लोगे तब तो ठीक नहीं जो निर्भिमानी लोगे तो भी ठीक नहीं क्योंकि दीन और अभिमान का एकार्थ नहीं किन्तु जो मन में दीन होता है उसको संतोष कभी नहीं होता इसलिये यह बात ठीक नहीं ॥

६५—अपने लिये पृथिवी पर धन का संचय मत करो ॥ ई० म० प० ६ आ० १९ ॥

समी०—जब ऐसा है तो ईसाई लोग धन संचय क्यों करते हैं उनको चाहिये कि ईसा के वचन से विरुद्ध न चलकर सब दान पुण्य कर के दीन हो जायें ॥ ६५ ॥

६६—हर एक जो मुझ से हे प्रभु २ कहता है स्वर्ग के राज में प्रवेश नहीं करेगा ॥ ई० म० प० ७ आ० २१ ॥

समीक्षक— अब विचारिये बड़े २ पादरी विसप साहेब और कृश्चीन लोग जो यह ईसा का वचन सत्य है ऐसा समझें तो ईसा को प्रभु अर्थात् ईश्वर कभी न कहें यदि न मानेंगे तो पाप से कभी नहीं बच सकेंगे ॥ ६६ ॥

६७—उस दिन में बहुतेरे मुझ से कहेंगे तब मैं उन से खोल के कहूंगा मैंने तुम को कभी नहीं जाना है कुकर्म करने हारे मुझ से दूर होओ ॥ ई० म० प० ७ आ० २२ । २३ ॥

समीक्षक—— देखिये ईसा जंगली मनुष्यों को विश्वास कराने के लिये स्वर्ग में न्यायाधीश बनना चाहता है यह केवल भोले मनुष्यों को प्रलोभन देने की बात है ॥ ६७ ॥

६८—और देखो एक कोढ़ी ने आ उसको प्रणाम कर कहा हे प्रभु आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं यीशु ने हाथ बढ़ा उसे छू के कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा और उस का कोढ़ तुरंत शुद्ध हो गया ॥ ई० म० प० ८ आ० २ । ३ ॥

समी० ये सब बातें भोले मनुष्यों के फसाने की हैं क्योंकि जब ईसाई लोग इन विद्या सृष्टिक्रम विरुद्ध बातों को सत्य मान लेते हैं तो (शुक्राचार्य) धनवन्तरी कश्यप आदि की बात पुराण और भारत में अनेक दैत्यों

की मरी हुई सेना को जिला दिये बृहस्पति के पुत्र कच को टुकड़ा २ कर जानवर और मच्छियों को खिला दिया फिर भी शुक्राचार्य्य ने जीता कर दिया पश्चात् कच को मार कर शुक्राचार्य्य को खिला दिया फिर उस को पेट में जीता कर बाहर निकाला आप मर गया उस को कच ने जीता किया कश्यप ऋषि ने मनुष्य सहित वृक्ष को तक्षक से भस्म हुए पुनः वृक्ष और मनुष्य को जिला दिया धन्वन्तरी ने लाखों मुर्दे जिलाये लाखों कोढ़ि रोगियों को चंगा किया लाखों अंधे और बहिरों को आंख और कान दिये आदि कथा को मिथ्या क्यों कहते हैं जो यह बात मिथ्या है तो ईसा की बात मिथ्या क्यों नहीं जो दूसरे की बातों को मिथ्या और अपनी झूठी को सच्ची कहते हैं तो हठी क्यों नहीं इसलिये ईसाइयों की बातें केवल हठ और लड़कों के समान हैं ॥६८॥

६९—(तब भूत ग्रस्त मनुष्य कबरस्थान में से निकलते हुए उसे आ मिले जो यहां लों अति प्रचंड थे कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था और देखो उन्होंने चिल्ला के कहा हे यीशु ईश्वर के पुत्र आप को हम से क्या काम क्या आप समय के आगे हमें पीड़ा देने को यहां आये हैं सो भूतों ने उस से बिनती कर कहा जो आप हम को निकालते हैं तो सूअरों के झुंड में पैठने दीजिये उसने उनसे कहा जाओ और वे निकल के सूअरों के झुंड में पैठे और देखो सूअरों का सारा झुंड कड़ाड़े पर से समुद्र में दौड़ के गया और पानी में डूब मरा॥ (इं० म० प० ८ आ० २८।२९।३०।३१।३२।३३॥

समी० भला यहां तनिक विचार करें तो ये बातें सब झूठी हैं क्योंकि मरा हुआ मनुष्य कबरस्थान से कभी नहीं निकल सकता किसी पर न जाते न संवाद करते हैं ये सब बातें अज्ञानी लोगों की हैं जो कि महा जंगली हैं वे ऐसी बातों पर विश्वास लाते हैं और उन सूअरों की हत्या कराई सूअर वालों की हानि करने का पाप ईसा को हुआ होगा और ईसाई लोग ईसा को पापक्षमा और पवित्र करने वाला मानते हैं तो उन भूतों को पवित्र क्यों न कर सका और

सूअर वालों का नुकसान क्यों न करदिया क्या आज कल के सुशिक्षित ईसाई अंगरेज लोग इन गपोड़ों को भी मानते होंगे यदि मानते हैं तो भ्रमजाल में पड़े हैं ॥ ६९ ॥

७० देखो ! लोग एक अर्द्धांगी को खाट पर पड़े हुए उसके पास लाये और यीशु ने उनका विश्वास देख के कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा किये गये हैं यह भी बात वैसी ही असंभव है जैसी पूर्व लिख आये हैं और जो पाप क्षमा करने की बात है वह केवल भोले लोगों को प्रलोभन देकर फसाना है जैसे दूसरे ने पीये मद्य भांग और अफीम खाये का नशा दूसरे को प्राप्त नहीं हो सकता वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता किन्तु जो करता है वही भोगता यही ईश्वर का न्याय है यदि दूसरे का किया कुछ पाप पुन्य दूसरे को प्राप्त होवे अथवा न्यायाधीश स्वयं लेले वे वा कर्त्ताओं ही को यथायोग्य फल ईश्वर न देवे तो वह अन्यायकारी होजावे [illegible] देखो धर्म ही कल्याण कारक है ईसा वा अन्य

७१ यीशु ने अपने बारह शिष्यों को अपने पास बुलाके उन्हें अशुद्ध भूतों पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और हर एक रोग और हर एक व्याधी को चंगा करें ॥ इं० म० प० १० आ० १ ॥

समीक्षक — ये वही शिष्य हैं जिनमें से एक ३०) रुपये के लोभ पर ईसा को पकड़ावेगा और अन्य बदलकर अलग २ भागेंगे भला ये बातें जब विद्या ही से विरुद्ध हैं कि भूतों का आना वा निकालना विना औषधी वा पथ्य के व्याधियों का छूटना सृष्टिक्रम से असंभव है इसलिये ऐसी २ बातों का मानना अज्ञानियों का काम है ॥ और जो ईसाई सा भूत कराने और लड़ाने को आया था वही

७२ तब यीशु ने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं उन्होंने कहा सात और छोटी मछलियां तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी तब उसने उन सात रोटियों को और मछलियों को धन्य मान के तोड़ा और अपने शिष्यों को दिया और शिष्यों ने लोगों को दिया सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े बच रहे उनके सात टोकरे भरे उठाये जिन्होंने खाया सो स्त्रियों और बालकों को छोड़ के चार सहस्र पुरुष थे ॥ इं० म० प० १५ आ० ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ ॥

समीक्षक—अब देखिये क्या यह आज कल के झूठे सिद्धों और इन्द्रजाल आदि के समान छल की बात नहीं है उन रोटियों में अन्य रोटियां कहां से आगई यदि ईसा में ऐसी सिद्धियें होतीं तो आप भूखा हुआ गूलर के फल खाने को क्यों जाया करता था अपने लिये मिट्टी पानी और पत्थर आदि से मोहन भोग रोटियां क्यों न बनाली ये सब बातें लड़कों के खेल पन की हैं जैसे कितने ही साधु वैरागी ऐसी छल की बातें करके भोले मनुष्यों को ठगते हैं वैसे ही ये भी हैं॥५७॥

५८—और तब वह हर एक एक मनुष्य को उसके कार्य के अनुसार फल देगा। इं० म० प० १६ आ० २७

समीक्ष० जब कर्मानुसार फल दिया जायगा तो ईसाइयों को पाप क्षमा होने का उपदेश करना व्यर्थ है और वह सच्चा हो तो यह झूठा होवे यदि कोई कहे कि क्षमा करने के योग्य क्षमा किये जाते और क्षमा न करने योग्य माफ नहीं किये जाते हैं यह भी ठीक नहीं क्योंकि सब कर्मों के फल यथा योग्य देने ही से न्याय और दया पूरी होती है॥५८॥

५९—हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि तुमको राई के एक दाने के तुल्य विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से जो कहोगे कि यहां से वहां चला जाय वह चला जायगा और कोई काम तुमसे असाध्य नहीं होगा॥ इं० मं० प० १७ आ० १७। २०।

समी० अब जो ईसाई लोग उपदेश करते फिरते हैं कि आओ हमारे मत में पाप क्षमा कराओ मुक्ति पाओ आदि वह सब मिथ्या है। क्योंकि जो ईसा में पाप छुड़ाने विश्वास न जमाने और पवित्र करने का सामर्थ्य होता तो अपने शिष्यों के आत्माओं को निष्पाप विश्वासी पवित्र क्यों न कर देता जो ईसा के साथ २ घूमते थे जब उन्हीं को शुद्ध विश्वासी और कल्याण न कर सका तो वह मरे पर न जाने कहां है इस समय किसी को पवित्र नहीं कर सकेगा जब ईसा के चेले राई भर विश्वास से रहित थे और उन्हीं ने यह अंजील पुस्तक बनाई है तब इसका प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि जो अविश्वासी अपवित्रात्मा अधर्मी मनुष्यों का लेख होता है उस पर विश्वास करना कल्याण की

की इच्छा करने वाले मनुष्यों का काम नहीं और इसी से यह भी सिद्ध होसकता है कि जो ईसा का यह वचन सच्चा है तो किसी ईसाई में एक राई के दाने के समान विश्वास अर्थात् ईमान नहीं है जो कोई कहे कि हममें पूरा वा थोड़ा विश्वास है तो उससे कहना कि आप इस पहाड़ मार्ग में से हटा देवें यदि उनके हटाने से हट जाय तो भी पूरा विश्वास नहीं किन्तु एक राई के दाने के बराबर है और जो न हटा सकें तो समझो एक छींटा भी विश्वास ईमान अर्थात् धर्म का ईसाइयों में नहीं है ~~ऐसी~~ असंभव बात का कहना ईसा की अज्ञानता का प्रकाश करता जब जो कुछ भी ईसा में विद्या होती तो ऐसी अटाटट जंगलीपन की बात क्यों कह देता तथापि (यत्र देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽपि द्रुमायते) इस देश में कोई भी विद्वान् न होते तो उस देश में एरण्ड का ही वो [illegible] का भी होना ठीक है या वृक्ष सब से बड़ा और अच्छा गिना जाता है वैसे महा जंगली देश में आज कल ईसा की क्या गणना हो सकती है ॥५९॥

यदि कोई कहे कि आभमा [illegible] का नाम पहाड़ है तो भी ठीक नहीं क्योंकि जो ऐसा तो मरे अपने [illegible] ही भूत प्रेतों को चंगा करते थे और आत्मा सी अज्ञानता विषय और आत्मों को बोध करके सचेत किया होगा जो ऐसा मानें तो भी ठीक नहीं क्योंकि जो ऐसा होता तो स्वशिष्यों को ऐसा क्यों न कह सकता इसलिये

६०—— मैं तुम्हें सच कहता हूं जो तुम मन न फिराओ और बालकों के समान न हो जाओ तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे ॥ इं० म० प० १८ आ० ३

समीक्षक—जब अपनी ही इच्छा से मन का फिराना स्वर्ग का कारण और न फिराना नर्क का कारण है तो कोई किसी का पाप पुण्य कभी नहीं ले सकता ऐसा सिद्ध होता है कि और बालक के समान होने के लेख से यह विदित होता है कि ईसा की बातें विद्या और सृष्टिक्रम से बहुत सी विरुद्ध थीं और यह भी उसके मन में था कि लोग मेरी बातों को बालक के समान मान लें न पूछें गाछें कुछ भी न रहें और खनी चक्के मान लें वे बहुत से ईसाइयों की बालबुद्धिवत् चेष्टा है नहीं तो ऐसी युक्ति विद्या से विरुद्ध बातें क्यों मानते और यह भी सिद्ध हुआ जैसा ईसा आप विद्याहीन बालबुद्धि न होता तो अन्य को बालवत् बनने का उपदेश क्यों करता क्योंकि जो जैसा होता है वह दूसरे को भी अपने सदृश होना चाहता ही है ॥६०॥

६१—— मैं तुमसे सच कहता हूं धनवान को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन होगा फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से जाना सहज है ॥ इं० म० प० १९ आ० २३-२४

समीक्षक—इससे यह सिद्ध होता है कि ईसा दरिद्र था धनवान लोग उसकी प्रतिष्ठा नहीं करते होंगे इसलिये यह लिखा होगा परन्तु यह बात सच नहीं क्योंकि धनाढ्यों और दरिद्रों में अच्छे बुरे होते हैं जो कोई अच्छा काम करेगा और इसमें यह भी सिद्ध होता है कि ईसा ईश्वर का राज्य किसी एक देश में मानता था सर्वत्र नहीं जब ऐसा तो वह ईश्वर होन हो जो ईश्वर है उसका राज्य सर्वत्र है पुनः उसमें प्रवेश करेगा वा न करेगा यह कहना केवल अविद्या की बात है और इससे यह भी आया कि जितने ईसाई धनाढ्य हैं क्या वे सब नरक ही में जायेंगे और दरिद्र सब स्वर्ग में जायेंगे भला तनिक सा विचार तो ईसा मसीह करते कि जितनी सामग्री धनाढ्यों के पास होती है उतनी दरिद्रों के पास नहीं यदि धनाढ्य लोग विवेक से धर्ममार्ग में व्यय करें तो दरिद्र नीच गति में पड़े रहें और धनाढ्य उत्तम गति को प्राप्त हो सकते हैं॥

॥६१॥

—यीशू ने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का ९२
पुत्र अपने ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो बारह सिंहासनों पर बैठके इस्राएल के बारह कुलों का न्याय करोगे जिस किसी ने मेरे नाम के लिये घरों वा भाइयों वा बहिनों वा पिता माता- ९५
ता वा स्त्री वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ई० म० य० १९ आ० २८।२९॥

समीक्षक—अब देखिये ईसा के भीतर की लीला कि मेरे जाल से मरे पीछे भी लोग न निकल जायं और जिसने ३० रुपये के लोभ से अपने गुरु को पकड़ा मरवाया वैसे पापी भी इसके पास सिंहासन पर बैठेंगे और इस्राएल के कुल का पक्षपात से न्याय ही न किया जायगा किन्तु उनके सब गुनाह माफ़ और २२
अन्य कुलों का न्याय करेंगे अनुमान होता है इसी से ईसाई लोग ईसाइयों का बहुत पक्षपात कर किसी गोरे ने काले को मार दिया हो तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कर छोड़ देते हैं ऐसा ही ईसा के स्वर्ग का भी न्याय होगा और २४
इससे बड़ा दोष आता है क्योंकि एक सृष्टि की आदि में मरा और एक (कयामत) की रात्र तक निकट मरा एक तो आदि से अन्त तक आशा ही में पड़ा रहा कि कब न्याय होगा और दूसरे का उसी समय न्याय हो गया यह कितना बड़ा अन्याय है और जो नरक में जायगा सो अनन्त काल तक नरक भोगे और स्वर्ग में जायगा वह सदा स्वर्ग भोगेगा यह भी बड़ा अन्याय है क्योंकि अन्तवाले साधन और कर्मों का फल अनन्त वाला होना चाहिये २८

और तुल्य पाप वा पुण्य वाले जीवों का भी नहीं हो सकता इसलिये तारतम्य से अधिक न्यून सुख दुःख वाले अनेक स्वर्ग और नरक हों तभी सुख दुःख भोग सकते हैं सो ईसाइयों के पुस्तक में कहीं व्यवस्था नहीं इसलिये यह पुस्तक ईश्वरकृत वा ईसा ईश्वर का बेटा कभी नहीं हो सकता यह बड़े अनर्थ की बात है कि कदापि किसी के मा बाप सौ सौ नहीं हो सकते किन्तु एक की एक मा और एक ही बाप होता है अनुमान है कि मुसल्मानों ने एक को ७२ स्त्रियां बहिश्त में मिलती हैं लिखा है ॥६२॥

६३ —— भोर को जब वह नगर को फिर जाता था तब उस को भूख लगी और मार्ग में एक गूलर का वृक्ष देख के वह उस पास आया परन्तु उसमें और कुछ न पाया केवल पत्ते और उसको कहा तुझ में फिर कभी फल न लगेंगे इस पर गूलर का पेड़ तुरंत सूख गया। इं० म० प० आ० । १८ । १९

समीक्षक —— सब पादरी लोग ईसाई कहते हैं कि वह बड़ा शान्त क्षमान्वित और क्रोधादि दोषरहित था परन्तु इस बात को देख क्रोधी ऋतु का ज्ञान रहित ईसा था और वह जंगली मनुष्यपन के स्वभावयुक्त वर्त्तता था भला जड़ पदार्थ है उसका क्या अपराध था कि उसको शाप दिया और वह सूख गया इसके शाप से तो न सूखा होगा किन्तु कोई ऐसी औषधी डालने से सूख गया हो तो आश्चर्य नहीं ॥६३॥

६४ —— उन दिनों के क्लेश के पीछे तुरंत सूर्य अंधियारा हो जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की सेना डिग जायगी। इं० म० प० २४ आ० २९

समीक्ष० —— वाह जी ईसा तारों को किस विद्या से गिर पड़ना आपने जाना और आकाश की सेना कौन सी है जो डिग जायगी जो कभी ईसा थोड़ी भी विद्या पढ़ता तो अवश्य जान लेता कि ये तारे सब भूगोल हैं क्योंकर गिरेंगे इससे विदित होता है कि ईसा बढ़ई के कुल में उत्पन्न हुआ था सदा लकड़े चीरना छीलना काटना और जोड़ना करता रहा होगा जब तरंग उठी कि मैं भी इस जंगली देश में पैगंबर हो सकूंगा बातें करने लगा कितनी बातें उसके मुख से अच्छी भी निकलीं और बहुत सी बुरी वहां के लोग जंगली थे मान बैठे जैसा आजकल यूरोप उन्नतियुक्त है वैसा पूर्व होता तो इसकी सिद्धाई कुछ भी न चलती अब कुछ विद्या हुए पश्चात भी व्यवहार के पेच और हठ से इस पोकल मत को न छोड़कर सर्वथा सत्य वेदमार्ग की ओर नहीं झुकते

यही इसमें कमती है॥६४

६५——— आकाश और पृथिवी टल जायंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी॥ इं॰ म॰ प॰ २४ आ॰ ३५॥

समीक्षक—— यह भी बात अविद्या और मूर्खता की है भला आकाश हिलकर कहां जायगा जब आकाश अति सूक्ष्म होने से नेत्र से दीखता नहीं तो इसका हिलना कौन देख सकता है और अपने मुख से अपनी बड़ाई करना अच्छे मनुष्यों का काम नहीं॥६५॥

६६——— तब वह उनसे जो बाईं ओर हैं कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पास से उस अनन्त आग में जाओ जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है॥ इं॰ म॰ प॰ २५ आ॰ ४१

समीक्षक——— भला यह कितनी बड़ी पक्षपात की बात है जो अपने शिष्य हैं उनको स्वर्ग और जो दूसरे हैं उनको अनन्त आग में ~~नरक~~ गिराना परन्तु जब आकाश ही न रहेगा लिखा तो अनन्त आग नरक बहिश्त कहां रहेगी जो शैतान और उसके दूतों को ईश्वर न बनाता तो इतनी नरक की तैयारी क्यों करनी पड़ती और एक शैतान ही ईश्वर के भय से न डरा तो वह ईश्वर ही क्या है क्योंकि उसी का दूत होकर बागी हो गया और ईश्वर उसको प्रथम ही पकड़कर बंदीगृह में न डाल सका न मार सका पुनः उसकी ईश्वरता क्या जिसने ईसा को चालीस दिन दुःख दिया ईसा भी उसका कुछ न कर सका तो ईश्वर का बेटा होना व्यर्थ हुआ इसलिये ईसा ईश्वर का न बेटा और बायबिल का ईश्वर न ईश्वर हो सकता॥६६॥

६७——— तब बारह शिष्यों में से एक यहूदाह इसकरियोती नाम एक शिष्य प्रधान याजकों के पास गया और कहा जो मैं यीशु को आप लोगों के हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग मुझे क्या देंगे उन्होंने उसे तीस रुपये देने को ठहराया॥ इं॰ मं॰ प॰ २६ आ॰ १४।१५

समीक्षक——— अब देखिये ईसा की सब करामात और ईश्वरता यहां खुल गई क्योंकि जो उसका खास शिष्य था वह भी उसके साक्षात् संग से पवित्रात्मा न हुआ तो औरों को वह मरे पीछे पवित्रात्मा क्या कर सकेगा और उसके विश्वासी लोग उसके भरोसे में कितने ठगाये जाते हैं क्योंकि जिसने साक्षात् संबंध में शिष्य का कुछ कल्याण न किया वह मरे पीछे किसी का कल्याण क्या कर सकेगा॥६७॥

६८ —— जब वे खाते थे तब यीशु ने रोटी लेके धन्यवाद किया और उसे तोड़ के शिष्यों को दिया और कहा लेओ खाओ यह मेरा देह है और उसने कटोरा लेके धन्यवाद माना और उनको देके कहा तुम सब इससे पियो क्योंकि यह मेरा लोहू अर्थात् नये नियम का लोहू है॥ ई-म-प-२६ आ-२६।२७-२८

समी० —— भला यह ऐसी बातें कोई भी सभ्य विना अविद्वान जंगली मनुष्य के शिष्यों से खाने की चीज को अपने मांस और पीने की चीजों को लोहू नहीं कह सकता और इसी बात को आजकल के ईसाई लोग प्रभुभोजन कहते हैं अर्थात् खाने पीने की चीजों में ईसा के मांस और लोहू की भावना कर खाते हैं पीते हैं यह कितनी बुरी बात है जिन्होंने अपने गुरु के भी मांस को भी खाने पीने की भावना से न छोड़ा तो और को कैसे छोड़ सकते हैं॥ ६८

६९ —— और वह पितर को और जब्दी के दोनों पुत्रों को अपने संग ले गया और शोक करने और बहुत उदास होने लगा तब उसने उनसे कहा कि मेरा मन यहां लों अति उदास है कि मैं मरने पर हूं और थोड़ा आगे बढ़ के वह मुंह के बल गिरा और प्रार्थना की हे मेरे पिता जो सके तो यह कटोरा मेरे पास से टल जाय॥ ई-म-प-२६ आ-३७-३८-३९

समीक्षक —— देखो जो वह केवल मनुष्य न होता ईश्वर का बेटा और त्रिकालदर्शी और विद्वान होता तो ऐसी अयोग्य चेष्टा न करता इससे स्पष्ट विदित होता है कि यह प्रपंच ईसा ने अथवा उसके चेलों ने झूठमूठ बनाया है कि वह ईश्वर का बेटा भूत भविष्यत का वेत्ता और पापक्षमा का कर्त्ता है इससे समझना चाहिये यह केवल साधारण सूधा सच्चा अविद्वान था न विद्वान न योगी न सिद्ध था॥ ६९॥

७० —— वह बोलता ही था कि देखो यहूदा जो बारह शिष्यों में से एक था आ पहुंचा और लोगों के प्रधान याजकों और प्राचीनों की ओर से बहुत लोग खड्ग और लाठियां लिये उसके संग यीशु के पकड़वाने हारे ने उन्हें यह पता दिया था जिसको मैं चूमूं उसको पकड़ो और वह तुरंत यीशु पास आ बोला हे गुरु प्रणाम और उसको चूमा। तब उन्होंने यीशु पर हाथ डाल के उसे पकड़ा तब सब शिष्य उसे छोड़ के भागे

अन्त में दो झूठे साक्षी आके बोले इसने कहा कि मैं ईश्वर का मंदिर ढा सकता हूं उसे तीन दिन में फिर बना सकता हूं तब महायाजक खड़ा हो यीशु से कहा क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी देते हैं परन्तु यीशु चुप रहा इस पर महायाजक ने उससे कहा मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हूं हमसे कह तू ईश्वर का पुत्र ख्रीष्ट है कि नहीं यीशु उससे बोला तू तो कह चुका तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ के कहा यह ईश्वर की निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियों का और क्या प्रयोजन देखो तुमने अभी उसके मुख से ईश्वर की निन्दा सुनी है अब क्या विचार करते हो तब उन्होंने उत्तर दिया वह वध के योग्य है तब उन्होंने उसके मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे औरों ने थपेड़े मार के कहा हे ख्रीष्ट हमसे भविष्यत बाणी बोल किसने तुझे मारा पितरस बाहर अंगने में बैठा था और एक दासी उस पास आके बोली तू भी यीशु गालीली के संग था उन्हों ने सभों के सामने मुकर के कहा मैं नहीं जानता तू क्या कहती जब वह बाहर डेवढ़ी में गया तो दूसरी दासी ने उसे देख के जो लोग वहां थे उनसे कहा यह भी यीशु नासरी के संग था उसने किरिया खा के फिर मुकरा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता हूं इं॰ म॰ प॰ २६ आ॰ ४७-४८-४९-५०-६१-६२-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२-७४ ॥

समी॰—— अब देख लीजिये कि जिसका इतना भी सामर्थ्य वा प्रताप नहीं था कि अपने चेले का दृढ विश्वास करा सके और वे चेले भी चाहे प्राण भी क्यों न जाते तो भी अपने गुरु को लोभ से न पकड़ाते न मुकरते न मिथ्या भाषण करते न झूठी किरिया खाते और ईसा भी जो कुछ करामाती नहीं था जैसा कि तौरेत में लिखा है कि लूत के घर पर पाहुनों को बहुत से मारने को चढ़ आये थे वहां ईश्वर के दो दूत थे उन्होंने उन्हीं को अंधा कर दिया यद्यपि यह भी बात असंभव है तथापि ईसा में तो इतना भी सामर्थ्य न था और आजकल कितना भड़वा उसके नाम पर ईसाइयों ने बढ़ा रक्खा है भला ऐसी दुर्दशा से मरने से आप स्वयं जूझ वा समाधि चढ़ा अथवा किसी प्रकार से प्राण छोड़ता तो अच्छा था परंतु वह बुद्धि बिना विद्या के कहां से उपस्थित हो वह ईसा यह भी कहता है कि मैं अभी अपने पिता से बिनती नहीं करता हूं और वह मेरे पास स्वर्ग दूतों की बारह

सेनाओंसे अधिक पहुंचाय देगा) ई-म प० २६ आ० ५३
समीक्षक ——— घमण्ड करता जाता अपनी और अपने पिताकी
बड़ाई भी करता जाता और कुछ भी नहीं कर सकता न इसका देखो
आश्चर्य्यकी बात जब महायाजकने पूछा था कि ये लोग तेरे विरु-
द्ध साक्षी देते हैं इसका उत्तर दे तो ईसा चुप रहा यह भी ईसाने अच्छा न
किया क्योंकि जो सच था वह वहां अवश्य कह देना तो भी अच्छा हो-
ता बहुतसी अपने घमण्डकी बातें करनी उचित न थीं और जिन्होंने
ईसा पर झूठ फरेब डालकर बुरे हवाल कर मारा उनको भी उचित न
था क्योंकि ईसाका उस प्रकारका अपराध नहीं था जैसा उसके वि-
षयमें उन्होंने किया परन्तु वे भी तो जंगली थे न्यायकी बातोंको क्या
समझें यदि ईसा झूठ मूठ ईश्वरका बेटा न बनता और वे उससे ऐसी
बुराई साथ न करते तो दोनों के लिये उत्तम काम था परन्तु इतनी वि-
द्या धर्मात्मता और न्यायशीलता कहांसे लावें॥७०
७१—— यीशु अध्यक्षके आगे खड़ा हुआ और अध्यक्षने उससे पू-
छा क्या तू यिहूदियोंका राजा है यीशुने उससे कहा आपही तो कहते हैं
जब प्रधान याजक और प्राचीन लोग उसपर दोष लगाते थे तब उसने
कुछ भी उत्तर नहीं दिया तब पिलातने उससे कहा क्या तू नहीं
सुनता कि ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं परन्तु उसने एक
बात भी उसको उत्तर न दिया यहांलों कि अध्यक्षने बहुत अचंभा कि-
या पिलातने उनसे कहा तो मैं यीशु से जो ख्रीष्ट कहावता है क्या
करूं सभोंने उससे कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जावे और यीशुको
कोड़े मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सौंप दिया तब अध्यक्ष
के योधाओंने यीशुको अध्यक्ष भवनमें ले जाके सारी पलटन उस
पास इकट्ठी की और उन्होंने उसका वस्त्र उतारके उसे लाल बागा
पहिराया और कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रक्खा और
उसके दहिने हाथमें नर्कट दिया और उसके आगे घुटने
टेकके यह कहके उसे ठट्ठा कि हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम और उ-
न्होंने उसपर थूंका और उस नर्कटको ले उसके सिरपर मारा जब वे
उससे ठट्ठा कर चुके तब उससे वह बागा उतारके उसीका वस्त्र प-
हिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको ले गये जब वे एक स्थान लों जो
गलगथा अर्थात् खोपड़ीका स्थान कहाता है

पहुंचे तब उन्होंने सिरके में पित्त मिलाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने
चीख के पीना न चाहा तब उन्होंने उसे क्रूशपर चढाया और उन्हों
ने उसका दोषपत्र उसके शिर के ऊपर लगाया तब दो डाकू एक दाहि-
नी और दूसरा बाईं ओर उसके संग क्रूशों पर चढाये गये जो लोग
उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने शिर हिलाके और यह कह
के उसकी निंदा की कि हे मंदिर के ढाहनेहारे अपने को बचा जो तू
ईश्वर का पुत्र है तो क्रूशपरसे उतर आ इसी रीतिसे प्रधान याज-
कोंने भी उपहास करके औरों को चीन्हा के संगियों ने ठट्ठा कर कहा
उसने औरों को बचाया अपने को बचा नहीं सकता है जो वह
इस्राएल का राजा है तो क्रूशपरसे अब उतर आवे और हम उसका
विश्वास करेंगे वह ईश्वर पर भरोसा रखता है यदि ईश्वर उसको चा-
हता है तो उसको अब बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वर का पुत्र
हूं जो डाकू उसके संग चढाये गये उन्होंने भी इसी रीति से उसकी निन्दा
की दो प्रहर से तीसरे प्रहर लों सारे देश में अंधकार होगया तीसरे प्र-
हर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकार के कहा एली एली लामा सबक्त-
नी अर्थात् हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है जो लो-
ग वहां खड़े थे उनमें से कितनों ने यह सुन के कहा वह एलियाह को
बुलाता है उनमें से एक ने तुरंत दौड़ के इस्पंज लेके सिरके में भिगा-
या और नल पर रख के उसे पीने को दिया तब यीशु ने फिर बड़े
शब्दसे पुकार के प्राण त्यागा। इं. म. प. २७। आ. ११-१२-१३-१४-
२२-२३-२४-२६-२७-२८-२९-३०-३१-३३-३४-३७ ३८-
३९-४०-४१-४२-४३-४४-४५-४६-४७-४८-४९-५०

समीक्षक — सर्वथा यीशु के साथ उन दुष्टों ने बुरा काम
किया परन्तु यीशु का भी दोष है क्योंकि ईश्वर का न कोई बेटा न वह किसी
का बाप है क्योंकि जो वह किसी का बाप होवे तो किसी का श्वसुर साला सं-
बन्धी आदि भी होवे और जब अध्यक्ष ने पूछा था तब जैसा सच्चा था उत्तर देना
था और यह ठीक है कि जो २ आश्चर्य कर्म प्रथम किये हुए सच्चे होते तो अब भी
क्रूशपर से उतर आ सबको अपने शिष्य बना लेता और जो वह ईश्वर का पुत्र
होता तो ईश्वर भी उसको बचा लेता जो वह त्रिकालदर्शी होता तो सिरके में पित्त
मिले हुए को चीख के क्यों छोड़ता वह पहिले ही से जानता होता और जो
वह करामाती होता तो पुकार २ के प्राण क्यों त्यागता अर्थात् चाहे कितनी ही
चतुराई करे परन्तु अन्त में सच सच और झूठ झूठ हो जाता है इससे
यह सिद्ध हुआ कि यीशु एक उस समय के जंगली मनुष्यों में से कु-

कुछ-छा था न वह करामाती न ईश्वर का पुत्र और न विद्वान था क्योंकि जो ऐसा होता तो ऐसा वह दुःख क्यों भोगता ॥ ७१ ॥

७२ ——— और देखो बड़ा भूईं डोल हुआ कि परमेश्वर का एक दूत उतरा और आके कबर के द्वार पर से पत्थर लुढ़का के उसपर बैठा वह यहां नहीं है जैसे उसने कहा वैसे जी उठा है जब वे उसके शिष्यों को। संदेश जाती थीं देखो यीशु उनसे आ मिला कहा कल्याण हो और उन्हों ने निकट आ उसके पांव पकड़के उसको प्रणाम किया तब यीशु ने कहा मत डरो जाके मेरे भाइयों से कहो वह गालील को जावें और वहां वे मुझे देखेंगे ग्यारह शिष्य गालील में उस पर्वत में गये जो यीशु ने उन्हें बताया था और उन्हों ने उसे देखके उसको प्रणाम किया पर कितनों को सन्देह हुआ यीशु ने उन पास आ उनसे कहा स्वर्ग में और पृथिवी पर सब अधिकार मुझ को दिया गया है और देखो मैं जगत् के अन्त लों सब दिन तुम्हारे संग हूं। इं. मं. प. २८ आ. २-९-१०-१६-१७-१८-२०.

समी॰ यह बात भी मानने योग्य नहीं क्योंकि सृष्टिक्रम और विद्या विरुद्ध है प्रथम ईश्वर के पास दूतों का होना उनको जहां तहां भेजना ऊपर से उतरना क्या तहसीलदारी कलेक्टरी के समान ईश्वर को बना दिया क्या उसी शरीर से स्वर्ग को गया और जी उठा क्योंकि उन स्त्रियों ने उनके पग पकड़के प्रणाम किया तो क्या वही शरीर था और वह तीन दिन लों सड़ क्यों न गया और अपने मुख से सबका अधिकारी बनना केवल दंभ की बात है शिष्यों से मिलना और उनसे सब बातें करनी असंभव हैं क्योंकि जो ये बातें सच हों तो आजकल भी कोई क्यों नहीं जी उठते और उसी शरीर से स्वर्ग को क्यों नहीं जाते यह मत्ती रचित अंजील का विषय हो चुका ॥ ७२ ॥

। अब मार्क रचित इंजील।

७२- इंजील के विषय में लिखा जाता है यह क्या बढ़ई नहीं। इं- मार्क. प. ६ आ. ३

समी॰ ——— असल में यूसफ़ बढ़ई था इसलिये ईसा भी बढ़ई था कितने ही वर्ष तक बढ़ई का काम करता था पश्चात् पैगंबर बनता २ ईश्वर का बेटा ही बन गया और जंगली लोगों ने बना लिया तभी बड़ी कारीगरी चलाई काट कूट फूट फाट करना उसका काम है ॥ ७२ ॥ (लूक रचित इंजील)।

७३ ——— यीशु ने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है कोई उत्त-

मनुष्य ही एक अर्थात् ईश्वर ॥ लू० प० १८ आ० १९ ॥
समीक्षक — जब ईसा ही एक अद्वितीय ईश्वर कहता है तो ईसा
इयों ने पवित्रात्मा पिता और पुत्र तीन कहां से बना लिये ७३ ॥
७४ —— तब उसे हेरोद के पास भेजा हेरोद यीशु को देख के अ-
ति आनन्दित हुआ क्योंकि वह उसको बहुत दिन से देखने चाह-
ता था इसलिये कि उसके विषय में बहुत सी बातें सुनी थी और
उसका कुछ आश्चर्य कर्म देखने की उसको आशा हुई उसने उ-
ससे बहुत बातें पूछी परंतु उसने उसे कुछ उत्तर न दिया - लूक
प० २३ आ० ८ । ९
समीक्षक —— यह बात मत्ती रचित में नहीं है इस-
लिये ये साक्षी बिगड़ गये क्योंकि साक्षी एक से होने चाहियें और
जो ईसा चतुर और करामाती होता तो (हेरोद को) उत्तर देता औ-
र करामाती भी दिखलाता इससे विदित होता है कि ईसा में
विद्या और करामात कुछ भी न थी ॥ ७४ ॥ ८१

(योहन रचित सुसमाचार)

७५ —— आदि में वचन था और वचन ईश्वर के संग था और
वचन ईश्वर था । वह आदि में ईश्वर के संग था सब कुछ उसके
द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया है कुछ भी उस बिना न सृजा
गया । उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों का उजियाला
था - प० १ आ० १ + २ + ३ + ४ ॥
समी० आदि में वचन बिना वक्ता के नहीं हो सकता और जो
वचन ईश्वर के संग था तो ~~आदि में~~ यह कहना व्यर्थ हुआ और
वचन ईश्वर कभी नहीं हो सकता क्योंकि जब वह आदि में ईश्वर के सं-
ग था तो पूर्व वचन वा ईश्वर था यह नहीं घट सकता वचन के द्वारा
सृष्टि कभी नहीं हो सकती जब तक उसका कारण न हो और वच-
न के बिना भी चुपचाप रहकर कर्त्ता सृष्टि कर सकता है जीवन ।
किसमें वा क्या था इस वचन से जीव अनादि मानोगे जो अना-
दि है तो आदम के नथूनों में श्वास फूंकना झूठा हुआ और क्या
जीवन मनुष्यों ही का उजियाला है पश्वादि का नहीं ७५ ॥ ८
८३ —— ७६ —— और बियारी के समय में जब शैता-
न शिमोन के पुत्र यिहूदा इस्करियोती के मन में उसे पकड़वाने
का मत डाल चुका था ॥ यो० पर्व० १३ आ० २

समी० यह बात सच नहीं क्योंकि जब कोई ईसाइयों से पूछेगा कि शैतान सबको बहकाता है तो शैतान को कौन बहकाता है जो कहो शैतान आप से आप बहकता है तो मनुष्य भी आपसे आप बहक सकते हैं पुन: शैतान का क्या काम और यदि शैतान का बनाने बहकाने वाला परमेश्वर है तो वही शैतान का शैतान ईसाइयों का ईश्वर ठहरा परमेश्वर ही ने सब को उसके द्वारा बहकाया भला ऐसे काम ईश्वर के हो सकते हैं सच तो यही है कि यह पुस्तक ईसाइयों का और ईसा ईश्वर का बेटा जिन्होंने बनाये वे शैतान हों तो हों किन्तु न यह ईश्वरकृत पुस्तक न इस में कहा ईश्वर और न ईसा ईश्वर का बेटा हो सकता है ॥ ७६ ॥

७७ —— तुम्हारा मन व्याकुल न होवे, ईश्वर पर विश्वास करो और मुझ पर विश्वास करो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं नहीं तो मैं तुमसे कहता हूं मैं तुम्हारे लिये स्थान तयार करने जाता हूं और जो मैं जा के तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर आ के तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। यीशु ने उस से कहा मैं ही मार्ग और सत्य और जीवन हूं बिना मेरे द्वारा से कोई पिता पास नहीं पहुंचता है जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते ॥ यो ॥ प० १४ आ० १-२-३-४-६-७ ॥

समीक्षक —— अब देखिये यह वचन ईसा के क्या पोपलीला से कमती है जो ऐसा प्रपंच न रचता तो उसके मत में कौन फसता क्या ईसा ने अपने पिता को इजारे ले लिया है और जो वह ईसा के वश है तो पराधीन होने से वह ईश्वर ही नहीं क्योंकि ईश्वर किसी की सिफारिश नहीं सुनता क्या ईसा के पहले कोई भी ईश्वर को प्राप्त नहीं हुआ होगा ऐसा स्थान आदि का प्रलोभन देता और जो अपने मुख से आप मार्ग सत्य और जीवन बनता है वह सब प्रकार से दंभी कहाता है इस से यह बात सत्य कभी नहीं हो सकती ॥ ७७ ॥

७८ —— मैं तुमसे सच २ कहता हूं जो मुझ पर विश्वास करे जो काम मैं करता हूं उन्हें वह भी करेगा और इन से बड़े काम भी करेगा तो वह सब आश्चर्य कर्म करेगा ॥ यो० प० १४ । आ० १२ ।

समीक्षक —— अब देखिये जो ईसाई लोग ईसा पर पूरा वि

श्वास रखते हैं तो वैसे ही मुर्दे जिलाने आदि काम क्यों नहीं कर सक्ते और जो विश्वास से भी आश्चर्य्य काम नहीं कर सक्ते तो ईसा ने भी आश्चर्य्य कर्म नहीं किये थे ऐसा निश्चित जानना चाहिये क्योंकि स्वयं ईसाई कहता है कि तुम भी आश्चर्य्य काम करोगे तो भी इस समय ईसाई कोई एक भी नहीं कर सकता तो किसकी हिये की आंख फूट गई है वह ईसा को वह ईसा के मुर्दे जिलाने आदि का काम कर्त्ता मान ले वो॥७८॥

७९॥ कि जो अद्वैत सत्य ईश्वर है॥ यो॰ प॰ १७ आ॰ ३

समीक्षक-जब अद्वैत एक ईश्वर है तो ईसाइयों का तीन कहना सर्वथा मिथ्या है॥७९॥

॥ इसी प्रकार बहुत ठिकाने अंजील में अन्यथा बातें भरी हैं।

(योहन की प्रकाशित वाक्य)

अब योहन अद्भुत बातें सुनो

८०॥ और अपने शिर पर सोने के मुकुट दिये हुए थे और सात अग्नि दीपक सिंहासन के आगे जलते थे जो ईश्वर के सातों आत्मा हैं और सिंहासन के आगे कांच का समुद्र है और सिंहासन के आसपास चार प्राणी हैं जो आगे और पीछे नेत्रों से भरे हैं॥ यो॰ प्र॰ पर्व॰ ४। ५। ६॥

समीक्षक —— अब देखिये एक नगर के तुल्य ईसाइयों का स्वर्ग है और इनका ईश्वर भी दीपक के समान अग्नि है और सोने का मुकुटादि आभूषण धारण करना और आगे पीछे नेत्रों का होना असंभावित है, इन बातों को कौन मान सकता है और वहां सिंहादि चार पशु लिखे हैं॥८०॥

८१॥ और मैंने सिंहासन पर बैठने हारे के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखा जो भीतर और पीठ पर लिखा हुआ और सात छापों से उस पर छाप दी हुई थी। यह पुस्तक खोलने और छापें तोड़ने योग्य कौन है और न स्वर्ग में न पृथिवी की नीचे कोई वह पुस्तक अथवा उसे देखने सकता था और मैं बहुत रोने लगा इसलिये कि पुस्तक खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखने के योग्य कोई न मिला॥ यो॰ प्र॰ पर्व॰ ५ आ॰ १-२-३-४॥

समी॰ अब देखिये ईसाइयों के स्वर्ग में सिंहासनों और मनुष्यों का ठाठ और पुस्तक कई छापों से बंध किया हुआ जिसको खोलने

आदि कर्म करने वालों स्वर्ग और पृथिवी पर कोई न हीं मिला जो-
हन का रोना और पश्चात् एक प्राचीन ने कहा कि वही ईसा खोलने वा-
ला है प्रयोजन जिसका विवाह और गीत ईसाई ही के ऊपर सब उसका
महात्म्य गाये जाते हैं परन्तु ये बातें केवल कथन मात्र है॥ ८१

८२ —— और मैंने दृष्टि की और देखो सिंहा-
सन के और चारों प्राणियों के बीच में और प्राचीनों के बीच में
एक मेम्ना जैसा वध किया हुआ खड़ा है जिसके सात सींग और
सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवी में भेजे हुए ईश्वर के सातों आत्मा हैं।
यो. प्र. प. ५ आ. ६॥

समीक्षक —— अब देखिये इस योहन के स्वप्न का मनोव्यापार
उस स्वर्ग के बीच में सब ईसाई और चार पशु तथा ईसा भी है
और कोई नहीं यह बड़ी अद्भुत बात हुई कि यहां तो ईसा के दो नेत्र
थे और सींग का नाम भी न था और स्वर्ग में जाके सात सींग औ-
र सात नेत्र वाला हुआ और वे सातों ईश्वर के आत्मा ईसा के
सींग और नेत्र बन गये थे हाय ऐसी बातों को ईसाइयों ने क्यों
मान लिया भला कुछ तो बुद्धि लाते॥ ८२॥

८३ —— और जब उसने पुस्तक लिया तब वे चारों प्राणी औ-
र चौबीसों प्राचीन मेम्ने के आगे गिर पड़े और हर एक के पास बीण
थी और धूप से भरे हुए सोने के पियाले जो पवित्र लोगों की प्रार्थनायें
हैं। यो. प्र. प. ५ आ. ८॥

समीक्षक —— भला जब ईसा स्वर्ग में न होगा तब ये बिचारे धू-
प दीप नैवेद्य आर्त्ति आदि पूजा किसकी करते होंगे और यहां
प्रोटेस्टेंट ईसाई लोग बुत्परस्ती का तो खंडन करते हैं और इ-
नका स्वर्ग बुत्परस्ती का घर बन रहा है॥ ८३॥

८४ —— और जब मेम्ने ने छापों में से एक खोली तब मैंने
~~तब मैंने दृष्टि की~~ चारों प्राणियों में से एक को जैसे मेघ के
गर्जने के शब्द को यह कहते सुना कि आ और देख। और
मैंने दृष्टि की और देखो एक श्वेत घोड़ा है और उस पर बैठा है
उस पास धनुष और उसे मुकुट दिया गया और वह
जय करता हुआ और जय करने को निकला। और जब उसने
दूसरी छाप खोली, दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला उसको
यह दिया गया कि पृथिवी पर से मेल उठा देवे। और जब उस-

ने तीसरी छाप खोली देखो काला घोड़ा है और जब उसने चौ-
थी छाप खोली देखो एक पीला सा घोड़ा है और जो उस पर बैठा है
उसका नाम मृत्यु है इत्यादि। यो० प्र० प० ६। आ० १। २। ३। ४।
५। ७॥

समीक्षक — अब देखिये यह पुराणों से भी अधिक मि-
थ्या लीला है वा नहीं। भला पुस्तकों के बंधनों के छापे के भी-
तर घोड़ा सवार क्योंकर रह सके होंगे यह स्वप्ने का बरड़ाना जि-
न्होंने इसको भी सत्य माना है उनमें अविद्या जितनी थोड़ी
कहें उतनी ही थोड़ी है॥८४॥

८५ — और वे बड़े शब्द से पुकारते थे कि हे स्वामी पवि-
त्र और सत्य कब लों तू न्याय नहीं करता है और पृथिवी के नि-
वासियों से हमारे लोहू का पलटा नहीं लेता है और हर एक को
उजला वस्त्र दिया गया और उनसे कहा गया कि जब लों
तुम्हारे संगी दास भी और तुम्हारे भाई तुम्हारी नाईं बध
किये जाने पर हैं पूरे न हों तब लों और थोड़ी बेर बिश्राम
करो। यो० प्र० प० आ० १०। ११

समीक्षक — जो कोई ईसाई होगा वे दौड़े सुपुर्द होकर ऐ-
से न्याय कराने के लिये रोया करेंगे जो वेदमार्ग का स्वीकार करे-
गा उसके न्याय होने में कुछ भी देर न होगी ईसाइयों से पूछना
चाहिये क्या ईश्वर की कचहरी आज कल बन्ध है और न्याय का
काम भी नहीं होता न्यायाधीश निकम्मे बैठे हैं तो कुछ भी ठीक
उत्तर न दे सकेंगे और ईश्वर को भी बहका कर और इनका ईश्व-
र बहक भी जाता है क्योंकि इनके कहने से झट इनके शत्रु से पल-
टा लेने लगता है और दंशिले स्वभाव वाले हैं कि मरे पीछे वै-
र लिया करते हैं शांति कुछ भी नहीं और जहां शान्ति नहीं
वहां दुःख का क्या पारावार होगा॥८५॥

८६ — जैसे बड़ी बियार से हिलाये जाने पर गूलर के वृक्ष
से उसके कच्चे गूलर झड़ते हैं वैसे आकाश के तारे पृथिवी पर गिर
पड़े और आकाश पत्र की नाईं लपेटा जाता है अलग हो गया
यो० प्र० प० ६ आ० १३। १४॥

समी० अब देखिये योहन भविष्यतवक्ता ने विद्या नहीं थी तभी तो ऐसी अंडबंड कथा गाई भला तारे सब भूगोल हैं एक पृथिवी पर कैसे गिर सकते हैं और सूर्य्यादि का आकर्षण उनको इधर उधर क्यों आने जाने देगा और क्या आकाश को चटाई के समान समझता है यह आकाश साकार पदार्थ नहीं है जिसको कोई लपेटे वा इकट्ठा कर सके इसलिये योहन आदि सब जंगल मनुष्य थे उनको इन बातों की क्या खबर॥८६॥

८७ —— मैंने उनकी संख्या सुनी इस्राएल के संतानों के समस्त कुल में से एक लाख चवालीस सहस्र पर छाप दी गई यिहूदा के कुल में से बारह सहस्र पर छाप दी गई॥ यो० प्र० प० ७ आ० ४। ५॥

समीक्षक —— क्या जो बायबिल में ईश्वर लिखा है वह इस्राएल आदि कुलों का स्वामी है वा सब संसार का ऐसा न होता तो उन्हीं जंगलियों का साथ क्यों देता और उन्हीं का सहाय करता था दूसरे का नाम निशान भी नहीं लेता इससे वह ईश्वर नहीं और इस्राएल कुलादि के मनुष्यों पर छाप लगाना अल्पज्ञता अथवा योहन की मिथ्या कल्पना है॥८७॥

८८ —— इसकारण वे ईश्वर के सिंहासन के आगे हैं और उसके मंदिर में रात और दिन उसकी सेवा करते हैं॥ यो० प्र० प० ७ आ० १५॥

समी० —— क्या यह महा बुतपरस्ती नहीं है अथवा उनका ईश्वर देहधारी मनुष्य तुल्य एकदेशी नहीं है और ईसाइयों का ईश्वर रात में सोता भी नहीं है यदि सोता है तो रात में पूजा क्यों कर करते होंगे तथा उसकी नींद भी उड़ जाती होगी और जो रात दिन जागता होगा तो विक्षिप्त वा अति रोगी होगा॥८८॥

८९ —— और दूसरा दूत आके वेदी के निकट खड़ा हुआ जिसपास सोने की धूपदानी थी और उसको बहुत धूप दिया गया और धूप का धुंआ पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के संग दूत के हाथ में से ईश्वर के आगे चढ़ गया और दूत ने वह धूपदानी लेके उसमें वेदी की आग भरके पृथिवी पर डाला और शब्द और गर्जन और बिजलियां और भूईंडोल हुए॥ यो० प्र० प० ८ आ० ३। ४। ५॥

समी० अब देखिये स्वर्ग तक वेदी धूप दीप नैवेद्य तुरही के शब्द होते हैं क्या वैरागियों के मंदिर से ईसाइयों का स्वर्ग कम है कुछ धूम धाम अधिक ही है॥८९॥

९०——(पहिले दूत ने तुरही फूंकी और लोहू से मिले हुए ओले और आग हुए वे पृथिवी पर डाले और पृथिवी की एक तिहाई जल गई) यो० प्र० प० ८ आ० ७॥

समीक्षक—— वाह रे ईसाइयो के भविष्यत् वक्ता ईश्वर ईश्वर के दूत, तुरही का शब्द और प्रलय की लीला केवल लड़कों ही का खेल दीखता है ॥ ९०॥

९१—— और पांचवें दूत ने तुरही फूंकी और मैं ने एक तारे को देखा जो स्वर्ग में से पृथिवी पर गिरा हुआ था और अथाह कुंड के कूप की कुंजी उस को दी गई और उस ने अथाह कुंड का कूप खोला और कूप में से धुआं बड़ी भट्ठी के धुएं की नाईं उठा और उस धुएं में से टिड्डियां पृथिवी पर निकल गई और जैसा पृथिवी के बीछुओं को अधिकार होता है तैसा उन्हें दिया गया और उन से कहा गया कि उन मनुष्यों को जिन के माथे पर ईश्वर की छाप नहीं है पांच मास उन्हें पीड़ा दी जाय। यो० प्र० प० ९ आ० १।२।३।४।५॥

समी० क्या तुरही का शब्द सुन कर तारे उन्हीं दूतों पर और उसी स्वर्ग में गिरे होंगे यहां तो नहीं गिरे भला वह कूप वा टिड्डियां भी प्रलय के लिये ईश्वर ने पाली होंगी और छाप को देख बांच भी लेती होंगी कि छाप वालों को मत काटो यह केवल भोले मनुष्यों को डरा के ईसाई बना लेने का धोखा देना है कि जो तुम ईसाई न होगे तो तुम को टीढ़ियां काटेंगी परन्तु ऐसी बातें विद्याहीन देश में चल सकती हैं आर्यावर्त्त में नहीं क्या वह प्रलय की बात हो सकती है ॥ ९१॥

९२—— और घुड़चढ़ों की सेना की संख्या बीस करोड़ थी। यो० प्र० प० ९ आ० १६॥

समी० भला इतने घोड़े स्वर्ग में कहां ठहरते कहां चरते और कहां रहते और कितनी लीद करते थे उस का दुर्गन्ध भी स्वर्ग में कितना हुआ होगा। बस ऐसे स्वर्ग, ऐसे ईश्वर और ऐसे मत के लिये हम सब आर्य्यों ने तिलाञ्जलि दे दी है ऐसा बखेड़ा ईसाइयों के शिर पर से भी सर्वशक्तिमान् की कृपा से दूर हो जाय तो बहुत अच्छा है ॥ ९२॥

९३—— और मैं ने दूसरे पराक्रमी दूत को स्वर्ग से उतरते देखा जो मेघ को ओढ़े था और उस के शिर पर मेघ

धनुष था और उसका मुख सूर्य्य की नाईं और उसके पांव आग के खंभे ऐसे थे। और उसने अपना दहिना समुद्र पर और बांया पृथिवी पर रक्खा। यो॰ प्र॰ प॰ १० आ॰ १।२।३॥ पांव

समीक्षक — अब देखिये इन दूतों की कथा जो पुराणों वा भाटों की कथा से भी बढ़कर है॥ ८३॥

८४। — और लग्गी के समान एक नर्कट मुझे दिया गया और कहा गया कि उठ ईश्वर के मंदिर को और वेदी को और उसमें भजन करने हारों को नाप॥ प॰ ११ आ॰ १॥

समीक्षक — यहां तो क्या परन्तु ईसाइयों के तो स्वर्ग में भी मन्दिर बनाये और नापे जाते हैं अच्छा है उनका जैसा स्वर्ग है वैसी ही बातें हैं इसलिये यहां प्रभुभोजन में ईशा के शरीरावयव मांस लोहू की भावना करके खाते पीते हैं और गिर्जा में भी क्रूश आदि का आकार बनाना आदि भी बुतपरस्ती है॥ ८४॥

८५ — और स्वर्ग में ईश्वर का मन्दिर खोला गया और उसके नियम का संदूक उसके मन्दिर में दिखाई दिया॥ यो॰ प्र॰ प॰ ११ आ॰ १९॥

समी॰ — स्वर्ग में जो मंदिर है सो हर समय बंद रहता होगा कभी २ खोला जाता होगा क्या परमेश्वर का भी कोई मंदिर हो सकता है जो वेदोक्त परमात्मा सर्वव्यापक है उसका कोई भी मंदिर नहीं हो सकता हां ईसाइयों का जो परमेश्वर आकार वाला है उसका चाहे स्वर्ग में हो चाहे भूमि में और जैसी लीला टन् टन् पूं पूं की यहां होती है वैसी ही ईसाइयों के स्वर्ग में भी और नियम का संदूक भी कभी २ ईसाई लोग देखते होंगे उससे न जाने क्या प्रयोजन सिद्ध करते होंगे सच तो यह है कि ये सब बातें मनुष्यों को लुभाने की हैं॥ ८५।

८६ — एक बड़ा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य्य पहिने है और चांद उसके पांव तले है और उसके शिर पर बारह तारों का मुकुट है। और वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि प्रसव की पीड़ उसे लगी है और वह जन्ने को पीड़ित है। और दूसरा आश्चर्य स्वर्ग में दिखाई दिया है देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिसके सात शिर और दस सींग हैं और उसके शि

रों पर सात राजमुकुट है। और उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींच के उन्हें पृथिवी पर डाला। यो० प्र० प० १२ आ० १। २। ३। ४॥

समीक्षक० — अब देखिये लंबे चौड़े गपोड़े इनके स्वर्ग में भी विचारी स्त्री चिल्लाती है उसका दुःख कोई नहीं सुनता न मिटा सकता है और उस अजगर का पूंछ कितना बड़ा था जिसने तारों के एक तिहाई पृथिवी पर डाले भला पृथिवी तो छोटी है और तारे भी बड़े २ लोक हैं इस पृथिवी पर एक भी नहीं समा सकता किन्तु यहां यही अनुमान करना चाहिये कि ये तारों की तिहाई इस बात के लिखने वाले के घर पर गिरे होंगे और जिस अजगर की पूंछ इतनी बड़ी थी जिससे सब तारों की तिहाई लपेट कर भूमि पर गिरा दी वह अजगर भी उसी के घर में रहता होगा ९३॥

९४ — और स्वर्ग में युद्ध हुआ मीखायेल और उसके दूत अजगर से लड़े और अजगर और उसके दूत लड़े॥ यो० प्र० प० १२ आ० ७॥

समीक्षक — जो कोई ईसाइयों के स्वर्ग में जाता होगा वह भी लड़ाई में दुःख पाता होगा ऐसे स्वर्ग की यहीं से आशा छोड़ हाथ जोड़ बैठ रहो जहां शान्ति भंग और उपद्रव मचा रहे वह ईसाइयों के योग्य है॥ ९४

९५ — और वह बड़ा अजगर गिराया गया हां वह प्राचीन सांप जो दियाबल और शैतान कहाता है जो सारे संसार का भरमानेहारा है॥ यो० प्र० प० १२ आ० ९॥

समी० क्या जब वह शैतान स्वर्ग में था तब लोगों को नहीं भरमाता था और उसको जन्म भर बंदीगृह में अथवा मार क्यों न डाला उसको पृथिवी पर क्यों डाल दिया जो सब संसार का भरमानेवाला शैतान है तो शैतान को भरमाने वाला कौन यदि शैतान स्वयं भ्रमा है तो शैतान के विना भरमनेहारे भ्रमे और जो उसका भरमानेहारा परमेश्वर है तो वह ईश्वर ही नहीं ठहरा विदित तो यह होता है कि ईसाइयों का ईश्वर भी शैतान से डरता होगा क्योंकि जो शैतान से प्रबल है तो ईश्वर उसको अपराध करते समय ही दंड क्यों न दिया जगत् में शैतान का जितना राज है उसके सामने सहस्रांश भी ईसाइयों के ईश्वर का राज नहीं इसीलिये ईसाइयों का ईश्वर उसे हटा नहीं सकता होगा इससे यह सिद्ध हुआ कि जैसा इस समय के राज्याधिकारी ईसा.

ईश्वर चोरं आदि को शीघ्र दंड देते हैं वैसा भी ईसाइयों का ईश्वर नहीं पुनः कौन ऐसा निर्बुद्धि मनुष्य है वैदिक मत को छोड़ पोकल ईसाई मत स्वीकार करें। २५॥

२६ — हाय पृथिवी और समुद्र के निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा है। यो० प्र० प० १२ आ० १२॥

समीक्षक — क्या वह ईश्वर वहीं का रक्षक और स्वामी है? पृथिवी मनुष्यादि प्राणियों का रक्षक और स्वामी नहीं है? यदि भूमि का भी राजा है तो शैतान को क्यों न मार सका? ईश्वर देखता रहता है और शैतान बहकाता फिरता है तो भी उसको वर्जता नहीं विदित तो यह होता है कि एक अच्छा ईश्वर और एक समर्थ दुष्ट दूसरा ईश्वर हो रहा है॥ २६—

२७ — और बयालीस मास लों युद्ध करने का अधिकार उसे दिया गया और उसने ईश्वर के विरुद्ध निन्दा करने को अपना मुंह खोला कि उसके नाम की और उसके तंबू और स्वर्ग में वास करनेहारों की निन्दा करे और उसको यह दिया गया कि पवित्र लोगों से युद्ध करे और उन पर जय करे और हर एक कुल और भाषा और देश पर उस को अधिकार दिया गया॥ यो० प्र० प० १३ आ० ५। ६। ७॥

समीक्षक — भला जो पृथिवी के लोगों को बहकाने लिये शैतान और पशु आदि को भेजे और पवित्र मनुष्यों से युद्ध करावे वह काम डाकुओं के सर्दार के समान है? ऐसा काम ईश्वर वा ईश्वर के भक्तों का नहीं [बा नहीं!] होता। ॥२७॥

२८ — और मैंने दृष्टि की और देखो मेम्ना सियोन पर्वत पर खड़ा है और उसके संग एक लाख चवालीस सहस्र जिनके माथे पर उसका नाम और उसके पिता का नाम लिखा है। यो० प्र० प० १४ आ० १॥

समी० अब देखिये जहां ईसा का बाप रहता था वहीं उसी सियोन पहाड़ पर उसका लड़का भी रहता है परन्तु एक लाख चवालीस सहस्र मनुष्यों की गणना क्योंकर की? एक लाख चवालीस हजार ही स्वर्ग के वासी हुए बाकी करोड़ों ईसाइयों के सिर पर न मोहर लगी क्या ये सब नरक में गये? ईसाइयों को चाहिये कि सियोन परबत पर जा के देखें कि ईसा का बाप और उसकी

सियोन

सेना वहां है वा नहीं जो हो तो यह लेख ठीक है नहीं तो मिथ्या यदि कहीं से वहां आया तो कहां से आया जो कहो स्वर्ग से तो क्या वे पत्ती हैं कि इतनी बडी सेना और आप ऊपर नीचे उड कर आया जाया करें यदि वह आया जाया करता है तो एक जिले के न्यायाधीश के समान हुआ और वह एक दो वा तीन हो तो नहीं बन सकेगा किन्तु कम से कम एक २ भूगोल में एक २ ईश्वर चाहिये क्योंकि एक दो तीन अनेक ब्रह्माण्डों की न्याय करने और सर्वत्र युगपत् घूमने में समर्थ कभी नहीं हो सकते ॥९८

९८ ——— आत्मा कहता है हां कि वे परिश्रम से विश्राम करेंगे परन्तु उनके कार्य्य उनके संग लेते हैं। यो० प्र० प० १४ आ० १३॥

समी० ——— देखिये ईसाइयों का ईश्वर तो कहता है उनके कर्म उनके संग रहेंगे अर्थात् कर्मानुसार फल सब को दिये जायंगे और ये लोग कहते हैं कि ईसा पापों को ले लेगा और क्षमा भी किये जायंगे यहां बुद्धिमान् विचारें कि ईश्वर का वचन सच्चा वा ईसाइयों का एक बात में दोनों तो सच्चे हो ही नहीं सकते इनमें से एक झूठा अवश्य होगा हमको चाहे ईसाइयों का ईश्वर झूठा हो वा ईसाई लोग॥९८॥

९९ —— और उसने ईश्वर के कोप के बड़े रस के कुंड में डाला और रस के कुंड का रौंदन नगर के बाहर किया गया और रस के कुंड में से घोड़ों की लगाम तक लोहू एक सौ कोश तक बह निकला॥ यो० प्र० प० १४ आ० १९ । २०॥

समीक्ष० —— अब देखिये इनके गपोड़े पुराणों से भी बढ़कर हैं वा नहीं ईसाइयों का ईश्वर कोप करते समय बहुत दुःखित हो जाता होगा और जो उसके कोप के कुंड भरे हैं क्या उसका कोप जल है वा अन्य द्रवित पदार्थ हैं कि जिससे कुंड भरे हैं और सौ कोश तक रुधिर का बहना असंभव है क्योंकि रुधिर वायु लगने से झट जम जाता है पुनः क्योंकर बह सकता है इसलिये ऐसी बातें मिथ्या होती हैं॥९९॥

१०० —— और देखो स्वर्ग में साक्षी के मंदिर का तम्बू खोला गया॥ यो० प्र० प० १५ आ० ५॥

समी० —— जो ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो साक्षियों

का क्या काम! क्योंकि वह स्वयं सब कुछ जानता होता इससे सर्वथा यही निश्चय होता है कि इनका ईश्वर सर्वज्ञ नहीं क्योंकि मनुष्यवत् अल्पज्ञ है वह ईश्वरता का क्या कर सकता है? नहीं २ नहिं नहिं और इसी प्रकरण में दूतों की बड़ी २ असंभव बातें लिखी हैं उनको सत्य कोई नहीं मान सकता कहां तक लिखें इस प्रकरण में सर्वथा ऐसी ही बातें भरी हैं ॥ १००

१०१———— और ईश्वर ने उसके कुकर्मों को स्मरण किया है। जैसा तुम्हें उसने दिया है तैसा उसको भर देओ और उसके कर्मों के अनुसार दूना उसे दे देओ॥ यो० प्र० प० १८ आ० ५।६॥

समी०———— देखो प्रत्यक्ष ईसाइयों का ईश्वर अन्यायकारी है क्योंकि न्याय उसी को कहते हैं कि जिसने जैसा वा जितना कर्म किया उसको वैसा और उतना ही देना उससे अधिक न्यून देना अन्याय है। जो अन्यायकारी की उपासना करते हैं वे अन्यायकारी क्यों न हों॥ १०१ ॥

१०२———— क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा है और उसकी स्त्री ने अपने को तैयार किया॥ यो० प्र० प० १९ आ० ७

समी० अब सुनिये ईसाइयों के स्वर्ग में विवाह भी होते हैं क्योंकि ईसा का विवाह ईश्वर ने वहीं किया। पूछना चाहिये कि उसके श्वशुर सासू शालादि कौन थे? और लड़के बाले कितने हुए? और वीर्य के नाश होने से बल बुद्धि पराक्रम आयु आदि भी न्यून होके अब तक ईसा ने वहां शरीर त्याग किया होगा। क्योंकि संयोगजन्य पदार्थ का वियोग अवश्य होता है अब तक ईसाइयों ने उसके विश्वास में धोखा खाया। और न जाने कब तक धोखे में रहेंगे॥ १०२॥

१०३———— और उसने अजगर को अर्थात् प्राचीन सांप को जो दियाबल और शैतान है पकड़ के उसे सहस्र वर्ष लों बांध रक्खा॥ और उसको अथाह कुण्ड में डाला और बंद करके उसे छाप दी जिसते वह जब लों सहस्र वर्ष पूरे न हों तब लों फिर देशों के लोगों को न भरमावे॥ यो० प्र० प० २० आ० २।३॥

समी० देखो मरु मरु करके शैतान को पकड़ा और हजार बरस तक बंध किया फिर भी छूटेगा क्या फिर न भरमावेगा

ऐसे दुष्टों को तो बन्दिगृह में से दीखना वा मारे बनाया ही नहीं। परन्तु यह शैतान का होना ईसाइयों को भ्रममात्र है वास्तव में कुछ भी नहीं केवल लोगों को डराके अपने जाल में लाने का उपाय रचा है जैसे किसी धूर्त ने किन्हीं भोले मनुष्यों से कहा कि चलो तुम को देवता का दर्शन कराऊं किसी एकान्त देश में ले जाके एक मनुष्य को चतुर्भुज बनाकर रक्खा झाड़ी में खड़ा करके कहा कि आंख मीचलो जब मैं कहूं तब खोलना और फिर जब कहूं तभी मींचलेना जो न मींचेगा वह अन्धा हो जायगा वैसी इन मत वालों की बातें हैं कि जो हमारा मजहब न मानेगा वह शैतान का बहकाया हुआ है जब वह सामने आया तब कहा देखो और पुनः शीघ्र कहा कि मींचलो जब फिर झाड़ी में छिप गया तब कहा खोलो देखा नारायण को सब ने दर्शन किया वैसी लीला मजहबियों की है इसलिये इन की माया में किसी को न फसना चाहिये ॥१०३॥

१०४——— जिसके सन्मुख से पृथिवी और आकाश भाग गये और उनके लिये जगह न मिली और मैंने क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकों को ईश्वर के आगे खड़े देखा और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात् जीवन का पुस्तक खोला गया और पुस्तकों में लिखी हुई बातों से मृतकों का बिचार उनके कर्मों के अनुसार किया गया। यो॰ प्र॰ प॰ २० आ॰ ११।१२॥

समीक्षक —— यह देखो लड़के पन की बात भला पृथिवी और आकाश कैसे भाग सकेंगे और वे किस पर ठहरेंगे! जिनके सामने से भगे और उसका सिंहासन और वह कहां ठहरा और मुर्दे परमेश्वर के सामने खड़े किये गये तो परमेश्वर भी बैठा वा खड़ा होगा क्या यहां की कचहरी और दूकान के समान ईश्वर का व्यवहार है जो कि पुस्तक लेखानुसार होता है और सब जीवों का हाल ईश्वर ने लिखा वा उसके गुमास्तों ने ऐसी २ बातों से अनीश्वर को ईश्वर और ईश्वर को अनीश्वर ईसाई आदि मत वालों ने बना दिया - १०४ ।

१०५——— उनमें से एक मेरे पास आया और मेरे संग बोला कि आ मैं दुल्हीन को अर्थात् मेम्ने की स्त्री को तुझे दिखाऊंगा। योह॰ प्र॰ प॰ २१ आ॰ ९॥

समी॰ —— भला ईसा ने स्वर्ग में दुल्हीन अर्थात् स्त्री अच्छी पाई मौज़ करता होगा जो जो ईसाई वहां जाते होंगे उनको भी स्त्रीयाँ मिलती होंगी लड़के बाले होते होंगे और बहुत भीड़ के हो जाने से रोगोत्पत्ति होकर मरते भी होंगे ऐसे स्वर्ग को दूर से ही हाथ जोड़ना अच्छा है ॥ १०५

१०६—— और उसने उस नल से नगर को नापा कि साढे़ सौ कोश का है उसकी लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एक समान है और उसने उसकी भीत को मनुष्य के अर्थात् दूत के नाप से नापा कि एक सौ चवालीस हाथ की है और उसकी भीत की जुड़ाई सूर्य्यकान्त की थी और नगर निर्मल सोने का था जो निर्मल कांच के समान था और नगर के भीत की नेवें हर एक बहुमूल्य पत्थर से संवारी हुई थीं पहिली नेव सूर्य्यकान्त की थी दूसरी नीलमणि की तीसरी लालड़ी की चौथी मरकत की पांचवीं गोमेदक की छठवीं पुखराज की दसवीं लहसुनिये की एग्यारवीं धूम्रकान्त की बारहवीं मर्टीष की और बारह फाटक बारह मोती थे एक २ मोती से एक २ फाटक बना था और नगर की सड़क स्वच्छ कांच के ऐसे निर्मल सोने की थी यो॰ प्र॰ प॰ २१ आ॰ १६।१७।१८।१९।२०।२१॥

समीक्षक —— सुनो ईसाइयों के स्वर्ग का वर्णन। यदि ईसाई मरते जाते और जन्मते जाते हैं तो इतने बड़े शहर में कैसे समा सकेंगे क्योंकि उसमें मनुष्यों का आगम होता है और उससे निकलते नहीं और जो यह बहुमूल्य रत्नों की बनी हुई नगरी मानी है और सर्व सोने की है इत्यादि लेख केवल भोले २ मनुष्यों को बहकाकर फसाने की लीला है भला लंबाई चौड़ाई

ई तो उस नगर को दिखी सा हो सकता परन्तु ऊंचाई आठ सात सा कोश क्यों कर हो सकती है यह सर्वथा मिथ्या कपोलकल्पना की बात है और इतने बड़े मोती कहां से आये होंगे इस लेख के लिखने वाले के घर के घड़े में से यह गपोड़ा पुरान का भी बाप है ॥१०६॥

१०७ — और कोई अपवित्र वस्तु अथवा घिनित कर्म करनेहारा अथवा झूठ पर चलनेहारा उसमें किसी रीति से प्रवेश न करेगा। यो. प्र. प. २१ आ. २७॥

समीक्षक — जो ऐसी बात है तो ईसाई लोग क्यों कहते हैं कि पापी लोग भी स्वर्ग में ईसाई होने से जा सकते हैं यह झूठ बात है यदि ऐसा है तो योहन्ना स्वप्ने की मिथ्या बातों का कहने हारा स्वर्ग प्रवेश कभी न कर सका होगा और ईसा भी स्वर्ग में न गया होगा क्योंकि जब अकेला पापी स्वर्ग को प्राप्त नहीं हो सकता तो जो अनेक पापियों के पाप के भार से युक्त है वह क्योंकर स्वर्गवासी हो सकता है ॥१०७॥

१०८ — और अब कोई स्राप न होगा और ईश्वर का और मेम्ने का सिंहासन उसमें होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे और उसका मुंह देखेंगे और उसका नाम उनके माथे पर होगा और वहां रात न होगी और उन्हें दीपक का अथवा सूर्य की ज्योति का प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति देगा वे सदा सर्वदा राज्य करेंगे। यो. प्र. प. २२ आ. ३।४।५।

समी० — देखिये यही ईसाइयों का स्वर्गवास क्या ईश्वर और ईसा सिंहासन पर निरन्तर बैठे रहेंगे और उनके दास उनके सामने सदा मुंह देखा करेंगे अब यह तो कहिये तुम्हारे ईश्वर का मुंह यूरोपियन के सदृश गोरा वा अफरिका वालों के सदृश काला अथवा अन्य देशवालों के समान है

यह तुम्हारा स्वर्गभी बंधन है क्योंकि जहां छोटाई बड़ाई है
और उसी एक नगर में रहना अवश्य है तो वहां दुख क्यों न
होता होगा जो सुख वाला है वह ईश्वर सर्वज्ञ सर्वेश्वर
कभी नहीं हो सकता ॥ १०८

१०९ —— देख मैं शीघ्र आता हूं और मेरा प्रतिफल मे-
रे साथ है जिस्से हर एक को जैसा उसका कार्य्य ठहरेगा
वैसा दें ऊं. यो० प्र० प० २२ । आ० १२ ॥

कल समी० जब यही बात है कि कर्मानुसार फल पाते हैं तो ।
पापों की क्षमा कभी नहीं होती और जो क्षमा होती है
तो अंजील की बातें झूठी यदि कोई कहे कि क्षमा करना
भी अंजील में लिखा है तो पूर्वापर विरुद्ध अर्थात् हलफ
दरोगी हुई तो झूठ है इसका मानना छोड़ देओ अब कहां त-
लिखें इनकी बायबिल में लाखों बातें खंडनीय हैं यह तो थो-
ड़ा सा चिन्हमात्र ईसाइयों की बायबिल पुस्तक का दिखलाया है
इतने ही से बुद्धिमान लोग बहुत समझ लेंगे थोड़ी सी बातों
को छोड़ शेष सब झूठ भरा है जैसे झूठ के संग से सत्य
भी शुद्ध नहीं रहता वैसी ही बायबिल पुस्तक भी माननीय न-
हीं हो सकता किन्तु वह सत्य तो वेदों के स्वीकार में गृहीत हो-
ता ही है ॥ १०९ ||

(इति)

अनुभूमिका

जो यह १४ चौदहवां समुल्लास मुसलमानों के मत विषय में लिखा है सो केवल
कुरान के अभिप्राय से अन्य ग्रंथ के मत से नहीं क्योंकि मुसलमान कुरान पर
ही पूरा २ विश्वास रखते हैं यद्यपि फिर्के होने का कारण किसी शब्द अर्थ-
आदि विषय में विरुद्ध बात है तथापि कुरान पर सब एकमत्य हैं जो कुरान अ-
र्बी भाषा में है उस पर मौलवियों ने उर्दू में अर्थ लिखा है उस अर्थ का देवनागरी अक्षर और
आर्य्यभाषान्तर करा के पश्चात् अर्बी के बड़े विद्वानों से शुद्ध करवा के लिखा गया है यदि
कोई कहे कि यह अर्थ ठीक नहीं है तो उसको उचित है कि मौलवी साहबों के तर्जुमाओं
का पहिले खंडन करे पश्चात् इस विषय पर लिखे क्यों कि यह लेख केवल मनुष्यों
की उन्नति सत्याऽसत्य का निर्णय के लिये सब मत के विषयों का थोड़ा २ ज्ञान होवे इ-
ससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का
खंडन कर गुणों का ग्रहण करें न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ मूठ बुराई
वा भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो २ भलाई है वही भलाई और जो बुराई है व-
ही बुराई सब को विदित होवे न कोई किसी पर झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके
और सत्याऽसत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिसकी इच्छा हो वह न माने वा माने कि-
सी पर बलात्कार नहीं किया जाता और यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दो-
षों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और
हठियों का हठ दुराग्रह न्यून करें करावें क्योंकि पक्षपात से क्या २ अनर्थ जगत् में न हुए
और न होते हैं सच्च तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभंग जीवन में पराई हानि कर
के लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहिः है इस में जो
कुछ विरुद्ध लिखा गया हो उसको सज्जन लोग विदित कर देंगे तत्पश्चात् जो उ-
चित होगा तो माना जायगा क्योंकि यह लेख हठ दुराग्रह ईर्ष्या द्वेष वाद विवाद
विरोध घटाने के लिये किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ क्योंकि ए-
क दूसरे की हानि करने से पृथक् रह परस्पर को लाभ पहुंचाना हमारा मुख्य क-
र्म है अब यह १४ चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों का मत विषय सब
सज्जनों के सामने निवेदन करता हूं विचार कर इष्ट का ग्रहण अनिष्ट का
परित्याग कीजिये ॥ अलमति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्य्येषु

इति भूमिका

ओ३म्

(अथ यवन मत विषये व्याख्यास्यामः)

इसके आगे मुसलमानों के मत विषय में लिखेंगे।

१—— मैं आरंभ करता हूं साथ नाम अल्लाह के क्षमा करने वाला और दयालु है॥ मंजिल १ सिपारा १ सूरत १

समीक्षक। मुसलमान लोग ऐसा कहते हैं कि यह कुरान खुदा का कहा है परन्तु इस वचन से विदित होता है कि इसका बनाने वाला कोई दूसरा है क्योंकि जो परमेश्वर का बनाया होता तो (मैं परमेश्वर के नाम पर आरंभ करता हूं) ऐसा न कहता किन्तु मैं मनुष्यों के उपदेश के लिये आरंभ करता हूं ऐसा कहता। यदि मनुष्यों को शिक्षा करता है कि तुम ऐसा कहो तो भी ठीक नहीं क्योंकि इससे पाप का आरम्भ भी खुदा के नाम से होकर उसका नाम भी दूषित हो जायगा जो वह क्षमा और दया करने हारा है तो उसने अपनी सृष्टि में मनुष्यों के सुखार्थ अन्य प्राणियों को मार दारुण पीड़ा दिलाकर मरवा के मांस खाने की आज्ञा क्यों दी क्या वे प्राणी अनपराधी और परमेश्वर के बनाये हुए नहीं हैं और यह भी कहना था कि मैं परमेश्वर के नाम पर अच्छी बातों का आरंभ करता हूं बुरी बातों का नहीं इस कथन में गोलमाल है क्या चोरी जारी मिथ्याभाषणादि अधर्म का भी आरंभ परमेश्वर के नाम पर किया जाय इसी से देखलो कसाई आदि मुसलमान गाय आदि के गले काटने में भी (बिसमिल्लाह) इस वचन को पढ़ते हैं जो यही इसका पूर्वोक्त अर्थ है तो बुराइयों का आरंभ भी परमेश्वर के नाम पर मुसलमान करते हैं और मुसलमानों का (खुदा) दयालु भी न रहेगा क्योंकि उसकी दया उन पशुओं पर न रही और जो मुसलमान लोग इसका अर्थ नहीं जानते तो इस वचन का प्रगट होना व्यर्थ है यदि मुसलमान लोग इसका अर्थ और करते हैं तो सूधा अर्थ क्या है इत्यादि॥१॥

२—— सब स्तुति परमेश्वर के वास्ते है जो परवरदिगार

ए अर्थात् पालन करने हारा है सब संसार का। दया करने वाला दयालु है॥ मं० १ सि० १ सूर तुल्फातिहा आयत १।२ (सारका)

समी० — जो कुरान का खुदा आलम का पालन करने हारा होता और सब पर दया और दया करता होता तो अन्य मतवालों और पशु आदि को भी मुसलमानों के हाथ से मरवाने का हुक्म न देता। जो क्षमा करने हारा है तो क्या पापियों पर भी क्षमा करेगा? और जो वैसा है तो आगे लिखेंगे कि "काफिरों को कतल करो" अर्थात् जो कुरान और पैगंबर को न मानें वे काफिर हैं ऐसा क्यों कहता? इस लिये कुरान ईश्वर कृत नहीं दीखता॥ ॥२॥

३ मालिक दिन न्याय का। तुझ ही को हम भक्ती करते हैं और तुझ ही से सहाय चाहते हैं दिखा हम को सीधा रास्ता। मं० १ सि० १ सू० १ आ० ३।४।५॥

समी० — क्या खुदा नित्य न्याय नहीं करता? किसी एक दिन न्याय करता है? इससे तो अंधेर विदित होता है! उसी की भक्ति करना और उसी से सहाय चाहना तो ठीक परंतु क्या बुरी बात का भी सहाय चाहना? और सूधा मार्ग एक मुसलमानों ही का? वा दूसरे का भी? सूधा मार्ग को मुसलमान क्यों नहीं ग्रहण करते? क्या सूधा रास्ता बुराई की ओर का तो नहीं चाहते? यदि भलाई सब की एक है तो फिर मुसलमानों ही में विशेष कुछ न रहा और जो दूसरों की भलाई नहीं मानते तो पक्षपाती हैं॥३॥

४ — उन लोगों का रास्ता कि जिन पर तूने निआमत अर्थात् एहसान करे दोनों लोक की वा अत्यन्त दया की और उनका मार्ग मत दिखा कि जिनके ऊपर तूने ग़ज़ब अर्थात् अत्यन्त क्रोध की दृष्टि की। और न गुमराहों का मार्ग हम को दिखा। मं० १ सि० १ सू० १ आ० ६-७

समी० — जब मुसलमान लोग पूर्व जन्म और पूर्व कृत पाप पुण्य नहीं मानते तो किन्हीं लोगों को निआमत अर्थात् फ़ज़्ल वा दया करने और किन्हीं को न करने से खुदा पक्ष-

पक्षपाती हो जायगा क्योंकि बिना पाप पुण्य सुख दुःख देना।
केवल अन्याय की बात है और बिना कारण किसी पर
दया और किसी पर क्रोध दृष्टि करना भी स्वभाव से बाहिर है।
वह दया अथवा क्रोध नहीं कर सकता और जब उनके
पूर्व संचित पुण्य पाप ही नहीं तो किसी पर दया और कि-
सी पर क्रोध करना नहीं हो सकता और जो (गुमराह)"
शब्द का अर्थ नोट में काफिर बेदीन जो मुसल्मान नहीं
हैं" यह लिखा है तो वह खुदा केवल मुसल्मानों ही का
पक्षपाती होगा। अन्य का नहीं क्योंकि जो सब मत मतान्त-
रों में धर्मात्मा और पापात्मा होते हैं तो धर्मात्मा भी इस ले-
ख से काफिर हो सकते हैं और जो मुसल्मानों में दुराचार क-
रते हैं क्या वे काफिर नहीं हैं और जो काफिर हैं वे सब मतों
में बुरे हैं और जो धर्मात्मा हैं वे सब मतों में उत्तम हैं तो मु-
सल्मानों से भिन्न मनुष्यों को काफिर कहना अन्याय
की बात है और इस सूरः की टिप्पन पर "यह सूरः अल्ला-
ह साहेब ने मनुष्यों के मुख से कहलाई कि सदा इस प्र-
कार से कहा करें" जो यह बात है तो (अलिफ़ बे) आ-
दि अक्षर भी खुदा ही ने पढ़ाये होंगे जो कहो कि बि-
ना अक्षरज्ञान के इस सूरः को कैसे पढ़ सके क्या कं-
ठ ही से बुलाए और बोलते गये। जो ऐसा है तो
सब कुरान ही कण्ठ से पढ़ाया होगा। इससे ऐसा समझ-
ना चाहिये कि जिस पुस्तक में पक्षपात की बातें पाई जा-
वें वह पुस्तक ईश्वरकृत नहीं हो सकता जैसा कि अर-
बी भाषा में उतारने से अरब वालों को इसका पढ़ना
सुगम अन्य भाषा बोलने वालों को कठिन हो-
ता है इसी से खुदा में पक्षपात आता है और जैसे पर-
मेश्वर ने सृष्टिस्थ सब देशस्थ मनुष्यों पर न्याय दृष्टि से
सब देशभाषाओं से विलक्षण संस्कृत भाषा कि
जो सब देश वालों के लिये एक से परिश्रम से विदि-
त होती है उसी में वेदों का प्रकाश किया है करता तो

कुछ भी बदल न होता था॥

५— यह पुस्तक कि जिसमें सन्देह नहीं परहेजगारों को मार्ग दिखलाती है जो कि ईमान लाते गैब पर नमाज पढ़ते और उस वस्तु से जो हमने दी खर्च करते हैं और वे लोग जो उस किताब पर ईमान लाते हैं जो तेरी ओर वा तुझ से पहिले उतारी गई और विश्वास कियामत पर रखते हैं ये लोग अपने मालिक की शिक्षा पर हैं और ये ही छुटकारा पाने वाले हैं निश्चय जो काफिर हुए और उन पर तेरा डराना न डराना समान है वे ईमान न लावेंगे अल्लाह ने उनके दिलों कानों पर मोहर कर दी और उनकी आंखों पर पर्दा है और उनके वास्ते बड़ा अज़ाब है॥ मं० १। सि० १।
सूर० २ आ० १।२।३।४।५।६॥

समी०— क्या अपने ही मुख से अपनी किताब की प्रशंसा करना खुदा की दम्भ की बात नहीं जब परहेजगार अर्थात् धार्मिक लोग हैं वे तो स्वतः सच्चे मार्ग में हैं और जो झूठे मार्ग पर हैं उनको यह कुरान मार्ग ही नहीं दिखला सकता तो फिर किस काम की रही क्या पाप पुण्य और पुरुषार्थ के बिना खुदा अपने ही खजाने से खर्च करने को देता है जो देता है तो सबको क्यों नहीं देता और मुसलमान लोग परिश्रम क्यों करते हैं और जो बाइबिल इंजील आदि पर विश्वास करना योग्य है तो मुसलमान जो इंजील आदि पर ईमान जैसा कुरान पर है वैसा क्यों नहीं लाते और जो लाते हैं तो कुरान का होना किसलिये जो कहें कि कुरान में अधिक बातें हैं तो पहिली किताब में लिखना खुदा भूल गया होगा और जो नहीं भूला तो कुरान का बनाना निष्प्रयोजन है और हम देखते हैं तो बाइबिल और कुरान की बातें कोई २ न मिलती होंगी नहीं तो सब मिलती-

है एक ही पुस्तक जैसा कि वेद है क्या ख़ुदा ने या किया
मत पर ही विश्वास रखना चाहिये अन्य पर नहीं ॥३॥ क्या
ईसाई और मुसलमान ही ख़ुदा की शिक्षा पर हैं उनमें
कोई भी पापी नहीं है क्या जो ईसाई और मुसलमान अधर्मी
हैं वे भी छुटकारा पावें और दूसरे धर्मात्मा भी न पावें तो
बड़े अन्याय और अंधेर की बात है ॥४॥ और क्या लोगों
मुसल्मानी मत को न माने उन्हीं को काफ़िर कहना कह-
ना वह एकतर्फी डिगरी नहीं है ॥५॥ जो परमेश्वर ही ने
उनके अन्तःकरण और कानों पर मोहर लगाई और उसी
से वे पाप करते हैं तो उनका कुछ भी दोष नहीं यह दोष ख़ुदा
ही का है। फिर उन पर सुख दुःख वा पाप पुण्य नहीं हो सकता
पुनः उनको सज़ा जज़ा क्यों करता है क्योंकि उन्होंने पाप
वा पुण्य स्वतन्त्रता से नहीं किया ॥५॥
६—(बेईमान हैं अर्थात् दगा फरेब देते हैं) उन
के दिलों में रोग है अल्लाह ने उनको रोग बढ़ा दिया। मं० १ सि०
१ सू० २ आ० ७। ९॥

समी०—क्या ईश्वर से किसी का कुछ भी अपराध होता है य-
दि कहता है कि अल्लाह ख़ुदा है नहीं इससे ऐसा लिखना ही व्यर्थ है
भला परमेश्वर को कौन नमस्कार करता है और जो शैतान से
बहक जाता है वह ईश्वर ही नहीं हो सकता क्योंकि बिना
अपराध ख़ुदा ने उनको रोग बढ़ा दिया न दया आई उन बिचा-
रों को बड़ा दुःख हुआ होगा क्या यह शैतान से बढ़कर शैतान
पन का काम नहीं है कि किसी के मन पर ताला लगाना
किसी को रोग बढ़ाना ख़ुदा का काम नहीं हो सकता क्यों-
कि रोग का बढ़ना अपने पापों से है ॥६॥
॥७॥ उनसे अल्लाह ठट्ठा करता है। जिसने तुम्हारे वास्ते पृ-
थिवी बिछौना और आसमान की छत को बनाया। मं० १ सि०
१ सू० २ आ० १५। २१।

समी०—जब किसी का ठट्ठा करना उत्तम पुरुष
का काम नहीं तो ख़ुदा को ठट्ठा करना योग्य कभी नहीं हो स-

वाला और जो उठने वाला है वह कभी हारा नहीं भला आसमान छत किसी को हो सकती है यह अविद्या की बात है जो आकाश को छत के समान मानना हांसी की बात है यदि किसी प्रकार की पृथिवी को आसमान मानते हों तो उन की घर की बात है॥७॥

८ — जो तुम उस वस्तु से सन्देह में हो जो हमने पैगम्बर के ऊपर उतारी तो उस कैसी एक सूरत ले आओ और अपने साक्षी लोगों को पुकारो अल्लाह के बिना जो तुम सच्चे हो जो तुम और कभी न करोगे तो उस आग से डरो कि जिस का इन्धन मनुष्य हैं और काफिरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं मं० १ सि० १ सू० २ आ० २२, २३

समी० — भला यह कोई बात है कि उस के सदृश कोई सूरत न बने क्या अकबर बादशाह के समय में मौलवी जी ने बिना नुक्ते का कुरान नहीं बना लिया था वह कौन सी दोजख की आग है क्या इस आग से न डरना चाहिये इसका भी इन्धन जो कुछ पड़े सब है जैसे कुरान में लिखा है कि काफिरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं तो वैसे पुराणों में लिखा है कि म्लेच्छों के लिये घोर नरक बना है अब कहिये किस की बात सच्ची मानी जाय अपने २ वचन से दोनों स्वर्गगामी और दूसरे के मत से दोनों नरकगामी होते हैं इस लिये ये सब का झगड़ा झूठा है किन्तु जो धार्मिक हैं वे सुख और जो पापी हैं वे सब मतों में दुःख पावेंगे॥८॥

९ — और तू ईमान वालों को आनन्द का सन्देसा दे कि उन के वास्ते बिहिश्तें हैं जिनमें चलती हैं नहरें जब उस में से मेवों के भोजन दिये जावेंगे तब कहेंगे कि यह वो वस्तु हैं जो हम पहिले इससे दिये गये थे निश्चय और उन के लिये पवित्र बीवियां सदैव वहां रहनेवाली हैं मं० १ सि० १ सू० २ आ० २४

समी० — भला यह कुरान का बिहिश्त संसार से कौ-

ऐसी उत्तम बात आता है? क्योंकि जो पदार्थ संसार में हैं वे ही मुसलमानों के स्वर्ग में हैं और इतना विशेष है कि यहां जैसे पुरुष जन्मते मरते और आते जाते हैं उसी प्रकार स्वर्ग में नहीं किन्तु यहां की स्त्रियां सदा नहीं रहतीं और वहां बीबियां अर्थात् उत्तम स्त्रियां सदा काल रहती हैं तो जब तक कियामत की रात न आवेगी तब तक उन बिचारियों के दिन कैसे कटते होंगे? हां जो खुदा की उन पर कृपा होती होगी और खुदा ही के आश्रय समय काटती होंगी तो ठीक है। क्योंकि यह मुसलमानों का स्वर्ग गोकुलिये गुसाइयों के गोलोक और मंदिर के सदृश दीखता है क्योंकि वहां स्त्रियों का मान्य बहुत पुरुषों का नहीं वैसे ही खुदा के घर में स्त्रियों का मान्य अधिक और उन पर खुदा का प्रेम भी बहुत है उन पुरुषों पर नहीं क्योंकि बीबियों को खुदा ने बहिश्त में सदा रक्खा और पुरुषों को नहीं वे बीबियां बिना खुदा की मर्जी स्वर्ग में कैसे ठहर सकतीं जो यह बात ऐसी ही होती तो खुदा स्त्रियों में फंस जाय॥९॥

१०—— और आदम को सारे नाम सिखाये फिर फरिश्तों के सामने करके कहा जो तुम सच्चे हो मुझे उनके नाम बताओ कहा हे आदम उनको उनके नाम बता दे तब उसने बता दिये तो खुदा ने फरिश्तों से कहा कि क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि निश्चय मैं पृथिवी और आसमान की छिपी वस्तुओं को और प्रगट छिपे कर्मों को जानता हूं मं० १। सि० १। सू० २। आ० २९-३१

समी०—— भला ऐसे फरिश्तों को धोखा देकर अपनी बड़ाई करना खुदा का काम हो सकता है यह तो एक दंभ की बात है इस को कोई विद्वान नहीं मान सकता और न ऐसा अभिमान करता क्या ऐसी बातों से ही खुदा अपनी सिद्धाई जमाना चाहता है हां जंगली लोगों में कोई कैसा ही पाखंड चलालेवे चल सकता है सभ्यजनों

में नहीं॥१०॥

११—— जब हमने फरिश्तों से कहा कि बाबा आदम
को दंडवत करो परंतु शैतानने नमाना और अभिमान कि-
या क्यों कि वोभी एक काफिर था। मं १ सि १ सू २ आ ३२
समी०—— इस से खुदा सर्वज्ञ नहीं अर्थात्
भूत भविष्यत और वर्तमान की पूरी बाते नहीं जानता जो जा-
नता होतो शैतान को पैदाही क्यों किया और खुदा में कुछ
तेज भी नहीं है क्यों कि शैतान ने खुदा का हुकम ही न माना
और खुदा उसका कुछ भी न कर सका और देखिये एक शै-
तान काफ़िर ने खुदा को भी छक्का कुडादिया तो मुसल्मानों
के कथनानुसार भिन्न यहां क्रोडों काफ़र हैं वहां मुसल्मा-
नों के खुदा और मुसल्मानों की क्या चल ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ सकती है कभी २ खुदा भी किसी का रोग बढ़ा दे-
ता किसी को गुमराह करदेता है खुदा ने ये बातें शैतान से सीखी
होगी और शैतान ने खुदा से क्योंकि बिना खुदा के शैतान
का उस्ताद और कोई नहीं हो सकता॥११॥
१२—— हमने कहा कि ओ आदम तू और तेरी जोरू बहि-
श्त में रहकर आनन्द में जहां चाहो खाओ परन्तु मत समीप
जाओ उस वृक्ष के कि पापी होजाओगे शैतान ने उनको डि-
गाया कि और उनको बहिश्त के आनन्द से खो दिया तब क-
हा कि उतरो तुम्हारे में कोई शत्रु है तुम्हारा ठिकाना पृथिवी
है और एक समय तक लाभ है आदम अपने मालिक की कु-
छ बातें सीखकर पृथिवी पर आगया। मं०१ सि०१ सू०२ आ०
३३—३४—३५॥
समी०—— अब देखिये खुदा की अल्पज्ञता अभी तो
स्वर्ग में रहने का आशीर्वाद दिया और पुनः थोड़ी देर में क-
हा कि निकलो जो भविष्यत बातों को जानता होता तो बर
ही क्यों देता और बहकाने वाले शैतान को दंड देने से असम-
र्थ भी दीख पड़ता है और वह वृक्ष किसके लिये उत्पन्न
किया था क्या अपने लिये वा दूसरे के लिये तो क्यों रोका
इसलिये ऐसी बातें न खुदा की और न उनके बनाये पुस्तक
में हो सकती है आदम साहेब खुदा से कितनी बातें सीख
आये और जब पृथिवी पर आदम साहेब आये तब कि-

समीक्षक — आप क्या वह बिहिश्त पहाड़ पर है वा आकाश पर उससे कैसे उतर आये अथवा पक्षी के तुल्य आये अथवा जैसे ऊपर से पत्थर गिर पड़े इसमें यह बिदित होता है कि जब आदम साहेब मट्टी से बनाये गये तो इनके स्वर्ग में भी मट्टी होगी और जितने वहां और हैं वे भी वैसे ही फरिश्ते होंगे क्योंकि मट्टी के शरीर बिना इन्द्रिय भोग नहीं हो सकता जब पार्थिव शरीर हैं तो मृत्यु भी अवश्य होना चाहिये यदि मृत्यु होता है तो वे वहां से कहां जाते हैं और मृत्यु नहीं होता तो उनका जन्म भी नहीं हुआ जब जन्म है तो मृत्यु अवश्य ही है यदि ऐसा है तो कुरान में लिखा है कि बीबियां सदैव बिहिश्त में रहती हैं सो झूठा हो जायगा क्योंकि उनका भी मृत्यु अवश्य होगा जब ऐसा है तो बिहिश्त में जाने वालों का भी मृत्यु अवश्य होगा ॥ १२ ॥

१३ — उस दिन से डरो कि जब कोई जीव किसी जीव से भरोसा न रक्खेगा न उसकी सिफारिश स्वीकार की जावेगी न उससे बदला लिया जावेगा और न वे सहाय पावेंगे मं० १ सि० १ सू० २ आ० ४८ ॥

समीक्षक — क्या वर्त्तमान दिनों में न डरें बुरा करने में सब दिन डरना चाहिये जब सिफारिश न मानी जावेगी तो फिर पैगम्बर की गवाही वा सिफारिश से खुदा स्वर्ग देगा यह बात क्योंकर सच हो सकेगी क्या खुदा बिहिश्त वालों ही का सहायक है दोजख वालों का नहीं यदि ऐसा है तो खुदा पक्षपाती है ॥ १३ ॥

✗ १४ — हमने मूसा को किताब और मोजिजे दिये ॥ हमने उनको कहा कि तुम निन्दित बन्दर हो जाओ यह एक भय दिया जो उनके सामने और पीछे थे उनको और शिक्षा ईमानदारों को — मं० सि० १ सू० २ आ० ५० । ५२ ॥

समी० — जो मूसा को किताब दी तो कुरान का होना निरर्थक है और उसको आश्चर्य्य शक्ति दी यह बाइबिल और कुरान में भी लिखा है परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं क्योंकि जो ऐसा होता तो अब भी होता जो अब नहीं

तो पहिले भी न था। जैसे मतवाले आजकल भी अविद्वानों के सामने विद्वान बन जाते हैं वैसे उस समय भी कपट किया होगा क्योंकि खुदा और उसके सेवक अब भी विद्यमान हैं पुनः इस समय खुदा आश्चर्य्य कर्म क्यों नहीं देता और नहीं कर सकते जो मूसा को किताब दी थी तो पुनः कुरान का देना क्या आवश्यक था क्योंकि जो भलाई बुराई करने न करने का उपदेश सर्वत्र एक सा हो तो पुनः भिन्न २ पुस्तक करने से पुनरुक्त दोष होता है क्या मूसा जी आदि को दी हुई पुस्तक में खुदा भूल गया था जो खुदा ने निन्दित बन्दर हो जाना केवल भय देने के लिये कहा था तो उसका कहना मिथ्या हुआ वा छल किया जो ऐसी बातें करता और जिसमें ऐसी बातें हैं वह न खुदा और न यह पुस्तक खुदा की बनाई हो सकती है॥१४॥

१५— इस तरह खुदा मुर्दों को जिलाता है और तुम को अपनी निशानियां दिखलाता है कि तुम समझो मं. १ सि. १ सू. आ. ५०

समी०— क्या मुर्दों को खुदा जिलाता था तो अब क्यों नहीं जिलाता क्या कयामत की रात तक कबरों में पड़े रहेंगे आजकल दौरा सुपुर्द हैं क्या इतनी ही ईश्वर की निशानियां हैं पृथिवी सूर्य्य चन्द्रादि निशानियां नहीं हैं क्या संसार में जो विविध रचना विशेष प्रत्यक्ष दीखती हैं ये निशानियां कम हैं॥१५॥

१६— वे सदैव काल बहिश्त अर्थात् वैकुंठ में वास करेंगे-मं. १-सि. १ सू. २-आ० ६६।६५॥

समी०— कोई भी जीव अनन्त पाप पुण्य करने का सामर्थ्य नहीं रखता इसलिये सदैव स्वर्ग नरक में नहीं रह सकते और जो खुदा ऐसा करे तो वह अन्यायकारी और अविद्वान हो जावे कयामत की रात न्याय होगा तो मनुष्यों के पाप पुण्य बराबर होना उचित है जो अनन्त नहीं है उसका फल अनन्त कैसे हो सकता है और सृष्टि हुए सात

आठ हजार वर्षों से पूर्व ही बतलाते हैं क्या इसके पूर्व ईश्वर निकम्मा बैठा था और कयामत के पीछे भी निकम्मा रहेगा यह बातें सब लड़कों के समान क्योंकि परमेश्वर के काम सदैव वर्तमान रहते हैं और जितने जीवों के पाप पुण्य हैं उतना ही उनको फल देता है इसलिये कुरान की यह बात सच्ची नहीं ॥ ९६ ॥

९७ —— जब हमने तुमसे प्रतिज्ञा कराई न बहाना लोहू अपने आपस के और किसी अपने आपस को घरों से निकालना इसके तुम [illegible] फिर तुम वे लोग हो कि अपने आपस को मार डालते एक फिरके को घरों से निकाल देते हो मं० १ सि० १ सू० २ आ० ९६। ९७ ॥

समी० —— भला प्रतिज्ञा करानी और करनी अल्पज्ञों की बात है वा परमात्मा की जब परमेश्वर सर्वज्ञ है तो ऐसी कड़ाकूट संसारी मनुष्य के समान क्यों करेगा भला यह कौनसी भली बात है कि आपस का लोहू बहाना अपने मत वालों को घर से निकालना अर्थात् दूसरे मत वालों का लोहू बहाना और घर से निकाल देना मिथ्या मूर्खता और पक्षपात की बात है क्या परमेश्वर प्रथम ही से नहीं जानता था कि ये प्रतिज्ञा से विरुद्ध करेंगे इससे विदित होता है कि मुसलमानों भी ईसाइयों की बहुत सी उपमा रखता है और यह कुरान स्वतन्त्र नहीं बन सकता क्योंकि इसमें से थोड़ी सी बातों को छोड़ कर बाकी सब बातें बाइबिल की हैं ॥ ९७

९८ —— ये वे लोग हैं कि जिन्होंने आखरत के बदले जिन्दगी यहां की मोल ले ली उनसे पाप कभी हल्का न किया जावेगा और न उनको सहायता दी जावेगी मं० १ सि० १ सू० २ आ० ८६

१९——— निश्चय हमने मूसा को किताब दी और उसके पीछे हम कि पैगंबर को लाये और मर्यम के पुत्र ईसा को प्रकट मौजज़े अर्थात् दैवी शक्ति और सामर्थ्य दिये उसके साथ (१) रूहुल्कुद्स के जब तुम्हा-रे पास उस वस्तु सहित पैगंबर आया कि जिसको तु-म्हारा जी चाहता नहीं फिर तुमने अभिमान किया एक मत को झुठलाया और मार डालते हो। मं० १ सि० सू० २ आ० ८७

समी०—— जब कुरान में साक्षी है कि मूसा को किता-ब दी तो उसका मानना मुसलमानों को आवश्यक हुआ और जो उस पुस्तक में दोष हैं वे भी मुसलमानों के मत में आ गिरे और (मौजज़े) अर्थात् दैवी शक्ति की बा-तें सब अन्यथा हैं भोले भाले मनुष्यों को बहकाने के लिये झूठमूठ चलाली है क्योंकि सृष्टिक्रम और वि-द्या से विरुद्ध सब बातें झूठी ही होती हैं जो उस समय (मौजज़े) थे तो इस समय क्यों नहीं जो इस समय नहीं तो उस समय भी न थे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं॥१९

२०——— और इससे पहिले काफ़िरों पर विजय चाहते थे जो कुछ पहचाना था जब उनके पास वह आया झट काफ़िर होगये काफ़ि-रों पर लानत है अल्लाह की मं० १ सि० १ सू० २ आ० ८९॥

समी०—— क्या जैसे तुम अन्य मत वालों को का-फिर कहते हो वैसे वे तुमको काफ़िर कहते हैं और उनके मत के ईश्वर की ओर से धिक्कार देते हैं फि-र कहो कौन सच्चा और कौन झूठा जो विचार कर दे-खते हैं तो सब मतवालों में झूठ पाया जाता है और जो सच है सो सब में एकसा है ये सब लड़ाइयां मू-

---

(१) रूहुल्कुद्स कहते हैं जबरईल को जो कि हरदम मसीह के साथ रहता था।

र्थता की है ॥२०
२१ — आनन्द का से देसा ईमानदारों को जो अल्लाह फ-
रिस्तों पैगंबरों जिबरैल और मीकाइल का शत्रु
है अल्लाह भी ऐसे काफिरों का शत्रु है। मं० १। सि० १
सू० २ आ० ९०
समी० — जब मुसलमान कहते हैं कि खुदा लाश-
रीक है फिर यह फौज की फौज (शरीक) कहां से कर-
दी ... जो औरों का शत्रु ... ईश्वर भी शत्रु है
क्या ... को ... विरुद्ध नहीं चलता इससे
खुदा पवित्र नहीं है ॥२१॥
२२ — और कहो कि क्षमा मांगते हैं हम क्ष-
मा करेंगे तुम्हारे पाप और अधिक भलाई करनेवा-
लों के मं० १। सि० १। सू० २। आ० ५४
समी० — अब मुसलमान कहते हैं भला यह खुदा का
उपदेश सबको पापी बनानेवाला है वा नहीं क्योंकि
जब पाप क्षमा होने की आशा मनुष्यों को मिलता
है तभी पापों से कोई भी नहीं डरता इसलिये ऐसा
कहनेवाला खुदा और यह खुदा की बनाई हुई पु-
स्तक नहीं हो सकती क्योंकि वह न्यायकारी है अ-
न्याय कभी नहीं करता और पाप क्षमा करने में अन्याय
कारी हो जाता है किन्तु यथापराध दंड ही देने में
न्यायकारी हो सकता है ॥२२
२३ — जब मूसा ने अपनी कौम के लिये
पानी मांगा हमने कहा कि अपना असा पत्थर
पर मार उसमें से बारह चश्मे बह निकले। मं० १
सि० १ सू० २ आ० ६० ५८
समी० — अब देखिये इन गपोड़ों के तुल्य
दूसरा कोई कहेगा भला एक पत्थर की शिला में
डंडा मारने से झरनों निकलना सर्वथा असं.

भव है जो उस पत्थर को भी तरसे पोला कर उसमें पानी भर बा रह छिद्र करने से संभव है अन्यथा नहीं ॥२३॥

२४— और अल्ला हु खा सकता है जिसको चाहता है दया करता है मं० १ सि० १ सू० २ आ० १०५

समी० क्या जो मुख्य और दया करने के योग्य न हो उस पर दया करने उसको भी प्रधान और उत्तम कर ता है जाएतो है तो खुदा बड़ा गड़बड़िया है क्यों कि फिर अच्छे काम कौन करे और कर्म को कौन छोड़ेगा क्योंकि खुदा की प्रसन्नता पर निर्भर करती है कर्म फल पर नहीं इससे सब को अनास्था होकर कर्मोच्छेद प्रसंग होगा ॥२४॥

२५— ऐसा नहीं कि काफिर लोग ईर्ष्या करके तुमको ईमान से फेर देवें क्योंकि उनमें से ईमान वालों के बहुत से दोस्त हैं मं० १ सि० १ सू० २ आ० ११०

समी०— अब देखिये खुदा ही उनको चिताता है कि तुम्हारे ईमान को काफिर लोग न डिगा देवें क्या वह सर्वज्ञ नहीं है ऐसी बातें खुदा की नहीं हो सकती हैं ॥२५॥

२६— तुम जिधर मुंह करो उधर ही मुंह अल्लाह का है मं० १ सि० १ सू० २ आ० ११६

समी०— जो यह बात सच्ची है तो मुसल्मान (किबले) की ओर मुंह क्यों करते हैं जो कहें हम को किबले की ओर मुंह करने का हुक्म है तो यह भी हुक्म है कि चाहें जिधर की ओर मुख करो क्या एक बात सच्ची और दूसरी झूठी होगी और जो अल्लाह का मुख है तो वह सब ओर हो ही नहीं सकता क्योंकि एक मुख एक ओर रहेगा सब ओर क्यों कर रह सकेगा इसलिये यह संगत नहीं ॥२६॥

सत्या॰ समु॰ १४ (३९०

४ उत्तर

२७ —— जो असमान और भूमिका करनेवा-
ला है जब वो कुछ करना चाहता है यह नहीं कि उ-
सको करना पड़ता है किन्तु उसे कहता है कि हो जा
बस हो जाता है। मं॰ १ सि॰ १ सू॰ २ आ॰ ११७ - १०८

समीक्षक - भला खुदा ने हुक्म दिया कि होजा
तो हुक्म किसने सुना और किसको सुनाया और कौन
बन गया किस कारण से बनाया जब यह लिखते हैं
कि सृष्टि के पूर्व सिवाय खुदा के कोई भी दूसरा वस्तु
न था तो यह संसार कहां से आया बिना कारण के
कोई भी कार्य नहीं होता तो इतना बड़ा जगत् का-
रण के बिना कहां से हुआ यह बात केवल लड़के-
पन की है ॥ (प्रश्न) खुदा की इच्छा से (उत्तर)
क्या तुम्हारी इच्छा से एक मक्खी की टांग भी बन
सकती और जो कहते हो कि खुदा की इच्छा से यह सब कु-
छ जगत् बन गया (प्रश्न) खुदा सर्वशक्तिमान् है
इसलिये जो चाहे सो कर लेता है (उत्तर) सर्वश-
क्तिमान् का क्या अर्थ है (प्रश्न) जो चाहे सो क-
र सके (उत्तर) क्या खुदा दूसरा खुदा भी बना स-
कता है अपने आप मर सकता है मूर्ख रोगी और
अज्ञानी भी बन सकता है (प्रश्न) ऐसा कभी
भी नहीं बन सकता (उत्तर) इसलिये परमेश्वर
अपने और दूसरों के गुण कर्म स्वभाव के विरु-
द्ध कुछ भी नहीं कर सकता जैसे संसार में किसी वस्तु
के बनने बनाने में तीन पदार्थ प्रथम आवश्यक होते हैं एक ब-
नानेवाला जैसे कुम्हार दूसरी घड़ा बनने वाली मिट्टी और
तीसरा उसके साधन जिससे घड़ा बनाया जाता है जैसे कु-
म्हार मिट्टी और साधन से घड़ा बनता है और बननेवा-
ले घड़े के पूर्व कुम्हार मिट्टी और साधन होते हैं
वैसे ही जगत् के बनने से पूर्व जगत् का कारण प्रकृति
और उनके गुण कर्म स्वभाव अनादि हैं इसलिये

तथैव

समी० यह कैसे संभव है कि [illegible]

हैं। [illegible] है।

[illegible]

[illegible] है। [illegible]

[illegible] पत्र [illegible]।

यह कुरान की बात सर्वथा मिथ्या है ॥२७॥

२८ —— जब हमने लोगों के लिये काबे को पवित्र स्थान सुख देने वाला अमन सहित बनाया तुम निमाज के लिये इब्राहीम के स्थान को पकड़ो ॥ मं० १। सि० १। सू० २। आ० १२६ ॥

समी० —— क्या प्रथम पवित्र स्थान खुदा ने कोई भी न बनाया था? जो नहीं बनाया था तो कि जिसके बनाने की कुछ आवश्यकता ही न थी, जो नहीं बनाया था तो बेचारे पूर्वोत्पन्नों को पवित्र स्थान के बिना ही रक्खा था। जब काबा के बिना बनाई थी तब ईश्वर को पवित्र स्थान बनाने का स्मरण न हुआ होगा ॥२८॥

२९ —— वो कौन मनुष्य है जो इब्राहीम के दीन से फिर जावे परन्तु जिसने अपनी जान को मूर्ख बनाया और निश्चय हमने दुनियां में उसी को पसन्द किया और निश्चय आखरत में वो नेक है ॥ मं० १। सि० १। सू० २। आ० ॥१२२॥

समी० —— क्या मुसलमान लोग इब्राहीम के धर्म से बाहर नहीं हो गये हैं? यह खुदा की बात है कि जो उसके धर्म में है वो विद्वान नहीं है [illegible] की है अर्थात् जब इस पुस्तक के बनाने वाले ने ही समझा कि मैं अविद्वान हूँ और विद्वान् लोग मेरी बात को काटेंगे मैं उत्तर न दे सकूँगा इसलिये धर्म विषय में मूर्ख के समान होकर जो कुछ मैं ऊटपटांग कहूँ सब कुछ मान लेना चाहिये जो कि ईमान कहलाता है उसके मजहब में। [illegible] ना स्थिर रहते और न उसका प्रयोजन सिद्ध होता। यह तो ठीक है कि जो धर्म त्यागे वही ईश्वर को [illegible] भी धर्मी नहीं ॥२९॥

३० —— निश्चय हम तेरे मुख को आसमान में फिरता देखते हैं अवश्य हम तुझे उस कबले को फेरेंगे कि पसन्द करे उसको बस अपना मुख मस्जिदुल्हराम [illegible]

की ओर फेरो जहां कहीं तुम हो अपना मुख उसकी ओर फेर लो। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १४२। १४७॥

समी०—— क्या यह छोटी बुतपरस्ती है? नहीं किन्तु बड़ी। (प्रश्न) हम मुसलमान लोग बुतपरस्त नहीं हैं क्योंकि हम काबे को खुदा नहीं समझते। (उत्तर) लोग भी जिनको तुम बुतपरस्त समझते हो वे भी उन मूर्त्तों को ईश्वर नहीं समझते किन्तु उनके सामने परमेश्वर की भक्ति करते हैं यदि बुतों के तोड़नेहारे हो तो उस मस्जिद किबले बड़े बुत को क्यों नहीं तोड़ते? (प्रश्न) वाह जी हमारे तो किबले की ओर मुख करने का कुरान में हुक्म है और इनको वेद में नहीं है फिर वे बुतपरस्त क्यों नहीं? और हम क्यों? क्योंकि हमको खुदा का हुक्म बजाना अवश्य है (उत्तर) जैसे तुम्हारे लिये कुरान में हुक्म है वैसे इनके लिये पुराण में आज्ञा है जैसे तुम कुरान को खुदा का कलाम समझते हो वैसे पुराणी पुराणों को खुदा के अवतार व्यासजी का वचन समझते हैं तुम में और इनमें बुतपरस्ती का कुछ भिन्नभाव नहीं है प्रत्युत तुम बड़े बुतपरस्त और ये छोटे हैं क्योंकि जब तक कोई मनुष्य अपने घर में से प्रविष्ट हुई बिल्ली को निकालने लगे तब तक उसके घर में ऊंट प्रविष्ट हो जाय वैसे ही मुहम्मद साहेब ने छोटे बुत को मुसलमानों के मत से निकाला परन्तु बड़ा बुत जो कि पहाड़ के सदृश मक्के की मस्जिद है वह सब मुसलमानों के मत में प्रविष्ट करा दिई क्या यह छोटी बुतपरस्ती है? हां जो हम लोग वैदिक हैं वैसे ही तुम लोग भी वैदिक हो जाओ तो बुतपरस्ती आदि बुराइयों से बच सको अन्यथा नहीं तुमको जब तक अपनी बड़ी बुतपरस्ती को न निकाल दो तब तक दूसरे छोटे बुतपरस्तों के खंडन से लज्जित होके निवृत्त रहना चाहिये और अपने को बुतपरस्ती से पृथक करके पवित्र करना चाहिये॥३०॥

किन्तु बुतशिकन अर्थात् मूर्त्तों को तोड़नेहारे

३१ ——— जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं उनके लिये यह मत कहो कि ये मृतक हैं किन्तु वे जीवित हैं। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १५४

समीक्षा — भला ईश्वर के मार्ग में मरने मारने की क्या आवश्यकता है? यह क्यों नहीं कहते हो कि यह बात अपने मतलब सिद्ध करने के लिये है? कि यह लोभ देंगे तो लोग खूब लड़ेंगे, अपना विजय होगा, मारने से न डरेंगे, लूटमार करने से ऐश्वर्य प्राप्त होगा, पश्चात् विषयानन्द करेंगे इत्यादि स्वप्रयोजन के लिये यह विपरीत व्यवहार किया है॥३१॥

३२ ——— इन लोगों पर इन के मालिक की ओर से दया और दुरूद है और यही मार्ग पाने वाले हैं। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १५७

समीक्षा — अब देखिये यह काम भी एक प्रकार की बुलबुल सी है भला मृतों पर आयतें पढ़ने से क्या होता है क्योंकि उसका जीवात्मा तो चाहे जहाँ चला गया पुनः पाठ कौन सुनेगा इसलिये यह व्यर्थ कर्म है इत्यादि से यह उसका ईश्वरकृत वा विद्वान्कृत भी नहीं है॥३२

३३ ——— जो लोग कि छिपाते हैं उसको जो कि हमने प्रमाणों और शिक्षा से उतारा उसके बीच में जो कुछ है भला हो और धिक्कार देने वालों की धिक्कार है परन्तु जिन्होंने तोबा और भलाई करी उनके ऊपर फिर जाता हूँ जो लोग काफिर हुए फिर मर गये और काफिर ही रहे उन पर खुदा फरिश्तों और आदमियों पर धिक्कार रहे सदैव उसी में रहेंगे उनसे पाप कभी हल्का न किया जायगा और न वे ढील दिये जायेंगे तुम्हारा खुदा ही मालिक है और कोई नहीं वह दया करनेवाला दयालु है। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १५९।१६०।१६१

समी० — अब यह बात जो कि पहिले पैगम्बरों के लिये जैसा कि इब्राहीम साहेब खतना आदि के नियम जो किये उनको जो नहीं करते और शहर मक्का में सफा और मरवः दो पहाड़ हैं मरवः को ... राही न के समय ... सदैव ...

(१) यह बात आगे की आयत में नहीं समझा जाता है इसका मार मुसलमानों ही ने है कर काफिरों पर बढ़ते हैं ... और फलतः

रते रहे परन्तु मुसलमानों ने किसी कारण से छोड़ दी थी उस पर
यह आयत उतरी उन्हीं को धिक्कार दिया जाता है और जो मुस-
लमान तोबा कर ले तो माफ हो जाय परन्तु जो काफिर के अर्था-
त् मुसलमान के मजहब में नहीं है उन पर खुदा खार खाता है
भला ऐसी बातें खुदा की हो सकती हैं और जो पक्षपाती है वह ई-
श्वर कभी नहीं हो सकता। क्या मुसलमानों पर क्षमा करने वाला
दयालु है अन्य पर नहीं दया न रखता दयालु होन कहा जावे इसीलि-
ए यह ईश्वर कृत पुस्तक और न इसमें कहा हुआ ईश्वर हो स-
कता ॥ ३३

३४—— और यह कि अल्लाह कोई दुःख देनेवाला है शै-
तान का पक्ष मत करो। सब न के तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है उसके
बिना और कोई नहीं जो बुराई और निर्लज्जता की आज्ञा दे और यह
कि कहो अल्लाह पर जो नहीं जानते हो। सि० २ सू० २
आ० १५८।१६८।१६९

समी०—— क्या कोई दुःख देनेवाला दयालु खुदा पा-
पियों पुण्यात्माओं पर है अथवा मुसलमानों पर दयालु और
और अन्य पर दयाहीन है जो ऐसा है तो वह ईश्वर नहीं हो सक-
ता। और पक्षपाती नहीं है तो जो मनुष्य कहीं धर्म करेगा
उस पर ईश्वर दयालु और जो अधर्म करेगा उस पर दंड
दाता होगा तो फिर बीच में मुहम्मद साहब और कुरान को
मानना आवश्यक न रहा। और जो सबको बुराई करानेवा-
ला मनुष्य मात्र का शत्रु शैतान है उसको खुदा ने पैदा ही
क्यों किया क्या वह भविष्यत् की बात नहीं जानता था जो क-
हो कि जानता था परन्तु परीक्षा के लिये बनाया तो भी नहीं बन स-
कता क्योंकि परीक्षा करना अल्पज्ञ का काम है सर्वज्ञ तो
सब जीवों के अच्छे बुरे कर्मों को सदा से ठीक २ जानता है।
और शैतान सबको बहकाता है तो शैतान को किसने ब-
हकाया जो कहो कि शैतान आपसे आप बहकता है तो की
अन्य भी आपसे आप बहकेंगे बीच में शैतान का क्या काम।

कैसे कहें

और जो खुदा ही ने शैतान को बहकाया तो खुदा शैतान का भी शैतान ठहरेगा ऐसी बात ईश्वर की नहीं हो सकती और जो कोई बहकाता है वह कुसंग तथा अविद्या से भ्रमित होता है॥ २४॥

२५————तुम पर मुर्दार, और लोहू गोश्त सूअर का हराम है और अल्लाह के बिना जिस पर कुछ पुकारा जावे। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १६५॥

समी०——यहां विचारना चाहिये कि मुर्दा चाहे आप से आप मरे वा किसी के मारने से दोनों बराबर हैं हां इनमें कुछ भेद भी है तथापि मुर्दापन में कुछ भी नहीं जो लोहू हराम है तो सब पीछे लोहू शरीर ही में जमकर मांस हो जाता है फिर मांस खाना मुसलमानों को लिये सर्वथा हराम रहा और जब एक सूअर का निषेध किया तो क्या मनुष्य का मांस खाना उचित है क्या यह बात अच्छी हो सकती है कि परमेश्वर के नाम पर शत्रु आदि को अत्यंत दुःख देके प्राण हत्या करनी? इससे ईश्वर का नाम कलंकित हो जाता है हां ईश्वर ने बिना पूर्वजन्म के अपराध के मुसलमानों के हाथ से दारुण दुःख क्यों दिलाया क्या उन पर दयालु नहीं है उन को पुत्रवत नहीं मानता जिस वस्तु से अधिक उपकार होवे उन गाय आदि के मारने का निषेध न करना जानो हत्या करा कर खुदा जगत का हानिकारक है हिंसा रूप पाप से कलंकित ही हो जाता ऐसी बातें खुदा और खुदा की पुस्तक की कभी नहीं हो सकतीं॥ ३५

३६————रोजे की रात तुम्हारे लिये हलाल की गई कि मदनोत्सव करना अपनी बीबियों से वे तुम्हारे वास्ते पर्दा हैं और तुम उनके लिये पर्दा हो अल्लाह ने जाना कि तुम चोरी करते हो अर्थात् व्यभिचार बस फिर अल्लाह ने क्षमा किया तुम को बस उनसे मिलो और ढूंढो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है अर्थात् संतान खाओ पीओ यहां तक की प्रकट हो तुम्हारे लिये काले तागे से सुपेद तागा

वा रात से जब दिन निकले। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १७८ १७२

समी० — यहां यह निश्चित होता है कि जब मुसल्मानों का मत चला वा उस के पहिले किसी ने किसी पौराणिक को पूछा होगा कि चान्द्रायण व्रत जो एक महीने भर का होता है उस की विधि क्या है? वह शास्त्र विधि जो कि मध्याह्न में चन्द्र की कला घटने बढ़ने के अनुसार ग्रासों को घटाना बढ़ाना और मध्याह्न दिन में खाना लिखा है उस को न जानकर कहा होगा कि चन्द्रमा का दर्शन करके खाना उस को इन मुसल्मान लोगों ने इस प्रकार का कर लिया परंतु व्रत में स्त्री समागम का त्याग है वह एक बात खुदा ने बढ़ कर कह दी कि तुम स्त्रियों का भी समागम भले ही किया करो और रात में चाहें अनेक बार खाओ। भला यह व्रत क्या हुआ! दिन को न खाया रात को खाते रहे परंतु यह सृष्टि क्रम से विपरीत है कि दिन में न खाना रात में खाना॥ ३६॥

३७ — अल्लाह के मार्ग में लड़ो उन से जो तुम से लड़ते हैं मार डालो तुम उन को जहां पाओ कतल से कुफ्र बुरा है यहां तक उन से लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का उन्हों ने जितनी जियादती करी उतनी ही तुम उन के साथ करो। मं० १। सि० २। सू० २। आ० १९१-१९२-१९३-१९४

समी० — जो कुरान में ऐसी बात न होती तो मुसल्मान लोग इतना बड़ा अपराध जो कि अन्य मत वालों पर किया है न करते और विना अपराधियों को मारना उन पर बड़ा पाप है जो मुसल्मान के मत का ग्रहण न करे उस को कुफ्र कहते हैं अर्थात् कुफ्र से कतल को मुसल्मान लोग अच्छा मानते हैं अर्थात् जो हमारे दीन को न मानेगा उस को हम कतल करेंगे सो करते ही आये मजहब पर लड़ते २ आप ही राज्य आदि से नष्ट हो गये और उन का मन अन्य मत वालों पर अति कठोर रहता है क्या चोरी का बदला चोरी है? कि जितना अपराध हमारा चोर

आदि चोरी करें क्या हम भी चोरी करें यह सर्वथा अन्याय की बात है क्या कोई अज्ञानी हमको गालियां दे क्या हम भी उसको गाली देवें यह बात न ईश्वर न ईश्वर के भक्त विद्वान की और न ईश्वरोक्त पुस्तक की हो सकती है यह तो केवल स्वार्थी अज्ञानी मनुष्य की है ॥३७॥

३८ ——— अल्लाह झगड़ा करने वाले को मित्र नहीं करता॥ ऐ लोगो जो ईमान लाये हो इस्लाम में प्रवेश करो। मं० १ सि० २ सू० २ आ० १९८॥१९९

समी० ——— जो झगड़ा करने वाले को ~~मित्र नहीं करता~~ खुदा मित्र नहीं समझता तो क्यों आप ही मुसल्मानों को झगड़ा करने में प्रेरणा करता और झगड़ालू मुसल्मानों से मित्रता क्यों करता है क्या मुसल्मानों के मत में मिल ने ही से खुदा राजी है तो वह मुसल्मानों ही का पक्षपाती है सब संसार का ईश्वर नहीं इससे यहां यह विदित होता है कि न कुरान ईश्वरकृत और न इसमें कहा हुआ ईश्वर हो सकता ॥३८॥

३९ खुदा जिसको चाहे अनन्त ~~आनन्द~~ देवे। मं० १ सि० २ सू० २ आ० २०२ (रिजक)

समी० ——— क्या पाप बिना पाप पुण्य के खुदा ऐसे ही आनन्द देता है तो फिर भलाई बुराई का करना एक सा ही हुआ क्योंकि सुख दुःख प्राप्त होना उसकी इच्छा पर है इससे धर्म से विमुख होकर मुसल्मान लोग यथेष्टाचार करते हैं और कोई २ इस कुरानोक्त पर विश्वास न करके धर्मात्मा भी होते हैं ॥३९॥

४० ——— प्रश्न करते हैं तुझ से रजस्वला को कह वो अपवित्र हैं पृथक् रहो ऋतु समय में उनके समीप मत जाओ जब तक कि वे पवित्र न हों जब नहा लेवें उनके पास उस स्थान से जाओ खुदा ने आज्ञा दी तुम्हारी बीबियां तुम्हारे लिये खेतियां हैं बस जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में तुमको अल्लाह ~~लग्व के कसम~~ में नहीं पकड़ता। मं० १ सि० २ सू० २ आ० २२२ (व्यर्थ सौगन्द)
२२३। २२४। २२५

में जैसा घूंटा को कर्म न आए जैसे बन्दा न जोते। जितने सारे संसार जो
वे नापाक हैं मनुष्य लेक जीते हैं* कदापि नहीं। ऐसा वो विलास मन के कहते
तक जाते हैं।

---

* इसी प्रार्थना को जो बाद में एपिसीयों ने सीनी में लिखा क्योंकि एक मनुष्य मसीह का
हुआ के पास आते उन्होंने कहा कि एक दुल्हे लाइन ता करते कब मांगते हैं
उन्होंने उत्तर दिया कि ~~तुम को~~ तुम को अ हुये से लोग ने के होते।
उसने कहा जो आप मानते हैं तो मैं हूं मुझ मत सा तुम में से सबको अ माने
लेवी। प्रार्थना भरोसा न होगा सके हल का हुआ।

सत्या० सम्० १४ (३८५८

समी०—— जो यह रजस्वला का स्पर्श संग न करना लिखा है वह अच्छी बात है परन्तु जो यह स्त्रियों को खेती के तुल्य लि- और जैसा जिस ओर से चाहो उनसे बर्तो यह विषयी और पुंसी मैथुन का भी कारण हो सकता है ॥ ४०॥

४१—— वो कौन मनुष्य है जो अल्लाह को उधार देवे अच्छा बस अल्लाह द्विगुण करे उस को उसके वास्ते मं० १ सि० २ सू० २ आ० २२८-२२७

समी०—— [illegible] इसके नाम से लोगों से धन ठग के स्वप्रयोजन सिद्ध करना चाहता है क्या ईश्वर उसको धन दे सकता था और क्या उसका खजाना खाली हो गया था तथा क्या वह हुंडी पुड़िया व्यापारादि में मग्न होने से तोटा में फंस गया था जो उधार लेने लगा और एक का दो दो देना स्वीकार करता है क्या यह साहूकारों का काम है किन्तु ऐसा काम तो दिवालि- यों का जिनके खर्च अधिक और आय कम होने वालों को करना पड़- ता है ईश्वर को नहीं ॥ ४१

४२—— उनमें से कोई ईमान लाया और कोई काफिर हुआ जो अल्लाह चाहता न लड़ते जो चाहता है अल्लाह करता है मं० १ सि० ३ सू० २ आ० २३५

समी०—— क्या जितनी लड़ाई होती है वह ईश्वर ही की इच्छा से क्या वह अधर्म करना चाहे तो कर सकता है जो ऐसी बा- त है तो वह खुदा ही नहीं क्योंकि भले मनुष्यों का यह कर्म नहीं शा- न्तिभंग करके लड़ाई करावें इसी से विदित होता है कि यह कुरा- न न ईश्वर की बनाई हुई और न किसी धार्मिक विद्वान की रचित है ४२॥

४३॥—— जो कुछ आसमान और पृथिवी पर है सब उ- सी के लिये है चाहे उसकी कुर्सी ने आसमान और पृथिवी को समाने दे। मं० १ सि० [illegible] आ० २३७॥

समी०—— जो आकाश भूमि में पदार्थ हैं वे सब जीवों के लिये परमात्मा ने उत्पन्न किये हैं अपने लिये नहीं क्योंकि

वह पूर्णकाम है उस को किसी पदार्थ की ~~आवश्यकता~~ अपेक्षा नहीं
जब उसकी कुर्सी है तो वह एकदेशी है जो एकदेशी होता है वह
ईश्वर नहीं कहाता क्योंकि ईश्वर तो व्यापक है ॥४३

४४—— ~~ऐसा मालिक कि~~ सूर्य्य को पूर्व से लाता है बस तू प-
श्चिम से ले आओ जो काफ़िर था निश्चय अल्लाह पापियों को मार्ग न-
हीं दिखलाता। मं॰ १ सि॰ ३ सू॰ २ आ॰ १४०

समी॰ —— देखिये यह अविद्या की बात! भला सूर्य्य न पूर्व से
पश्चिम और न पश्चिम से पूर्व कभी आता जाता है वह तो अपनी परिधि
में घूमता रहता है इससे निश्चित जाना जाता है कि कुरान के कर्त्ता को
न खगोल और न भूगोल विद्या आती थी जो पापियों को मार्ग नहीं ब-
तलाता तो पुण्यात्माओं के लिये भी मुसल्मानों के खुदा की जरूरत
नहीं क्योंकि धर्मात्मा धर्म मार्ग में ही होते हैं मार्ग तो धर्म से भूले हुये
मनुष्यों को बतलाना होता है सो कर्त्तव्य के न करने से कुरान के क-
र्त्ता की बड़ी भूल है ॥४४

४५ —— कहा चार जानवरों से ले उनकी सूरत पहिचान रख
फिर हर पहाड़ पर उनमें से एक २ टुकड़ा रख दे फिर उनको बुला दौड़-
ते तेरे पास चले आवेंगे। मं॰ १ सि॰ ३ सू॰ २ आ॰ २४२

समी॰ —— वाह २ देखो जी मुसल्मानों का खुदा भानमती के स-
मान खेल कर रहा है क्या ऐसी ही बातों से खुदा की खुदाई है तो बुद्धि-
मान लोग ऐसे खुदा को तिलाञ्जलि देकर दूर रहेंगे और मूर्ख लो-
ग फसेंगे इससे खुदा की बड़ाई के बदले बुराई उसके पल्ले पड़ेगी ॥४५

४६ —— जिसको चाहे नीति देता है। मं॰ १ सि॰ ३ सू॰ २ आ॰ २५१

समी॰ —— जब जिसको चाहता है नीति देता है तो जिसको
नहीं चाहता उसको अनीति देता होगा यह बात ईश्वरता की नहीं कि-
न्तु जो पक्षपात छोड़ सबको नीति का उपदेश करता है वही ईश्वर
और आप्त हो सकता है अन्य नहीं ॥४६

~~४७ —— जो लोग ब्याज खाते हैं वे कबरों से नहीं खड़े होंगे~~
~~मं॰ १ सि॰ ३ सू॰ ३ आ॰ २५७~~

~~समी॰ क्या वे कबरों ही में पड़े रहेंगे और जो पड़े रहेंगे तो कब तक ऐसी~~
~~असंभव बात ईश्वर के पुस्तक की हो सकती है किन्तु बालबुद्धियों~~

की तो हो सकती है॥४६॥

४८ — वह कि जिसको क्षमा करेगा जिसको चाहे पापी बनावेगा क्योंकि वह सब वस्तु पर बलवान है मं० १। सि० ३। सू० ३। आ० २६६

समी० — क्या क्षमा के योग्य पर क्षमा न करना अयोग्य पर क्षमा करना गवरगण्ड राजा के तुल्य यह कर्म नहीं है यदि ईश्वर जिसको चाहता पापी वा पुण्यात्मा बनाता है तो जीव को पाप पुण्य न लगना चाहिये क्योंकि जब ईश्वर ही ने उसको वैसा ही किया तो जीवों को दुःख सुख होना न चाहिये जैसे सेनापति की आज्ञा से किसी भृत्य ने किसी को मारा वा रक्षा की उसका फलभागी वह नहीं होता वैसे ये भी नहीं।४८

४९ — कह इससे अच्छी और क्या परहेजगारों को खबर दूं कि अल्लाह की ओर से बहिश्तें हैं जिनमें नहरें चलती हैं उन्हीं में सदैव रहने वाली शुद्ध बीबियां हैं अल्लाह की प्रसन्नता से अल्लाह उनको देखने वाला है। मं० १। सि० ३। सू० ३। आ० १५॥

समी० भला यह स्वर्ग है किंवा वेश्यावन इसको ईश्वर कहना वा स्त्रैण अर्थात् स्त्रियों में आसक्त कोई भी बुद्धिमान ऐसी बातें जिसमें हों वह परमेश्वर का किया पुस्तक मान सकता है यह पक्षपात क्यों करता है जो बीबियां बहिश्त में सदा रहती हैं वे यहां जन्म पाके वहां गई हैं वा वहीं उत्पन्न हुई हैं यदि यहां जन्म पाकर वहां गई हैं कि कयामत की रात से पहिले ही वहां बीबियों को बुला ली और उनके खाविन्दों को क्यों न बुला लिये और कयामत की रात में सबका न्याय होगा इस नियम को क्यों तोड़ा यदि वहीं जन्मी हैं तो कयामत तक वे क्योंकर निर्वाह करती हैं तो यहां से बहिश्त में जाने वाले मुसल्मानों को खुदा बीबियां कहां से देगा क्या उन बीबियों ही उसको देगा और जैसे बीबियां बहिश्त में सदा रहने वाली बनाई वैसे पुरुषों को वहां सदा रहने वाले क्यों नहीं बनाए इसलिये मुसल्मानों का खुदा अन्यायकारी बेसमझ है॥४९॥

५० निश्चय अल्लाह की ओर से दीन इस्लाम है और नहीं। मं० १। सि० ३। सू० ३। आ० १७ ९

समी० —

समी० क्या अल्लाह मुसलमानों ही का है अन्यों का नहीं क्या तेरहसौ बर्षों के पूर्व ईश्वरीय मत था ही नहीं इसी से यह कुरान ईश्वर का बनाया तो नहीं किन्तु किसी पक्षपाती का बनाया है ॥५० ॥

५१ ——— प्रत्येक जीव को पूरा दिया जावेगा जो कुछ उसने कमाया और वे न अन्याय किये जावेंगे। कह या अल्लाह तूही मुल्क का मालिक है जिसको चाहे देता है जिसको चाहे छीनता है जिसको चाहे प्रतिष्ठा देता है जिसको चाहे अप्रतिष्ठा देता है सब कुछ तेरे हीहाथ में है प्रत्येक बस्तु पर तूही बलवान है॥ रात को दिन में और दिन को रात में पैठाता है और मृतक को जीवित से जीवित को मृतक से निकालता है और जिसको चाहे अनन्त अन्न देता है॥ मुसल्मानों को उचित है कि काफ़िरों को मित्र न बनावें सिवाय मुसल्मानों के जो कोई यह करे बस वह अल्लाह की ओर से नहीं॥ कह जो तुम चाहते हो अल्लाह को तो पक्ष करो मेरा अल्लाह चाहेगा तुमको और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा निश्चय करुणामय है। मं० १ सि० २ सू० ३ आ० २१। २३। २४। २५। २६। २७॥

समी० ——— जब प्रत्येक जीव को कर्मों का पूरा २ फल दिया जावेगा तो क्षमा नहीं किया जायगा और जो क्षमा किया जायगा तो पूरा फल नहीं दिया जायगा और अन्यायी होगा। जब बिना उत्तम कर्मों के राज्य देगा तो भी अन्यायकारी हो जायगा। भला रात में दिन। दिन में रात और जीवित से मृतक और मृतक से जीवित कभी हो सकता है क्योंकि ईश्वर की व्यवस्था अछेद्य अभेद्य है कभी अदल बदल नहीं हो सकती। अब देखिये पक्षपात की बातें कि जो मुसल्मान के मजहब में नहीं हैं उनको काफ़िर ठहराना उनमें श्रेष्ठों से भी मित्रता न रखने और मुसलमानों में दुष्टों से भी मित्रता रखने के उपदेश करनेहारे ईश्वर को ईश्वरता से बहिः करते हैं। इससे यह कुरान कुरान का खुदा और मुसल्मान लोग केवल पक्षपात अविद्या के भरे हुए हैं इसी लिये मुसलमान लोग अंधेरे में हैं और देखिये मुहंमद साहेब की लीला कि जो तुम मेरा पक्ष करोगे तो खुदा तुम्हारा पक्ष करेगा और जो तुम पक्षपात रूप पाप करोगे

इस की तमामी करेगा इससे सिद्ध होता है कि मुहंमद साहेब का अन्तःकरण शुद्ध नहीं था इसी लिये अपने मतलब सिद्ध करने के लिये मुहंमद साहेब ने कुरान बनाया वा बनवाया ऐसा विदित होता है ॥५१

५२—— जिस समय कहा फिरश्तों ने कि ऐ मर्य्यम तुझ को अल्लाह ने पसंद किया और पवित्र किया ऊपर जगत् की स्त्रियों के मं०१ सि०३ सू०३ आ०३८ ।

समी०—— भला जब आजकल खुदा के फरिश्ते और खुदा किसी से बातें करने को नहीं आते तो प्रथम भी नहीं आया होगा जो कहो कि पहले के मनुष्य पुण्यात्मा थे अब के नहीं तो यह बात मिथ्या है किन्तु जिस समय ईसाई और मुसलमानों का मत चला था उस समय उन देशों में जंगली और विद्याहीन मनुष्य अधिक थे इसी लिये ऐसे विद्याविरुद्ध मत चल गये अब विद्वान् अधिक हैं इसी लिये नहीं चल सकता किन्तु जो २ ऐसे पोकल मज़हब हैं वे भी अस्त होते जाते हैं वृद्धि की तो कथा ही क्या है ॥५२

५३—— उस को कहता है कि हो बस हो जाता है काफिरों ने धोखा दिया ईश्वर ने धोखा दिया ईश्वर बहुत मकर करने वाला है। मं०१ सि०३ सू०३ आ०४७।५४।

समी०—— जब मुसल्मान लोग खुदा के सिवाय दूसरी चीज नहीं मानते तो खुदा ने किससे कहा और उसके कहने से कौन गया इस का उत्तर मुसल्मान सात जन्म में भी नहीं दे सकेंगे क्योंकि विना उपादान कारण के कार्य्य कभी नहीं हो सकता विना कारण के कार्य्य कहना जानो अपने मा बाप के बिना मेरा शरीर होगया ऐसी बात है जो धोखा खाता अर्थात् छल और दंभ करता है वह ईश्वर तो कभी नहीं हो सकता किंतु उत्तम मनुष्य भी ऐसा काम नहीं करता ॥५३

५४—— ~~कलबके परन्तु मुसल्मान हो~~ क्या तुम को यह बहुत न होगा कि अल्लाह तुमको तीन हजार फरिश्तों के साथ सहाय देवे मं०१ सि०४ सू०३ आ०१२४।

समी० —— इस लिये इससे यह ठीक सिद्ध होता है कि जो तुम मुसल्मान होगे तो हम तुम को मार डालेंगे यह केवल अधर्म की बात है जो मुसल्मानों को तीन हजार फरिश्तों के साथ सहाय देता था तो अब मुसल्मानों की बादशाही बहुत सी नष्ट हो गई और होती जाती है क्यों सहाय नहीं देता इसलिये यह बात केवल लोभ देके मूर्खों को फसाने के लिये महा अन्याय की बात है ॥५४

५५ —— और काफिरों पर हमको सहाय कर। अल्लाह तुम्हारा सहायक और कारसाज है जो तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ वा मर जाओ अल्लाह की दया बहुत अच्छी है। मं० १। सि० ४। सू० ३। आ० १३६-१३८।१४६

समी० —— अब देखिये मुसल्मानों की मूर्खता कि जो अपने मत से भिन्न हैं उनके मारने के लिये खुदा की प्रार्थना करते हैं क्या परमेश्वर भोला है जो इनकी बात मान लेवे यदि मुसल्मानों का कारसाज अल्लाह ही है तो फिर मुसल्मानों के कार्य नष्ट क्यों होते हैं और खुदा भी मुसल्मानों के मोह से फसा हुआ दीख पड़ता है जो ऐसा पक्षपाती खुदा है तो धर्मात्मा पुरुषों का उपासनीय कभी नहीं हो सकता ॥५५

५६ —— यहां लड़ाई इस वास्ते की अल्लाह तुम्हारी परीक्षा लेवे - मं० सि० ४ सू० ३ आ०

समी० —— जो लड़ाई के विना परीक्षा नहीं कर सकता तो वह सर्वज्ञ नहीं इससे वह ईश्वर क्यों कहला सके ॥५६

५७ —— और अल्लाह तुम को सर्वज्ञ नहीं करता परन्तु अपने पैगम्बरों से जिस को चाहे पसन्द करे बस अल्लाह और उसके रसूल के साथ ईमान लाओ। मं० १। सि० ४। सू० ३। आ० १६७ ॥

समी० —— जब किसी पैगम्बर को खुदा अपने सदृश आदर दे सकता है जो कर सकता है तो दूसरा खुदा शरीक खुदा हुआ जो नहीं कर सकता तो इस आयत के झूठ होने से खुदा झूठा बोला जिसकी बात झूठ हो वह स्वयं झूठा हुआ जब मुसल्मान तो-

स.प्र. समु० १४ (४०४)

ग सिवाय खुदा के साथ ईमान लाते न किसी को खुदा का साझी मानते हैं तो पैगंबर साहिब को ईमान में खुदा के साथ पैगंबर साहिब को शरीक क्यों किया अल्लाह ने पैगंबर के साथ ईमान लाना लिखा इसी से पैगंबर भी शरीक होगया पुनः लाशरीक कहना ठीक हुआ ५७

५८——— ऐ ईमान वालो परस्पर खावो रक्खो और लड़ाई में और डरो अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ। मं० १ सि० ४ सू० ३ आ० १८६

समी०——— यह कुरान का खुदा और पैगंबर दोनों लड़ाई बाज थे जो लड़ाई की आज्ञा देता है वह शांति भंग करने वाला होता है क्या नाम मात्र खुदा से डरने से छुटकारा पाया जाता है वा अधर्मयुक्त लड़ाई आदि से भी डरने से जो प्रथम पक्ष है तो डरना न डरना बराबर और जो द्वितीय पक्ष है तो ठीक है। ५८

५९——— यह अल्लाह की हद्दें हैं जो अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा वह बहिश्त में पहुंचेगा जिनमें नहरें चलती हैं और यह बड़ा प्रयोजन है जो अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा भंग करेगा और उसकी हद्दों से बाहर हो जायगा वो सदा रहने वाली आग में जलाया जावेगा और उसके लिये खराब करने वाला काफिर है। मं० १ सि० ४ सू० ४ आ० १२-१३

समी०——— जब खुदा ही ने मुहम्मद साहेब पैगंबर को अपना शरीक कर लिया है और खुद कुरान ही में लिखा है और देखो खुदा पैगंबर साहेब के साथ कैसा फसा है कि जिसने बहिश्त में रसूल का साझा कर दिया है इस एक बात में भी मुसलमानों का लाशरीक खुदा को कहना व्यर्थ है ऐसी २ बातें ईश्वरोक्त पुस्तक में नहीं हो सकती। ॥ ५९ ॥

६०——— और एक परमाणु की बराबर भी वह अन्याय नहीं करता और जो भलाई होवे उसका दुगुण करेगा उसको कहा आपने हाथ मुख से पूछो जो निश्चय अल्लाह क्षमा करने वाला है। मं० १

मं० १ सि० ५ सू० ४ आ० ४७।८९

समी० जो एक भी खुदा अन्याय नहीं करता तो पुण्य को दुगुण क्यों देता और मुसलमानों का पक्षपात क्यों करता जीवों को आप ही पापी क्यों बनाता फिर दंड क्यों देता है क्योंकि अधिक न्यून फल कर्मों से अधिष्ठाता को भलाई बुराई का फल मिलता है आधीन को नहीं जैसे सेना की लड़ाई में राजा को जय पराजय रूप होता है भृत्यों को नहीं वैसे द्विगुण वा न्यून फल कर्मों को देवे तो खुदा अधर्मी हो जावे।९०

९१—— आवश्य बहिश्त में भेजेंगे जिनमें जिनमें नहरें चलती हैं और उनके लिये पवित्र बीबियां हैं तथा साये दार दरख्त हैं उनमें लदार रहेंगे। मं० १ सि० ५ सू० ४ आ० ५७

समी०—— यह केवल अज्ञानियों को लोभ देकर मुहम्मद साहब ने फसाये हैं और आप भी स्त्रियों में आसक्त होंगे नहीं तो ऐसी बातें क्यों कहते।९१

९२—— बस उनको चाहिये खुदा के मार्ग में लड़ें जो लोग ईमान लाये खुदा के मार्ग में लड़ते हैं जो काफिर हैं वह बुतों के मार्ग में लड़ते हैं बस शैतान के मित्रों से लड़े निश्चय उसका धोखा निर्बल है जो उनको भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है और बुराई को तेरी ओर से बतलाते हैं कह सब अल्लाह की ओर से है। मं० १ सि० ५ सू० ४ आ० ७२।७७

समी०—— भला ईश्वर के मार्ग में लड़ाई का क्या काम और जो बुतपरस्त काफिर हैं तो मुसलमान बड़े बुतपरस्त होने से बड़े काफिर हैं क्योंकि ये बुतपरस्त लोग छोटी २ मूर्तियों के सन्मुख नमते और भक्ति करते हैं वैसे ही मुसलमान लोग मक्का की जो एक बड़ी मस्जिद है उसके सामने नमते हैं जो कहें कि हम मस्जिद को खुदा नहीं समझते और कुरान की आज्ञा है इससे उधर की ओर मुख सामने करके खुदा की बंदगी करते हैं अच्छा तो ये लोग भी पत्थर को ईश्वर नहीं समझते किन्तु पत्थर में ईश्वर की भावना करके भक्ति करते हैं और

और इनको भी पुराण में वैसी आज्ञा व्यासजी जिनको ये लोग
ईश्वरावतार मानते उनकी है कि तुम मूर्त्ति पूजो इसलिये
बड़ी मस्जिद को ईश्वर की मतीमें सामने रखने वाले मुसलमा-
न बड़े बुत्परस्त और ये लोग छोटे बुत्परस्त हैं जैसे कोई मनु-
ष्य अपने घर में से बिल्ली को जब लों निकाले तब लों उसके
घर में ऊंट प्रविष्ट हो जाय वैसी ही दशा महम्मद साहब आदि
मुसल्मानों की है क्योंकि बिल्ली के समान छोटी २ पाषाणादि
की मूर्त्तियों को तो फोड़ तोड़ के अपने घर में से निकाल दीं पर-
न्तु ऊंट के समान मस्जिद को हृदय रूपी घर में प्रविष्ट हो गई
इससे मुसल्मान लोग बड़ी हानि को प्राप्त हो गये बये बड़े बुत परस्त हैं
तो किस मूर्ख से दूसरे छोटे बुत परस्तों का खंडन कर सकते हैं हां
पहिले आप बुत परस्ती को छोड़ें तो अन्य का खंडन कर सकें ॥ ९२ ॥

९३ जब तेरे पास से निकल जाते हैं तो तेरे विरुद्ध सो-
चते हैं अल्ला उनकी बात को लिखता है अल्लाह ने उनकी कमाई हुई
वस्तु के कारण से उन को उल्टा किया क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह गुम-
राह किये हुए को मार्ग पर लावे बस जिस को वह गुमराह करे उसको कदापि
मार्ग न पावेगा। मं० २ सि० ५ सू० ४ आ० ८० । ८७

समी० — जो अल्ला बातों को लिख बही खाता बनाता जाता
है तो सर्वज्ञ नहीं जो सर्वज्ञ है तो लिखने का क्या काम और जो मुसल्मान
कहते हैं कि शैतान ही सबको बहकाने से दुष्ट हुआ है तो जब खुदा
ही जीवों को गुमराह करता है तो खुदा और शैतान में क्या भेद र-
हा हां इतना भेद कह सकते हैं कि खुदा बड़ा शैतान वह फरिश्ता छो-
टा शैतान क्योंकि मुसल्मानों का यही कौल है कि जो बहकाता है वही
शैतान है तो इस प्रतिज्ञा से खुदा को भी शैतान बना दिया ॥ ९३ ॥

९४ — और अपने हाथों को न रोकें तो उनको पकड़ लो औ-
र जहां पाओ मार डालो। मुसल्मानों को मुसल्मान का मारना योग्य नहीं
जो कोई अनजान से मार डाले बस एक गर्दन मुसल्मान का छोड़ना है और
खून बहा उन लोगों की ओर सौंपी हुई जो उसको से होवें तुम्हारे लि-
ये दान कर देंगे जो दुश्मन की कौम से हैं और जो कोई मुसल्मान को

जानकर मार डाले वह सदैव का जहन्नम में रहेगा उसपर अल्लाह का क्रोध और लानत है। मं॰ १ सि॰ ५ सू॰ ४ आ॰ ९०। ९१। ९२॥

समी॰ — अब देखिये महापक्षपात की बात कि ~~कहां~~ जो मुसलमान न हो उसको जहां पावो मार डालो और मुसलमानों को ~~मारने में~~ [illegible] न मारना भूल से मुसलमानों के मारने में प्रायश्चित और अन्य को मारने से बहिश्त मिलेगा ऐसे उपदेश को कूप में डालना चाहिये ऐसे २ पुस्तक, ऐसे २ पैगंबर ऐसे २ खुदा और ऐसे मत से सिवाय हानि के लाभ कुछ भी नहीं ऐसों का न होना अच्छा और ऐसे प्रामादिक मतों से बुद्धिमानों को अलग रह कर वेदोक्त सब बातों को मानना चाहिये क्योंकि उसमें असत्य किंचिन्मात्र भी नहीं है और जो मुसल्मान को मारे ~~उसका~~ उसको दोजख मिले और दूसरे मतवाले कहते हैं कि मुसल्मान को मारे तो स्वर्ग मिले ~~लिखा है~~ अब कहो इन दोनों मतों में से किसको मानें किसको छोड़ें किन्तु ऐसे मूढ़ प्रकल्पित मतों को छोड़ कर वेदोक्त मत स्वीकार करने योग्य सब मनुष्यों के लिये है कि जिसमें आर्य्य मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों के मार्ग में चलना और दस्यु अर्थात् दुष्टों के मार्ग से अलग रहना लिखा है सर्वोत्तम है॥ ६४

६५ — और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिसने रसूल से विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष किया अवश्य हम उसको दोजख में भेजेंगे। मं॰ १ सि॰ ५ सू॰ ४ आ॰ ११३

समी॰ — अब देखिये खुदा और रसूल की पक्षपात की बातें लिखेंगे तो अपने मजहब न बढ़ेगा और पदार्थ न मिलेंगे आनन्द भोग न होगा इसी से विदित होता है कि वे अपने मतलब करने में पूरे थे और अन्य के प्रयोजन बिगाड़ने में इससे ये अनाप्त थे इनकी बात का प्रमाण आप्त विद्वानों के सामने कभी नहीं हो सकता॥ ६५॥ और

६६ — जो अल्लाह रसूल और फरिश्तों किताबों के साथ कुफ्र करे निश्चय वह गुमराह है॥ निश्चय जो लोग काफिर

थे और ईमान लाये फिर ईमान लाये फिर गये और कुफ्र में अधिक बढ़े अल्लाह उनको कभी क्षमा न करेगा और न मार्ग दिखलावेगा। मं॰ १ सि॰ ५ सू॰ ४ आ॰ १३४। १३५

समी॰ क्या अब भी खुदा लाशरीक रह सकता है क्या लाशरीक कहते जाना और उसके साथ बहुतों से शरीक मानते जाना यह परस्पर विरुद्ध बात है क्या तीन बार क्षमा के पश्चात् खुदा क्षमा नहीं करता और तीन बार कुफ्र करने पर रास्ता दिखलाता है वा चौथी बार से आगे नहीं दिखलाता यदि चार २ बार भी कुफ्र सब लोग करें तो कुफ्र बहुत ही बढ़ जावे। ६६।

६७। निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को जमा करेगा दोजख में निश्चय बुरे लोग धोखा देते हैं अल्लाह को और उनको वह धोखा देता है ए ईमानवालो मुसलमानों को छोड़ काफिरों को मित्र मत बनाओ। मं॰ १ सि॰ ५ सू॰ ४ आ॰ १३८। १४१। १४२

समी॰ क्या मुसलमान बहिश्त और अन्य लोग दोजख में जाने में क्या प्रमाण वाह जी वाह जो बुरे लोगों के धोखे में आता और अन्य को धोखा देता है ऐसा खुदा हमसे अलग रहे किन्तु जो धोखेबाज हैं उनसे जाकर मेल करे और वे उससे मेल करें क्योंकि (यादृशी शीतला देवी तादृशः खरवाहनः) जैसे को तैसा मिले तभी निर्वाह होता है जिसका खुदा धोखेबाज है उसके उपासक मुसलमान लोग धोखेबाज क्यों न हों तभी तो मुसलमान लोग धोखा देने में तत्पर रहते हैं। क्या दुष्ट मुसलमान हो उससे मित्रता और अन्य श्रेष्ठ मुसलमान भिन्न से शत्रुता करना किसी को उचित हो सकती है॥ ६७

६८ —— ऐ लोगो निश्चय तुम्हारे पास सत्य के साथ खुदा की ओर से पैगम्बर आया बस तुम उन पर ईमान लाओ॥ अल्लाह माबूद अकेला है। मं॰ १ सि॰ ६ सू॰ ४ आ॰ १६७-१६८॥

समी॰ —— क्या जब पैगम्बरों पर ईमान लाना लिखा तो ईमान में पैगम्बर खुदा का शरीक अर्थात् साझी हुआ वा नहीं?

जब अल्लाह एकदेशी है व्यापक नहीं इसीलिये उसके पास से पैगंबर आते जाते हैं तो वह ईश्वर भी नहीं हो सकता। कहीं सर्वदेशी लिखते हैं कहीं एकदेशी इससे विदित होता है कि कुरान एक का बनाया नहीं किन्तु बहुतों ने मिल के बनाया है ॥६८॥

६९—तुम पर हराम किया गया मुर्दार, लोहू, सूअर का मांस जिस पर अल्लाह के बिना कुछ और पढ़ा जावे, गला घोटे, लाठी मारे, ऊपर से गिर पड़े सींग मारे और गोश्त खाने वाले। मं० १। सि० ६। सू० ५। आ० १

समी०—क्या इतने ही पदार्थ हराम हैं अन्य बहुत से पशु तथा तिर्य्यक जीव कीड़ी आदि मुसलमानों को हलाल होंगे इस वास्ते यह मनुष्यों की कल्पना है ईश्वर की नहीं इससे इसका प्रमाण भी नहीं ॥६९॥

७०—और अल्लाह को उधार दो अवश्य मैं तुम्हारी बुराई दूर करूंगा और तुम्हें बहिश्तों में भेजूंगा। मं० २। सि० ६। सू० ५। आ० १०

समी०—वाह जी मुसलमानों के खुदा के घर में कुछ भी धन विशेष नहीं रहा होगा जो विशेष होता तो उधार क्यों मांगता और उनको क्यों बहकाता कि तुम्हारी बुराई छुड़ा के तुमको स्वर्ग में भेजूंगा यहां विदित होता है कि खुदा के नाम से महम्मद साहेब ने अपना मतलब साधा है ॥७०॥

७१—जिसको चाहता है पुण्यात्मा बनाता है जिसको चाहे पापात्मा बनाता है। जो कुछ किसी को भी न दिया वह तुम्हें दिया। मं० २। सि० ६। सू० ५। आ० १६–१८

समी०—जैसे शैतान जिसको चाहता पापी बनाता वैसे मुसलमानों का खुदा भी शैतान का काम करता है जो ऐसा है तो फिर बहिश्त और दोजख में खुदा जावे क्योंकि वह पाप पुण्य करने वाला हुआ जीव पराधीन है जैसी सेना सेनापति के आधीन रहा करती और किसी को मारती है उसकी भलाई बुराई सेनापति को होती है सेना पर नहीं ॥७१॥

~~७२—काफ़िरों पर गं मत खा। मं० २। सि० ६। सू० ५। आ० २३~~

समी०—क्या अधर्म और पक्षपात की बात है कि जो मुसलमान न हो उस पर गम न खाना और मुसलमानों पर गम खाना केवल अधर्म की बात है ॥७२॥

७३—सेवा करो अल्लाह की और रसूल की ~~और रसूल का कहा~~
आज्ञा मानो ... आज्ञा मानो रसूल की।

६६

आ॰ मं॰ २ सि॰ ६ सू॰ ५ आ॰ ८९

समी॰ — देखिये यह बात खुदा के शरीक होने की है फिर खुदा को लाशरीक मानना व्यर्थ है ॥ ७३

७४ — अल्लाह ने माफ़ किया जो हो चुका और जो कोई फिर करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा॰ मं॰ २ सि॰ ७ सू॰ ५ आ॰ ९२

समी॰ — किये हुए पापों का क्षमा करना जानो पापों को करने की आज्ञा देके बढ़ाना है पाप क्षमा करने की बात जिस पुस्तक में हो वह न ईश्वर और न किसी विद्वान् का बनाया है किन्तु पाप वर्द्धक है हां आगामी पाप छुड़ाने के लिये किसी से प्रार्थना और स्वयं छोड़ने के लिये पुरुषार्थ पश्चात्ताप करना उचित है परंतु केवल पश्चात्ताप करता रहे छोड़े नहीं तो भी कुछ नहीं हो सकता ॥ ७४

७५ — और उस मनुष्य से अधिक पापी कौन है जो अल्लाह पर झूठ बांध लेता है और कहता है कि मेरी ओर वही की गई और जो कहता है कि मैं भी उतारूंगा। मं॰ २ सि॰ ७ सू॰ ६ आ॰ आ॰ ९३

समी॰ — इस बात से सिद्ध होता है कि जब मुहम्मद साहेब कहते थे कि मेरे पास खुदा की ओर से आयतें आती हैं तब किसी दूसरे ने भी मुहम्मद साहेब के तुल्य लीला रची होगी कि मेरे पास भी आयतें उतरती हैं मुझ को भी पैगम्बर मानो इस को हटाने के और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये मुहम्मद साहेब ने यह उपाय किया होगा ॥ ७५

७६ — अलबत्तः हमने तुम को उत्पन्न किया फिर तुम्हारी सूरतें बनाईं फ़रिश्तों से क्योंकि आदम को सिजदा करो बस उन्होंने सिजदा किया परन्तु शैतान न सिजदा करने वालों से सिजदा न हुआ कहा जब मैंने तुझे आज्ञा दी फिर किसने रोका कि तूने सिजदा न किया कहा मैं उससे अच्छा हूं तूने मुझ को आग से और उसको मिट्टी से उत्पन्न किया कहा बस उस में से उतर यह तेरे योग्य नहीं है कि तू उस में अभिमान करे कहा उस दिन तक ढील दे कि कबरों से उठाये जावें कहा निश्चय तू ढील दिये गयों से है कहा बस इसकी कसम है कि तूने मुझ को गुमराह किया अवश्य मैं उनके लिये तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा और प्रायः तू उनको धन्यवाद करने वाला न पावेगा कहा उससे दुर्द-

त्रा के साथ निकल अवश्य जो कोई उनमें से तेरा पक्ष करेगा तुम सब से दोजख को भरूंगा ॥ मं० २ सि० ८ सू० ७ आ० १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७

समी० ———— अब आनंद कर सुनो खुदा और शैतान के जगड़े को। एक फरिश्ता जैसा कि चपरासी हो, वह भी खुदा से न दबा और खुदा उसके आत्मा को पवित्र भी न कर सका। फिर ऐसे बागी को जो पापी बना कर गदर करने वाला था उसको खुदा ने छोड़ दिया। खुदा की यह बड़ी भूल है। शैतान तो सबको बहकाने वाला और खुदा शैतान को बहकाने वाला होने से यह सिद्ध होता है कि शैतान का भी शैतान खुदा है क्योंकि शैतान प्रत्यक्ष कहता है कि तूने मुझे गुमराह किया इससे खुदा में पवित्रता भी नहीं पाई जाती और सब बुराइयों का चलाने वाला मूल कारण खुदा हुआ। ऐसा खुदा मुसल्मानों ही का हो सकता है अन्य श्रेष्ठ विद्वानों का नहीं और फरिश्तों से मनुष्यवत् वार्त्तालाप करने से देहधारी, अल्पज्ञ, न्याय रहित, मुसलमानों का खुदा है इसी से बुद्धिमान् लोग इस्लाम के मजहब को पसन्द नहीं करते। ७६। ६१।

(ऊपर लिखा: विद्वान)

७७ ———— निश्चय तुम्हारा मालिक अल्लाह है जिसने आसमानों और पृथिवी को छः दिन में उत्पन्न किया ॥ दीनता से अपने मालिक को पुकारो ॥ मं० २ सि० ८ सू० ७ आ० ५३। ५४

(नीचे लिखा: फिर करार पकड़ा अर्श पर ॥)

समी० ———— भला जो छः दिन में जगत् को बनावे (अर्श) अर्थात् ऊपर के आकाश में सिंहासन पर आराम करे वह ईश्वर सर्वशक्तिमान् और व्यापक कभी हो सकता है? इसके न होने से वह खुदा भी नहीं कहा सकता, क्या तुम्हारा खुदा बधिर है जो पुकारने से सुनता है? ये सब बातें अनीश्वरकृत हैं इससे कुरान ईश्वरकृत नहीं हो सकता। यदि छः दिनों में जगत् बनाया, सातवें दिन अर्श पर आराम किया तो थक भी गया होगा और अब तक सोता है वा जागा है? यदि जागता है तो अब कुछ काम करता है वा निकम्मा सैल सपाटा और ऐश करता फिरता है। ७७।

७८ ———— मत फिरो पृथिवी पर झगड़ा करते। मं० २ सि० ८ सू० ७ आय० ७३

समी० ———— यह बात तो अच्छी है परन्तु इससे विरुद्ध क-

रना और काफिरों को भी मारना लिखा है अब कहो यह पूर्वापर विरुद्ध नहीं है इससे यह विदित होता है कि जब मुहम्मद साहेब निर्बल हुए होंगे तब यह उपाय रचा होगा और जब सबल हुए होंगे झगड़ा मचाया होगा इसीसे ये बातें झूठी हैं ॥७८

७९ — बस एक ही बार अपना असा डाल दिया और वह अजगर था प्रत्यक्ष। मं॰ २ सि॰ ९ सू॰ ७ आ॰ १०५

समी॰ — अब इसके लिखने से विदित होता है कि ऐसी झूठी बातों को खुदा और मुहम्मद साहेब भी मानते थे जो ऐसा है तो ये दोनों विद्वान नहीं थे क्योंकि जैसे आंख से देखने और कान से सुनने को अन्यथा कोई नहीं कर सकता इसीसे ये इन्द्रजाल की बातें हैं ॥७९॥

८० — अवश्य हम कतल करेंगे बेटों उनके को और जीवित रक्खेंगे बीबियों उनकी को बस हमने उसपर मेह का तूफान भेजा टीढ़ी चिचड़ी और मेंडक और लोहू बस उनसे हमने बदला लिया और उनको डुबो दिया दरियाव में और हमने बनी इसराईल को दरियाव से पार उतार दिया निश्चय वह दीन झूठा है कि जिससे और उनका कार्य भी झूठा है। मं॰ २ सि॰ ९ सू॰ ७ आ॰ १२७।१३३।१३६।१३८॥

समी॰ — भला जो लड़कों को कतल करे और स्त्रियों को जीता रक्खे उससे निर्दय राक्षस स्वभाव युक्त विषयासक्त मनुष्य और दुष्टमत दूसरा कोई भी न होगा और देखिये जैसा कोई पाखंडी किसी को डरावे कि हम तेरे पर सर्पों को मारने के लिये भेजेंगे ऐसी ही यह भी बात है भला जो ऐसा पक्षपाती कि एक जाति को डुबा दे और दूसरे को पार उतारे यह पक्षपाती मत लच्ची सम्मत खुदा क्यों नहीं जो दूसरे मत को कि जिसमें हजार कोड़ों मनुष्य हों झूठा बतलावे और अपने को सच्चा उससे परे झूठा दूसरा मत कौन हो सकता है क्योंकि किसी मत में सब मनुष्य बुरे और भले नहीं हो सकते यह तर्फ डिगरी करना महामूर्खों का काम है क्या तौरेत जबूर का दीन दीन जो कि जो कि उनका था क्योंकर

~~अपने किये को सुदृढ़ कर दिया~~ था उनका कोई अन्य मजूब था कि जिसको झूंठा कहा और जो वह अन्य मजहब था तो कौनसा था कहो कि जिसका नाम करानेमें हो॥ ८० ॥ ९३॥

८१ — बस तू मुझ को कदापि न देख सकेगा जब उसका शाकिया उसके मालिक ने पहाड़ की ओर उसको परमाणु २ किया गिर पड़ा मूसा बेहोश। मं० २। सि० ९ सू० ७ आ० १४२

समी० — जो देखने में आता है वह व्यापक नहीं हो सकता और ऐसे चमत्कार करता फिरता था तो खुदा इस समय ऐसा चमत्कार किसी को क्यों नहीं दिखलाता? सर्वथा विद्याविरुद्ध होने से यह बात मानने योग्य नहीं ॥ ८१ ॥ १४

~~८२ — परन्तु किसी को मारा अपने के फुसलाने के कारण अपने फल~~

~~करते थे और हमने वही २। मं० २। सि० ९ सू० ७ आ० १४१~~

समी० — अब देखिये बढ़कर भी मनुष्य किसी खुदा की

खुदाई ~~में मनुष्य की परमेश्वरता~~ इसको भी कोई बुद्धिमान लोग सच नहीं मा-

~~नसकते सिवाय जंगली मनुष्यों के॥ ८२~~

९१ ८३ — और अपने मालिक को दीनता से याद कर हृदय धीमी आवाज से सुबह को और शाम को। मं० २। सि० ९ सू० ७ आ० २०४ (अपने मन में धीमा)

समी० — कहीं २ कुरान में लिखा है कि बड़ी आवाज से अपने मालिक को पुकार और कहीं धीरे २ ईश्वर का स्मरण कर। अब कहिये कौनसी बात सच्ची और कौनसी झूठी? जो एक दूसरी बात से विरोध करती है वह बात प्रमत्तगीत के समान होती है यदि कोई बात भ्रम से विरुद्ध निकल जाय उसको मानले तो कुछ चिन्ता नहीं॥ ८३ ॥ ५४

८४ — प्रश्न करते हैं तुझको लूटों से कह लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के। मं० २। सि० ९ सू० ८ आ० १

समी० — जो लूट मचावें डाकू के कर्म करें करावें और खुदा तथा पैगम्बर और ईमानदार भी बनें यह बड़े आश्चर्य की बात है और अल्लाह का डर बतलाते और डाकादि बुरे काम भी करते जायें और उत्तम मत हमारा है कहते लज्जा भी नहीं। हठ छोड़ के सत्य वेदमत का ग्रहण न करें इससे अधिक कोई बुराई दूसरी होगी? ॥ ८४ ॥

८५——— और काटे जड़ काफरों की मैं तुमको सहाय दूंगा
साथ सहस्र फरिश्तों के पीछे २ आनेवाले अब डाल में काफरों के।
दिलों में भय डाल दूंगा बस मारो ऊपर गर्दनों के मारो उनमें से हर पोरी
पर-मं. २ सि० ९ सू० ८ आ० ७-९-१२
समी०——— वाहजी वाह कैसा खुदा और कैसे पैगम्बर दयाहीन जो
मुसल्मानी मत से भिन्न काफरों की जड़ कटवाने और खुदा और खुदा
आज्ञा देवे उनको गर्दन मारो और पग की नसों को काटने का सहाय औ-
र सम्मति देवे ऐसा खुदा लंकेश से क्या कुछ कम है यह सब प्रपंच
कुरान कर्ता का है खुदा का नहीं यदि खुदा का हो तो ऐसा खुदा हमसे
दूर और हम उससे दूर रहें।८५
८६——— अल्लाह मुसल्मानों के साथ है ऐ लोगो जो ई-
मान लाये हो पुकारना स्वीकार करो। वास्ते अल्लाह के और वास्ते
रसूल के॥ ऐ लोगो जो ईमान लाये हो मत चोरी करो अल्लाह की र-
सूल की और मत चोरी अमानत अपनी की और मकर करता था अल्-
ला और भला मकर करनेवालों का है। मं २ सि ९ सू ८ आ० २४।२७।३०
समीक्षक——— क्या अल्लाह मुसल्मानों का
पक्षपाती है जो ऐसा है तो अधर्म करता है नहीं तो ईश्वर सब
सृष्टिभर का है क्या खुदा बिना पुकारे नहीं सुन सकता बधिर है और
और उसके साथ रसूल को शरीक करना बहुत बुरी बात नहीं है?
क्या अल्लाह का कोन सा खजाना भरा है जो चोरी करेगा क्या
क्या रसूल और अपने अमानत की चोरी छोड़कर अन्य सब
चोरी किया करें ऐसा उपदेश अविद्वान और अधर्मियों का हो स-
कता है भला जो मकर करता और जो मकर करनेवालों का संगी
है वह खुदा कपटी छली और अधर्मी क्यों नहीं इसी लिये यह कुरा-
न खुदा का बनाया हुआ नहीं है किसी कपटी छली का बनाया होगा
नहीं तो ऐसी अन्यथा बातें लिखित क्यों होती।८६
८७—— और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फितना अर्थात् बल-
काफरों का और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के। और जानो यह
कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के है पांच
वां हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के॥ निश्चय मैं तुम्हारा ~~~~॥

मं॰ २ सि॰ ९ सू॰ ८ आ॰ ३९-४१-४८

समी॰ —— ऐसा अन्यायसे लड़ाका और लड़ने लड़ानेवाला मुसल्मानों के खुदा से शान्ति भंग करता दूसरा कौन होगा अब देखिये [पढ़] मजहब कि अल्लाह और रसूल के वास्ते सब जगत को लूटना लुटवाना लुटेरों का सा काम नहीं है और लूट के माल में खुदा का हिस्सेदार बनना जानो डाकू बनना है और ऐसे लुटेरों का पक्षपाती बनना खुदा अपनी खुदाई में बट्टा लगाता है बड़े आश्चर्य की बात है ऐसा पुस्तक और ऐसा खुदा कोई पैगंबर ऐसे खुदा और के पैगंबर और ऐसी उपाधी खार मजहब संसार में महा शान्तिभंग करके दुःख देई कहां से हुआ जो ऐसे २ मत [जगत में] प्रचलित न होते तो सब जगत आनन्द में बना रहता॥ ७९।

८० ——— और कभी देखे जब काफिरों को फरिश्ते कब्ज करते हैं मारते हैं मुख उनके और पीठें उनकी और कहते चखो अजाब जलने का॥ हमने उनके पाप से उनको मारा और हम ने फिरऔनों की कौम को डुबा दिया॥ और तैयारी करो वास्ते उन के जो कुछ तुम कर सको। मं॰ २ सि॰ ९ सू॰ ८ आ॰ ५० । ५४ । ५९

समी॰ —— क्यों जी आजकल रूसने रूम आदि और इंग्लैंड ने मिस्र की दुर्दशा कर डाली फिर फरिश्ते कहां सो गये और अपने सेवकों के शत्रुओं को खुदा पूर्व मारता डुबाता था यह बात सच्ची होती तो आजकल भी ऐसा करें नहीं [जिससे ऐसा] होता इस वास्ते यह बात मानने योग्य नहीं। अब देखिये यह कैसी बुरी आज्ञा है कि जो कुछ तुम कर सको वह भिन्न मतवालों के लिये दुःखदायक कर्म करो ऐसी आज्ञा विद्वान् और धार्मिक दयालु की नहीं हो सकती फिर लिखते हैं कि खुदा दयालु और न्यायकारी है ऐसी बातों से मुसलमान के खुदा से न्याय और दयादि सद्गुण दूर बसते हैं। ८०

८१ ——— ऐ नबी किफायत है तुझको अल्लाह और उनको जिन्होंने मुसल्मानों से तेरा पक्ष किया॥ ऐ नबी रगबत अर्थात् चाह चस्का दे मुसल्मानों को ऊपर लड़ाई के जो हों तुम में से २० आदमी संतोष करने वाले तो पराजय करें दो सौ का॥ बस खाओ उस वस्तु से कि लूटा है तुमने हलाल पवि-

—और डरो अल्लाह से वह क्षमा करने वाला दयालु है। मं॰ २ सि॰ १० सू॰ ८ आ॰ ६२-६४-६८

समी॰ —— भला यह कौनसी न्याय विद्वत्ता और धर्मात्मा की बात है कि जो अपना पक्ष करे और चाहे अन्याय भी करे उसी का पक्ष और लाभ पहुंचावे और जो प्रजा में शान्ति भंग करके लड़ाई करे करावे और लूट मार के पदार्थों को हलाल बतलावे और फिर उसी का नाम क्षमावान दयालु लिखे यह बात खुदा की तो कभी नहीं हो सकती किन्तु किसी भले आदमी की भी नहीं हो सकती ऐसी २ बातों से कुरान ईश्वर वाक्य कभी नहीं हो सकता ॥ ८८

८९ —— सदा रहेंगे बीच उसके अल्लाह समीप है उसके पुण्य बड़ा। हे लोगो जो ईमान लाये हो मत पकड़ो बापों अपने को और भाइयों अपने को मित्र जो दोस्त रक्खें कुफ्र को ऊपर ईमान के। फिर उतारी अल्लाह ने तसल्ली अपनी ऊपर रसूल अपने के और ऊपर मुसलमानों के और उतारे लश्कर नहीं देखा तुमने उनको और अजाब किया उन लोगों को और यही सजा है काफ़िरों की। फिर २ आवेगा अल्लाह पीछे उसके ऊपर और लड़ाई करो उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते। मं॰ २ सि॰ १० सू॰ ९ आ॰ २१-२२-२५-२६-२८ ॥

समी॰ —— भला तो बहिश्त वालों के समीप अल्लाह रहता है तो सर्वव्यापक नहीं हो सकता जो सर्वव्यापक नहीं तो सृष्टिकर्त्ता और न्यायाधीश नहीं हो सकता और अपने मा बाप भाई और मित्र को छुड़वाना केवल अन्याय की बात है हां जो वे बुरा उपदेश करें न मानना परन्तु उनकी सेवा सदा करना चाहिये जो पहिले खुदा मुसलमानों पर सन्तोषी था और उनके सहाय के लिये लश्कर उतारता था सच हो तो अब ऐसा क्यों नहीं करता और जो प्रथम काफ़िरों को दंड देता और पुनः उसके ऊपर आता था तो अब कहां गया क्या बिना लड़ाई के ईमान खुदा नहीं बना सकता ऐसे खुदा को हमारी ओर से सदा तिलांजली है खुदा क्या है एक खिलाड़ी है ॥ ९०

३ ९१ —— ~~मत अन्याय करो बीच उसके आपस में और लड़ो मुशरिकों से इकट्ठे जैसा लड़ते हैं~~ और हम बाट देखने वाले हैं वास्ते तुम्हारे यह कि पहुंचावे तुमको अल्लाह अज़ाब अपने पास से वा हमारे हाथों से। मं॰ २ सि॰ १० सू॰ ९ आ॰ ३६-५२

समी॰ —— क्या मुसलमान लोग आपस में न्याय और दूसरों से अन्या-

य करना धर्म समझते हैं और ऐसा है तो मुसल्मान लोग अन्याय की मूर्ति हैं क्या मुसल्मान ही ईश्वर की पुलिस बन गई है कि अपने हाथ वा मुसल्मानों के हाथ से अन्य किसी मत वालों को पकड़ देता है क्या दूसरे कोई मनुष्य ईश्वर को अप्रिय हैं मुसल्मानों में पापी भी प्रिय हैं इसलिये अंधेर नगरी गवरगंड राज की सी व्यवस्था दीखती है आश्चर्य है कि जो बुद्धिमान मुसल्मान हैं वे भी इस निर्मूल अयुक्त मत को मानते हैं ॥ २१

२२ ——— प्रतिज्ञा की है अल्लाह ने ईमान वालों से और ईमान वालियों से बहिश्तें चलती हैं नीचे उनके से नहरें सदैव रहने वाली बीच उसके और घर पवित्र बहिश्तों अदनें के और प्रसन्नता अल्लाह की ओर बड़ी है और यह कि यह है मुराद रखना बड़ा बस राजी हुआ करते हैं उनसे राजी किया अल्लाह ने उनसे। मं० २ सि० १० सू० ९ आ० ७२–८०

समी० ——— यह खुदा की ओर से स्त्री पुरुषों को मी लोभ देना है अपने मतलब के लिये क्योंकि जो ऐसा प्रलोभन न देते तो कोई मुहम्मद साहेब के जाल में न फसता ऐसे ही अन्य मत वाले भी किया करते हैं भला मनुष्य लोग तो आपस में राजी किया ही करते हैं परन्तु खुदा को किसी से राजी करना उचित नहीं है यह कुरान क्या है बड़ा खेल है ॥ २२

२३ ——— परन्तु रसूल और जो लोग कि साथ उसके ईमान लाये जिहाद किया उन्होंने साथ धन अपने के तथा जान अपनी के और इन्हीं लोगों के लिये भलाई है और मोहर रक्खी अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके के बस वे नहीं जानते। मं० २ सि० १० सू० ९ आ० [illegible] – [illegible] २२

~~समी० ——— वाह जी वाह मुहम्मद साहेब आपने तो गोकुलिये गुसाइयों की बराबरी कर ली क्योंकि उनका माल लेना और उनको गुप्त में पवित्र करना यही बात तो गुसांइयों की है वाह खुदा जी आपने क्या कही~~

समी० ——— अब देखिये मतलबसिंधु की बात कि वे ही भले हैं जो मुहम्मद साहेब के साथ ईमान लाये और जो नहीं लाते वे बुरे हैं क्या यह बात पक्षपात और अविद्या से भरी हुई नहीं है जब खुदा ने मोहर ही लगा दी तो उनका अपराध पाप करने में कोई

भी नहीं किन्तु खुदा ही का अपराध है क्योंकि उन बिचारों को भलाई से दिलों पर मोहर लगा के रोक दिये यह कितना बड़ा अन्याय है ॥

५६ ——— ले माल उनके से खैरात कि पवित्र करे तू उनको और शुद्ध करे तू उनको साथ उसके अर्थात् गुप्त में निश्चय अल्लाह ने मोल ली हैं मुसल्मानों से जानें कि उनकी और उनके बदले कि वास्ते उनके बहिश्त है लड़ेंगे बीच मार्ग अल्लाह के बस मारेंगे और मर जावेंगे। मं॰ २ सि॰ ११ सू॰ ९ आ॰ १०२-११०

समी॰ ——— वाह जी वाह महम्मद साहेब आपने तो गोकुलिये गुसाइयों की बराबरी कर ली क्योंकि उनका माल लेना और उनको ~~गुप्त~~ पवित्र करना यही बात तो गुसाइयों की है वाह खुदा जी आपने अच्छी सौदागरी की लगाई कि मुसल्मानों के हाथ से अन्य गरीबों के प्राण लेना ही लाभ समझा और उन अनाथों को मरवाकर उन निर्दयी मनुष्यों को स्वर्ग देने से दया और न्याय से मुसल्मानों का खुदा हाथ धो बैठा और अपनी खुदाई में बट्टा लगा के बुद्धिमान धार्मिकों में घृणित हो गया ॥ ५७

५७ ——— ऐ लोगो जो ईमान लाये हो लड़ो उन लोगों से कि पास तुम्हारे हैं काफिरों से और चाहिये कि पावें बीच तुम्हारे ~~सख्ती~~ दृढ़ता ॥ क्या नहीं देखते यह कि वे बलाओं में डाले जाते हैं हर वर्ष के एक बार वा दो बार फिर वे नहीं तोबा करते और न वे शिक्षा पकड़ते हैं ॥ मं॰ २ सि॰ ११ सू॰ ९ आ॰ १२२-१२

समी॰ ——— देखिये ये भी एक विश्वासघात की बातें खुदा मुसल्मानों को सिखलाता है कि चाहें पडोसी हों वा किसी के नौकर हों जब अवसर पावें तभी लड़ाई वा घात करें ऐसी बातें मुसल्मानों से बहुत बन गई हैं इसी कुरान के लेख से अब तो मुसल्मान समझ के इन कुरानोक्त बुराई को छोड़ दें तो बहुत अच्छा है ५८

५८ ——— निश्चय परवरदिगार तुम्हारा अल्लाह है जिसने पैदा किया आसमानों और पृथिवी को बीच छः दिन के फिर करार पकड़ा ऊपर अर्श के तदबीर करता है काम की। मं॰ ३ सि॰ ११ सू॰ १० आ॰ ३

समी॰ ——— ~~क्या अल्लाह तुम्हारी जेलखाना करता है~~ आसमान आ-

आकाश एक और बिना बनाया हुआ अनादि है उसका बनाना लिखने से निश्चय हुआ कि वह कुरानकर्ता पदार्थविद्या को नहीं जानता था क्या परमेश्वर के सामने छः दिन तक बनाना पड़ता है तो जो हो मेरे हुक्म से और हो गया जब कुरान में ऐसा लिखा है फिर छः दिन कभी नहीं लग सकते और जो छः दिन लगना झूठ है जो वह व्यापक होता तो ऊपर आसमान के क्यों ठहरता और जब तदबीर करता है काम की तो ठीक तुम्हारा खुदा मनुष्य के समान है क्योंकि जो सर्वज्ञ है वह बैठा २ क्या तदबीर करेगा इससे विदित होता है कि ईश्वर को न जाननेवाले जंगली लोगों ने यह पुस्तक बनाया होगा ॥ ९६

९७ — शिक्षा और दया वास्ते मुसल्मानों के। मं० ३ सि० ११ सू० २० आ० ५५

समी० — क्या यह खुदा मुसल्मानों ही का है दूसरों का नहीं और पक्षपाती है जो मुसल्मानों ही पर दया करे अन्य मनुष्यों पर नहीं यदि मुसल्मान ईमानदारों को कहते हैं तो उनके लिये शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं और मुसल्मानों से भिन्नों को उपदेश नहीं करता तो खुदा की विद्या ही व्यर्थ है। ९७

९८ — और था अर्श अर्थात् सिंहासन उसका ऊपर पानी के तो कि परीक्षा लेवे तुमको कौन तुममें से अच्छा है कर्मों में जो कहे तू अवश्य उठाये जाओगे तुम पीछे मृत्यु के। मं० ३ सि० १२ सू० ११ आ० ७

समी० — जब पानी पर खुदा का सिंहासन है तो वह एकदेशी होने से खुदा ही नहीं बन सकता और जब कर्मों की परीक्षा करता है तो सर्वज्ञ ही नहीं और जो मृत्यु पीछे उठाता है तो दौरा सुपुर्द रखता है और अपने नियम जो कि मरे हुए न जीवें तोड़ता है यह खुदा को बट्टा लगता है ९८

९९ — और कहा गया ऐ पृथिवी अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान बस कर और पानी सूख गया और ऐ कौम यह है निशानी ऊंटनी अल्लाह की वास्ते तुम्हारे बस छोड़ दो उसको बीच पृथिवी अल्लाह के खाती फिरे। मं० ३ सि० १२ सू० ११ आ० ४३-६२

पुण्यात्मा न कभी न होगी और संसार में पुण्यात्मा और पापात्मा सदा दीखते हैं इसलिये ऐसी बात ईश्वरकृत पुस्तक की नहीं हो सकती और निश्चय अवश्य ये दोनों शब्द एकार्थ होने से पुनरुक्त हैं पुनरुक्त प्रमत्त का कहा होता है ॥१०२

१०८ ——— अज्माफते हैं कुरान किताबकी और कहने वाले की और अवश्य निश्चय कि ये हमने बीच आसमान में बुर्ज बनाये जब ठीक करूं मैं उसको और फूंक दूं बीच उसके रूह अपनी से बस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदा करते हुए कहा ऐ रब मेरे इस कारण कि गुमराह किया तूने मुझको अवश्य जीनत दूंगा मैं बीच पृथिवी के और गुमराह करूंगा। मं० ३ सि० १४ सू० १५ आ० २२-३६ से ४६ तक

समी० ——— जो खुदा ने अपनी रूह आदम साहेब में डाली तो वह भी खुदा हुआ और जो वह खुदा न था तो सिजदा अर्थात् नमस्कारादि भक्ति करने में अपना शरीक क्यों किया जब शैतान को गुमराह करने वाला खुदा ही है तो वह शैतान का भी शैतान बड़ा भाई गुरु क्यों नहीं क्योंकि तुम लोग बहकाने वाले को शैतान मानते हो तो खुदा ने भी शैतान को बहकाया और प्रत्यक्ष शैतान ने कहा कि मैं बहकाऊंगा फिर भी उसको दंड देकर कैद क्यों न किया और मार क्यों न डाला ॥१०९

११० ——— अल्लाकिया आदमी को शुरू में बस एक ही बार जब चाहते हैं हम उसको यह कहते हैं हम उसको हो बस हो जाती है। मं० ३ सि० १४ सू० १६ आ० ३-३५-३८

समी० ——— इससे एक जन्म सिद्ध होता है परन्तु इसमें बड़ी भूल है क्योंकि जन्म अनेक होते हैं जब जीव अनादि है तो उनके पूर्व कर्म स्वभाव भी अनादि हैं उसका फल भोग भी अनादि से चला आता है पश्चात् एक जन्म का मानना व्यर्थ है इसका विशेष संवाद नवम समुल्लास में देख लेना जो सब कौमों पर पैगंबर भेजे हैं तो सब लोग जो कि पैगंबर की राय पर चलते हैं वे काफिर क्यों क्या दूसरे पैगंबर का मान्य नहीं सिवाय तुम्हारे पैगंबर के यह सर्वथा पक्षपात की बात है जो सब देशों में पैगम्बर भेजे तो आर्य्यावर्त में कौन सा भेजा इसलिये यह बात मानने योग्य नहीं जब खुदा चाहता है और कहता है कि पृथिवी हो जा वह जड़ कभी नहीं सुन सकती खुदा का हुक्म क्योंकर बना सकेगा और सिवाय खुदा के दूसरी ची-

समी० —— क्या लड़केपन की बात है पृथिवी और आकाश कभी
बात सुन सकते हैं वाह जी वाह खुदा के ऊंटनी भी है तो ऊंट भी हो-
गा तो हाथी घोड़े गधे आदि भी होंगे और खुदा ने ऊंटनी से खेत
खिलाना क्या अच्छी बात है क्या ऊंटनी पर चढ़ता भी है जो ऐसी
बातें हैं तो नवाबी की सी घसड़पसड़ खुदा के घर में भी हुई॥ ९९

१०० और सदैव रहने वाले बीच उसके जब तक
कि रहें आसमान और पृथिवी॥ और जो लोग सुभागी हुए बस बहि-
श्त के सदा रहने वाले हैं जब तक रहें आसमान और पृथिवी॥ मं० ३
सि० १२ सू० ११ आ० १०५—१०६

समी० —— क्या जब दोज़ख और बहिश्त किया मत के पश्चा-
त सब लोग जायेंगे फिर आसमान और पृथिवी किसलिये रहेगी?
और जब दोज़ख और बहिश्त के आसमान पृथिवी के रहने तक अ-
वधी हुई तो सदा रहेंगे बहिश्त वा दोज़ख में यह बात झूठी हुई ऐसा क-
थन अविद्वानों का होता है ईश्वर वा विद्वानों का नहीं॥ १००

१०१ —— जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे
मैंने एक स्वप्न में देखा॥ मं० ३ सि० १२ सू० १२ आ० ४ से ५९ तक

समी० —— इस प्रकरण में पिता पुत्र का संवाद
रूप किस्सा कहानी भरी है इसलिये कुरान ईश्वर का बनाया नहीं
किसी मनुष्य ने मनुष्यों का इतिहास लिख दिया है॥ १०१

१०२ —— अल्लाह वह है जिसने खड़ा
किया आसमानों को बिना खंभे के देखते हो तुम उसको फिर ठह-
रा किया ऊपर अरश के ~~अर्थात स्वर्ग में~~ आज्ञाव-
र्त्तने वाला किया सूरज और चांद को॥ और वही है जिसने बि-
छाया पृथिवी को॥ उतारा आसमान से पानी बस बहे नाले
साथ अंदाज़े के॥ अल्लाह खोलता है भोजन को वास्ते जि-
सको चाहे और तंग करता है। मं० ३ सि० १३ सू० १३ आ० २—१७
—२६॥

समी० —— मुसलमानों का खुदा पदार्थ विद्या कुछ भी
नहीं जानता था जो जानता तो आसमान को खंभ लगाने की
कथा कहानी पुरुत्व न होने से कुछ भी आवश्यकता न थी
यदि खुदा ~~सर्व~~ रूप एक स्थान में रहता है तो वह सर्व शक्तिमा-

न और सर्वव्यापक नहीं हो सकता। और जो खुदा मेघविद्या जानता तो आकाश से पानी उतारा लिखा पुनः यह क्यों न लिखा कि पृथिवी से पानी ऊपर क्यों नहीं चढ़ाया इससे निश्चय हुआ कि कुरान का बनानेवाला मेघ की विद्या को भी नहीं जानता था। और जो बिना अच्छे बुरे कामों के सुख दुःख देता है तो पक्षपाती अन्यायकारी निर्दयी है ॥१०२

१०३ ——— कह निश्चय अल्लाह गुमराह करता है जिसको चाहता है और मार्ग दिखलाता है तर्फ अपनी उस मनुष्य को रुजू करता है मं० ३ सि० १३ सू० १३ आ० २७

समी० ——— जब अल्लाह गुमराह करता है तो खुदा और शैतान में क्या भेद हुआ जब कि शैतान दूसरों को गुमराह अर्थात् बहकाने से बुरा कहाता है तो खुदा भी वैसा ही काम करने से बुरा शैतान क्यों नहीं? और बहकाने के पाप से दोजखी नहीं होना चाहिये॥ १०३

१०४ ——— इसी प्रकार उतारा हमने इस कुरान को अर्बी जो पक्ष करेगा तू उनकी इच्छा का पीछे इसके आई तेरे पास विद्या से बस सिवाय इसके नहीं कि ऊपर तेरे पैगाम पहुंचाना है और ऊपर हमारे है हिसाब लेना- मं० ३ सि० १३ सू० १३ आ० ३७।४०।

समी० ——— कुरान किधर की ओर से उतारा क्या खुदा ऊपर रहता है जो यह बात सच्च है तो वह एकदेशी होने से ईश्वर ही नहीं हो सकता क्योंकि ईश्वर सब ठिकाने एकरस व्यापक है पैगाम पहुंचाना हरकारे का काम है और हरकारों की आवश्यकता उसी को होती है जो मनुष्यवत् एकदेशी हो और हिसाब लेना देना भी मनुष्य का काम है ईश्वर का नहीं क्योंकि वह सर्वज्ञ है यह निश्चय होता है कि किसी अल्पज्ञ मनुष्य का बनाया कुरान है। १०४

१०५ ——— और किया सूर्य्य चन्द्र को सदैव फिरने वाले। निश्चय आदमी अवश्य अन्याय और पाप करने वाला है। मं० ३ सि० १३ सू० १४ आ० ३३-३४

समी० ——— क्या चन्द्र सूर्य्य सदा फिरते और पृथिवी नहीं फिरती? जो पृथिवी नहीं फिरे तो कई वर्षों का दिन रात होवे। और जो मनुष्य निश्चय अन्याय और पाप करने वाला है तो कुरान से शिक्षा करनी व्यर्थ है क्योंकि जिनका स्वभाव पाप ही करने का है तो उनमें

९१—तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया कि शैतान से उस
की परीक्षा की जाय वह चालीस दिन और चालीस रात उपवास करके
पीछे भूखा हुआ तब परीक्षा करने हारे ने कहा कि जो तू ईश्वर का पुत्र
है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें । इं० प० ४ आ० ११२।३॥
समी०—इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं क्यों कि
जो सर्वज्ञ होता तो उसकी परीक्षा शैतान से क्यों कराता स्वयं जान लेता भला
किसी ईसाई को आजकल चालीस रात्रि दिन भूखा रक्खें तो कभी बच सकेगा
और इससे यह भी सिद्ध हुआ कि न वह ईश्वर का बेटा और न कुछ उसमें
करामात अर्थात् सिद्धि थी नहीं तो शैतान के सामने पत्थर की रोटियां क्यों
न बना देता और आप भूखा क्यों रहता और सिद्धान्त यह है कि जो परमे
श्वर ने पत्थर बनाये हैं उनको रोटी कोई भी नहीं बना सकता और ईश्व
र भी उलटा नहीं कर सकता क्यों कि वह सर्वज्ञ और उसके सब काम बिना
भूल चूक के हैं ९१॥
९२—उसने उनसे कहा मेरे पीछे आओ मैं तुमको मनुष्यों के म
छुवे बनाऊंगा वे तुरंत जालों को छोड़ के उसके पीछे हो लिये ॥ इं० प०
४ आ० १९।२०।२१ ॥
समी०—विदित होता है कि इसी पाप अर्थात् जो तौरेत में दश आज्ञाओं
में लिखा है कि (सन्तान लोग अपने माता पिता की सेवा और मान्य क
रें जिससे उनकी उमर बढ़े) और ईसा ने न अपने माता पिता की

जो नहीं मानते तो सुना किसने और हो कौनसा गया यह सब अविद्या की बातें हैं ऐसी बातों को मूढ लोग लोग मानते हैं १०७

१०८ और नियत करते हैं वास्ते अल्लाह के बेटियां पवित्रता है उसको और वास्ते उनके है जो कुछ चाहें॥ कसम अल्लाह की अवश्य भेजा हमने पैगंबर मं० ३ सि० १४ सू० १६ आ० ५६–६२

समी०—— अल्लाह बेटियों से क्या करेगा बेटियां तो किसी मनुष्य को चाहिये क्यों बेटे नियत नहीं किये जाते और बेटियां नियत की जाती हैं इसका क्या कारण बताइये कसम खाना झूठे का काम है खुदा की बात नहीं क्योंकि बहुधा संसार में ऐसा दीखने में आता है जो झूठा होता है वही कसम खाता है सच्चा सौगन्द क्यों खावे॥१०८

१०९—— ये लोग वे हैं कि मोहर रक्खी अल्लाने ऊपर दिलों उनके और कानों उनके और आंखों उनकी के और ये लोग वे हैं बेखबर। और पूरा दिया जावेगा हर जीव को जो कुछ किया है और वे अन्याय न किये जावेंगे। मं० ३ सि० १४ सू० १६ आ० ११५–११८

समी०—— जब खुदा ही ने मोहर लगा दी तो वे बिचारे बिना अपराध मारे गये क्योंकि उनको पराधीन कर दिये यह कितना बड़ा अपराध है और फिर कहते हैं कि जिसने जितना किया है उतना ही उनको दिया जायगा न्यूनाधिक नहीं भला उन्होंने स्वतन्त्रता से पाप किये ही नहीं किन्तु खुदा के कराने से किये पुनः उनका अपराध ही न हुआ उनको फल न मिलना चाहिये इसका फल खुदा को मिलना उचित है और जो पूरा दिया जाता है तो क्षमा किस बात की की जाती है और जो क्षमा की जाती है तो न्याय उड़ जाता है ऐसी गड़बड़ाध्याय ईश्वर की कभी नहीं हो सकती किन्तु निर्बुद्धि छोकरों की होती है॥१०९

११० —— और किया हमने दोजख को वास्ते काफिरों के घेरने वाला स्थान और हर आदमी को लगा दिया हमने उसको अमलनामा उसका बीच गर्दन उसकी के और निकालेंगे हम वास्ते उसके दिन कयामत के एक किताब कि देखेगा उसको खुला हुआ और बहुत मारे हमने करनोन से पीछे नूह के – मं० ४ सि० १५

सत्यार्थ. समु० १४ (४२४) -६८४

सू० १७ आ० ७-१२-१६

समी० —— यदि काफ़र वे ही हैं कि कुरान पैगंबर और कुरान के कहे खुदा सातवें आसमान और निमाज आदि को न मानने वाले, उन्हीं के लिये दोजख होवे तो यह बात केवल पक्षपात की ठहरे क्योंकि क्या कुरान ही के मानने वाले सब अच्छे और अन्य के मानने वाले सब बुरे हो सकते हैं यह बड़ी लड़कपन की बात है कि प्रत्येक के गर्दन पर कर्म की लेख खुदा ने लिखदी यह बात सब विरुद्ध है क्योंकि गर्दन की नाड़ी २ और हाड़ २ देखने से भी कुछ भी कहीं लिखा नहीं पाता और कयामत की रात को किताब निकालेगा खुदा तो आज कल वह किताब कहां है क्या साहूकार की बही समान लिखता रहता है हां यहां यह विचारना चाहिये कि जो पूर्वजन्म नहीं है तो जीवों के कर्म ही नहीं हो सकते तो फिर कर्म की रेख क्या लिखी और जो बिना कर्म के लिखा तो उन पर अन्याय किया क्योंकि बिना अच्छे बुरे कर्मों के उनको दुःख सुख क्यों दिया जो कहो कि खुदा की मर्जी तो भी उसने अन्याय किया अन्याय उसी को कहते हैं कि बिना बुरे भले कर्म किये दुःख सुख रूप फल न्यूनाधिक देना और उस समय खुदा ही किताब बांचेगा वा कोई सिरिश्तेदार सुनावेगा जो खुदा ही ने दीर्घ काल सम्बन्धी जीवों को बिना अपराध मारे तो वह अन्यायकारी हो गया जो अन्यायकारी होता है वह खुदा ही नहीं हो सकता ॥११०॥

१११ —— और दिया हमने समूद को ऊंटनी प्रमाण और बहकाया जिस को बहका सके जिस दिन बुलावेंगे हम उन लोगों को साथ पेशवा उन के के बस जो कोई दिया गया अमल नामा उसका बीच दहिने हाथ उसके के। मं० ४ सि० १५ सू० १७ आ० ५७-६२-६९

समी० —— वाह जी जितनी खुदा की निशानी हैं उनमें से एक ऊंट नी भी खुदा के होने में प्रमाण अथवा परीक्षा में साधक है यदि खुदा ने शैतान को बहकाने का हुक्म दिया तो खुदा ही शैतान का सरदार और सब पाप कराने वाला ठहरा ऐसे को खुदा कहना केवल कमसमझ की बात है जब कयामत की अर्थात्

मतयही में न्याय करने के लिये पैगम्बर और उनके उपदेश मानने वालों को खुदा बुलावेगा तो जब तक प्रलय न होगा तब तक सब दौरासुपुर्द रहे और दौरासुपुर्द सबको दुःखदायक है जब तक न्याय न किया जाय इसलिये शीघ्र न्याय करना न्यायाधीश का उत्तम काम है यह तो पोपांबाई का न्याय ठहरा जैसे कोई न्यायाधीश कहे कि जब तक पचास वर्ष तक के चोर और साहूकार इकट्ठे न हों तब तक उनको दंड वा प्रतिष्ठा न करनी चाहिये वैसा ही यह हुआ कि एक तो पचास वर्ष तक दौरासुपुर्द रहा और एक आज ही पकड़ा गया ऐसा न्याय का काम नहीं हो सकता न्याय तो वेद और मनुस्मृति देखो जिसमें क्षणमात्र भी विलम्ब नहीं होता और अपने २ कर्मानुसार दंड वा प्रतिष्ठा सदा पाते रहते हैं दूसरा पैगम्बरों को गवाही के तुल्य रखने से ईश्वर सर्वज्ञता की हानि है भला ऐसी पुस्तक ईश्वरकृत और ऐसे पुस्तक का उपदेश करने वाला ईश्वर कभी हो सकता है कभी नहीं॥१११

११२——ये लोग वास्ते उनके हैं बाग हमेशा रहने के चलती हैं नीचे उनके से नहरें गहना पहिराये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने के से और पोशाक पहिनेंगे वस्त्र हरित लाही की से और ताफते की से तकिये किये हुए बीच उसके ऊपर तख्तों के अच्छा है पुण्य और अच्छी है बहिश्त लाभ उठाने की। मं. ४ सि. १५ सू. १८ आ. ३०

समी.— वाह जी वाह क्या कुरान का स्वर्ग है जिसमें बाग गहने कपड़े गद्दी तकिये आनन्द के लिये हैं भला कोई बुद्धिमान् यहां विचार करे तो यहां से वहां मुसलमानों के बहिश्त में अधिक कुछ भी नहीं है सिवाय अन्याय वह यह कि कर्म उनके अन्तवाले और फल उनका अनन्त और जो मीठा नित्य खावे तो थोड़े दिन में विषके समान प्रतीत होता है जब सदा वे सुख भोगेंगे तो उनको सुख ही दुःख हो जायगा इसलिये महाकल्प पर्यन्त मुक्ति सुख भोग के पुनर्जन्म पाना ही सत्य सिद्धान्त है॥११२ १०४

११३ और यह बस्तियां हैं कि मारा हमने उनको जब अन्याय किया उन्होंने और हमने उनके मारने की प्रतिज्ञा स्थापन की

मं० ४ सि० १५ सू० १८ आ० ५७

समी०—— भला सब बस्ती भर पापी हो सकती है और पीछे से प्रतिज्ञा करने से ईश्वर सर्वज्ञ नहीं रहा क्योंकि जब उनका अन्याय देखा तो प्रतिज्ञा की पहिले नहीं जानता था इससे दयाहीन भी ठहरा। १०३ 105

१०४—— और वह जो लड़का बस थे मा बाप उसके ईमानवाले बस डरे हम यह कि पकड़े उनको सरकशी में और कुफ्र में। यहां तक कि पहुंचा जगह डूबने सूर्य की पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के। ऐ जुलकरनैन निश्चय याजूज माजूज फिसाद करने वाले हैं बीच पृथिवी के। मं० ४ सि० १६ सू० १८ आ० ७८। ८४। ९२

समी० भला यह खुदा की कितनी बेसमझ है शंका से डरा कि लड़के के मा बाप कहीं मेरे मार्ग से बहका कर उलटे न कर देवें यह कभी ईश्वर की बात नहीं हो सकती अब आगे की अविद्या की बात देखिये कि इस किताब का बनाने वाला सूर्य्य को एक झील में रात्रि को डूबा जानता है फिर प्रातःकाल निकलता है भला सूर्य तो पृथिवी से बहुत बड़ा है वह नदी वा झील वा समुद्र में कैसे डूब सकेगा इससे यह विदित हुआ कि कुरान के बनाने वाले को भूगोल खगोल की विद्या नहीं थी जो होती तो ऐसी विद्याविरुद्ध बात क्यों लिख देते! और इस पुस्तक के मानने वालों को भी विद्या नहीं है जो होती तो ऐसी मिथ्या बातों से युक्त पुस्तक को क्यों मानते! अब देखिये खुदा का अन्याय आप ही पृथिवी का बनाने वाला राजा न्यायाधीश है और याजूज माजूज को पृथिवी में फसाद भी करने देता है यह ईश्वरता की बात से विरुद्ध है इससे ऐसी पुस्तक को जंगली लोग माना करते हैं विद्वान नहीं॥ १०४ 106

१०५—— और याद करो बीच किताब के मर्यम को जब जा पड़ी लोगों अपने से मकान पूर्वी में बस पड़ा उनसे इधर पर्दा बस भेजा हम ने रूह अपनी को अर्थात् फरिश्ता

बसखूरत पकड़ी वास्ते उसके आदमी पूरी की। कहने लगी निश्चय मैं शरण पकड़ती हूं रहमान की तुझ से जो है तू परहेजगार कहने लगा सिवाय इसके नहीं कि मैं भेजा हुआ हूं मालिक तेरे के से तो कि दे जाऊं मैं तुझ को लड़का पवित्र। कहा कैसे होगा वास्ते मेरे लड़का नहीं हाथ लगाया मुझ को आदमी ने नहीं मैं बुरा काम करनेवाली बस गर्भित होगई साथ उस के और जा पड़ी साथ उसके मकान दूर अर्थात् जंगल में। मं० ४ सि० १६ सू० १९ आ० २-१५-१७-१८-१९-२१

समी०——— अब बुद्धिमान विचार लें कि फरिश्ते सब खुदा की रूह हैं तो खुदा से अलग पदार्थ नहीं हो सकते। दूसरा यह अन्याय कि वह मर्य्यम कुमारी लड़का होना किसी का संग करना नहीं चाहती थी परन्तु खुदा के हुक्म से फरिश्ते ने उस को बलात्कार गर्भवती की यह न्याय से विरुद्ध बात है। यहां अन्य भी असभ्यता की बातें बहुत लिखी हैं उन को लिखना उचित नहीं समझा। ११५

[हाशिये पर: और जो कोई ... नापाक हुई तो खुदा ही नापाक हुआ यदि ऐसा है तो नापाक खुदा के भक्त पाक कैसे हो सकेंगे]

११६——— क्या नहीं देखा तूने यह कि भेजा हमने शैतानों को ऊपर काफरों के बहकाते हैं उन को बहकाना कर। मं० ४ सि० १६ सू० १९ आ० ८१

समी०——— जब खुदा ही शैतानों को बहकाने के लिये भेजता है तो बहकने वालों का कुछ दोष नहीं हो सकता और न उन को दण्ड हो सकता और न शैतानों को क्योंकि यह खुदा के हुक्म से सब होता है इस का फल खुदा को होना चाहिये जो सच्चा न्यायकारी है तो उसका फल दोजख आप ही भोगे और जो न्याय को छोड़ के अन्याय को करे तो अन्यायकारी हुआ अन्यायकारी ही पापी कहाता है ११६।

१०८ ११७——— और निश्चय क्षमा करने वाला हूं वास्ते उस मनुष्य के तोबा की और ईमान लाया कर्म किये अच्छे फिर मार्ग पाया। मं० ४ सि० १६ सू० २० आ० ७८

समी० — जो तोबा से पाप क्षमा करने की बात कुरान में है यह सब को पापी कराने वाली है क्योंकि पापियों को इससे पाप करने का साहस बहुत बढ़ जाता है इससे यह पुस्तक और इसका बनाने वाला पापियों को पाप कराने में हौसला बढ़ाने वाले हैं इससे यह पुस्तक परमेश्वरकृत और इसमें कहा हुआ परमेश्वर भी नहीं हो सकता ॥ ११७ 101

११८ — और जिसको चाहा मारा हमने न हद्द से निकलने वालों को बसपा चलता है अल्लाह मालिक अर्स का। और किये हमने बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा न हो कि हिल जावे। मं० ४ सि० १७ सू० २१ आ० २९-३०

समी० — देखिये गदर लूट मार कि जिसने उसको मारा और जिसको चाहा उसको बचाया भले बुरे कर्म की अपेक्षा कुछ नहीं करता जब सातवें आसमान पर तख्त का निवासी अल्लाह है वह सब जगत का स्रष्टा धर्त्ता ज्ञाता कभी नहीं हो सकता यदि कुरान का बनाने वाला पृथिवी का घूमना आदि जानता तो यह बात कभी नहीं कहता कि पहाड़ों के धरने से पृथिवी नहीं हिलती शंका हुई कि जो पहाड़ नहीं धरता तो हिल जाती इतने कहने पर भी भूकंप में क्यों डिग जाती है ॥ ११८ 110

११९ — और शिक्षा दी हमने उस औरत को और रक्षा की उसने अपने गुह्य अंगों की बस फूंक दिया हमने बीच उसके रूह अपनी को। मं० ४ सि० १७ सू० २१ आ० ८८

समी० — ऐसी अश्लील बातें खुदा की पुस्तक खुदा की और सभ्य मनुष्य की भी नहीं होती जब कि मनुष्यों में ऐसी बातों का लिखना अच्छा नहीं तो परमेश्वर के सामने क्योंकर अच्छा हो सकता है ऐसी बातों से कुरान दूषित होता है यदि अच्छी बात होती तो अतिप्रशंसा होती जैसी वेदों की ॥ ११९ 111

१२० क्या नहीं देखा तूने कि अल्लाह को सिजदा करते हैं जो कोई आसमानों और पृथिवी में है सूर्य और चन्द्र तारे और पहाड़ वृक्ष और जानवर और पवित्र रख घर मेरे को वास्ते गिर्द फिरने वालों के और खड़े रहने वालों के पहिनाये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने के और मोती

के और पहिनाया उनको बीच उसके रेशमी है फिर चाहिये कि दूर करें मैं उन्ह अपने और पूरी करें भेंट अपनी और चाहे और फिर घर करीम के तो कि नाम अल्लाह का याद करें - मं॰ ४ सि॰ १७ सू॰ २२ आ॰ १९-२३-२५-२८-३३

समी॰ ——— भला जो जड़ वस्तु है परमेश्वर को जान ही नहीं सकते फिर वे उसकी भक्ति क्योंकर कर सकते हैं इस से यह पुस्तक ईश्वरकृत तो कभी नहीं हो सकती किन्तु किसी भ्रान्त ने बनाई हुई दीखती है वाह बड़ा अच्छा स्वर्ग है जहां सोने मोती के गहने और रेशमी कपड़ा पहिरने को रेशमी कपड़े मिलें यह बहिश्त यहां के राजाओं के घर से अधिक नहीं दीख पड़ता॥ और जब परमेश्वर का घर है तो वह उसी घर में रहता भी होगा फिर बुतपरस्ती क्यों न हुई और दूसरे बुतपरस्तों का खंडन क्यों करते हैं जब खुदा भेंट लेता अपने घर की परिक्रमा करने की आज्ञा देता है और पशुओं को मरवा के खिलाता है तो यह खुदा मंदिर वाले और भैरव दुर्गा के सदृश हुआ और महा बुतपरस्ती का चलाने वाला हुआ क्योंकि मूर्त्तियों से मस्जिद बड़ा बुत है इससे खुदा और मुसल्मान बड़े बुतपरस्त और पुराणी तथा जैनी छोटे बुतपरस्त हैं॥ १२०

१२१ ——— फिर निश्चय तुम दिन कयामत के उठाये जाओगे - मं॰ ४ सि॰ १८ सू॰ २३ आ॰ १६

समी॰ ——— कयामत तक मुर्दे कबर में रहेंगे वा किसी अन्य जगह जो उन्हीं में रहेंगे तो सड़े हुए दुर्गन्धरूप शरीर में रहकर पुन्यात्मा भी दुःखभोग करेंगे यह न्याय अन्याय है और दुर्गन्ध अधिक होकर रोगोत्पत्ति करने से खुदा और मुसल्मान पापभागी होंगे। १२१

१२२ ——— उस दिन की गवाही देवेंगे ऊपर उनके जबानें उनकी और हाथ उनके और पांव उनके साथ उस वस्तु के किये कर्त्ते। अल्लाह नूर है आसमानों का और पृथिवी का नूर उसके दिमानिन्द ताक की है बीच उसके दीपक है और दीपक बीच कंदील शीशों के है वह के दी जमानो कि तारा है चमकता रोशन किया जाता है दीपक दरख्त मुबारिक जैतून-

सत्या॰ समु॰ १४ (४३०)

के से न पूर्व की ओर है न पश्चिम की समीप है तो उस का रोशन हो जावे जो न लगे ऊपर रोशनी के मार्ग दिखाता है अल्लाह नूर अपने के जिस को चाहता है। मं॰ ४ सि॰ १८ सू॰ २४ आ॰ ३५-३४

समी॰—हाथ पग आदि जड़ होने से गवाही कभी नहीं दे सकते यह बात सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से मिथ्या है क्या खुदा आगी बिजली है जैसा कि दृष्टान्त देते हैं ऐसा दृष्टान्त ईश्वर में नहीं घट सकता हां किसी साकार वस्तु में घट सकता है ॥१२२

१२३—और अल्लाह ने उत्पन्न किया हर जानवर को पानी से बस कोई उन में से वह है कि जो चलता है पेट अपने के और जो कोई सेवक है अल्लाह की रसूल उसके की कहसेवा करे खुदा की उसके की और सेवा करो रसूल की तो कि दया किये जाओ मं॰ ४ सि॰ १८ सू॰ २४ आ॰ ४४-५२-५३-५५

समी॰—यह कौन सी फ़िलासफ़ी है कि जिन जानवरों के शरीर में सब तत्त्व दीखते हैं और कहना कि केवल पानी से उत्पन्न किया यह केवल अविद्या की बात है जब अल्लाह के साथ पैगंबर की सेवा करनी होती है तो खुदा का खुदा शरीक हो गया वा नहीं यदि ऐसा तो खुदा को ला शरीक कुरान में लिखा और कहते हो ॥ १२३ ॥

१२४—और जिस दिन की फट जावेगा आसमान साथ बद्दलों के और उतारे जावें गे फरिश्ते ॥ बस मत कहा मान काफ़िरों का और झगड़ा कर उस से साथ झगड़ा बड़ा ॥ और बदल डालता है अल्लाह बुराईयों उनकी को भलाईयों से ॥ और जो कोई तोबा करे और कर्म करे अच्छे बस निश्चय आता है तरफ़ अल्लाह की। मं॰ ४ सि॰ १९ सू॰ २५ आ॰ २५-४९-६७-६८ ॥

समी॰—यह बात कभी सच नहीं हो सकती है कि आकाश बद्दलों के साथ फट जावे। यदि आकाश कोई मूर्त्तिमान् पदार्थ हो तो फट सकता है। यह मुसलमानों का कुरान और शान्ति भंग कर गदर झगड़ा मचाने वाला है इसी लिये धार्मि-

कि विद्वान् लोग इसको नहीं मानते यह भी अन्धा न्याय है कि जो पाप और पुण्य का अदला बदला हो जाय क्या यह तिल और उड़द की सी बात जो पलटा हो जावे जो तोबा करने से पाप छूटे और ईश्वर मिले तो कोई भी तो कोई भी पाप करने न डरे इसलिये ये सब बातें विद्या से विरुद्ध हैं। २२४

२२५ ——— वही कि हमने तर्फ़ मूसा की यह कि ले चलो शान को बन्दों मेरे के निश्चय तुम पीछा किये जाओगे बस भेजे लोग बस भेजे लोग फ़िरौन के बीच नगरों के जमा करने वाले और वह पुरुष कि जिसने पैदा किया मुझको बस वही मार्ग दिखलाता है और वह जो खिलाता है मुझ को पिलाता है मुझ को और वह पुरुष की आशा रखता हूं मैं यह कि क्षमा करे वास्ते मेरे अपराध मेरा दिन कयामत के। मं. ५। सि. १९। सू. २६। आ. ५०-७६-७७-७८-७९-८०

समी० ——— जब खुदा ने मूसा की ओर वही भेजी पुनः दाउद ईसा और महम्मद साहेब की ओर किताब क्यों भेजी? क्योंकि परमेश्वर की बात सदा एक सी और बेभूल होती है और उसके पीछे कुरान तक पुस्तकों का भेजना पहिली पुस्तक को अपूर्ण भूलयुक्त माना जायगा यदि ये तीन पुस्तक सच्चे हैं तो यह कुरान झूठा होगा चारों का जो कि परस्पर प्रायः विरोध रखते हैं उनका सर्वथा सत्य होना नहीं हो सकता। यदि खुदा ने रूह अर्थात् जीव पैदा किया है तो वे मर भी जायेंगे अर्थात् उनका कभी न कभी अभाव भी होगा जो परमेश्वर ही मनुष्यादि प्राणियों को खिलाता पिलाता है तो किसी को रोग होना न चाहिये और सब को तुल्य भोजन देना चाहिये पक्षपात से एक को उत्तम और दूसरे को जैसा कि राजा और कंगले को श्रेष्ठ निकृष्ट भोजन मिलता है न होना चाहिये जब परमेश्वर ही खिलाने पिलाने और पथ्य कराने वाला है तो रोग ही न होने चाहिये परन्तु मुसल्मान आदि को भी रोग होते हैं यदि खुदा ही रोग छुड़ा कर आराम करने वाला है तो मुसल्मानों के शरीरों में रोग न रहना चाहिये जो यदि रहता है तो खुदा पूरा वैद्य नहीं है

यदि खुदा वैद्य है तो मुसल्मानों के शरीर में रोग क्यों रहते हैं? यदि वही मारता और जिलाता है तो उसी खुदा को पाप पुण्य लगता होगा यदि जन्म जन्मान्तर के कर्मानुसार व्यवस्था करता है तो उसको कुछ भी अपराध नहीं यदि वह पाप क्षमा और न्याय कियामत की रात में करता है तो खुदा पाप बढ़ाने वाला होकर पाप युक्त होगा यदि क्षमा नहीं करता तो यह कुरान की बात झूठी है।१२५

११८ १२६ —— नहीं तू परन्तु आदमी मानन्द हमारी बस ले आ कुछ निशानी जो है तू सच्चों से, कहा यह ऊंटनी है वास्ते उसके पानी पीना है एक बार। मं. ५ सि. १९ सू. २६ आ. ०१५०

— १५१ [illegible]

समी० —— यह खुदा को शोक और अभिमान क्यों हुआ कि तू हमारे तुल्य नहीं है और ऊंटनी की निशानी देनी केवल जंगली जंगली व्यवहार है ईश्वर कृत नहीं यदि यह किताब ईश्वर कृत होती तो ऐसी व्यर्थ बातें इसमें न होतीं॥१२६

१२७ —— ऐ मूसा बात यह है कि निश्चय मैं अल्लाह हूं गालिब और डाल दे असा अपना बस जब कि देखा उसको हिलता था मानो कि वह सांप है [illegible] मूसा मत डर निश्चय नहीं डरते समीप मेरे पैगम्बर॥ अल्लाह नहीं कोई माबूद परन्तु वह मालिक अर्श बड़े का। यह कि मत सरकशी करो ऊपर मेरे और चले आओ मेरे पास मुसल्मान होकर। मं. ५ सि. १९ सू. २७ आ. ८-१०-२६-३१

समी० —— और देखिये अपने मुख आप अल्लाह बड़ा जबर्दस्त बनता है अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना श्रेष्ठ पुरुष का भी काम नहीं, खुदा का क्योंकर हो सकता है। तभी तो इन्द्रजाल का लटका दिखला जंगली मनुष्यों को वश कर आप जंगलस्थ खुदा बन बैठा। ऐसी बात ईश्वर के पुस्तक की नहीं हो सकती यदि वह बड़े अर्श अर्थात् सातवें आसमान का मालिक है तो वह एकदेशी होने से ईश्वर नहीं हो सकता है॥ यदि सरकशी करना बुरा है तो खुदा ने महम्मद साहेब और फरिश्तों को ईमान लाने सेवा करने में साध्य क्यों मिलाया इसलिये शरीके

हुई बात ही। इससे जो कि यह कुरान पुनरुक्त और पूर्वापर विरुद्ध बातों से भरा हुआ है। ११९

१२० ——— और देखेगा तू पहाड़ों को अनुमान करता है तू उनको जमे हुए और वे चले जाते हैं मानिन्द चलने बादलों की कारीगरी अल्लाह की कि जिसने दृढ़ किया हर वस्तु को निश्चय वह खबरदार है उस वस्तु के कि करते हो। मं० ५ सि० २० सू० २७ आ० ८८

समी० ——— भला बद्दलों के समान पहाड़ का चलना कुरान बनाने वालों के देश में होता होगा अन्यत्र नहीं और खुदा की खबरदारी शैतान बागी को न पकड़ने और न दंड देने से ही विदित होती है कि जिसने एक बागी को भी अब तक न पकड़ पाया न दंड दिया इससे अधिक असावधानी क्या होगी॥ १२०

१२१ ——— बस मुष्ट मारा उसको मूसा ने बस पूरी की आयु उसकी॥ कहा ऐ रब मेरे निश्चय मैंने अन्याय किया जान अपनी को बस क्षमा कर मुझको बस क्षमा कर दिया उसको निश्चय वह क्षमा करने वाला दयालु है॥ और मालिक तेरा उत्पन्न करता है जो कुछ चाहता है और पसन्द करता है। मं० ५ सि० २० सू० २८ आ० १४-१५-६६

समी० ——— अब अन्य भी देखिये मुसलमान और ईसाइयों के पैगंबर और खुदा कि मूसा पैगंबर मनुष्य की हत्या किया करे और खुदा क्षमा किया करे ये दोनों अन्यायकारी हैं वा नहीं॥ क्या अपनी इच्छा ही से जैसा चाहता है वैसी उत्पत्ति करता है? क्या उसने अपनी इच्छा ही से एक को राजा और दूसरे को कंगाल और एक को विद्वान और दूसरे को मूर्खादि किया है? यदि ऐसा है तो यह अन्यायकारी होने से कुरान सत्य और यह खुदा ही नहीं हो सकता॥ १२१

१२२ ——— और आज्ञा दी हमने मनुष्य को साथ माँ बाप के भलाई करना और जो झगड़ा करें तुझसे यह कि शरीक लावे
तो जो

तूसाथमेरेउसवस्तुकेकिनहीं वास्ते तेरेसाथउसकेसाथ बसमत कहामानउन दोनोंकातर्फमेरीहै। और अवश्य भेजाहमने नूहकोतर्फ कौमउसके कि बसरहा बीचउन केहजार वर्ष परन्तु पांचसौवर्षकम। उसदिनढांकलेगा (पानी उसको अजाब ऊपरउनकेसे मं० ५ सि० २० [illegible] २१ सू० २९ आ० ०७ – १३

समी० —— मातापिताकीसेवा करनीतो अच्छीही है और खुदाकेसाथ शरीक करनेकेलिये कहे तो उनकाकहा न मानना यह भी ठीक है परंतु यदि मातापिता मिथ्याभाषणादि करनेकी आज्ञा देवें तो क्या मानलेना चाहिये इसलिये यह बात अच्छी और आधी बुरी है क्या नूह आदि पैगंबर ही को खुदा ने संसारमें भेजता है तो अन्य जीवों को कौन भेजता है यदि सबको वही भेजता है तो सभी पैगंबर क्यों नहीं और प्रथम मनुष्यों की हजार वर्ष की आयु होती होगी तो अब क्यों नहीं होती इसलिये यह बात ठीक नहीं यदि खुदाके न्यायघरमें भी नीचे शिर ऊपर पग बांधकर दंड दिया जाता है तो उससे आजकलही कारागार अच्छा है आजकल दंड तो दिया जाता है परन्तु पग नीचे शिर ऊपर ही रक्खा जाता है यदि ऐसा ही दंड है तो भी मनुष्यों में शंका घटित हो सकता है॥१२९

१३० —— अल्लाह पहिली बार करता है उत्पत्ति फिर दूसरी बार करेगा उसको फिर उसी की ओर फेर जाओगे॥ और जिस दिन वर्षा अर्थात् खड़ी होगी कयामत निरास होंगे पापी॥ बस जो लोग कि ईमान लाये और काम किये अच्छे बस वे बीच बाग के सिंगार किये जावेंगे। और जो भेजदें हम एक बाव बसंत देखें उसको तो कोपी तो हुई इसी प्रकार मोहर रखता है अल्लाह ऊपर दिलों उन लोगों के कि नहीं जानते। मं० ५ सि० २१ सू० ३० आ० ८ – १४। ५०। ५८

समी० ——— यदि अल्लाह दो बार उत्पत्ति करता है तीसरी बार नहीं तो उत्पत्ति की आदि और दूसरी बार के अन्त में निकम्मा बैठा रहता होगा और जैसे एक तथा दो बार उत्पत्ति के पश्चात् उसका सामर्थ्य निकम्मा और व्यर्थ हो जायगा यदि न्याय करने के लिये दिन रख कर रात रक्खी जाय तो गबर्गंड सा ही लीला हो जाय न्याय तो दिन ही में करना सर्वत्र प्रसिद्ध है और इसलिये यह मुसल्मान और मुसल्मानों के खुदा की उल्टी बात है यदि बागीचे में रखना और शृंगार पहिराना ही मुसल्मानों का स्वर्ग है तो इस संसार के तुल्य हुआ और वहां माली और सुनार भी होंगे अथवा खुदा ही माली और सुनार आदि का काम करता होगा यदि किसी को कम गहना मिलता होगा तो चोरी भी होती होगी और बहिश्त से चोरी करने वालों को दोजख में भी डालता होगा यदि ऐसा होता होगा तो सदा बहिश्त में रहेंगे यह बात झूठ हो जायगी यह कि सानों की खेती पर भी खुदा की दृष्टि है यह विद्या खेती करने के अनुभव ही से होती है और यदि माना जाय कि खुदा ने अपनी विद्या से सब बात जान ली है तो ऐसा भय देना अपना घमंड प्रसिद्ध करना है यदि अल्लाह ने जीवों के दिलों पर मोहर लगा पाप कराया तो उस पाप का भागी वही होवे जीव नहीं हो सकते जैसे जय पराजय सेनाधीश का होता है वैसे यह सब पाप खुदा ही को प्राप्त होवे ।१३०

१३१ ——— ये आयतें हैं कि ना बहिश्त वाले को ॥ उत्पन्न किया आस्मानों को बिना सतून अर्थात् खंभे के देखते हो तुम उसको और डाले बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा न हो कि हिल जावे ॥ क्या नहीं देखा तूने यह कि अल्लाह प्रवेश कराता है रात को बीच दिन के और प्रवेश कराता है दिन को बीच रात के ॥ क्या नहीं देखा

कि किश्तियां चलती हैं बीच दर्या के साथ निआमतों अल्लाह के तो कि दिखलावे तुमको निशानियां अपनी मं० ५ सि० २१ सू० ३१ आ० ०१-२-२८-३०

समी० ——— वाह जी वाह हिक्मत वाली किताब! कि जिसमें सर्वथा विद्या से विरुद्ध आकाश की उत्पत्ति और उसमें खंभे लगाने की शंका और पृथिवी को स्थिर रखने के लिये पहाड़ रखना थोड़ी सी विद्या वाला भी ऐसा लेख कभी नहीं करता और न मानता और हिक्मत देखो कि जहां दिन है वहां रात नहीं और जहां रात है वहां दिन नहीं उसको एक दूसरे में प्रवेश कराना लिखता है यह बड़े अविद्वानों की बात है इसलिये यह कुरान विद्या कि पुस्तक नहीं हो सकती। क्या यह विद्याविरुद्ध बात नहीं हैं कि नौका मनुष्य और क्रिया कौशल से चलती हैं वा खुदा की कृपा से यदि लोहे वा पत्थरों की नौका बनाकर समुद्र में चलावें तो खुदा की निशानी डूब जाय वा नहीं इसलिये यह पुस्तक न विद्वान् और न ईश्वर की बनाई हुई हो सकती है ॥१३१

२५ १३२ ——— तदबीर करता है काम की आसमान से तर्फ पृथिवी की फिर चढ़ जाता है तर्फ उसकी बीच एक दिन के कि है अवधि उसकी सहस्र वर्ष उन वर्षों से कि गिनते हो तुम यह है जानने वाला गैब का और प्रत्यक्ष का अवश्य दयालु। फिर पुष्ट किया उसको और फूंका बीज ... रूह अपनी से कह कब्ज़ करेगा तुमको फरिश्ता मौत का वह जो नियत किया गया है साथ तुम्हारे और जो चाहते हम अवश्य देते हम हर एक जीव को शिक्षा उसकी परन्तु सिद्ध हुई बात मेरी ओर से कि अवश्य भरूंगा जो दोज़ख और आदमियों से इकट्ठे। मं० ५ सि० २१ सू० ३२ आ० ४-७-८-११

समी० —————— अब ठीक सिद्ध हो गया कि मुसलमा-
नों का खुदा मनुष्यवत् एकदेशी है क्योंकि जो व्यापक हो-
ता तो एक देश से प्रबन्ध करना और उतरना चढ़ना
नहीं हो सकता और एक हज़ार वर्षों में प्रबन्ध करने से
सर्वशक्तिमान भी नहीं। यदि मौत का फ़रिश्ता है तो उस फ़-
रिश्ते का मारने वाला कौन सा मृत्यु है? यदि वह नित्य है
तो अमरपन में खुदा के बराबर शरीक हुआ एक फ़रिश्ता
एक समय में दोज़ख भरने के लिये जीवों को शिक्षा नहीं कर-
ना और उनको बिना पाप किये अपनी मर्ज़ी से दोज़ख
दोज़ख भर के उनको दुःख देकर तमाशा देखता है तो
वह खुदा पापी अन्यायकारी और दयाहीन है ऐसी बा-
तें जिस पुस्तक में हों वह विद्वान् और ईश्वरकृत और
दया न्यायहीन ईश्वर भी कभी नहीं हो सकता ॥ १३२ १२५

१२६ १३३ —— कह कि कभी न लाभ देगा

भागना तुमको जो भागो तुम मृत्यु वा कतल से और बीबियों
नबी की जो कोई आवे तुम में से निर्लज्जता प्रत्यक्ष के
दुगुण किया जावेगा वास्ते उसके अज़ाब और है यह
ऊपर अल्लाह के सहल। मं० ५ सि० २१ सू० ३३ आ०
१६-३०

समी० —————— यह मुहम्मद साहेब ने इसलिये लिखा
लिखवाया होगा कि लड़ाई में कोई न भागे हमारा वि-
जय होवे मरने से भी न डरे ऐश्वर्य बढ़े मज़हब बढ़ा
लेवें। और यदि बीबी निर्लज्जता से पैग़म्बर के
सामने न आवे तो क्या पैग़म्बर साहेब निर्लज्ज होकर बीबी
उनके सामने आवें और पैग़म्बर साहेब पर अज़ाब
न होवे यह किस घर का न्याय है? ॥ १३३ १२६

१३४ १२७ —— और अटकी रहो बीच घरों अपने
के और आज्ञा पालन करो अल्लाह और रसूल की

सिवाय इसके नहीं ॥ बस जब अदा कर ली जैद ने हाजत उसे
ब्याह दिया हमने तुझ से उसको तो कि न होवे ऊपर ईमानवा-
लों के तंगी बीच बीबियों से ले पालकों उनके के जब अदा कर लें उन
से हाजत और है आज्ञा खुदा की की गई नहीं है ऊपर नबी के कुछ
तंगी बीच उस वस्तु के। नहीं है महम्मद बाप किसी मर्द का ॥
और हलाल की स्त्री ईमान वाली जो देवे बिना महर के जान अ-
पनी वास्ते नबी के ॥ ढील देवे जिसको चाहे उनमें से और जगह
देवे तर्फ अपनी जिसको चाहे। नहीं पाप ऊपर तेरे ॥ ऐ लोगो जो
ईमान लाये हो मत प्रवेश करो घरों में पैगम्बर के ॥ मं॰ ५। सि॰ २२
सू॰ ३३। आ॰ ३३-३४-३७-३८-४०-४७-४८-५०

समी॰ —— यह बड़े अन्याय की बात है कि
स्त्री घर में कैद के समान रहें और पुरुष खुले रहें क्या स्त्रि
यों का चित्त शुद्ध वा शुद्ध देश में भ्रमण करना सृष्टि के अनेक
पदार्थ देखना नहीं चाहती होंगी इसी अपराध से मुसल्मानों
के लड़के विशेष कर शैलानी और विषयी होते हैं अल्लाह औ
र रसूल की एक अविरुद्ध आज्ञा है वा भिन्न २ विरुद्ध?
यदि एक है तो दोनों की आज्ञापालन करो कहना व्यर्थ है
और जो भिन्न २ विरुद्ध है तो एक सच्चा और दूसरी झूठ एक
खुदा दूसरा शैतान हो जायगा और शरीक भी होगा वाह कु-
रान का खुदा और पैगम्बर तथा कुरान को जिसको दूसरे
का मतलब नष्ट कर अपना मतलब सिद्ध करना इष्ट है
ऐसी लीला अवश्य रचता है इससे यह भी सिद्ध हुआ कि
महम्मद साहेब बड़े विषयी थे यदि न होते तो (ले पालक)
बेटे की स्त्री को जो पुत्र की स्त्री थी अपनी स्त्री क्यों कर लेते औ
र फिर ऐसी बातों करने वाले का खुदा भी पक्षपाती बना औ
र अन्याय को न्याय ठहराया भला कोई भी मनुष्यों में से जो जंग-
ली भी होगा वह भी बेटे की स्त्री को छोड़ता है और यह कित
नी बड़ी अन्याय की बात है कि नबी को विषयासक्ति की

जीला करनेमें कुछभी अटकाव नहीं होना। यदि नबी किसी का बाप न था तो जैद को (लेपालक) बेटा किसका था। और क्यों लिखा यह उसी मतलब की बात है कि जिससे बेटा की स्त्री को भी घरमें डालने से पैगम्बर साहेब न बचे अन्यसे क्योंकर बचे होंगे। ऐसी चतुराई से भी बुरी बातमें निन्दा होनी कभी नहीं छूट सकती। क्या जो कोई पराई स्त्री भी नबी से प्रसन्न होकर निकाह करना चाहे तो भी हलाल है? और यह महा अधर्म की बात है कि नबी तो जिस स्त्री को चाहे छोड़ देवे और महम्मद साहेब की स्त्री लोग यदि पैगम्बर अपराधी भी हों तो कभी न छोड़ सकें। जैसे पैगम्बर के घरों में अन्य कोई व्यभिचार दृष्टि से प्रवेश न करें तो वैसे पैगम्बर साहेब भी किसी के घर में प्रवेश न करें। क्या नबी जिस किसी के घरमें चाहे निशंक प्रवेश करें और माननीय भी रहें? भला कौन ऐसा हृदय का अन्धा है कि जो इस कुरान को ईश्वरकृत और महम्मद साहेब को पैगम्बर और कुरानोक्त ईश्वर को परमेश्वर मान सके। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे युक्तिशून्य धर्मविरुद्ध बातों को अर्ब देश निवासी आदि मनुष्यों ने इस मत को क्यों कर मान लिया॥ १३३॥ १२०॥

१३४— नहीं योग्य वास्ते तुम्हारे यह कि दुःख दो रसूल को यह कि निकाह करो बीबियों उसकी को पीछे उस के कभी निश्चय यह है समीप अल्लाह के बड़ा पाप। निश्चय जो लोग कि दुःख देते हैं अल्लाह को और रसूल उसके को लानत की है उनको अल्लाह ने। और वे लोग कि दुःख देते हैं मुसलमानों को और मुसल्मान औरतों को बिना इसके बुरा किया है उन्होंने बस निश्चय उठाया उन्होंने बोहतान अर्थात् झूठ और प्रत्यक्ष पाप॥ लानत मारे जावें खूब मारा जाना। ऐ रब हमारे दे उनको दुगुणा अजाब से और लानत से बड़ी लानत कर। मं॰ ५ सि॰ २२ सू॰ ३३ आ॰ ५०-५४-५५-५८-६५

समी॰——— वाह क्या खुदा अपनी खुदाई को धर्म के साथ
दिखला रहा है जैसे रसूल को दुःख देने का निषेध करना तो ठीक
है परन्तु दूसरे को दुःख देने में रसूल को भी रोकना योग्य था क्यों न रो-
का॥ क्या किसी के दुःख देने से अल्लाह भी दुःखी हो जाता है
यदि ऐसा है तो वह ईश्वर ही नहीं हो सकता है क्या अल्लाह और
रसूल को दुःख देने का निषेध करने से यह नहीं सिद्ध होता कि
अल्लाह और रसूल जिसको चाहे दुःख देवें अन्य सब को
दुःख देना चाहिये जैसा मुसल्मानों और मुसल्मानों की
स्त्रियों को दुःख देना बुरा है तो इनसे अन्य मनुष्यों को दुः-
ख देना भी बुरा है जो ऐसा माने तो उसकी यह बात भी पक्षपा-
त की है वाह गदर मचाने वाले खुदा और नबी जैसे ये नि-
र्दयी संसार में बहुत थोड़े होंगे जैसा यह कि अन्य लोग जहां
पाये जावें मारे जावें पकड़े जावें लिखा है वैसा ही मुसल-
मानों पर कोई ऐसी ही आज्ञा देवे तो मुसल्मानों को यह
बात बुरी लगेगी वा नहीं॥ वाह क्या हिंसक पैगम्बर आदि हैं
कि जो परमेश्वर से प्रार्थना करके अपने से दूसरों को
दुःख देने के लिये प्रार्थना करना लिखा है यह भी पक्ष-
पात मतलबसिन्धुपन और महा अधर्म की बात है इसी से
अब तक भी मुसल्मानों के लोगों में से बहुत से शठ लोग
ऐसा ही कर्म करने में नहीं डरते यह ठीक है कि शिक्षा के बि-
ना मनुष्य पशु के समान रहता है॥ १२४॥

१२। १२५——— और अल्लाह वह पुरुष है कि भेजता है हवाओं
को बस उठाती है बादलों को बस हांक लेते हैं तर्फ शहर मुर्दे की
बस जीवित किया हमने साथ उसके पृथिवी को पीछे मृ-
त्यु उसकी के इसी प्रकार कबरों में से निकलना है॥ जिस-
ने उतारा बीच घर सदा रहने के दया अपनी से नहीं लगती
हमको बीच उसके मेहनत और नहीं लगती बीच उसके
मांदगी। मं॰ ५ सि॰ २२ सू॰ ३५ आ॰ ९—३५

समी॰——— वाह क्या कितावस फ़ीख़ुदाकी है भेजता है वायुको बहुत उठातीहै फिरती है बद्दलों को। और ख़ुदा उस से मुर्दोंको जिलाता फिरताहै यह बात ईश्वर सम्बन्धी कभी नहीं होसकती क्योंकि ईश्वर का काम निरंतर एकसा होता रहताहै जो घर होगा वे बिना बनावट के नहीं होसकते और जो बनावटका है वह सदा नहीं रहसकता जिसके शरीर है वह परिश्रमके बिना दुःखी होता और शरीर वाला रोगी हुए बिना कभी नहीं बचता जो एक स्त्री से समागम करता है वह विना रोगके नहीं बचता तो जो बहुत स्त्रियों से विषयभोग करता है उसकी क्या ही दुर्दशा होती होगी इसलिये मुसल्मानों का बहिश्त भी सुखदायक सदा नहीं हो सकता। १३५

१३६——— कसम है कुरान दृढ़की निश्चय तू भेजेहुओं से है॥ उसपर मार्ग सीधे के उतारा है गालिब दयावान॥ मं॰ ५ सि॰ २२ सू॰ ३६ आ॰ १-२

समी॰——— अब देखिये यह कुरान ख़ुदाकी बनाई होती तो वह इसकी सौगंद क्यों खाता यदि नबी ख़ुदा का भेजा होता तो (लेपालक) बेटेकी स्त्री पर मोहित क्यों होता यह कथनमात्र है कि कुरानके माननेवाले सीधे मार्ग पर हैं क्योंकि सीधा मार्ग वही होता है जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, पक्षपात रहित न्यायधर्मका आचरण करना, आदि हैं और इनसे विपरीत का त्याग करना सो न कुरान में न मुसल्मानों में और न इनके ख़ुदामें ऐसा स्वभाव है यदि सब पर प्रबल पैगंबर महम्मद साहेब होते तो सबसे अधिक विद्यावान और शुभगुणयुक्त क्यों न होते इसलिये जैसी कूंजड़ी अपने बेरों को खट्टा नहीं बतलाती वैसी यह बात भी है १३६ १३०

१३७——— और फूंका जावेगा बीच सूर के बस नागहां वह कबरों में से मालिक अपने की दौड़ेंगे॥ और गवाही देंगे पांव उनके साथ उस वस्तु के कमाते थे॥ सिवाय इसके नहीं कि आज्ञा उसकी जब चाहे उत्पन्न करना किसी वस्तुका यह कि

यस्ककि कहता वास्ते उसके बस हो जाता मं.५ सि०२३ सू०३६
आ०६९-७८

समी० —— अब सुनिये झूट पर ऐंगा बातें पग कभी गवा-
ही दे सकते हैं खुदा के सिवाय उस समय कौन जिसको आज्ञा-
दी किसने सुनी और कौन बन गया यदि न थी तो यह बात झू-
ठी और जो थी तो वह बात जो सिवाय खुदा के कुछ चीज नहीं
थी और खुदा ने सब कुछ बना दिया वह झूठी ॥१३८॥

१३९ —— फिराया जावेगा उनके ऊपर पि-
याला शराब शुद्ध का सफेद मजा देने वाली वास्ते पीने वा-
लों के समीप उनके बैठी होंगी नीचे आंख रखने वालि-
यां मानो कि वे अंडे हैं छिपाये हुए। क्या बस हम नहीं मरें-
गे और अब इय नूत पैगम्बरों से था॥ जबकि मुक्ति दी हम-
ने उसको और लोगों उसके को सबको परन्तु एक बुढ़िया
पीछे रहने वालों में है फिर मारा हमने औरों को॥ मं०५ सि०
२३ - सू०३७ आ०४३-४४-४६-५६-१२६-
-१२७-१२८॥

समी० —— क्यों जी यहां तो मुसल्मान लोग शराब को
बुरा बतलाते हैं परन्तु इनके स्वर्ग में तो नदियों की नदियां
बहती हैं इतना अच्छा है कि यहां तो किसी प्रकार मद्य पी-
ना तो छुड़ाया परन्तु यहां के बदले वहां उनके स्वर्ग में बड़ी
खराबी है मारे स्त्रियों के वहां किसी का चित्त स्थिर नहीं रहता
होगा और बड़े रोग भी होते होंगे यदि शरीर वाले होंगे
तो अवश्य मरेंगे और जो शरीर वाले न होंगे तो भोग वि-
लास ही न कर सकेंगे। फिर उनके स्वर्ग में जाना व्यर्थ है
यदि लूत को पैगम्बर मानते हैं तो जो बायबिल में लिखा-
है कि उससे उसकी लड़कियों ने समागम करके दो ल-
ड़के पैदा किये इस बात को भी मानते हो वा नहीं जो मानते
हो तो ऐसे को पैगम्बर मानना व्यर्थ है और जो ऐसे औ-
र ऐसे के संगियों को खुदा मुक्ति देता है तो वह खुदा भी
वैसा ही है क्योंकि बुढ़िया की कहानी कहने वाला और पक्षपा-

तसे दूसरों को मारने वाला खुदा कभी नहीं होसकता ऐसा खुदा मुसलमानों ही के घर में रह सकता अन्यत्र नहीं ॥१३८ १३२

१३३ १३९ —— बहिश्त है सदा रहने की खुले हुए हैं दरवाजे उनके वास्ते उनके ॥ तकिये किये हुए बीच उनके मंगावेंगे बीच इस के मेवे और पीने की वस्तु ॥ और समीप होंगी उनके नीचे रखने वालियां दृष्टि और दूसरों से समान ॥ बस सिजदा किया फरिश्तों ने सबने ॥ परन्तु शैतान ने न माना अभिमान किया और था काफिरों से । ऐ शैतान किस वस्तु ने रोका तुझ को यह कि सिजदा करे वास्ते उस वस्तु के कि बनाया मैं ने साथ दोनों हाथ अपने के क्या अभिमान किया तू ने वा था बड़े अधिकार वालों से ॥ कहा कि मैं अच्छा हूं उस वस्तु से उत्पन्न किया तू ने मुझ को आग से उसको मट्टी से ॥ कहा बस निकल इन आसमानों में से बस निश्चय तू चलाया गया है ॥ निश्चय ऊपर तेरे लानत है मेरी दिन जजात तक ॥ कहा ऐ मालिक मेरे ढील दे उस दिन तक कि उठाये जावेंगे मुर्दे ॥ कहा कि बस निश्चय तू ढील दिये गयों से है ॥ उस दिन समय ज्ञात तक ॥ कहा कि बस कसम है प्रतिष्ठा तेरी कि अवश्य गुमराह करूंगा उनको मैं इकट्ठे ॥ मं० ६ सि० २३ सू० ३८ आ० ४३-४४-४५-६३-६४-६५-६६-६७-६८-६९-७०-७१-७२

समी० —— यदि वहां जैसे कि कुरान में बाग बगीचे नहरें मकानादि ये लिखा है वैसे हैं तो वेन सदा से थे न सदा रह सकते हैं क्योंकि जो संयोग से पदार्थ होता है वह संयोग के पूर्व न था अवश्य भावी वियोग के अंत में न रहेगा, जब वह बहिश्त ही न रहेगा तो उसमें रहने वाले सदा क्योंकर रह सकते हैं क्योंकि गादी तकिये मेवे और पीने के पदार्थ वहां मिलें जो लिखा है इस से यह सिद्ध होता है कि जिस समय मुसल्मानों का मजहब चला उस समय ~~अरबदेश~~ अरब देश विशेष धनाढ्य न था इसी लिये महम्मद साहेब ने तकियों आदि की कथा सुनाकर गरीबों को अपने मत में फंसा लिया । और जहां स्त्रियां हैं वहां निरन्तर सुख कहां वे स्त्रियां वहां कहां से आई हैं अथवा बहिश्त की रहने

है फिर आई है तो जाओगी और जो वही कीर ईश है तो कयामत के पूर्व
क्या करती थी क्या निकम्मी अपनी उमर को बता रही थी अब देखि-
ये खुदा की तेजनिकि जिसका हुक्म अन्य सब फरिश्तों ने माना और
आदम साहेब को नमस्कार किया और शैतान ने न माना खुदा ने शै-
~~तान से पूछा~~ ~~अपने दोनों हाथों से बनाया~~
कहा कि मैंने तुझको
तान से पूछा अपने दोनों हाथों से बनाया तू अभिमान मत कर इ-
ससे सिद्ध होता है कि कुरान का खुदा दो हाथ वाला मनुष्य था इ-
सलिये वह व्यापक वा सर्वशक्तिमान् कभी नहीं हो सकता और शैता-
न से सत्य कहा कि मैं आदम से उत्तम हूं इस पर खुदा ने गुस्सा क्यों
किया क्या आसमान ही खुदा का घर है पृथिवी में नहीं तो काबे
को खुदा का घर प्रथम क्यों लिखा भला परमेश्वर अपने में से
वा सृष्टि में से अलग कैसे निकाल सकता है और वह सृष्टि
सब परमेश्वर की है इससे स्पष्ट विदित हुआ कि कुरान का
खुदा बहिश्त का जिम्मेदार था खुदा ने उसको लानत धिक्का-
र दिया और कैद कर लिया॥ शैतान ने कहा कि हे मालिक मु-
झ को कयामत तक छोड़ दे खुदा ने खुसामद से छोड़ दिया
कयामत के दिन तक जब शैतान छूटा तो खुदा से कह
ता है कि अब मैं खूब बहकाऊंगा और गदर मचाऊंगा
तब खुदा ने कहा कि मैं जितने को तू बहकावेगा उनको दो
जख में डाल दूंगा और तुझको भी अब सज्जन लोगो वि-
चारिये कि शैतान को बहकाने वाला खुदा है वा आपसे
वह बहका यदि खुदा ने बहकाया तो वह शैतान का
शैतान ठहरा यदि शैतान स्वयं बहका तो अन्य जीव भी
स्वयं बहकेंगे शैतान की जरूरत नहीं और जिससे
इस शैतान बागी को खुदा ने खुला छोड़ दिया इससे विदित
हुआ कि वह भी शैतान का शरीक अधर्म कराने में
हुआ यदि स्वयं चोरी कराके दंड देवे तो उसके अन्या-
य का कुछ भी पारावार नहीं॥ १४०

३४ १४१—— अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे निश्चय वह है
क्षमा करने वाला दयालु॥ और पृथिवी सारी मूठी में है

उसकी दिन कयामत के और आसमान लपेटे हुए हैं बीच दाहिने हाथ उसके के॥ और चमक जावेगी पृथिवी साथ प्रकाश मालिक अपने के और रक्खे जावेंगे कर्मपत्र और लाया जावेगा पैगम्बरों को और गवाहों को। और फैसला किया जावेगा। मं० ६-सि० २४ सू० ३९ आ० ५४-६८-७०

समी०——यदि समग्र पापों को खुदा क्षमा करता है तो जानो सब संसार को पापी बनाता है और दयाहीन है क्योंकि एक दुष्ट पर दया और क्षमा करने से वह अधिक दुष्टता करेगा और अन्य बहुत धर्मात्माओं को दुःख पहुंचावेगा यदि किंचित् भी अपराध क्षमा किया जावे तो अपराध ही अपराध जगत् में छा जावे॥ क्या परमेश्वर अग्निवत् प्रकाशवाला है और कर्मपत्र कहां जमा रहते हैं और कौन लिखता है यदि पैगम्बरों और गवाहों के भरोसे खुदा न्याय करता है तो वह असर्वज्ञ और असमर्थ है यदि वह अन्याय नहीं करता न्याय ही करता है तो कर्मों के अनुसार करता होगा वे कर्म पूर्वापर वर्त्तमान जन्मों के हो सकते हैं तो फिर क्षमा करना, दिलों पर ताला लगाना, शिक्षा न करनी, शैतान से बहकवाना, दौजख सुपुर्द रखना केवल अन्याय है॥ १४४॥

१४५——उतारना किताब का अल्लाह गालिब जाननेवाले की ओर से है क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार करनेवाला तोबा का। मं० ६ सि० २४ सू० ४० आ० १-२

समी०——यह बात इसलिये है कि भोले लोग अल्लाह के नाम से इस पुस्तक को मान लेवें कि जिसमें थोड़ा सा सत्य छोड़ असत्य भरा है और वह सत्य भी असत्य के साथ मिलकर बिगड़ा सा है इसी लिये कुरान और कुरान का खुदा। और इसको मानने वाले पाप बढ़ाने हारे और पाप करने कराने वाले हैं॥ क्योंकि पाप की क्षमा करनी अत्यन्त अधर्म है किन्तु इसी से मुसल्मान लोग पाप और उपद्रव करने में

कमडरते हैं।१४२

१४३ ——— बस निष्फल किया उसको साथ आसमान की चंदो दिन के और डाल दिया की वह मनेउस के काम उसका ॥ यहां तक कि जब जावेंगे उसके पास साक्षी देंगे ऊपर उन के कान उनके और आंखें उनकी और चमड़े उनके उनके कर्म से। और कहेंगे वास्ते चमड़े अपने के क्यों साक्षी दी तूने ऊपर हमारे कहेंगे कि बुलाया है हमको अल्लाह ने जिसको बुलाया हर वस्तु को अजयपति जाने वाला है मुर्दों को। मं· ६ सि· २४ सू· ४१ आ· १२-२०-२१-३९

समी· ——— वाह जी वाह मुसलमानों तुम्हारा खुदा जिसको तुम सर्वशक्तिमान मानते हो वह सात आसमानों को दो दिन में बना सका और जो सर्वशक्तिमान है वह क्षण मात्र में सब को बना सकता है। भला कान आंख और चमड़े को ईश्वर ने जड़ बनाया है वे साक्षी कैसे दे सकेंगे यदि साक्षी दिलावें तो उसने प्रथम जड़ क्यों बनाया और अपना पूर्वापर नियम विरुद्ध क्यों किया एक इससे भी बढ़कर मिथ्या बात यह कि जब जीवों पर साक्षी दी तब वे जीव अपने २ चमड़े से पूछने लगे कि तूने हमारे पर साक्षी क्यों दी चमड़ा बोला कि खुदा ने दिलाई मैं क्या करूं भला यह बात कभी हो सकती है। जैसे कोई कहे कि वन्ध्या के पुत्र का मुख मैंने देखा यदि पुत्र है तो वंध्या क्यों और वन्ध्या है तो उसके पुत्र ही होना असंभव है इसी प्रकार की यह भी मिथ्या बात है॥ यदि वह [illegible] मुर्दों को जिलाता है तो प्रथम मारा ही क्यों क्या अब भी मुर्दा हो सकता है वा नहीं यदि नहीं हो सकता तो मुर्दापन को बुरा क्यों समझता है और कयामत की रात तक मृतक जीव किस मुसल्मान के घर में रहेंगे और दौज़ख सुपुर्द खुदा ने बिना अपराध क्यों रक्खा शीघ्र न्याय क्यों न किया ऐसी ऐसी २ बातों से ईश्वरता में बट्टा लगता है।१४३

१४४ ——— वास्ते उसके कुंजियां हैं आसमानों की और-

पृथिवी की खोलता है भोजन जिसके वास्ते चाहता है और तंग करता है उत्पन्न करता है जो कुछ चाहता है और देता है जिसको चाहे बेटियां और देता है जिसको बेटे ॥ वा मिला देता है उनको बेटे और बेटियां जिसको चाहे बांझ ॥ और नहीं है शक्ति किसी आदमी को कि बात करे उस से अल्लाह परन्तु जी में डालने कर वा पीछे पर्दे के से वा भेजे फरिश्ते पैगाम लाने वाला ॥ मं० ६। सि० २५ सू० ४२ आ० १०।४७।४८।४९

समी० —— खुदा के पास कुंजियों का भंडार भरा होगा क्योंकि सब ठिकाने के ताले खोलने होते होंगे, यह लड़कपन की बात है क्या जिसको चाहता है उसको बिना पुन्य कर्म के ऐश्वर्य देता है और तंग कर करता है, यदि ऐसा है तो वह बड़ा अन्यायकारी है अब देखिये कुरान बनाने वाले की चतुराई कि जिससे स्त्रीजन भी मोहित होके फसें यदि जो कुछ चाहता है उत्पन्न करता है तो दूसरे खुदा को भी उत्पन्न कर सकता है वा नहीं यदि नहीं कर सकता तो सर्वशक्तिमत्ता यहां पर अटक गई भला मनुष्यों को तो जिसको चाहे बेटे बेटियां खुदा देता है परन्तु मुर्गे मच्छी सूअर आदि जिनके बहुत बेटा बेटियां होती हैं कौन देता है ! और स्त्री पुरुष के समागम बिना क्यों नहीं देता किसी को अपनी इच्छा से बांझ रख के दुःख क्यों देता है वाह क्या खुदा तेजस्वी है कि उसके सामने कोई बात ही नहीं कर सकता परन्तु उसने पहिले कहा है कि पर्दा डाल के बात कर सकता है वा फरिश्ते लोग खुदा से बात करते हैं अथवा पैगम्बर जो ऐसी बात है तो फरिश्ते और पैगम्बर खूब अपना मतलब करते होंगे यदि कोई कहे खुदा सर्वज्ञ सर्वव्यापक है तो पर्दे से बात करना अथवा डाक के तुल्य खबर मंगा के जानना लिखना व्यर्थ है और जो ऐसा ही है तो वह खुदा ही नहीं

किन्तु कोई चालाक मनुष्य ~~मनु~~ होगा इसलिये यह
कुरान ईश्वरकृत कभी नही होसकती ॥१४४

१४५ ——— और जब आया ईसा साथ प्र-
माण प्रत्यक्ष के। मं० ६ सि० ~~२~~०२५ सू० ४३ आ० ६२

समी० — यदि ईसा भी भेजा हुआ खुदा
का है तो उस के उपदेश से विरुद्ध कुरान ~~खु~~ खुदाने क्यों
बनाई और कुरान से विरुद्ध अंजील क्यों कि इसी लिये
ये किताबें ईश्वरकृत नही हैं ॥१४५

१४६ ——— पकड़ो ~~उस~~ उसको बस घसीये उसको
बीचोंबीच दोजख के इसी प्रकार रहेंगे और विवाह
देंगे उनको साथ गोरियों अच्छी आंख वालियों
के। मं० ६ सि० २५ सू० ४४ आ० ४४-५१

समी० ——— वाह क्या खुदा न्यायकारी होकर पक-
ड़ाता और घसीटवाता है प्राणियों को जब मुसल्मानों का
खुदा ही ऐसा है तो उस के उपासक मुसल्मान अना-
थ निर्बलों को पकड़े घसीटे तो इसमें क्या आश्चर्य है
और वह संसारी मनुष्यों के समान विवाह भी कराता है
जानो कि मुसल्मानों का पुरोहित ही है ॥१४६

१४७ ——— बस जब तुम मिलो उन लोगों
से कि काफिर हुए बस मारो गर्दन उन की यहां तक
कि जब चूर करदो उनको बस कठिन है कैद करना औ-
र बहुत बस्तियां है कि वे बहुत कठिन थी शक्ति में बस्ती
तेरी से जिसने निकाल दिया तुझको मारा हमने उस को
बस न कोई हुआ सहाय देनेवाला उनका तारीफ उस
बहिश्त की कि प्रतिज्ञा किये गये हैं परेजगार बीच
उसके नहरें हैं बिन बिगड़े पानी की और नहरें है सह-
द साफ किये गये कि और वास्ते उनके बीच उसके
मेवे हैं प्रत्येक प्रकार से दान मालिक उनके से। मं० ६ सि०
२६ सू० ४७ आ० ४-१३-१५

समी॰ —— इसीसे यह कुरान खुदा और मुसल्मान गदर मचाने सबको दुःख देने अपना मतलब साधनेवाले दयाहीन हैं जैसा यहां लिखा है वैसा ही दूसरा कोई दूसरे मत वाला मुसल्मानों पर करता तो मुसल्मानों को वैसा ही दुःख जैसा कि अन्य को देते हैं वैसा होता व नहीं और बड़ा पक्षपाती है कि जिन्होंने महम्मद साहेब को निकाल दिया उनको खुदा ने मारा भला जिसमें शुद्ध पानी दूध मद्य और सहत की नहरें हैं वह संसार से अधिक हो सकता है और दूध की नहरें कभी नहीं हो सकती क्योंकि वह थोड़े समय में बिगड़ जाता है इसी लिये बुद्धिमान लोग कुरान के मत को नहीं मानते १४५॥ ॥

१४६ — जब कि हिलाई जावेगी पृथिवी हिलाये जाने कर ॥ और उड़ाये जावेंगे पहाड़ उड़ाये जाने कर बस हो जावेंगे भुनगे ॥ बस साहेब दाहनी ओर वाले क्या हैं साहब दाहनी ओर के ॥ और बाईं ओर वाले क्या हैं बाईं ओर वाले ॥ ऊपर पलंग सोने के तारों से बुने हुए हैं तकिये किये हुए हैं ऊपर उनके आमने सामने ॥ और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने वाले ॥ साथ आबखोरों के और आफताबों के ॥ और प्यालों के शराब साफ़ से नहीं माथा दुखाये जावेंगे उससे और न विरुद्ध बोलेंगे ॥ और मेवे उस किस्म से कि पसंद करें ॥ और गोश्त जानवर पक्षियों के उस किस्म से कि पसंद करें ॥ और वास्ते उनके औरतें हैं अच्छी आंखों वाली ॥ मानन्द मोतियों छिपाये हुओं की ॥ और बिछौने बड़े ॥ निश्चय हमने उत्पन्न किया है औरतों को कुमारी एक प्रकार का उत्पन्न करना है ॥ सुहाग वालियां बराबर अवस्था वालियां ॥ बस मरने वाले हो उस संपत्ति को बस कसम खाता हूं मैं साथ गिरने तारों के । मं॰ ७ । सि॰ २७ सू॰ ५६ आ॰ ४-५-६-८-९-१५-१६-१७-१८-१९-२० २१-२२-२३-३५-३६-३८-५४-७५

आगे —————— आप देखिये कुरान बनानेवाले की लीला को भला पृथिवी तो हिलती ही रहती है उस समय भी हिलती रहेगी इससे यह सिद्ध होता है कि कुरान बनानेवाला पृथिवी को स्थिर जानता था भला पहाड़ों को क्या पक्षीवत् उड़ा देगा यदि अणु होजावेंगे तो भी सूक्ष्म शरीरधारी रहेंगे तो फिर उनका दूसरा जन्म क्यों नहीं वाह जी जो खुदा शरीरधारी न होता तो उसके दाहिनी ओर और बांई ओर के से खड़े हो सकते जब वहां पलंग सोने के तारों से बुने हुए हैं तो बढ़ई सुनार भी वहां रहते होंगे और खटमल काटते होंगे जो उनको रात्री में सोने भी नहीं देते होंगे क्या वे तकिये लगाकर निकम्मे बहिश्त में बैठे ही रहते हैं वा कुछ काम किया करते हैं यदि बैठे ही रहते होंगे तो उनको अन्न पचन न होने से वे रोगी होकर शीघ्र मर भी जाते होंगे और जो काम किया करते होंगे तो जैसे मिहनत मजदूरी यहां करते हैं वैसे ही वहां मिहनत परिश्रम करके निर्वाह करते होंगे फिर यहां से वहां बहिश्त में विशेष क्या है कुछ भी नहीं यदि वहां लड़के सदा रहते हैं तो उनके मा बाप भी रहते होंगे और सास श्वसुर भी रहते होंगे तब तो बड़ा भारी शहर बसता होगा फिर मल मूत्रादि के बढ़ने से रोग भी बहुत से होते होंगे क्योंकि जब मेवे खावेंगे गिलासों में पानी पीवेंगे और प्यालों से मद्य पीवेंगे न उनका सिर दूखेगा और न कोई विरुद्ध बोलेगा यथेष्ट मेवा खावेंगे और जानवरों तथा पक्षियों के मांस भी खावेंगे तो अनेक प्रकार के दुःख पक्षी जानवर वहां होंगे हत्या होगी और हाड़ जहां तहां बिखरे रहेंगे और कसाइयों की दुकानें भी होंगी वाह क्या कहना इनके बहिश्त की प्रशंसा कि वह अरब देश से भी बढ़कर दीखती है और जब मद्य मांस पी खा के उन्मत्त होते हैं इसी लिये अच्छी २ स्त्रियां और लौंडे भी वहां अवश्य रहने चाहियें नहीं तो

ऐसे नशाबाजों के शिर में गर्मी चढ़ के भ्रमन्त हो जावेंगे। अवश्य बहुत स्त्री पुरुषों के बैठने सोने के लिये बिछौने बड़े २ चाहिये जब खुदा कुमारी बहिश्त में उत्पन्न करता है तभी कुमार लड़कों भी उत्पन्न करता है भला कुमारियों का तो विवाह यहां से उम्मेदवार हो कर गये हैं उनके साथ खुदा ने विवाह परन्तु उन सदा रहने वाले लड़कों का किन्हीं कुमारियों के साथ विवाह न लिखा तो क्या वे भी उन्हीं उम्मेदवारों के साथ कुमारी वत् दे दिये इसकी व्यवस्था कुछ भी न लिखी यह खुदा में बड़ी भूल क्यों हुई यदि बराबर अवस्था वाली सुहागिन स्त्रियां पतियों को पाके बहिश्त में रहती हैं तो ठीक नहीं हुआ क्योंकि स्त्रियों से पुरुष का आयु दूना ढाई गुना चाहिये यह तो मुसलमानों के बहिश्त की कथा है और नरक वालों के सिंहोड़ अर्थात् थोहर के वृक्षों को खा के पेट भरेंगे तो कंटक वृक्ष भी दोज़ख में होंगे तो कांटे भी लगते होंगे और गर्म पानी पीयेंगे इत्यादि दुःख दोज़ख में पावेंगे कसम का खाना प्रायः झूठ का काम है सच्चों का नहीं यदि खुदा ही कसम खाता है तो वह भी झूठ से अलग नहीं हो सकता ॥ १४८

१४९ ——— वही है जिसने उत्पन्न किया आसमानों को और पृथिवी को बीच छः दिनों के फिर करार पकड़ा ऊपर अर्श के ईमान लाओ साथ अल्लाह के और रसूल उसके के कौन मनुष्य है कि उधार देवे अल्लाह को उधार अच्छा बस दुगुना करे उसको वास्ते उसके। मं० ७ सि० २७ सू० ५७ आ० ४-७-११

समी० ——— यदि छः दिनों में पृथिवी और आकाश को बना कर आकाश में आराम किया तो वह शरीरधारी एकदेशी असमर्थ और थकने वाला होने से ईश्वर ही नहीं हो सकता यदि ईमान में पैगम्बर भी शरीक है तो खुदा का शरीक हुआ वा नहीं और मुसलमानों के मत में खुदा के सिवाय पर भी ईमान रखना आवश्यक होने से जो शरीक खुदा को कहना ...

र्थ है क्या खुदा के खजाने में टोटा पड़ गया था वा कोई लूट गया था अ-
थवा खुदा ने के न फि तरीम नाश करदिया कि जिसकी सी से उ-
धार मांगता है और दूना देना स्वीकार करता है भला ऐसी २
बातें ईश्वर और ईश्वर कृत पुस्तक की कभी हो सकती है
१४९

१५० —— (अल्लाह ने क्रोधकिया ऊपर काफ़ुरों के और
(विशेष महादियों पर) गालि ब आया उन के शैतान वश भू(ला)
दी उनको याद खुदा की ये लोग समुदाय शैतान के हैं। मं. ७
सि० २८ सू० ५८ आ० १४-१९

समी० —— यदि मुसल्मानी मजहब को न माने और वे अच्छे
हों उन पर खुदा क्रोध करेगा तो अन्याई होगा वा नहीं और
जो मुसल्मानों में दुष्ट हों उन से प्रेम करेगा तो भी पक्षपाती हो-
कर पापी होगा यदि खुदा की सृष्टि में शैतान प(बल) होता है और
उस को खुदा न पकड़ न दंड और न मार सकता है इसी लि-
ये खुदा सर्वशक्तिमान न्यायकारी भी नहीं है ।। १५०

१५१ —— अल्लाह ने लूट की प्रकार से न बटवा-
ई हजरत के इरिब्रयार में रक्खी यह भी मेहरक्खा लूट में औ-
र फ्की में जो माल लड़ाई से हाथ लगा वह लूट पांचवा भाग अल्ला
ह की पेट और भाग लश्कर को बांटने। मं. ७ सि० २८ सू० ५९
आ० २-६

समी० —— क्या कहना है तभी तो मुसल्मान लोग लूटमार
और फ़िसाद करने में नहीं डरते कि जिनके खुदा और पैगम्बर
ने लूट की छुड़बी आदि को भी स्वीकार कर लिया क्योंकि उ-
स लूट के माल में से पांचवा भाग अल्लाह का भी है क्या यह
खुदा वा पैगम्बर लूट के कराने वाले नहीं हुए ऐसे खुदा औ-
र पैगम्बर को कोई बुद्धिमान न मान सकेगा और ऐसे की बा-
त का प्रमाण हो सकता है। १५१

१५२ —— निश्चय अल्लाह मित्र रखता है उन लोगों को कि
लड़ते हैं बीच मार्ग उसके के।। मं. ७ सि० २८ सू० ६१ आ० ४

समी० ——— वाह जी कहे ऐसी २ बातों का उपदेश कर के विचारे अर्ब देश वासियों को सब से लड़ाके शत्रु बना कर दुःख परस्पर दिलाया और मजहब का झंडा खड़ा करके लड़ाई फैलाई ऐसे को ईश्वर बुद्धि मान कभी नहीं मान सकते जो मनुष्य जाति में विरोध बढ़ाके वही सब को दुःख दाता होता है॥ १५२

१५३ ——— यदि करदो तुम अल्लाह को कर्ज अच्छा दुगुना करेगा उस को वास्ते तुम्हारे क्षमा करेगा वास्ते तुम्हारे पाप। मं० ७ सि० २८ सू० ६४ आ० १७।

समी० ——— यह कर्ज का लेना देना सब मुहम्मद साहेब के मतलब की बात है जैसे मूर्तिपूजक मूर्ति के नाम से लोगों से धन लेकर स्वकार्य सिद्ध करते हैं ऐसी ही मुहम्मद साहेब की लीला है क्योंकि ईश्वर को कर्ज लेने का कोई भी प्रयोजन नहीं। १५३

नोट —— हजरत ने एक बीबी अपनी मौकूफ़ कर दी खातर से और बीबियों की॥ हजरत की मरयम नाम एक बांदी से प्रीति बहुत थी और इस बात को उन की एक बीबी ने जानकर रोका हजरत ने खफा होकर उस को तलाग देदी॥ ये आयत हजरत की औरतों की तर्फ है किसी दिन कोई बीबी रूस गई होगी उस बात पर यह आयत उतरी कि ऐ नबी की स्त्रियो यह घमंड मत करो कि पैगम्बर के लिये हम ही हैं नहीं सिवाय तुम्हारे और भी बीबियां बन सकते हैं

१५४ ——— ऐ नबी झगड़ा कर काफ़िरों और गुप्त शत्रुओं से और शक्ति कर ऊपर उनके। मं० ७ सि० २८ सू० ६६ आ० २-३-५-८

समी० ——— भला जो अपने की स्त्रियों के रक्खे वह ईश्वर का भक्त वा पैगंबर कैसे हो सके और जो एक स्त्री को पक्षपात से अपमान करे और दूसरी का मान्य करे

(न) (४५३) १५३ (२ ...)

१५३ [illegible] जी को [illegible] है [illegible] कि [illegible] नहें [illegible]

[illegible] चाहते हैं [illegible] जी की [illegible]

[illegible] है ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ मं. ९ । सी. २ । सू. ६६

मं. ११ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है । [illegible]

[illegible]

[illegible] है । [illegible]

[illegible]

१५६

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वह पक्षपाती होकर अधर्मी क्यों नहीं और जो बहुतसी।
स्त्रियों से भी सन्तुष्ट न होकर बांदियों के साथ फसे उन
को लज्जा भय और धर्म कहां से रहे किसीने कहा कि
(कामातुराणां न भयं न लज्जा) जो कामी मनुष्य हैं उन
को अधर्म से भय वा लज्जा नहीं होती और इन का खुदा
भी महम्मद साहेब की स्त्रियों और पैगम्बर के झगड़े
को फैसला करने में जानो सिरपंच बना है अब बुद्धिमान
लोग बिचार लें कि यह कुरान किसी विद्वान वा ईश्वर कृ-
त है वा किसी अविद्वान मतलबसिन्धु की बनाई स्पष्ट विदित
हो जायगा। और देखिये मुसल्मानों के खुदा की लीला
अन्यमतवालों से लड़ने के लिये पैगम्बर और मुसल्मा
नों को उचकता है इसी लिये आज तक मुसलमान लो-
ग उपद्रव करने में प्रवृत्त रहते हैं परमात्मा मुसल्मा-
नों पर कृपादृष्टि करे जिससे ये लोग उपद्रव करना
छोड़ के सबसे मित्रता से बर्ते। १५४

१५५ —————— फट जावेगा आसमान बस वह
उस दिन सुस्त होगा और फरिश्ते होंगे ऊपर किनारों
उसके के और उठावेंगे तख्त मालिक तेरे का ऊपर अ-
पने उस दिन आठ जन।। उस दिन सम्मने लाये जाओ
गे तुम न छिपी रहेगी कोई बात छिपी हुई बस जो कोई
दिया गया कर्मपत्र बीच दहिने हाथ अपने के बस कहेगा
लो पढ़ो कर्मपत्र मेरा।। और जो कोई दिया गया कर्मपत्र
बीच बांये हाथ अपने के बस कहेगा हाय न दिया होता
मैं कर्मपत्र अपना। मं॰ ७ सि॰ २९ सू॰ ६९ आ॰ १६-१७
-१८-२५

समी॰ —— वाह क्या फिलासफी और न्याय की बात है
भला आकाश भी कभी फट सकता है क्या वह वस्त्र
के समान है जो फट जावे यदि ऊपर के लोक को आस-
मान कहते हैं तो बात विद्या से विरुद्ध है अब कुरान का

खुदा शरीरधारी होने में कुछ संदिग्ध न रहा क्योंकि
तख्त पर बैठना आठ कहारों से उठवाना बिना मूर्तिमान्
के कभी नहीं हो सकता। और सामने वा पीछे भी आ-
ना जाना मूर्तिमान् का ही हो सकता है जब वह मूर्तिमा-
न है तो एकदेशी होने से सर्वज्ञ सर्वव्यापक सर्वशक्ति
मान नहीं हो सकता और सब जीवों के सब कर्मों को क-
भी नहीं जान सकता यह बड़े आश्चर्य की बात है कि
पुण्यात्माओं के दाहने हाथ में पत्र देना व बंचवाना बहि-
श्त में भेजना और बांये हाथ में देना कर्मपत्र नरक में भेज-
ना कर्मपत्र बांच के न्याय करना सर्वज्ञ का काम नहीं यह
सब लीला लड़कों पन की है ॥ १५५
१५६— पढ़ते हैं फरिश्ते और रूह तर्फ उसकी वह अ-
जाब होगा बीच उस दिन के कि है परिमाण उसका
पचास हजार वर्ष जब कि निकलेंगे कबरों में से दौड़ते
हुए मानो कि वह बुतों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं ॥
मं०७। सि०२९ सू०७० आ०४-४२
समी०—— जब फरिश्ते पढ़ते हैं तब खुदा [illegible] करता
है सुनता है क्या पढ़ नहीं सकता आलसी है यदि पचास
हजार वर्ष की रात का परिमाण है तो पचास हजार वर्ष
का दिन क्यों नहीं किया यदि उतना बड़ा दिन नहीं है तो
उतनी बड़ी रात्री कभी नहीं हो सकती रात्री में न्याय कर
किन्तु दिन ही न्याय के लिये क्या पचास हजार वर्षों तक
खुदा फरिश्ते और कर्मपत्र वाले खड़े २ जागते अथवा
जागते ही रहेंगे यदि ऐसा है तो सब रोगी होकर पुनः
मर ही जायेंगे क्या कबरों से निकल कर खुदा की कच-
हरी की ओर दौड़ेंगे उनके पास सम्मन कबरों में क्यों
कर पहुंचा और उन बिचारों को जो कि पुण्यात्मा वा पापा-
त्मा हैं इतने समय तक सभी को दौरे सुपुर्द कबरों
में कैद क्यों रक्खा और आज कल खुदा की कचहरी बंध

और खुदा तथा फिरश्ते निकम्मे बैठे होंगे अथवा क्या काम करते हैं अपने २ स्थानों में बैठे इधर उधर घूमते सो तमाशा देखते वा ऐश आराम करते होंगे ऐसा अन्धेर किसी के राज में न होगा ऐसी २ बातों को सिवाय जंगलियों के दूसरा कौन मानेगा ॥१५६॥

१५७ ——— निश्चय उत्पन्न किया तुमको कई प्रकार से क्या नहीं देखा तुमने कैसे उत्पन्न किया अल्लाह ने आसमानों ऊपर तले और किया चांद को बीच उसके प्रकाशक और किया सूर्य को दीपक मं० ७ सि० २९ सू० ७१ आ० १४-१५-१६

समी० ——— यदि जीवों को खुदा ने उत्पन्न किया है तो वह नित्य अमर कभी नहीं रह सकते फिर बहिश्त में सदा क्यों कर रह सकेंगे जो उत्पन्न होता है वह वस्तु अवश्य नष्ट हो जाता है आसमान को ऊपर तले कैसे बना सकता है क्योंकि वह निराकार और विभु पदार्थ है यदि दूसरी चीज का नाम आकाश रखते हो तो भी उसका आकाश नाम रखना व्यर्थ है यदि ऊपर तले आसमानों को बनाया है तो उन सब के बीच में चांद सूर्य कभी नहीं रह सकते जो बीच में रक्खा जाय तो एक ऊपर और एक नीचे का पदार्थ प्रकाशित रहे दूसरे से लेकर सब में अन्धकार रहना चाहिये ऐसा नहीं दीखता इसलिये यह बात सर्वथा मिथ्या है ॥१५७॥

१५८ ——— यह कि मसजिदें वास्ते अल्लाह के हैं बस मत पुकारो साथ अल्लाह के किसी को । मं० ७ सि० २९ सू० ७२ आ० १८

समी० ——— यदि यह बात सत्य है तो मुसल्मान लोग (लाइलाहइल्लिल्लाः महम्मदरसूलल्ला) इस कलमे में खुदा के साथ मुहम्मद साहेब को क्यों पुकारते हैं यह बात कुरान से विरुद्ध है और जो विरुद्ध नहीं

करते तो इस कुरान की बात जो झूठ करते हैं न मस-
जिदें खुदा के घर हैं तो मुसलमान महा बुतपरस्त हु-
ए क्योंकि जैसे पुरानी जैनी छोटी सी मूर्ति को ईश्वर
का घर मानने से बुतपरस्त ठहरते हैं ये लोग क्यों नहीं।
१५८

१५९ —— इकट्ठा किया जावेगा सूर्य्य
और चांद। मं॰ ७ सि॰ २९ सू॰ ७५ आ॰ ९

समी॰ —— भला सूर्य्य चांद कभी इकट्ठे हो सकते
हैं देखिये यह कितनी बेसमझ की बात है और सू-
र्य्य चंद्र ही के इकट्ठे करने में क्या प्रयोजन था अन्य
सब लोकों को इकट्ठे न करने में क्या युक्ति है ऐसी २
असम्भव बातें परमेश्वर कृत कभी हो सकती हैं वि-
ना अविद्वानों के अन्य किसी विद्वान की भी नहीं
होती ॥१५९

१६० —— और फिरेंगे ऊपर उनके लड़-
के सदा रहनेवाले जब देखेगा तू उनको अनुमान
करेगा तू उनको मोती बिखरे हुए और पिन्हा-
ये जावेंगे कंगन चांदी के और पिलावेगा उनको
रब उनका शराब तहूरा। मं॰ ७ सि॰ २९ सू॰ ७६
आ॰ १९—२१

समी॰ —— क्यों जी मोती के वर्ण से लड़के कि-
सलिये वहां रक्खे जाते हैं क्या जवान लोग सेवा
वा स्त्री जन उनको तृप्त नहीं कर सकती क्या
आश्चर्य है कि जो यह महा बुरा कर्म लड़कों के साथ
दुष्ट जन करते हैं उसका मूल यही कुरान का वचन
हो ~~किसी को विना धर्म के सुख मिल जाने से~~
~~दूसरा बड़ा अभाव कौन सा होगा १६०~~
और बहिश्त में स्वामी सेवक भाव होने से स्वा-
मी को आनन्द और सेवक को परिश्रम होने से

स्वर्ग में दुःख तथा पक्षपात क्यों है और जब खुदा ही म-
द्य पिलावेगा तो वह भी उनका सेवक बनकर हरे गाफि-
र खुदा की बड़ाई क्योंकर रह सकेगी और जो बहि-
श्त में स्त्री पुरुष का समागम और गर्भस्थिति और
लड़के बाले भी होते हैं वा नहीं यदि नहीं होते तो
उनका विषय सेवन करना व्यर्थ हुआ और जो हो-
ते हैं तो वे जीव कहां से आये और बिना खुदा की सेवा
के बहिश्त में क्यों जन्मे यदि जन्मे तो उन बिचारों को
ईमान लाने और खुदा की भक्ति करने के बिना बहिश्त उनको
मुफ्त मिल गया यह कितना बड़ा अन्याय है कि किन्हीं
को तो ईमान लाने और किन्हीं को बिना धर्म के सु-
ख मिल जाने से दूसरा बड़ा अन्याय कौनसा होगा।
॥ १६० ॥

१६१ ——— बदला दिये जावेंगे कर्मानुसा-
र॥ और प्याले हैं भरे हुए हैं जिस से खड़े होंगे रूह
और फरिश्ते सफ़ बांध कर। मं० ७ सि० ३० सू० ७८
आ० २६। ३४। ३८

समी० ——— यदि कर्मानुसार फल दिया जाता
तो जो सदा बहिश्त में रहने वाले हूरें फरिश्ते और
मोती के सदृश लड़कों को कौन कर्म के अनुसार
सदा के लिये बहिश्त मिला॥ जब प्याले भर २ शरा-
ब पीयेंगे तो मस्त होकर क्यों न लड़ेंगे और रूह
निराकार होने से वहां खड़ी क्योंकर रह भी हो सकेगी
और खुदा उस समय खड़ा होगा वा बैठा॥ १६१

१६२ ——— जब कि सूर्य्य लपेटा
जावे। और जब कि तारे गदले हो जावें और जब आ-
~~समान खोला जावे और फरिश्ते पंक्ति बांध कर~~
~~और रूह आ जावेगा उस दिन खुदा को। मं० ७~~
~~सि० ३० सू० ८१ आ० २१-२२~~

(सत्या० समु० १४ (४५६ ६४)

किपहाड़ ~~चलाये~~ जावें और जब आसमान की खाल उतारी जावे
मं० ७ सि० ३० सू० ८१ आ० १-२-३-४ ॥

~~केदरेग्ना को जिले का हाकिम कुलवाम ने १६४~~

~~१६३ —— निश्चय उतारा हमने बीच रात कदर के और क्या जाने तू क्या है रात कदर की। उतरते हैं फरिश्ते और पवित्रात्मा बीच उसके साथ आज्ञा मालिक अपने के वास्ते हर काम के और जब कि पहाड़ चलाये जावें। और जब आसमान की खाल उतारी जावे। मं० ७ सि० ३० सू० ९७ आ० १-२-३-४~~

समी० —— यह बड़ी बेसमझ की बात है कि गोल सूर्य लोक कैसे लपटा जावेगा। और तारे गदले क्यों कर हो सकेंगे। और पहाड़ जड़ होने से चलेंगे कैसे। और आकाश को क्या पशु समझा कि उसकी खाल निकाली जावेगी यह बड़ी ही मूर्खता और जंगलीपन की बात है। १६४

१६४ —— और जब कि आसमान फट जावे। और जब तारे झड़ जावें और जब दर्या चीरे जावें और जब कबरें जिलाकर उठाई जावें ॥ मं० ७ सि० ३० सू० ८२ आ० १-२-३-४

समी० —— वाह जी कुरान के बनाने वाले फिलासफर आकाश को क्यों कर फाड़ सकेगा और तारों को कैसे झाड़ सकेगा। और दर्या [illegible] क्या लकड़ी है जो चीर के डालेगा ॥ और कबरें क्या मुर्दे हैं जो जिला सकेगा। ये सब बातें लड़कों के सदृश है ॥ १६४

१६५ —— कसम है आसमान बुर्जों वाले की ॥ किन्तु वह कुरान है बड़ा बीच लौह रक्षित के। मं० ७ सि० ३० सू० ८५ आ० १-२१

समी० —— इस कुरान के बनाने वाले ने भूगोल खगोल भी नहीं पढ़ा था नहीं तो आकाश को किले के समान बुर्जों वाला

क्यों कहता यदि मेषादि राशियों को बुर्ज कहते हैं तो अन्य बुर्ज क्यों नहीं? इसलिये यह बुर्ज नहीं है किन्तु सब तारे लोक हैं। क्या वह कुरान खुदा के पास है? यदि यह कुरान उसका किया है तो वह भी इससे अधिक विद्या और युक्ति से विरुद्ध होकर अविद्या से भरा होगा॥ १६३॥

१६४—— निश्चय वे मकर करते हैं एक मकर। और मैं भी मकर करता हूं एक मकर॥ मं० ७ सि० ३० सू० ८६ आ० १५-१६॥

समी०—— मकर कहते हैं ठगपन को क्या खुदा भी ठग है? और क्या चोरी का जवाब चोरी और झूठ का जवाब झूठ है? क्या कोई चोर भले आदमी के घर में चोरी करे तो क्या भले आदमी को चाहिये कि उसके घर में जा के चोरी करे? ॥ १६४॥

१६५—— और जब आवेगा मालिक तेरा और फरिश्ते पंक्ति बांध के। और लाया जावेगा उस दिन दोजख को॥ मं० ७ सि० ३० सू० ८९ आ० २१-२२॥

समी॰——— कहो जी खुदा भी जैसे कोई बाल-
बासे नाअपनी सेना को लेकर पंक्ति बांध फि-
रा करे वैसा ही इनका खुदा है क्या दो जख को घड़ा
सा है कि जिस को उठा के जहां चाहे वहां ले जावे
यदि इतना छोटा है तो असंख्य केदी उसमें कैसे समा
सकेंगे ॥ १६२

१६३——— वखुकहाथा वास्ते उनके पैगम्ब-
र खुदा के ने रक्षा करो ऊंटनी खुदा की को और पानी
पिलाना उसके को बस झुठलाना उस को बस पां-
ऊं काटे उसके बस मरी डाली ऊपर उनके रब उ-
नके ने । मं॰ ७ सि॰ ३० सू॰ ९१ आ १३-१४

समी॰——— क्या खुदा भी ऊंटनी पर चढ़ के
सेल किया करता है नहीं तो किस लिये रक्खी और
बिना कयामत के अपना नियम तोड़ उन पर मरी रोग
क्यों डाला यदि डाला तो उनको दंड किया फिर क-
यामत की रात में न्याय और उस रात का होना झूठ
समझा जायगा । इस ऊंटनी के लेख से यह अनु-
मान होता है कि अर्ब देश में ऊंट ऊंटनी के सिवाय
कोई दूसरी सवारी नहीं होती है इसी लिये किस
अर्ब देशी ने कुरान बनाया है ॥ १६३

१६४——— यों जो न रुकेगा अवश्य घ-
सीटेंगे साथ बालों माथे के वह माथा कि झूठा है
और अपराधी । हम बुलावेंगे फरिश्ते दोजख
को - मं॰ ७ सि॰ ३० सू॰ ९६

समी॰——— यह नीच चपरासियों का काम घ-
सीटने से भी खुदा न बचा भला माथा भी कभी झूठा
और अपराधी हो सकता है सिवाय जीव के भला
यह भी कभी खुदा हो सकता है कि जैसे जेलखाने

के दरोगा को बुलवा भेजे ॥ १६४ (१५) [ता० २। ५ तो]

१६५ ——— निश्चय उतारा हमने बीच रात कदर के ॥ और क्या जाने तू क्या है रात कदर की ॥ उतरते हैं फरिश्ते और पवित्रात्मा बीच उसके साथ आज्ञा मालिक अपने के वास्ते हर काम के । मं० ७ सि० ३० सू० ९७ आयत १-२-४

समी० ——— यदि एक ही रात में कुरान उतारा तो वह आयत अर्थात् उस समय में उतरी और धीरे २ उतारा यह बात सत्य क्योंकर हो सकेगी ॥ और रात्री अंधेरी है इसमें क्या पूछना है हम लिख आये हैं ऊपर नीचे कुछ भी नहीं हो सकता और यहां लिखते हैं कि फरिश्ते और पवित्रात्मा खुदा के हुक्म से संसार का प्रबन्ध करने के लिये आते हैं इससे स्पष्ट हुआ कि खुदा मनुष्यवत् एकदेशी है अब तक देखा था कि खुदा फरिश्ते और पैगम्बर तीन की कथा है अब एक पवित्रात्मा चौथा निकल पड़ा अब न जाने यह चौथा पवित्रात्मा क्या है यह तो ईसाइयों के मत अर्थात् पिता पुत्र और पवित्रात्मा तीन के मानने से चौथा भी बढ़ गया यदि कहो कि हम इन तीनों को खुदा नहीं मानते ऐसा भी हो परन्तु जब पवित्रात्मा पृथक् है तो खुदा फरिश्ते और पैगम्बर को पवित्रात्मा कहना चाहिये वा नहीं यदि पवित्रात्मा है तो एक ही का नाम पवित्रात्मा क्यों और घोड़े आदि जानवर रात दिन और कुरान आदि की खुदा कसमें खाता है कसमें खाना भले लोगों का काम नहीं ॥ अब यह कुरान के विषय को लिख के बुद्धिमानों के सन्मुख स्थापित करता हूं कि यह पुस्तक कैसी है मुझसे पूछो तो यह किताब न ईश्वर न विद्वान् और न विद्या की हो सकती है यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट किया इसलिये कि लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें जो कुछ इसमें थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि विद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझको ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपात रहित विद्वानों और बुद्धिमानों को ग्राह्य है इसके बिना जो कुछ इसमें है वह सब अविद्या भ्रमजाल और मनुष्य के आत्मा को पशुवत् बनाकर शान्तिभंग

कराके उपद्रव मचा मनुष्यों में विद्रोह फैला परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है और पुनरुक्त दोष का तो कुरान जानो भंडार ही है परमात्मा सब मनुष्यों पर कृपा करे कि सब की प्रीति परस्पर मेल और एक दूसरे के सुख की उन्नति करने में प्रवृत्त हों जैसे मैं अपने वा दूसरे मतमतान्तरों का दोष पक्षपात रहित होकर प्रकाशित करता हूं इसी प्रकार यदि सब विद्वान लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट मेल होकर आनन्द में एकमत होके सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो यह थोड़ा सा कुरान के विषय में लिखा इसको बुद्धिमान धार्मिक लोग ग्रन्थकार के अभिप्राय को समझ लाभ लेवें यदि कहीं भ्रम से अन्यथा लिखा गया हो तो उसको शुद्ध कर लेवें॥ ~~इसके आगे स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश संक्षेप से लिखा जायगा इति~~ अब एक बात यह बाकी है कि बहुत से मुसल्मान ऐसा कहा करते हैं और लिखा वा छपवाया करते हैं हमारे मजहब की बात अथर्ववेद में लिखी है इसका यह उत्तर है कि अथर्ववेद में इस बात का नाम निशान भी नहीं है (प्रश्न) क्या तुमने सब अथर्ववेद देखा है यदि देखा हो तो अल्लोपनिषद् देखो यह साक्षात् उसमें लिखी है क्यों कहते कि अथर्ववेद में मुसल्मानों का नाम निशान भी नहीं है

॥ अथाल्लोपनिषदं व्याख्यास्यामः ॥

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते इल्लल्ले वरुणो
राजा पुनर्ददुः॥ हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो
मित्रस्तेजस्कामः॥१॥ होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासु-
रिन्द्राः॥ अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्णं ब्रह्माणं अल्लाम्॥२॥
अल्लोरसूलमहामदरकबरस्य अल्लो अल्लाम्॥३॥
आदल्लाबूकमेककम्॥ अल्लाबूकनिखातकम्॥४॥
अल्लो यज्ञेन हुतहुत्वा॥ अल्ला सूर्य्यचन्द्रसर्वनक्षत्राः॥५॥
अल्ला ऋषीणां सर्वदिव्यां इन्द्राय पूर्वं माया परममन्तरि-
क्षाः॥६॥ अल्लः पृथिव्या अन्तरिक्षं विश्वरूपम्॥७॥
इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां इल्लल्लेति इल्लल्लाः॥८॥

ओम् अल्लो इल्लल्ला अनादिस्वरूपाय अथर्वणी। श्यामा हुं ह्रीं ~~अल्लोरसूल महमदर~~ जनान पशून सिद्धान जलचरान अदृष्टं कुरु कुरु फट्॥ ९॥ असुरसंहारिणी हुं ह्रीं अल्लो रसूल महमदरकबरस्य अल्लो अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला॥ १०॥ इत्यल्लोपनिषत्समाप्ता॥

जो इसमें प्रत्यक्ष मुहम्मद साहब रसूल लिखा है इससे सिद्ध होता है कि मुसल्मानों का मत वेदमूलक है (उत्तर) यदि तुमने अथर्ववेद न देखा हो तो हमारे पास आओ आदि से पूर्ति तक देखो अथवा जिस किसी अथर्ववेदी के पास बीस काण्डयुक्त मन्त्रसंहिता अथर्ववेद को देख लो कहीं तुम्हारे पैगम्बर साहब का नाम वा मत का निशान न देखोगे और जो यह अल्लोपनिषद है वह न अथर्ववेद में न उसके गोपथ ब्राह्मण वा किसी शाखा में है यह तो अकबरशाह के समय में अनुमान है कि ... गई है इसका बनाने वाला कुछ अर्बी और कुछ संस्कृत भी पढ़ा हुआ दीखता है क्योंकि इसमें अर्बी और संस्कृत के पद लिखे हुए दीखते हैं देखो (अस्माल्लां इल्ले मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते) इत्यादि में जो कि दस अङ्क में लिखा है जैसे इसमें (अस्माल्लां और इल्ले) अर्बी और (मित्रावरुणा दिव्यानि धत्ते) यह संस्कृत पद लिखे हैं वैसे ही सर्वत्र देखने में आने से किसी संस्कृत अर्बी के पढ़े हुए ने बनाई है यदि इसका अर्थ देखा जाता है तो यह कृत्रिम अयुक्त वेद और व्याकरण रीति से विरुद्ध सिद्ध होती जैसी यह उपनिषद बनाई है वैसी बहुत सी उपनिषदें मतमतान्तर वाले पक्षपातियों ने बना ली हैं जैसी कि स्वरोपनिषद, नृसिंहतापनी, रामतापनी, गोपालतापनी बहुत सी बना ली हैं (प्रश्न) आज तक किसी ने ऐसा नहीं कहा अब तुम कहते हो हम तुम्हारी बात कैसे मानें (उत्तर) तुम्हारे मानने वा न मानने से हमारी बात झूठ नहीं हो सकती है जिस प्रकार से मैंने इसको अयुक्त ठहराई है उसी प्रकार से जब तुम अथर्ववेद गोपथ वा इसकी शाखाओं से प्राचीन लिखित पुस्तकों में जे-

या का तैसा लेख दिखाओ और अधर्म संगति से भी कुछ करोगे तो भी अप्रमाण हो सकती है (प्रश्न) देखो हमारा मत कैसा अच्छा है कि जिसमें सब प्रकार का सुख और अन्त में मुक्ति होती है (उत्तर) ऐसे ही अपने २ मत वाले सब कहते हैं कि हमारा ही मत अच्छा है बाकी सब बुरे बिना हमारे मत के दूसरे मत से मुक्ति नहीं हो सकती अब हम तुम्हारी बात को सच्ची माने वा उन की हम तो यही मानते हैं कि जो २ सत्यभाषण अहिंसा दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे और बाकी वादविवाद ईर्षा द्वेष मिथ्याभाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं यदि तुम को सत्य मत ग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करो।

इसके आगे स्वमन्तव्याऽमन्तव्य का प्रकाश संक्षेप से लिखा जायगा ॥